

श्री वर्धमान स्तोत्र बीजाक्षर भक्ति (पूजन-विधान)



ब्रीजाक्षर स्तुति रचयित्री
श्राविका रत्न श्रीमति अरुणा जैन भारती

अहं श्री मुनि १०८ प्रणम्यसागर जी महाराज द्वारा विरचित

श्री वर्धमान स्तोत्र बीजाक्षर भक्ति (पूजन-विधान)

:रचयित्री:

बीजाक्षर स्तुत्य भक्ति
श्राविका रत्न श्रीमति अरुणा जैन भारती

प्रकाशक

आर्हत विद्या समिति

कृति	: श्री वर्धमान स्तोत्र बीजाक्षर स्तुति
आशीर्वाद	: परम पूज्य सन्त शिरोमणि आचार्य श्री १०८ विद्यासागर जी महाराज आचार्य श्री १०८ समयसागर जी महाराज
मूल रचयिता	: अर्ह योग प्रणेता मुनि श्री १०८ प्रणम्यसागर जी महाराज
बीजाक्षर स्तुति रचयित्री	: श्राविका रत्न श्रीमति अरुणा जैन भारती
संस्करण	: प्रथम, अप्रैल 2025
प्रतियाँ	: 1000
आई.एस.बी.एन.:	978-81-976900-5-1
पुण्यार्जक	: कमल नयनी-वीरेंद्र कुमार जैन (C.A) आयुष - दीप्ति - देवयश जैन ATS Pristine Sector-150 Noida
मूल्य	: 350/-
प्रकाशक	: आर्हत विद्या समिति, गोटेगाँव मोबाइल: 9425837476
प्राप्ति स्थान	: 1. आर्हत विद्या समिति, गोटेगाँव, मोबाइल : 9425837476 (नवीन जैन) 2. आचार्य अकलंक देव जैन विद्या शोधालय समिति 109, शिवाजी पार्क, देवास रोड, उज्जैन मोबाइल : 9425092483 (शैलेन्द्र जैन)



परम पूज्य सन्त शिरोमणि आचार्य श्री 108
विद्यासागर जी महाराज



परम पूज्य आचार्य श्री 108 समयसागर
जी महाराज



अर्ह श्री मुनि 108 प्रणम्यसागर जी महाराज

पूर्व नाम	: ब्र. सर्वेश जी
पिता	: श्री वीरेन्द्रकुमार जी जैन
माता	: श्रीमती सरितादेवी जैन
जन्म	: 13.09.1975, भाद्रपद शुक्ल अष्टमी
जन्म स्थान	: भोगाँव, जिला-मैनपुरी (उ.प्र.)
शिक्षा	: बी. एस. सी. (अंग्रेजी माध्यम)
भाई	: सचिन जैन
बहिन	: सपना जैन
गृहत्याग	: 09.08.1994
क्षुल्लक दीक्षा	: 09.08.1997, नेमावर
ऐलक दीक्षा	: 05.01.1998, नेमावर
मुनि दीक्षा	: 11.02.1998, माघसुदी 15, बुधवार, मुक्तागिरिजी
दीक्षा गुरु	: सन्त शिरोमणि आचार्य श्री 108 विद्यासागर जी महाराज

प्रस्तावना

भाषितमर्हज्जिनवरदेवैर्गुम्फितमेतद् गणधरदेवैः ।
भक्तिवशोऽहं श्रुतयुतवाणीं नैमि सदा भारति पथि गन्तुम् ॥

- शारदाष्टकम् -1

जिनवाणी की साधना और आराधना में तत्पर **मुनि श्री 108 प्रणम्य सागर जी** ने स्वपर कल्याण की भावना से प्राचीन जैनागमों को आत्मसात किया तथा जनजन के हितार्थ पूर्वाचार्यों द्वारा रचित ग्रन्थों का अध्ययन, मनन तथा चिन्तन कर उनमें निहित गूढ़ तत्त्वों तथा अर्थों को उद्घाटित करने के लिए नवविधाओं में नवसृजन करके संस्कृत, प्राकृत और हिंदी साहित्य को समृद्ध किया। **मुनि श्री 108 प्रणम्य सागर जी** के आध्यात्मिक ऊर्जा का प्रवाह उनके अन्तस् से सतत प्रवाहित होता रहता है। उनकी तपः पूत वाणी और सारस्वत लेखनी से निःसृत समस्त वाङ्मय प्रशस्त ज्ञानपुंज है। धर्म और दर्शन के साथ ही मानव जीवनपयोगी समसामयिक विषयों पर अत्यन्त प्रेरक और उपादेय लगभग अर्धशताधिक कृतियों का सृजन किया।

इनमें श्री वर्धमान स्तोत्र, श्रायस पथ, स्तुति पथ, दार्शनिक प्रतिक्रमण तथा अनासक्त योगी आदि अनेक कृतियाँ सहृदय कवि श्रमण श्री प्रणम्यसागरजी की संस्कृत रचनाधर्मिता के श्रेष्ठ उदाहरण हैं। श्रुताराधक मुनि श्री प्रणम्य सागर जी द्वारा रचित **"श्री वर्धमान स्तोत्र"** जैन संस्कृत स्तोत्र काव्य परम्परा का अनुपम नक्षत्र है। यह 64 वसंततिलका छंद में निबद्ध है। मुनि श्री के लिए काव्य सृजन मोक्ष पथ प्रदर्शक तीर्थंकर महावीर भगवान से साक्षात्कार का साधन है। मुनि श्री की अद्वितीय मेधा का प्रतिफल यह काव्य मालवा प्रांत की पुण्य भूमि रतलाम में पूर्ण किया गया। इसमें भगवान महावीर के शुभ नामों, उज्ज्वल गुणों तथा उदात्त जीवन चरित का काव्यात्मक शैली में रमणीय विवेचन है। धर्म और तत्त्वज्ञान का प्रतिपादन इसका उद्देश्य है। इस स्तोत्र की रचना का प्रेरणा स्रोत आचार्य मानतुंगप्रणीत **'भक्तामरस्तोत्र'** है, इसका प्रथम शब्द **'भक्तामर'** है। **श्री वर्धमान स्तोत्र** का प्रथम शब्द **'वर्धमान'** है। भाव और भाषागत साम्य भी इसमें दृष्टिगत होता है। श्री वर्धमान स्तोत्र में भगवान महावीर की स्तुति पूजन विधान के रूप में है जो तीन वलय में समाहित है। इसके **प्रथम वलय में 8 पद्य, द्वितीय वलय में 24, तथा तृतीय वलय में 32 पद्य हैं। कुल 64 पद्यों में अर्हन्तों - तीर्थंकरों की चौसठ ऋद्धियों का कथन है।**

इसके प्रथम वलय का प्रथम पद्य नमस्कारात्मक मंगलाचरण है इसमें श्री वर्धमान जिनेन्द्र के चरण कमलों की स्तुति है। एकाग्रता, बुद्धि विकास, उत्कृष्ट, इच्छित, पुण्यफल, लक्ष्मी प्राप्ति, वंशवृद्धि तथा सर्वानिष्ट ग्रह निवारण आदि इस स्तवन के सुफल हैं। द्वितीय वलय में भगवान महावीर के नाम का स्मरण तथा प्रतिमा दर्शन मात्र की कालसर्प निवारक बताया है। **'वैद्यस्त्वमेव तव वाक् च रसायन'** कहकर भगवान महावीर को वैद्य एवं उनके वचनों को रसायन की संज्ञा दी है। भगवान महावीर के जन्म के दस एवं केवल ज्ञान के दस अतिशयों का वर्णन है। **वीर, महावीर, सन्मति, वर्धमान और अतिवीर इन पाँच नामों की सार्थकता और प्रातिहार्यों का कथन है।** तृतीय वलय में विविध विषय हैं। देवकृत चौदह अतिशय, प्रभु का पद विहार, धर्मचक्र प्रवर्तन, तप, संयम और उपदेश कथन है। यह स्तुति आधि-व्याधि-रोग-शोकादि विनाशक, गुण, सम्पदा, मित्र मनोरथ, सौभाग्य, सर्वसिद्धि प्रदायक, आत्मगुण संवर्धक और रत्नत्रय प्रदायक है। संपूर्ण स्तोत्र वर्धमान महावीर के अलौकिक गुणों का उत्तम निदर्शन है। शांत रस प्रधान यह स्तोत्र अनुप्रास, उपमा, रूपक, उत्प्रेक्षा, दृष्टान्त, अर्थांतरन्यास और उदात्त आदि अलंकारों की शोभा से समलंकृत है। भाषा प्रसाद और माधुर्य गुण मण्डित तथा वैदर्भी रीति से अनुप्राणित है। स्तुति पढ़ते ही उसका अर्थ सहज ही ग्राह्य हो जाता है। यह अज्ञ को विज्ञ बनाने में समर्थ है। इससे स्तोत्रकार का महनीय प्रयोजन फलीभूत होता है। श्री वर्धमान स्तोत्र में हिंदी गद्यानुवाद और पद्यानुवाद के साथ अर्घ्य मंत्र, ऋद्धि मंत्र एवं महावीर मंत्र दिया गया है। प्रत्येक श्लोक में शीर्षक देकर स्तुति का फल बताया है। इस स्तोत्र के पूजन विधान में लयात्मकता और अर्थ गांभीर्य है। भगवान वर्धमान के निर्वाणोत्सव दीपावली पर इसका पूजन विधान विशेष फलदायी है। इस स्तोत्र का प्रत्येक छन्द स्वयं में ही एक ऋद्धि मंत्र है और प्रत्येक अक्षर बीजाक्षर है। प्रत्येक अर्घ्य में क्लीं महाबीजाक्षर है।

मन्त्र बीजों की निष्पत्ति बीज और शक्ति के संयोग से होती है -

"हलो बीजानि चोक्तानि स्वराः शक्तयः ईरिताः ।"

ककार से लेकर हकार पर्यन्त व्यंजन बीजसंज्ञक हैं और अकारादि स्वर शक्तिरूप हैं। बीज की उत्पत्ति हल् और अच् के संयोग से होती है। वर्णमाला का प्रत्येक अक्षर सर्व शक्तिशाली मंत्र है। प्रत्येक अक्षर के उच्चारण का मनुष्य के शरीर पर विशिष्ट प्रभाव पड़ता है। इससे विशिष्ट शक्ति का उपार्जन, इष्ट कर्म की सिद्धि, विविध प्रकार के भयों के रक्षण के साथ अनेक सिद्धियाँ और चमत्कार भी होते हैं। श्री वर्धमान स्तोत्र का पाठ और श्रवण करने से वांछित कार्य निर्विघ्न रूप से सफल होते हैं।

बीजाक्षर भक्ति- श्राविका रत्न, परम विदुषी **श्रीमती अरुणा भारती जैन** ने परम पूज्य मुनि श्री प्रणम्य सागर जी प्रणीत वर्धमान स्तोत्र काव्य के प्रत्येक वर्ण को लेकर **"बीजाक्षर भक्ति"** हिन्दी पद्य काव्य रचना की है। मंगलाचरण रूप प्रथम तीन दोहा पद्यों में पंच परमेष्ठी एवं द्वादशांग जिनवाणी को नमन करके रचयित्री ने गुरु प्रणम्य सागर जी के प्रति अपनी विनयशीलता प्रकट की है। सरस्वती सुता श्रीमती अरुणा भारती जी ने अनेक पूजन विधानों की रचना की है और अनेक आध्यात्मिक ग्रंथों के पद्यानुवाद भी किए हैं। सतत स्वाध्याय, ज्ञानार्जन एवं धार्मिक संस्कारों के अनुपालन का प्रतिफल यह बीजाक्षर काव्य है। श्री वर्धमान स्तोत्र के 64 श्लोकों का प्रत्येक वर्ण बीजाक्षर है। इसके प्रथम श्लोक का प्रत्येक वर्ण जैसे श्री, व, र्ध, मा, न बीजाक्षर है। इसी प्रकार क्रमशः प्रत्येक वर्ण बीजाक्षर से प्रारंभ करते हुए श्रीमती अरुणा जी जैन ने एक-एक सारगर्भित पद्य की रचना की है। प्रस्तुत कृति में प्रत्येक पद्य के प्रथम शब्द में बीजाक्षर को लाल वर्ण से अंकित किया है। प्रत्येक पद्य के अन्त में मुनि श्री प्रणम्य सागर जी प्रणीत बीजाक्षर युक्त 4116 अर्घ्य मंत्र भी हैं। बीजाक्षर हिंदी 4113 पद्य विविध 12 छंदों में निबद्ध है। इन छंदों के नाम और उनकी पद्य संख्या इस प्रकार है-

1. विष्णुपद(707)
1. दोहा(642)
2. चौपाई(584)
3. सोरठा(516)
4. ज्ञानोदय(388)
5. पद्धरी(388)
6. अर्ध ज्ञानोदय(247)
7. सखी(192)
8. स्रग्विणी(191)
9. शेरचाल(129)
10. पद्धरी लघ्वन्त(66)
11. अडिल्ल(63)

इन पदों का सम्पूर्ण योग= 4113 है।

उपर्युक्त बीजाक्षर हिन्दी पद्य काव्य में वर्तमान शासन नायक श्री वर्धमान महावीर तीर्थकर के उपदेशों का सार है। जैन धर्म, दर्शन एवं संस्कृति के विविध बिंदुओं का समावेश अत्यंत सरल भाषा और मुक्तक शैली में किया है। अर्थ की दृष्टि से

इसका प्रत्येक पद्य स्वतंत्र है। बीजाक्षर भक्ति में संगीतात्मकता है। भाषा सरल, सहज और बोधगम्य है। शब्दालंकार और अर्थालंकारों का सुंदर संयोजन है। स्थान स्थान पर प्राचीन कथानकों के प्रसंगों के संकेत हैं। साथ ही प्रकृति के सभी उपादानों का भी चित्रण है। इन पद्यों में सामाजिक स्थितियाँ, समस्याएँ और उनके समाधान के संकेत हैं। प्रसिद्ध संस्कृत सुभाषितों को सरल और प्रसंगानुकूल करते हुए जीवन मूल्यों का दिग्दर्शन है। इनमें एक ओर लौकिक तथा दूसरी ओर पार-लौकिक और आध्यात्मिक उपदेश का समन्वय भी है। कवयित्री के सृजन कौशल की यह अभिव्यक्ति पठनीय और अनुकरणीय तो है ही साथ ही अभिनंदनीय भी है। तीर्थंकर महावीर की गौरव गरिमा से मंडित **"श्री वर्धमान स्तोत्र"** के ऋद्धि मंत्र और बीजाक्षर मंत्र जन-जन का कल्याण करे।

इन्हीं मंगल भावनाओं के साथ।

डॉ. संगीता दिलीप मेहता

प्राध्यापक और विभागाध्यक्ष-संस्कृत

प्रधानमंत्री कॉलेज ऑफ़ एक्सीलेंस

इंदौर, मध्य प्रदेश

अरुणा जैन भारती जी की कलम से...

वर्धमान भक्त्याष्टक

वर्धमान स्तोत्र की,
महिमा अपरम्पार।
जो भी श्रद्धा से पढ़ें,
हो उनका उद्धार॥१॥

एक-एक अक्षर विधान की,
रचना हुई जभी सुखकार।
कर्म असता के बन्धन मम,
टूट गए सब एक हि बार॥२॥

नहीं अंगुलियों से लिख पाती,
टेढ़ा-मेढ़ा लिखती थी।
जैसे जैसे लिखती जाती,
सबको सुन्दर दिखती थी॥३॥

वर्धमान की कृपा से मानो,
सरस्वती ही आई हैं।
लगता माँ ही स्वयं लिख रहीं,
अथवा हृदय समाई हैं॥४॥

मुझे नहीं मालूम ये,
रचना कैसे पूर्ण हुई।
बस ऐसा लगता है जैसे,
अशुभ प्रकृति ही चूर्ण हुई॥५॥

वैवाहिक वर्षगाँठ थी स्वर्णिम,
पतिदेव छोड़ कर चले गए।
नाता जुड़ा जो गुरु चरणों से,
आँसू भी मम सूख गए॥६॥

गुरु वचनों से ही मेरा
यह आर्तध्यान भी नष्ट हुआ।
मानो गुर्वाशीष से ही पुनि,
नवजीवन मम शुरु हुआ॥७॥

बीस साल से लगा था चश्मा,
वह भी स्वयं ही छूट गया।
नेत्र ज्योति स्वाभाविक'अरुणा'
मोहबंध भी टूट गया॥८॥

स्तुति

हे प्रणम्य गुरो! नमन करूँ मैं, शत-शत चरणों में।
गुर्वाशीष से शान्ति पड़े अब, मम दुष्कर्मों में॥१॥

ओजस तैजस कान्ति समाई, तुम मुखमण्डल पर।
श्रद्धा भक्ति से देखे जो, टिके नहीं पल भर॥२॥

स्वयं नयन झुक जाते उसके, शान्ति मिले मन को।
चरणों का स्पर्श करें, पुनि-पुनि लखे तुम को॥३॥

कण्ठ अवरुद्ध हो बोल न पाए, आनन्द अश्रु झरें।
मानो पावन भावों से ही, कर्म कलंक हरेँ॥४॥

ये अतिशय तो तुम दर्शन का, जो तुम सम होवे।
उसकी महिमा के वर्णन से, पातक सब खोवे॥५॥

मन्द बुद्धि निर्बल है, 'अरुणा' अरज करे गुरु से।
एक यही वर दे दो स्वामी! हो समाधि सुख से॥६॥

प्रणम्य सागर जी मुनिराज की जय

- प्र** - प्रथम आत्म का ज्ञान कर, तजा देह से राग।
ण - णमोकार के जाप से, उमड़ा मन वैराग।
म्य - म्यान एक में हों नहीं, कभी दोय तलवार।
सा - साधु शरण में आगए, छोड़ सभी घरबार।
ग - गरिमामय व्यक्तित्व है, जीवन सहज उदार।
र - रत रहते शुभोपयोग में, संयम को स्वीकार।
जी - जीत लिए पंचेन्द्रि-मन, द्वादश तप आह्लाद।
मु - मुख्य स्वानुभव आत्मरस, गौण देहसुख स्वाद।
नि - नित्य आत्मबल की स्वयं, करें परीक्षा आप।
रा - राग-द्वेष के शमन से, हृदय हुआ निष्पाप।
ज - जहाँ-जहाँ विचरण हुआ, योग अर्हम् की धूम।
की - कीमत जानी ध्यान की, रहे जगत जन झूम।
ज - जनता जय-जयकार कर, स्वागत करे महान।
य - यही भाव 'अरुणा' करे, हो गुरुवर-निर्वाण।



रचयित्री

श्राविका रत्न श्रीमति अरुणा जैन भारती

अनुक्रमणिका

विषय	Page No.
1. अदृश्य को दिखाने वाली स्तुति	1
2. चित्त एकाग्र करने वाली स्तुति	10
3. उत्कृष्ट पुण्य फल प्रदायी स्तुति	18
4. बुद्धि-कला-विकासिनी स्तुति	31
5. लक्ष्मी प्राप्ति स्तुति	45
6. वंशवृद्धिकर स्तुति	54
7. इच्छित फल देने वाली स्तुति	63
8. सर्व अनिष्ट ग्रह निवारक स्तुति	73
9. कालसर्पादि योग निवारक स्तुति	83
10. सर्व रोगहरण स्तुति	92
11. मिथ्या आग्रह नाशक स्तुति	102
12. पुण्योदयकरी स्तुति	112
13. समृद्धिवर्धक स्तुति	122
14. जन्मोत्सव स्तुति	136
15. केवलज्ञानोत्सव स्तुति	145
16. आनन्ददायी स्तुति	158
17. सर्पादि भय निवारक स्तुति	167
18. संदेह निवारक स्तुति	179
19. दीक्षाप्रदायी स्तुति	188
20. चारित्र विशुद्धि वर्धक स्तुति	197
21. रौद्र उपद्रव नाशक स्तुति	206

22. अनिष्ट बंधन विनाशी स्तुति	215
23. उत्कृष्ट पद प्रदायी स्तुति	223
24. अहंकार नाशी स्तुति	232
25. संकट मोचन स्तुति	246
26. कुलदीपक दायी स्तुति	255
27. सम्यक्त्व प्रदायी स्तुति	264
28. पराक्रमकारी स्तुति	279
29. सिंहासन दायी स्तुति	293
30. छल कपट नाशी स्तुति	302
31. मुख तेज वर्धन स्तुति	316
32. सम्मोहनकारी स्तुति	325
33. शोक विनाशक स्तुति	334
34. आत्महत्याविनाशकस्तुति	343
35. कामवेदना नाशक स्तुति	352
36. भू सम्पदादायी स्तुति	361
37. सुभिक्ष करी स्तुति	370
38. चित्त हरण करी स्तुति	383
39. मित्रवर्धक स्तुति	392
40. निर्मल हृदय करी स्तुति	401
41. धर्म चक्र प्रवर्तनकरी स्तुति	410
42. सर्वसिद्धिदायक स्तुति	418
43. आत्मगुणों की शक्तिवर्धक स्तुति	426

44. निश्चिन्त करने वाली स्तुति	441
45. हिंसा नाशक स्तुति	455
46. मनोरथ सफलकरी स्तुति	464
47. मुख नेत्रादि पीड़ा विनाशक स्तुति	473
48. सौभाग्यवर्धक स्तुति	483
49. अकास्मिक फल प्रदायी स्तुति	493
50. धर्मानुराग वर्धक स्तुति	502
51. विमुक्त व्यक्ति मेलापक स्तुति	511
52. परलोक सुख करी स्तुति	525
53. रत्नत्रय प्रदायी स्तुति	534
54. प्रशंसा वर्धक स्तुति	544
55. गुप्त सम्पदा दायक स्तुति	558
56. याचक संतुष्टि करी स्तुति	567
57. यात्रा विघ्न निवारक स्तुति	581
58. अन्तराय निवारक स्तुति	590
59. विजेता कारक स्तुति	599
60. अन्य मन्त्र तंत्र प्रभाव रोधक स्तुति	608
61. जल भय निवारक स्तुति	617
62. संसार भय तारक स्तुति	626
63. उत्तम शरण दायक स्तुति	634
64. सर्व कार्य सफलतादायक स्तुति	643

श्री वर्धमान स्तोत्र बीजाक्षर भक्ति

मंगलाचरण

अरिहन्तों को नमन कर,
सिद्ध सुगुण मन लाय ।
बन्दू भक्ति भाव से,
गणधर पद सुखदाय ॥

तीर्थकर की दिव्यधुनि
झेलें गणधर देव ।
परम्परा से मनन कर
द्वादशांग करि सेव ॥

मुनि प्रणम्य आशीष ही,
मेरे प्राणाधार ।
गुरुपद तिष्ठे मम हृदय,
रचना पूर्ण विचार ॥

अदृश्य को दिखाने वाली स्तुति

श्री वर्धमान जिनदेव पदारविन्द-
युग्म-स्थितांगुलिनखांशु-समूहभासि।
प्रद्योततेऽखिल-सुरेन्द्रकिरीट-कोटि-
भक्त्या 'प्रणम्य' जिनदेव-पदं स्तवीमि ॥1॥

(छन्द दोहा)

श्री श्रीमद वीर जिनेश पद, वीतराग भगवान।
हितकारी - सर्वज्ञ जिन, बन्दू मन धर ध्यान ॥1.1॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'श्री' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...

व वश वैरागी भाव के, छोड़ चले घरबार।
दीक्षा लेकर हो गए, मुनि प्रणम्य अविकार ॥1.2॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'व' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...

ध वर्धन को चारित्र के, गुरुपद शीश नवाय।
निरतिचार पालें सदा, सुगुणमूल सुखदाय ॥1.3॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'ध' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...

मा माया-मान तजे सभी, क्रोध लोभ दुखदाय।
ये कषाय आतम कसें, जिय भव-भव भटकाय ॥1.4॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'मा' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...

न नगन दिगम्बर साधु पद, वन्दे तीनों लोक।
पंच परम परमेष्ठी, हरे जगत के शोक ॥1.5॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'न' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...

जि जिन-जिनने श्रद्धा धरी, जिन वच लें उर धार।
चलें निःशंक शिवराह पर, होते भव से पार ॥1.6॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'जि' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...

न

नय-प्रमाण से जान लें, लक्षण श्री जिनदेव।

निःकाङ्क्षित प्रभु पूज लें, करें चरण की सेव॥1.7॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'न' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

दे

देता लेता कौन है, निज करमन अनुसार।

सुख-दुख को हम भोगते, पुण्य-पाप स्वीकार॥1.8॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'दे' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

व

वचन-काय-मन से सदा, तीनों योग निरोध।

अध्ययन से श्रुत के मिले, जैन धरम का बोध॥1.9॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'व' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

प

पन पापों को है कहा, आतम हित में हेय।

पंच अणुव्रत धार लें, सब को है उपादेय॥1.10॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'प' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

दा

दान तीर्थ का दिवस ये, अक्षय तृतिया जान।

हस्तिनापुर में हो गया, अक्षय इक्षु समान॥1.11॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'दा' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

र

रस इक्षु वृषभेष ने, लिया विधी-अनुसार।

दीर्घ काल पश्चात ही, पा चर्या सुखकार॥1.12॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'र' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

वि

विनत सोम-श्रेयांस ने, पड़गाहे मुनिराज॥

करें भरत सम्मान द्वय, यश फैला नृपराज॥1.13॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'वि' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

न

नन्दो विरदो लोक में, धन्य हुआ दिन आज।

पात्र दान जो भी करे, हो सम्मान समाज॥1.14॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'न' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

द

दयासिंधु जिनराज को, मन मन्दिर में धार।

मन वच तन पूजा करूँ, आतम हित सुखकार॥1.15॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'द' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

यु

युग-युग में अवसर मिलें, अल्प हि दान महान।

निज-पर हित के कारणे, दें भावों से दान॥1.16॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'यु' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

ग्

ग्यानी ध्यानी जीव जो, रमें निजात मसार।

नाशें तिमिर अज्ञान सब, ज्ञान ज्योति उपकार॥1.17॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'ग्' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

म

महा मोह बलवान है, सबको वश कर लेत।

जीता बस जिनराज ने, दुःख जगत को देत॥1.18॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'म' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

स्

स्थित हुए जो स्वात्म में, वे नहीं जग भटकाय।

जिन भक्ति की नाव में, बैठ पार हो जाय॥1.19॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'स्' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

थि

थिर होकर ध्याएँ सदा, आत्मदेव हितकार।

जग का फंदा टूटकर, मिले स्वरूप हि सार॥1.20॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'थि' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

तां

अवनतांग युत भक्ति जिन, कही मुक्ति का द्वार।

शरणागत जो भी प्रभू, हो अवश्य उद्धार॥1.21॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'तां' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

गु

गुप्ति समिति को पालते, पंच महाव्रत धार।

तेरह विधि चारित्र ये, मुनियों को हितकार॥1.22॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'गु' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

लि लिप्त ना हों संसार में, पर में ना आसक्त।

भव भव भ्रमण करे वही, जो हो विषयासक्त॥1.23॥

ॐ ह्रीं अर्हं वर्तमानशासननायक 'लि' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...।

न नम्र रहें व्यवहार में, विनयवान मुनिराज।

मुक्ति रमा की है सखी, मिले मोक्ष साम्राज्य॥1.24॥

ॐ ह्रीं अर्हं वर्तमानशासननायक 'न' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...।

खां नखांशु श्री जिनराज की, प्रसरित अपरम्पार।

पावन ज्योती से हुआ, नष्ट मोह-अन्धकार॥1.25॥

ॐ ह्रीं अर्हं वर्तमानशासननायक 'खां' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...।

शु अंशुमालि नभ में उगे, उजियारा जग होय।

ज्ञान ज्योति हिरदय प्रकट, ज्ञाता स्व-पर-विलोय॥1.26॥

ॐ ह्रीं अर्हं वर्तमानशासननायक 'शु' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...।

स सम सुभाव धारण करें, धरें न राग रू द्वेष।

प्रेम भाव विस्तारते, हो जाते परमेश॥1.27॥

ॐ ह्रीं अर्हं वर्तमानशासननायक 'स' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...।

मू मूरख हि तेरा-मेरा, करते रहें हमेश।

जो जानें 'पर' आत्मसम, दिवि में होंय सुरेश॥1.28॥

ॐ ह्रीं अर्हं वर्तमानशासननायक 'मू' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...।

ह हम सब का कर्तव्य ये, जानें आतम - देह।

स्वातम सबसे भिन्न है, तजें देह से नेह॥1.29॥

ॐ ह्रीं अर्हं वर्तमानशासननायक 'ह' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...।

भा भास रहा सुख विषय में, आनन्द को नहि जान।

प्याला उसका जो पिये, परमानन्द प्रमाण॥1.30॥

ॐ ह्रीं अर्हं वर्तमानशासननायक 'भा' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...।

सि सिमरन कर भगवान का, हो जा एक समान।

कौन गुणी गुण कौन है, कौन करे गुण गान॥1.31॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'सि' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

प्र प्रथमहि सम्यग्दृष्टि हो, फिर हो सम्यग्ज्ञान।

सदाचरण जब जीव का, हो आतम-उत्थान॥1.32॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'प्र' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

द्यो द्योतित हो दिनकर गगन, हरे गहन अँधियार।

केवलज्ञान प्रकाश से, मिट अज्ञान अपार॥1.33॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'द्यो' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

त तम अज्ञान में जीव को, नहीं भेद विज्ञान।

आगम के आलोक में, भिन्न-भिन्न सब जान॥1.34॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'त' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

ते तेरा क्या है लोक में? तू है किसका स्वामि?

जो निज-पर को जानते, वे ही अन्तर्यामि॥1.35॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'ते' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

खि खिल-खिल जाता है हृदय, जब दर्शें भगवान।

इकटक जब अवलोकते, होता आतम ज्ञान॥1.36॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'खि' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

ल लहराता श्रुत उदधि है, अन्तस्तल में शुद्ध।

जो डूबे उसमें मिलें, तत्त्व रत्न अविरुद्ध॥1.37॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'ल' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

सु सुन-सुन कर जिनवाणि को, होय अटल विश्वास।

दृढ़ता से आगे बढ़े, मेरी निधि मुझ पास॥1.38॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'सु' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

३

रेत फिसलती हाथ से, बन्द मुष्टि के बीच।

आयु बीती जाय यों, चाहे नयना मीच॥1.39॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'रे' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

न्

इन्द्रादिक भी पूजते, परमेष्ठि के पांय।

धन्य जन्म निज मानते, जिन कल्याणक आय॥1.40॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'न्' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

द्र

द्रव्य भाव नोकर्म से, न्यारे सर्व सिधेश।

बतलाया अरिहन्त ने, जय जय जयति जिनेश॥1.41॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'द्र' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

कि

कितना सुख हो सिद्ध का, हम ना सकते जान।

चक्री सुर वैभव नहीं, हो इतना सुखदान॥1.42॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'कि' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

री

रीति त्याग-सुख की मही, उपजाए सुखधाम।

इसीलिए सब सिद्ध लें, निज पद में विश्राम॥1.43॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'री' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

ट

भटक-भटक कर लोक में, भ्रमता फिरता जीव।

कभी ना जाना आत्मा, भव दुख सहे सदीव॥1.44॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'ट' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

को

कोना-कोना लोक का, देख लिया संसार।

उपजा-मरा असंख्य भव, किया ना निज निर्धार॥1.45॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'को' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

टि

कोटि-कोटि वन्दन प्रभो, हरो भ्रमण की पीर।

प्रकटाएँ गुण आत्म के, छूटे मोह शरीर॥1.46॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'टि' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

भ निर्भय होकर चलो मोक्षमग, तब निज पद को पाओ।
यही सरल सिद्धान्त प्रभू ने , कहा स्वयं अपनाओ॥1.47॥
ॐ ह्रीं अर्हं वर्तमानशासननायक 'भ' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...

क् क्यों नहि नर भव पाय कर, धारण करे विवेक।
अन्य किसी पर्याय से, मुक्त न होवे नेक॥1.48॥
ॐ ह्रीं अर्हं वर्तमानशासननायक 'क्' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...

त् त्याग दिया सुख देह का, आतम हित के काज॥
आतम सुख में मगन हो, रमण करें मुनिराज॥1.49॥
ॐ ह्रीं अर्हं वर्तमानशासननायक 'त्' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...

या याद करें सब सूरि जिन, हुए जु पूरब काल।
उपदेशामृत पान हित, नमें झुका कर भाल॥1.50॥
ॐ ह्रीं अर्हं वर्तमानशासननायक 'या' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...

प्र प्रणमि गुरूपद विनय से, शीश झुकाते नित्य।
निज को बालक जानते, पिता तुल्य गुरु सत्य॥1.51॥
ॐ ह्रीं अर्हं वर्तमानशासननायक 'प्र' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...

ण णमो णमो का पाठ कर, ध्याते नित नवकार।
इसी मंत्र के जाप से, उतरे भव से पार॥1.52॥
ॐ ह्रीं अर्हं वर्तमानशासननायक 'ण' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...

म् म्यान अलग तलवार से, जाने सकल जहान।
अज्ञानी ना जानता, भरमत है बिन ज्ञान॥1.53॥
ॐ ह्रीं अर्हं वर्तमानशासननायक 'म्' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...

य यही ज्ञान हितकार है, ममता देह छुड़ाय।
जग से नाता तोड़कर, भव से पार लगाय॥1.54॥
ॐ ह्रीं अर्हं वर्तमानशासननायक 'य' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...

जि

जिनका जीवन जगत में, व्यर्थ धरा तन आय।

विषयों में ही फँस रहे, जीवन दिया गँवाय॥1.55॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'जि' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

न

नहीं जानते मूल्य वे, यह नरतन अनमोल।

ना अभाव भव का किया, करते रहे किलोल॥1.56॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'न' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

दे

देने वाला पुण्य कृत, पिछले जीवन माँहि।

ना इस भव में कर सके, तो आगे भी नाहिं॥1.57॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'दे' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

व

वस्तु सुभाव हि धर्म है, कृत-कारित हैं कर्म।

भाव शुभाशुभ - मोचना, यही धर्म का मर्म॥1.58॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'व' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

प

'पर' में ना आसक्त हों, धरें न तन में प्रीत।

स्वातम में ही रम रहे, यही धर्म की रीत॥1.59॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'प' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

दं

दं-शं कर पन इन्द्रियाँ, करलें शमन कषाय।

इच्छा का भी दमन हो, हनन विकार सुभाय॥1.60॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'दं' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

स्

स्तवन करें जिनराज का, तिष्ठे भक्ती नाव।

राग द्वेष को त्याग दें, चूक ना जाएँ दाँव॥1.61॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'स्' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

त

तप का ही बस आसरा, सर्व अशुद्धि नशाय।

तन-मन को निर्मल करे, राग द्वेष मिट जाय॥1.62॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'त' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

वीतराग सर्वज्ञ जिन, हित उपदेशी नाथ।

वसुकर्म को जीत सिद्ध, हम जोड़ें जुग हाथ॥1.63॥

ॐ ह्रीं अर्हं वर्तमानशासननायक 'वी' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...

मिले निराकुल सुख हमें, शास्त्र ज्ञान सुखकार।

जिन वचनों के यान चढ़, उतरें भवदधि पार॥1.64॥

ॐ ह्रीं अर्हं वर्तमानशासननायक 'मि' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...

पूणाईय

जिनपद युग में भक्ति से, करें नमन सुखकार।

मुनि प्रणम्य स्तुति करें, निज-पर को हितकार ॥1॥

ॐ ह्रीं जिनपद नमन प्रतिपादकाय अर्हं महाबीजाक्षरसहिताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय
नमः पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।



चित्त एकाग्र करने वाली स्तुति

नाहंकृतेऽहमिति नात्र चमत्कृतेऽपि,
बुद्धेः प्रकर्षवशतो न च दीनतोऽहम्।
श्रीवीरदेव - गुण - पर्यय - चेतनायां,
संलीन - मानस - वशः स्तुतिमातनोमि ॥2॥

(छन्द ज्ञानोदय)

ना

ना मैं भोग विषय को चाहूँ, नहीं चाहूँ सुख स्वर्गों के।
तुम चरणों की प्रीति मिले बस, फल हों उत्तम पुण्यों के॥2.1॥

ॐ ह्रीं अर्हं वर्तमानशासननायक 'ना' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...।

हं

हंता हो प्रभु घाति कर्म के, तुम चरणों में शरण मिले॥
जब तक साँसें चलती रहती, तब तक प्रभु का दर्श मिले॥2.2॥

ॐ ह्रीं अर्हं वर्तमानशासननायक 'हं' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...।

कृ

कृत कारित- अनुमोदन से ही, शुभ कर्मों की परिणति हो।
शुभ की आदत पड़ जाए तो, सदाचरण अनुभूति हो॥2.3॥

ॐ ह्रीं अर्हं वर्तमानशासननायक 'कृ' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...।

ते

तेजस्वी हो ब्रह्मचारी तो, ओजस्वी हो मुखमण्डल।
ऐसा कर जाँ कुछ तो हम, लाभान्वित हो भूमण्डल॥2.4॥

ॐ ह्रीं अर्हं वर्तमानशासननायक 'ते' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...।

ह

हर पल हर छिन एक लगन हो, तन को तप से तपाना है।
प्रभु के पूजन- सुमरण में ही, चंचल मन को लगाना है॥2.5॥

ॐ ह्रीं अर्हं वर्तमानशासननायक 'ह' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...।

मि

मिलना भारत देश-सुसंगति, उच्च कुलों का दुर्लभ है।
ऐसे शुभ संयोग मिलें तो, सम्यक् चारित दुर्लभ है॥2.6॥

ॐ ह्रीं अर्हं वर्तमानशासननायक 'मि' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...।

ति

तिरना है भवसिंधु से तो, भाव विकार नशाना है।

संयम के बीजों को बोकर, शिवफल को उपजाना है॥2.7॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'ति' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

ना

नाच-कूद करलें कितने भी, लगन ना यदि स्वातम पाई।

तो फिर निष्फल हैं व्रत आदि, कहते मुनिजन समझाई?॥2.8॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'ना' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

त्र

त्रय गुप्ति से मन-वच-तन को, यथाशक्ति हम गुप्त करें।

दूजों की भी आपद टारें, अपने भी दुष्कर्म हरे॥2.9॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'त्र' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

च

चरणों में जिन मुनिराजों के, ऋद्धि सिद्धियाँ खेल करें।

हम भी चरण - शरण पाएँ तो, अपने मन का मैल हरे॥2.10॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'च' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

म

मन-मन्दिर में नाथ विराजो, जब चाहूँ मैं गुण गाऊँ।

गुण गायन करते-करते ही, तुमसा ही प्रभु हो जाऊँ॥2.11॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'म' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

त्

त्याग भावना सर्वश्रेष्ठ है, निज स्वरूप बतलाती है।

त्याग वृद्धि से ही ये आतम, निज स्वभाव को पाती है॥2.12॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'त्' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

कृ

कृपा आपकी मिले नाथ अब, तन- मन से दृढ हो जाऊँ।

समता से सामायिक करके, कर्म बन्ध ढीले पाऊँ॥2.13॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'कृ' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

ते

तेजोमय मुखमण्डल प्रभु का, समवशरण में दिखता है।

अष्ट प्रातिहार्यों का वैभव, रत्नों सम ही दिपता है॥2.14॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'ते' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

पि

पिसते हैं लौकिक कष्टों की, चक्की में जीते-मरते।

लेकिन जो लगते कीली से, वे ही बस केवल बचते॥2.15॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'पि' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

बु

बुद्धिमान वे ही कहलाते, दूरदर्शी जो होते हैं।

बाढ़ बढ़े फिर क्या नदियों के, बाँध कहीं बन पाते हैं?॥2.16॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'बु' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

द्वे

बुद्धे भाव से जो जन पहले, शिव पथ पर चल पाते हैं।

वे ही पीछे मुक्ति प्राप्त कर, आतम मोद मनाते हैं॥2.17॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'द्वे' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

प्र

प्रजापाल भूपाल कहाते, न्याय-नीति शासन करते।

पुत्र समान ही नगर जनों का, यथायोग्य पालन करते॥2.18॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'प्र' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

क

कर्म चार का जाल जु काटें, वे अरिहन्ता कहलाते।

वसु कर्मों का जाल काट कर, सिद्ध परमपद वे पाते॥2.19॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'क' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

र्ष

आर्ष मार्ग पर जो चलते हैं, मूलाम्नाय बचाते हैं।

सन्त शिरोमणि विद्या गुरु सम, पंच काल महकाते हैं॥2.20॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'र्ष' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

व

वस्तु तत्व का ज्ञान प्राप्त कर, सज्जन निज में स्थित हो।

जो केवल पर्याय को लखते, वे ही बस व्याकुल चित्त हों॥2.21॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'व' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

श

शम - दम - यम के द्वारा साधू, चंचल मन पर जय पाते।

जो मन के नौकर बनते हैं, वे दुर्गति में भटकाते॥2.22॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'श' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

तो

तोराम्बु - नीरोदक - जल से, मुनि मन की उपमा देते।

हम तो श्रीजिन वचनों से ही, निज मन शीतल कर लेते॥2.23॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'तो' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

न

नग्न दिगम्बर रूप साधु का, सबका मन हर लेता है।

जिनवर की पहचान जान कर, जन-जन शीश नवाता है॥2.24॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'न' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

च

चन्द्र-सूर्य का तेज भी फीका, भामण्डल के सन्मुख हो।

समवशरण में भेद रात-दिन, नहीं किसी को दर्शित हो॥2.25॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'च' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

दी

दीनानाथ अनाथ जनों के, केवल तुम रखवाले हो।

भवसागर में गिरे हुए जो, तुम्ही बचाने वाले हो॥2.26॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'दी' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

न

नदी तटों से बँधी हुई तो, मर्यादा में बहती है।

टूट जाए यदि कोई किनारा, तो विनाश कर देती है॥2.27॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'न' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

तो

तोष चली पर ठण्डे गोले, हुए तीर्थ महावीरा में।

मुश्किल में आ जाते हैं तो, भक्ति उमड़ती भक्तों में॥2.28॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'तो' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

ह

हवा चले यदि शीतल सुरभित, तन को सुखकर लगती है।

यही अगर आँधी बन जाए, दुखदाई बन जाती है॥2.29॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'ह' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

म्

म्यान भिन्न तलवार भिन्न हो, अज्ञानी को एक समान।

त्यों जड़ तन से भिन्न चेतना, ज्ञानी कर लेता उत्थान॥2.30॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'म्' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

श्री

श्रीमद् महावीर शोभित हों, अन्तरंग-बहिरंग श्रीः।

बहिरंग है समवशरण शुभ, अन्तरंग कैवल्य श्रीः॥2.31॥

ॐ ह्रीं अर्हं वर्तमानशासननायक 'श्री' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...।

वी

वीतराग-सर्वज्ञ-हितंकर, भविजन की पूरे सब आस।

ज्ञान भानु का उदय होय तो, मोह तिमिर का होता नाश॥2.32॥

ॐ ह्रीं अर्हं वर्तमानशासननायक 'वी' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...।

र

रस पी लेता जो स्वातम का, अजर-अमर हो जाता है।

इच्छाओं का पूर्ण-अभाव हि, सबको मुक्ति प्रदाता है॥2.33॥

ॐ ह्रीं अर्हं वर्तमानशासननायक 'र' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...।

दे

देवों-नारकियों को होता, ज्ञान अवधि भव का प्रत्यय।

तिर्यचों-मनुजों को होता, ज्ञान अवधि गुण का प्रत्यय॥2.34॥

ॐ ह्रीं अर्हं वर्तमानशासननायक 'दे' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...।

व

वश होकर के लम्पटता के, अणुव्रत नहीं धारते जो।

इस नरभव को पाकर के भी, लाभ नहीं ले पाते वो॥2.35॥

ॐ ह्रीं अर्हं वर्तमानशासननायक 'व' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...।

गु

गुण अनन्त हैं हर आतम में, बन सकते सब परमात्म।

गुण अभिव्यक्त करें पहले तो, चारित से हो शुद्धात्म॥2.36॥

ॐ ह्रीं अर्हं वर्तमानशासननायक 'गु' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...।

ण

णमोकार शुभ महामन्त्र में, द्वादश-अंग समाहित हैं।

जाप इसी का करें सदा हम, इस ही में आत्महित है॥2.37॥

ॐ ह्रीं अर्हं वर्तमानशासननायक 'ण' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...।

प

पञ्च समितियाँ - ईर्या - भाषा, एषण- निक्षेपण आदान।

प्रतिष्ठापना साधु तजे मल, हो निर्जन्तु-प्रासुक स्थान॥2.38॥

ॐ ह्रीं अर्हं वर्तमानशासननायक 'प' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...।

र्य

पर्यय-गुण युत कहा द्रव्य है, सद्रव्य लक्षण पहचान।

व्यय-उत्पत्ति-ध्रौव्य सत जानो, तीन दशा होती गतिमान॥2.39॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'र्य' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

य

यही ज्ञान मद मोह हरेगा, नाशे राग वृत्ति दुखदान।

हो संसार दशा का छेदन, जब हो तन चेतन का ज्ञान॥2.40॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'य' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

चे

चेतन - चेतन में डूबेगा, तो होगा चेतन कल्याण।

भव-भव का होगा अभाव तब, जब हो निज का सच्चा ज्ञान॥2.41॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'चे' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

त

तप ही दोष विकार नशाता, तप ही शुद्ध बनाता है।

तपसी को जो भव बन में भी, मोक्ष मार्ग दर्शाता है॥2.42॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'त' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

ना

नाम मात्र जो जपते प्रभु का, पाप नाश हो जाते हैं।

सहस अठोत्तर नाम जपें जो, बन्ध शिथिल हो जाते हैं॥2.43॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'ना' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

यां

यां- जु आठों ध्यान में प्रभु के, रहते हैं जो अन्तर्लीन।

अनुमोदन उनका करता हूँ, हो जाऊँ मैं भी तल्लीन॥2.44॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'यां' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

सं

संरम्भ-समारम्भ-आरम्भ, जो मन वच तन से करते।

शुभ क्रियाएँ करें तो उत्तम, बहुते पापों को हरते॥2.45॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'सं' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

ली

लीन रहें जो स्वातम में ही, वे नहीं होते निज से दूर।

पर परिणति में चित्त ना लगता, कर देते करमों को चूर॥2.46॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'ली' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

न

नर तन को तो देव तरसते, साधन है ये शिवपुर का।

जिन को प्राप्त हुई है ये निधि, मूल्य न जानें वे इस का॥2.47॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'न' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

मा

मात सरस्वति जो मन धारें, जिन वच का पालन करते।

वे ही निजानन्द को पाते, कर्म कलंक सभी हरते॥2.48॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'मा' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

न

नमन करें हम परमेष्ठि को, पाँचों जग के उपकारी।

बिन कारण ही हितोपदेशी, पूज्य परम पद हितकारी॥2.49॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'न' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

स

सन-सन करती हवा चले जब, शीत लहर तन कम्पाती।

साधु निराकुल तप करते तब, नहीं बुद्धि पर में जाती॥2.50॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'स' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

व

वशी होय विषयाशाओं के, जीव भटकता जग नादान।

देव शास्त्र गुरु शरण प्राप्त कर, हो जाता आतम उत्थान॥2.51॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'व' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

शः

यशः कीरती उदय जीव का, जग में यश फैलाता है।

अल्प प्रयासों से ही सब में, वह ऊँचा पद पाता है॥2.52॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'शः' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

स्

वस्तु स्वरूप जानते जो जन, जीवन सरल बनाते हैं।

है सुभाव जल का तो शीतल, गर्म भी ठंडा पाते हैं॥2.53॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'स्' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

तु

तुमुल नाद हो बजे नगाड़े, रण भूमी में जोश बढ़ें।

अपने अपने हथियारों की, योद्धा सभी संभाल करें॥2.54॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'तु' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

उत्कृष्ट पुण्य फल प्रदायी स्तुति

उच्चैः कुल-प्रभवता सुखसाधनानि,
सौन्दर्य-देह-सुभग-द्रविण-प्रभूतम्।
मन्ये न मोक्ष-पथ-पुण्यफलं प्रशस्तं,
यावन्न भक्तिकरणाय मनः प्रयासः ॥३॥

(छन्द पद्धती)

उ

उत्तम कुल उत्तम गोत्र पाय।
भवि दान सुपात्र ही करत आय।
सत्संगति में जीवन बिताय।
भव-भव अभाव करते सुभाय ॥३.१॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'उ' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...

चैः

उच्चैः अशोक तरू हरे शोक।
जिनवर के ऊपर शुभ विलोक।
नहिं काय वनस्पति वृक्ष जान।
पृथ्वी कायिक होता महान ॥३.२॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'चैः' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...

कु

कुल पिता पक्ष संबन्ध जान।
कहें जाति पक्ष जननी सु मान॥
कुल-जाति-पिंड सब शुद्ध होय।
निज भाव शुद्धि भी तबहि होय ॥३.३॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'कु' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...

ल

लज्जा नारी का गुण पिछान।
किन्तु साधू-अवगुण महान॥
है नग्नता आभूषण जु सन्त।
हम पिच्छी-कमंडलु युत नमन्त ॥३.४॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'ल' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...

प्र

प्रशमहि युत आस्तिक्यता धार।
अनुकम्पा हो संवेग सार॥
ये समकित के गुण चार गाय।
मन सहज सरल हो तभी पाय॥3.5॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'प्र' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

भ

भगवन अतिशय चौतिस बताय॥
दश जनम - केवली दशम गाय॥
अतिशय सुर कृत चौदह सु जान।
तीर्थकर के ही हों महान॥3.6॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'भ' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

व

वन-वन विचरत मुनि पाँव -पाँव।
उपदेश सुनाते गाँव-गाँव॥
इनकी उपमा जग में न कोय।
प्रकटें आतम के गुण बहोय॥3.7॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'व' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

ता

ताना-बाना बुनते हैं जीव।
रहें भाव परिग्रह के सदीव॥
साधू इच्छा सीमित कराय।
सो जीवन हो आनन्ददाय॥3.8॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'ता' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

सु

सुख-दुख जीवन में सदा होंय।
ज्ञानी इनमें नहीं खिन्न होय॥
मन में समता के भाव धार।
भव सागर उतरें शीघ्र पार॥3.9॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'सु' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

ख

खग-मृग सब भोले जीव जान।
केवल तृण जल का करत पान॥
फिर भी जो इनके प्राण लेय।
वे भी मर कर खग-मृग हि होय॥3.10॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'ख' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

सा

साधू तप करके भव नशाय।
तन मन को अपने में रमाय॥
गुर्वाज्ञा में निजमन लगाय।
जीवन नौका सहज ही तिराय॥3.11॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'सा' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

ध

धन व्यसनों में जो भी लगाय।
मरने पर भी नहिं साथ जाय॥
भोगो - या दे दो दान भाय।
वरना तो निश्चय ही नशाय॥3.12॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'ध' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

ना

नाना गुण धारे जीव कोय।
अवगुण उसमें बस एक होय॥
तो भी सबको दोष हि दिखाय।
गुण भी उसके जाते छिपाय॥3.13॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'ना' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

नि

निर्जन वन में जन भटक जाय।
नहिं अन्धकार में पथ दिखाय॥
तब नभ में चपला चमक जाय।
राही तत्क्षण पथ ज्ञान पाय॥3.14॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'नि' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

सौ

सौधर्म इन्द्र साकेत आय।
जिन जन्मोत्सव हर्षित मनाय॥
शिशु जिन को लेय सुमेरु जाय।
वहाँ न्हवन क्षीर-नीर हि कराय॥3.15॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'सौ' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

न

आनन्द भाव ताण्डव रचाय।
प्रभु के पिछले दस भव दिखाय॥
पद दायांगुष्ठ जो चिह्न पाय।
लांछन प्रसिद्ध वह ही कहाय॥3.16॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'न' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

द

दश भेद धरम उर में सुधार।
पन अणुव्रत पालें, नहीं है जिन-उदार॥
अष्टम् वर्ष हि गुनथान पाँच।
वे जिन कुमार गुरु जगत साँच॥3.17॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'द' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

र्य

सूर्य उगता तो दिवस होय।
जब छिप जाता तो रैन होय॥
यों ज्ञान ज्योति जब प्रकट होय।
अज्ञान अंधेरा नष्ट होय॥3.18॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'र्य' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

दे

देह जिनवर की मल रहित होय।
तब सुरभित शोणित श्वेत होय॥
नहिं स्वेद-खेद-विस्मय सुजान।
अष्टादश दोष रहित प्रमाण॥3.19॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'दे' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

ह

हनते प्रभु घातिया कर्म चार।
हुआ ज्ञान केवली गुण अपार॥
हम करें याचना बार-बार।
हम को भी भवजल तार-तार॥3.20॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'ह' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...

सु

सुर सुमन वृष्टि करते अपार।
वाणी जिनमुख से खिरत सार॥
ढेरें जहाँ चौंसठ चमर देव।
शत इन्द्र करें प्रभुचरण सेव॥3.21॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'सु' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...

भ

भवि संज्ञी पंचेन्द्रिय हि जाय।
प्रभु दर्शन कर मन मोद लाय॥
भव-भव के वैरी संग रहाय।
इक घाट पियें जल सिंह-गाय॥3.22॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'भ' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...

ग

गरभागम हो मंगल जिनेश।
सबके मन मिटते कष्ट-क्लेश॥
आनन्द मोद नगरी में छाया।
हो रत्नवृष्टि आनन्ददाय॥3.23॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'ग' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...

द्र

द्रव्य कहते षट् लोक माँहि।
जो इनको जाने मोह नाँहि॥
जिन धुनि में खिरते तत्त्वसार।
हो शुद्ध जीव तो निराकार॥3.24॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'द्र' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...

वि

विधों की बाधा दूर होय।
सबके घर सुख समृद्धि होय॥
जिन चरणों की महिमा अपार।
शरणागत हों संसार पार॥3.25॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'वि' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

ण

णमोकार मंत्र सम कोय नाय।
महा मंगलमय कहते जिनाय॥
है द्वादशांग का लघू रूप।
परमेष्ठि परम पन नमें भूप॥3.26॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'ण' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

प्र

प्रभात होय नभ सूर्य आय।
सब तारागण मानों छिपाय॥
रजनी भी नहिं देती दिखाय।
तम भी डर कर कहीं दूर जाय॥3.27॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'प्र' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

भू

भूतल पर उजियारा दिपाय।
कमलों के वन जाते खिलाय॥
तरुवर भी झूमें नींद खोय।
पक्षीगण चहकें सुखी होय॥3.28॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'भू' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

त

तव भक्ति करें जो धन्य जीव।
स्वर्गों के सुख पावें सदीव॥
गुणगान करें सुर बहुप्रकार।
वर नृत्य करें सुरियाँ अपार॥3.29॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'त' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

म्

हों रम्य वहाँ सुरगण विमान।
जिन भवन अनूपम शोभमान॥
सुर करें विक्रिया पृथक धार।
रहे मूल देह दिवि में पधार॥3.30॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'म्' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

म

मन वांछित मेरे पूर्ण होय।
करमन भी सारे चूर्ण होय॥
अतएव शरण में नाथ आय।
तुम ही कर सकते हो सहाय॥3.31॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'म' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

न्

न्यारे - न्यारे देहात्म होय।
यह भेदज्ञान से सिद्ध होय॥
जो नहीं जानते फँसे लोक।
जीते-मरते भुगतें जु शोक॥3.32॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'न्' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

ये

ये दुःख अनन्ते करम योग।
बस जनम-मरण है एक रोग॥
अब ज्ञान हुआ तुमरा दयाल।
तुम वीतराग हो सृष्टि पाल॥3.33॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'ये' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

न

नत भाल खड़े जिन चरण आय।
प्रभु कृपा दृष्टि हम पर बनाय॥
जो शरण आपकी गहे आय।
वह आधि-व्याधि सब ही नशाय॥3.34॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'न' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

मो

ये मोह करम है दुःख दाय।
सत्तर कुड़ाकोड़ि आयु गाय॥
सब जीव इसी से दुःख पाय।
भव-भव में भवजल में डुबाय॥3.35॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'मो' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

क्ष

क्षण-क्षण मन को निज में रमाय।
पर परिणति से खुद को बचाय॥
अपना गुरु वह आपहि कहाय।
संबोध चित्त शिवराह पाय॥3.36॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'क्ष' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

प

पन्च महाव्रत लो सुखदाय।
किंतु तुम्हें लगते दुखदाय॥
अब तू निज हित को पहचान।
इस भव - पर भव में सुखदान॥3.37॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'प' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

थ

थके अगर भव-भव भटकाय।
दो पल बैठो गुरुपद आय॥
जो गुरु कहें तुम्हें समझाय।
उस से जीवन सफल बनाय॥3.38॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'थ' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

पु

पुरुष कला दो ही बतलाय।
कहने को तो बहत्तर गाय॥
एक जीविका नीती न्याय।
दूजी अपना निज पद पाय॥3.39॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'पु' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

ण्

मण्डप समवशरण कर जोय।
आते हैं वहाँ भविजन लोय॥
सुन कर के जिन ध्वनि सुखकार।
कर लेते निज आत्मोद्धार॥3.40॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'ण्' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

य

यहां भव भ्रमण अनादि होय।
अन्त काम नहीं आवे कोय॥
साँसैं जो गिनती की लाय।
सो आगे जीवन नहीं पाय॥3.41॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'य' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

फ

फल-फूल छहों ऋतुओं के आय।
तीर्थकर देव जहाँ पधराय॥
जग को होता अचरज अपार।
जिनराज आगमन सौख्यकार॥3.42॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'फ' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

लं

लंघे नर नहीं अढाई द्वीप।
होवें साधु या हो महीप॥
आगे मानुषोत्र गिरिजान।
पार कर सके ना कोय मान॥3.43॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'लं' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

प्र

प्रणम्य सिंधु मुनि शीश नवाय।
दर्शन कर मन मोद मनाय॥
अर्ह योग का ध्यान लगाय।
गुर्वाशीष से सब सुख पाय॥3.44॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'प्र' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

श

शमन करें हम काम- कषाय।
राग-द्वेष का नाश कराय॥
पाँचों पापों से बच जाय।
दुर्निवार रिपु मोह भगाय॥3.45॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'श' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

स्

स्तुति करें जिनेश्वर देव।
करें भाव भक्ती पद सेव॥
निश दिन करें नाथ गुणगान।
हो अवश्य स्वातम कल्याण॥3.46॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'स्' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

तं

तं जिन पद पंकज मन लाय।
नमूँ भक्ति गुणगान कराय॥
कैसे मै भी गुण प्रकटाय।
अपना आतम शुद्ध बनाय॥3.47॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'तं' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

या

यावत् भव हम तुमको ध्याय।
तब तक भाव अशुद्ध न पाय॥
शान्ति सम्पदा मिलती आय।
पर पदार्थ से मोह हटाय॥3.48॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'या' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

व

वचन-काय-मन तीनों योग।
आस्रव का होता संयोग॥
संवर की हम भावना भाय।
संयम को लेकर हरषाय॥3.49॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'व' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

न्

सन्त अनन्त गुणों का वास।
हर आतम में ज्ञान प्रकाश॥
ज्ञानालोक में भासे सार।
देह-आत्मा भिन्न प्रकार॥3.50॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'न्' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

न

नम्र विनयी जो जन कहलाय।
वे जीवन में दुख सह जाय॥
शीलवान जन उनको जान।
पर नारी को भगिनी मान॥3.51॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'न' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

भ

भक्ति भार से अवनत होय।
दिवि से आते सुरगण जोय।
जिन चरणों में मुकुट झुकाय।
पद नख मणियों में चमकाय॥3.52॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'भ' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

क्ति

शक्ति प्रकट करते जो लोग।
वे ही भोग सकें भव भोग॥
भक्ति मार्ग पर जो जन जाय।
वे रत्नत्रय निधि को पाय॥3.53॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'क्ति' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

क

करम योग से नरतन पाय।
उत्तम गोत्र कुल हि उपजाय॥
जिन वचनों को पालें जोय।
उनका जीवन सुखमय होय॥3.54॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'क' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

र

रणभूमि में लड़े जो आय।
जिन सेनापति युद्ध जय पाय॥
हिंसा संकल्पी ना कराय।
देश-धरम रक्षा कर जाय॥3.55॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'र' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

णा

'णाण पयास' सदा मन लाय।
तम अज्ञान को देय मिटाय॥
पूजा कर लें ज्ञान प्रकाश।
हिरदय में सन्मति का वास॥3.56॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'णा' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

य

यदि परमेष्ठी पे श्रद्धान।
आप्तागम - गुरु लेय पिछान॥
तो धर्म जैन जग में अमोल।
दे ज्ञान चक्षु सबके ही खोल॥3.57॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'य' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

म

मतलब ही संसार चलाय।
लालच ही सबके मन भाय॥
निस्पृह रहें वचन-मन-काय।
रहें साथ सब प्रीति रहाय॥3.58॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'म' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

नः

नः करोति जग में जु पाप।
उसको नहीं हो कोई सन्ताप॥
सब सुख मिलते स्वमेव आय।
सबसे हिल-मिल कर ही रहाय॥3.59॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'नः' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

प्र

या

सः

30

बुद्धि-कला-विकासिनी स्तुति

तस्मादहं शिवदसाधनसाधनाय,
भक्तेरवश्य - करणाय समुद्यतोऽस्मि।
नो चिन्तयामि निज-बुद्धि-कला-स्वशक्तिं,
तुक् निस्त्रपो भवति मातरि वा समक्षे॥४॥

(छन्द चौपाई)

त

तप - संयम - व्रत जो भी धारे।
अपना जीवन आप संवारे॥
षोडश कारण भावना भावे।
जिनपद बंध जिनंद करावे॥४.१॥

ॐ ह्रीं अर्हं वर्तमानशासननायक 'त' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...

स्

स्तुति कर मन शान्त करावें।
मानुष भव को सफल बनावें॥
सार यही जीवन बतलावें।
हो अभाव भव का कर जावें॥४.२॥

ॐ ह्रीं अर्हं वर्तमानशासननायक 'स्' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...

मा

माया - मान महा दुखदाई।
क्रोध - लोभ से होय कषायी॥
कसें कषायें आतम जानो।
आत्म शुद्धि ही उत्तम मानो॥४.३॥

ॐ ह्रीं अर्हं वर्तमानशासननायक 'मा' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...

द

दया - क्षमा सब को उपयोगी।
भोग विषय से होते रोगी॥
जैन धर्म की शरण में आओ।
अन्तर में शुभ भाव जगाओ॥४.४॥

ॐ ह्रीं अर्हं वर्तमानशासननायक 'द' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...

हं

हंता कर्म ही योगी मानो।
श्रेष्ठ स्वयं में रमना जानो॥
मोक्ष मार्ग पर चलता जो भी।
प्राप्त कर सकें मंजिल वो ही॥4.5॥

ॐ ह्रीं अर्हं वर्तमानशासननायक 'हं' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...।

शि

शिवपथ तो जिनराज दिखाते।
मुनिवर उनके पथ पर जाते॥
हम भी यही भावना भाएँ।
जिन सुमरण से सुमरण पाएँ॥4.6॥

ॐ ह्रीं अर्हं वर्तमानशासननायक 'शि' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...।

व

वन्दन कर जिन नित गुण गावें।
गुण गायन से गुण प्रकटावें॥
गुण प्रकटें तो गुणी कहावें।
गुणियों में सब नेह धरावें॥4.7॥

ॐ ह्रीं अर्हं वर्तमानशासननायक 'व' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...।

द

दमन करें जो पंचेन्द्रियों को।
मन वश करना सुगम उन्हीं को॥
जो मन के मालिक बनते हैं।
वे ही निज पद को लभते हैं॥4.8॥

ॐ ह्रीं अर्हं वर्तमानशासननायक 'द' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...।

सा

साम्यभाव उपलब्धि मानो।
समता से ममता को हानो॥
ममता भव-भव में भटकावे।
समता ही भव पार लगावे॥4.9॥

ॐ ह्रीं अर्हं वर्तमानशासननायक 'सा' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...।

ध

धन को आवश्यक कहते हैं।
धन बिन सब दुख ही सहते हैं॥
किंतु अधिक धन व्यसन करावे।
दान करे तो साथ हि पावे॥4.10॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'ध' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

न

नगर-नगर विचरण करते हैं।
साधु सदा पग-पग चलते हैं॥
थक कर चूर रहें चाहे वो।
फिर भी न गाड़ी में तिष्ठें वो॥4.11॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'न' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

सा

साथ भजन - भोजन करते जो।
सौख्य गृहस्थी का पाते वो॥
यही सफलता है जीवन की।
मिले राह उनको मुक्ती की॥4.12॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'सा' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

ध

धन्य वही जग में होते हैं।
जो गुरुजन आशिष पाते हैं॥
मात - पिता - गुरु की आज्ञा ही।
सत्पथ पर जाता वो राही॥4.13॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'ध' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

ना

नायक मोक्ष पुरी के हैं जो।
भेदक भी कर्मों के हैं वो॥
विश्व तत्त्व के ज्ञाता भी हैं।
हमको मुक्ति प्रदाता भी हैं॥4.14॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'ना' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

य

यतिबर निज स्वरूप को जानें।
यथाख्यात चारित को ठानें॥
चारित आवागमन नशावे।
अंत सलेखन निजपद पावें॥4.15॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'य' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

भ

भव से पार उतारें जो भी।
सच्चे गुरुवर हैं बस वो ही॥
देव-शास्त्र-गुरु का शरणा लें।
हम सब अपने इष्ट को पालें॥4.16॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'भ' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

क्

भक्त जनों से पूजित हैं जो।
दोष अठारह वर्जित हैं वो॥
हितकारी हैं सर्व जनों के।
हम शरणागत प्रीत लगा के॥4.17॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'क्' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

ते

तेजोमय मुखमण्डल प्यारा।
इकटक दर्शन मोद अपारा॥
जिनवर का ये अतिशय न्यारा।
सुख पाए वो अपरम्पारा॥4.18॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'ते' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

र

रज गुरूपद की पीड़ाहारी।
दुख - विपत्ति भी होय निवारी॥
गुरु चरणों में सुख पाते हैं।
भव भटकन से बच जाते हैं॥4.19॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'र' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

व

वतन हेतु जो प्राण गंवाते।
वे सीधे सुरपुर में जाते॥
देश धर्म की लाज बचाते।
देश वासि उनके गुण गाते॥4.20॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'व' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...

श

नश्वर है ये सब जिय काया।
रत्नत्रय से पवित्र कहाया॥
चेतन - तन में वास करावे।
चारित से निज पद को पावे॥4.21॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'श' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...

य

यजन करें हम जिन चरणों का।
भजन करें जिननाथ गुणों का॥
एक हि आस है अन्तर्यामी।
निज सम कर लेंगे जिनस्वामी॥4.22॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'य' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...

क

कन्धा हो मज़बूत मर्द का।
रिश्ता हो जब कोई दर्द का॥
कन्धे पर सिर रख रो लेते।
अपना मन हल्का कर लेते॥4.23॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'क' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...

र

रथ पंचेन्द्रिय तन कह देते।
आतम को है रथी बताते॥
रथी छोड़ देता जब काया।
देह मृतक वह 'अरथी' कहाया॥4.24॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'र' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...

णा

णमो जिणाणं जिनवर ध्याते।
चौंसठ ऋद्धी के गुण गाते॥
अतिशय है जिनराज तिहारा।
गणधर वलय विधान उचारा॥4.25॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'ण' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

य

यतन करें भविजन कुछ ऐसा।
जिनवर ने कीना था जैसा॥
एक यही मारग है सच्चा।
साधुजनों को लगता अच्छा॥4.26॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'य' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

स

सहस आठ जब नयन बनाएँ।
जिन दर्शन कर इन्द्र हर्षाएँ॥
ऐसा रूप शिशू जिन पाएँ।
देख-देख कर सब सुख पाएँ॥4.27॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'स' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

मु

मुक्ति मार्ग प्रभु ने दर्शाया।
महिमा देख जगत हरषाया॥
समवशरण में नाथ विराजे।
रवि-शशि कोटि देख छवि लाजे॥4.28॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'मु' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

द्य

उद्यत हुए नाथ गुण गाने।
थके देव गणधर गुरु स्याने॥
जन सामान्य गाएँ गुण कैसे?
गूँगे के गुड़ सम हम जैसे॥4.29॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'द्य' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

तो

तोष महा भक्तन को होता।
जिन धुनि सुन कर भवि भ्रम खोता॥
तत्त्व ज्ञान की चरचा होती।
भूख-प्यास अरु नींद न होती॥4.30॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'तो' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

स्

स्तुति करते भव्य प्रभू की।
रहे नाथ पर दृष्टि सभी की॥
जिन पर मुख से झरती वाणी।
हित-मित-प्रिय जग की कल्याणी॥4.31॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'स्' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

मि

मिलन होय जब जिन से मेरा।
पल-पल नाम रटूँ प्रभु तेरा॥
जब भी शरण नाथ की पाऊँ।
दीक्षा ले कर मोद मनाऊँ॥4.32॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'मि' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

नो

नोकर्म - द्रव्य - भाव कर्मों से।
दुख पाया निज दुष्कर्मों से॥
किन्तु आपके दर्शन पाए।
तो वे दुखकर कर्म नशाए॥4.33॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'नो' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

चि

चिन्तामणि प्रभु पारस देवा।
सुर-नर- मुनिजन करते सेवा॥
लोहे को सुवरण कर देते।
निज सम कर लो हम भी ध्याते॥4.34॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'चि' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

न्

न्याय-नीति से चलते हैं जो।
शुभ लक्ष्मी अर्जित करते वो॥
दान- धर्म में धनको लगाएँ।
'दान्या सो भोग्या' फल पाएँ॥4.35॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'न्' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

त

तज गए पाप - विकार - कषाया।
जीवन अपना सरल बनाया॥
दश धर्मों की महिमा गाई।
दरश विशुद्धि भावना भाई॥4.36॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'त' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

या

यान समान वचन जिन जानो।
जो भी बैठें तिरते मानों॥
औषधि भी जिनवाणी होती।
जन्म-मृत्यु के रोग को खोती॥4.37॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'या' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

मि

मिले गोत्र- कुल श्रेष्ठ उन्हीं को।
किया पूर्व जिन शुभ कर्मों को॥
अब भी निमित्त उन्होंने पाया।
उपादान पुरुषार्थ कराया॥4.38॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'मि' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

नि

निर्मल मन जल सम अविकारी।
साधु करें पुरुषार्थ भारी॥
अतः उन्हीं की शरण में जाएँ।
अपना जीवन सुखी बनाएँ॥4.39॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'नि' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

ज

जन्म मरण का रोग बढ़ा है।
जीव इन्हीं में फँसा पड़ा है॥
कैसे हो जिय का छुटकारा।
भाषो गुरुवर विविध प्रकारा॥4.40॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'ज' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

बु

बुद्धि बल से क्रीड़ा करते।
दोष स्वयं हि श्रम से हरते॥
तभी श्रमण ये कहलाते हैं।
तन मन में आनन्द पाते हैं॥4.41॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'बु' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

द्धि

ऋद्धि-सिद्धियाँ मुनि पद खेलें।
जो चाहें हम इनको लेलें॥
वे सत्पथ से भटकाते हैं॥
मुनिजन इनको ठुकराते हैं॥4.42॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'द्धि' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

क

करुणासागर करुणा कीजे।
हमको अपनी शरण में लीजे॥
दया दृष्टि ऐसी हो जाए।
हम भी शिवपथ पर चल पाएँ॥4.43॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'क' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

ला

लाभ - लक्ष्मि सब शुभ चाहत हैं।
लेकिन भला न कर पावत हैं॥
इसीलिए सब करें भलाई।
छूट जाएँ फिर सभी बुराई॥4.44॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'ला' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

स्

स्तुत्य सामने नहीं हो तो भी।
स्तुति करते भक्त वहाँ भी॥
यही भावना है हितकारी।
इससे ही हों भवि अविकारी॥4.45॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'स्' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

व

वश कर लें यदि हम निज मन को।
जीतें दर्शन - ज्ञानावर्ण को॥
मोह जीव का शत्रु कहाया।
अन्तराय को रहस्य बताया॥4.46॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'व' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

श

शत - शत नमन हमारे होवें।
जिन वच रवि हो भ्रम तम खोवें॥
जिनवाणी को मन में धारें।
अपने बिगड़े भाव सुधारें॥4.47॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'श' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

क्

आसक्ती हो यदि भोगों में।
तो परिणति होती रोगों में॥
आस्रव हो तीनों योगों से।
सो विरक्ति हो भव भोगों से॥4.48॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'क्' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

तिं

व्रतिं हुए तिर्यचों में भी।
गुणस्थान होता पंचम भी॥
आर्यिका हो पंचम गुणथानी।
इस रहस्य को जानें ज्ञानी॥4.49॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'तिं' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

तुलना नहीं नाम की होती।
 अनुपमेय गुण रूप हि ख्याती॥
 जितने परमाणु जिन तन में।
 उतने ही थे बस दुनिया में॥4.50॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'तु' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

क पक्व आम को जो भी खाते।
 निश्चित वे सन्तुष्टी पाते॥
 कच्चा आम अगर पा जाते।
 तो नहीं किंचित मन को भाते॥4.51॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'क' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

निरिहार जो व्रत रख लेते।
 निश्चय वे जन उत्तम होते॥
 मध्यम जन तो जल ले लेते।
 हो जघन्य भोजन कर लेते॥4.52॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'नि' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

स् हो प्रशस्त यदि भाव तिहारा।
 तो समझो जीवन उजियारा॥
 भाव सहित जो पूजा होती।
 वह ही भव - भव का भय खोती॥4.53॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'स्' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

त्रय योगों से कार्य करें तो।
 भोजन भी उत्तम होता वो॥
 सामग्री तो एक सी होती।
 स्वाद होय - एकाग्रता होती॥4.54॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'त्र' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

पो

पोषण करते जो काया का।
तो व्यय होता है माया का॥
लेकिन जो स्वातम को पोषें।
वे संसार जलधि को शोषें॥4.55॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'पो' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

भ

भव-भव में जो भटकाते हैं।
वे भोगों में रस पाते हैं॥
देह छोड़ आतम को जानें।
खान सुखों की निज को मानें॥4.56॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'भ' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

व

वस्त्र जीर्ण जो भी नर तारे।
नया पहन कर खुशियाँ धारे॥
यों ही जिय जीरण तन छोड़े।
नूतन तन धर मुँह को मोड़े॥4.57॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'व' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

ति

तिरना भवसागर को चाहो।
तो रत्नत्रय निधि को पाओ॥
निज में ही उपयोग लगा लो।
नर भव का उत्तम फल पा लो॥4.58॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'ति' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

मा

माता ज्यों शिशु दूध पिलावे।
शारदा माँ भी ज्ञान सिखावे॥
दुग्ध से बच्चे पुष्ट हो जाते।
ज्ञान से हम सन्तुष्टी पाते॥4.59॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'मा' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

त

तप से ही हम देह तपाएँ।
चारित से एकाग्रता पाएँ॥
होय निर्जरा कर्म झड़वें।
अविपाकी करके सुख पावें॥4.60॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'त' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

रि

रिक्त रहा मन भाव विरागी।
हुए ना; मैं तन में ही रागी॥
अब मैं चाहूँ चारित पाना।
भगवन मुझ पर कृपा कराना॥4.61॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'रि' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

वा

वास हुआ प्रभु का मन मेरे।
मिट जायेंगे जग के फेरे॥
जग प्रपंच में मन नहीं लागे।
जाऊँ शिवपथ आगे-आगे॥4.62॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'वा' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

स

समय बड़ा बलवान बताया।
कब क्या होवे - कह नहि पाया॥
उपादान को प्रबल बनाएँ।
पुरुषारथ करते ही जाएँ॥4.63॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'स' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

म

मन चंचल वानर सम जानो।
ऊपर से मदिरा पी मानो॥
कैसे उसको वश में लावें।
जिनवाणी में ही सुन पावें॥4.64॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'म' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

क्षे

'क्षे'

पूणाधिप्य

शिवसाधन को साधने, करता रहूं प्रयास।

पूर्ण अर्घ्य अर्पण करूँ, होने आत्म विकास ॥4॥

ॐ ह्रीं शिवसाधन प्रतिपादकाय अर्हं महाबीजाक्षरसहिताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय
नमः पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

लक्ष्मी प्राप्ति स्तुति

सामायिके श्रुतविचारण - पाठकाले,
यः सन्मतिं स्मरति नित्यरतिं दधानः।
तस्यैव हस्तगत-पुण्य-समस्त-लक्ष्मीं,
दृष्ट्वा न कोऽपि कुरुतेऽत्र बुधस्तथैव ॥5॥

(छन्द विष्णुपद)

सा

सामायिक का काल बाँध जो सावध त्यागे।
समय मात्र वह श्रावक साधू सा लागे ॥5.1॥

ॐ ह्रीं अर्हं वर्तमानशासननायक 'सा' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...

मा

मान महा मर्दन ना कीना रावण से कामी।
नहीं बचे कोय बन्धु बान्धव हुए मृत्यु गामी ॥5.2॥

ॐ ह्रीं अर्हं वर्तमानशासननायक 'मा' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...

यि

क्षायिक समकित को पाकर जो हुए नरकवासी।
श्रेणिक जैसे राजा होंगे जिनवर अविनाशी ॥5.3॥

ॐ ह्रीं अर्हं वर्तमानशासननायक 'यि' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...

के

केवलि पंच सहस्र धनु ऊपर अन्तरिक्ष सोहते।
सिंहासन से चार अंगुल पर अधर स्थित होते ॥5.4॥

ॐ ह्रीं अर्हं वर्तमानशासननायक 'के' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...

श्रु

श्रुत-मति ज्ञान-अवधि त्रय लेकर तीर्थकर आते।
आठ वर्ष में संयम रख पन अणुव्रत ले पाते ॥5.5॥

ॐ ह्रीं अर्हं वर्तमानशासननायक 'श्रु' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...

त

तप करने से होय निर्जरा पूर्व कर्म झड़ावें।
आगे कर्म बंध नहीं होवे तप से देह तपावें ॥5.6॥

ॐ ह्रीं अर्हं वर्तमानशासननायक 'त' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...

वि

विजय प्राप्त कर अपने ऊपर कर्म नाश कीना।

घात घातिया कर्म नाथ ने अर्हत पद लीना॥5.7॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'वि' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

चा

चार कर्म दर्शन-ज्ञानावर्ण नाशें जिनराजा।

मोहनि-अन्तराय भी हाने आतम हित काजा॥5.8॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'चा' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

र

रत रहते जो स्वातम में नहिं राग द्वेष पाया।

जीत लिया संसार तज दिए विषय भोग माया॥5.9॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'र' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

ण

णमो जिणाणं बोलें सुर-नर लगता जयकारा।

दिव्य ध्वनि सुनने को उमड़े भवि अपरम्पारा॥5.10॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'ण' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

पा

पावन जिन धुनि सुनि भव्यों को मिला मोक्ष द्वारा।

जीव अनन्तों धन्य हो गए समकित उर धारा॥5.11॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'पा' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

ठ

ठण्डी मन्द सुगन्ध पवन चलती है सुखकारा।

भव-भव वैरी भी तजते हैं वैर जु दुखकारा॥5.12॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'ठ' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

का

काम भोग के वश होकर ही जन्मे जीव दुबारा।

मुक्त हुए जो भव भोगों से हो जाते भव पारा॥5.13॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'का' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

ले

लेकर उठते नाम प्रभु का मानें उपकारा।

निजानन्द में लीन रहें वे स्वातम हितकारा॥5.14॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'ले' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

यः करोति गुरुवर चरणों की पूजा सत्कारा।
वह पा जाता है जीवन में भवसागर-पारा॥5.15॥

ॐ ह्रीं अर्हं वर्तमानशासननायक 'यः' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...

स समकित गुण मणियों की ज्योती धारें मुनिराया।
सुर-नर नमन करें चरणों में आतम सुख पाया॥5.16॥

ॐ ह्रीं अर्हं वर्तमानशासननायक 'स' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...

न् न्याय नीति से अर्जित करते जो धन को स्वामी।
दान धर्म में ही धन लगता होते शिवगामी॥5.17॥

ॐ ह्रीं अर्हं वर्तमानशासननायक 'न्' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...

म महा योग भी जिन भक्ती से तुरतहि नश जाते।
यथा समय वे ईश दया से स्वास्थ्य लाभ पाते॥5.18॥

ॐ ह्रीं अर्हं वर्तमानशासननायक 'म' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...

तिं शक्तिं जान जाँँ जो अपनी व्रतोपवास धारें।
अथवा जल लें या एकासन व्रत को स्वीकारें॥5.19॥

ॐ ह्रीं अर्हं वर्तमानशासननायक 'तिं' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...

स् वस्तु स्वरूप जान कर मुनिजन परिषह सहपाते।
तत्त्वों के निर्णय से ही वे शक्ती प्रकटाते॥5.20॥

ॐ ह्रीं अर्हं वर्तमानशासननायक 'स्' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...

म महा धैर्य धारी ब्रह्मचारी मुनि दिक्षा लेते।
पंच महाव्रत पालन करके मन में हर्षति॥5.21॥

ॐ ह्रीं अर्हं वर्तमानशासननायक 'म' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...

र रवि कैवल्य किरण को छू कर मानस खिल जाता।
अन्तर में सुज्ञान ज्योति की आभा प्रकटाता॥5.22॥

ॐ ह्रीं अर्हं वर्तमानशासननायक 'र' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...

ति तिरना चाहें जो भवसागर गुरुपद में आते।

बन जाते भगवान अर्ह की भावना जो भाते॥5.23॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'ति' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...

नि निर्जरा करके आत्मशुद्धि जो सदा बढ़ाते हैं।

वे ही तप से अपने तन को नित्य तपाते हैं॥5.24॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'नि' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...

त त्याग - तपस्या ही वैभव है साधू-सन्तों का।

बढ़ता है नित तेज सभी 'विद्या संघ' मुनियों का॥5.25॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'त' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...

य यश फैला है बाल ब्रह्मचारी निर्ग्रन्थों का।

हम भी भाग्य जगाएँ करके वन्दन चरणों का॥5.26॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'य' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...

र रक्षित निज स्वभाव में जिनको भय नहीं कर्मों का।

पूर्ण समर्पित वे गुरुपद में आशिष गुरुओं का॥5.27॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'र' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...

तिं रतिं आतम से कर्मों की सब बेड़ी कट जाती।

निधत्ति -निकाचित कर्मों से भी मुक्ती मिल पाती॥5.28॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'तिं' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...

द दर को तेरे छोड़ के भगवन!किस दर मैं जाऊँ?

सुनता मेरी कौन दुखों को कैसे किसे सुनाऊँ?॥5.29॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'द' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...

धा धारण करते जो हिरदय में जिनवर की वाणी।

होता है उद्धार उन्हीं का वाणी कल्याणी॥5.30॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'धा' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...

नः

नः करोति जो पूजा प्रभु की वो ही भटकाता।

भव-भव में दुख भोग नाहिं शिवपथ पर चल पाता॥5.31॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'नः' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...

त

तप्त स्वर्ण सम देह नाथ की कुन्दन सम सोहे।

दर्शन करके सुर-नर के भी मन को प्रभु मोहें॥5.32॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'त' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...

स्

स्तवन में नहिं समरथ हूँ मैं अल्प बुद्धि धारी।

मुझमें भी शक्ति प्रकटा दो गुरु शिवमगचारी॥5.33॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'स्' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...

यै

यै तस्यैव पुण्य फलति भगवन! जो शिवपथ पर जाता।

अपने पुरुषारथ के बल पर निज पद पा जाता॥5.34॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'यै' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...

व

वस्तु स्वरूप का चिन्तन करते मन सुख उपजावे।

नाव पड़ी मैंझधार पार वह तुरतहि हो जावे॥5.35॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'व' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...

ह

हरियाली हो जाती चहुँदिशि तीर्थकर आते।

षट् ऋतुओं के फूल फल सभी इक संग आ जाते॥5.36॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'ह' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...

स्

स्वात्म तत्त्व का ज्ञान सदा गुरुओं से मिल पाता।

एक बार भी सुने पतित तो पावन बन जाता॥5.37॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'स्' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...

त

तन्त्र-मन्त्र कितने भी कर लो यदि मृत्यु आती।

नहीं एक क्षण मिले किसी को वाणी समझाती॥5.38॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'त' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...

ग

गत मोह हुए जो जीवन में उनको उत्तम जानो।

वे ही सच्चे मोक्ष पथिक हैं उनको सरधानो॥5.39॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'ग' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

त

तरु अशोक नीचे जो आएँ शोकमुक्त होते।

अपने में स्थिर हो जाते - रोग शोक खोते॥5.40॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'त' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

पु

पुण्य फला अरिहन्ता स्वामी पुण्य जो उपजाते।

षोडश कारण भावना जिनपद में मुनि बन भाते॥5.41॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'पु' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

ण्

कण्ठ अकुण्ठित होने स्वामी अन्त समय मेरा।

गुरु चरणों में रहे माथ मम नाम रटूँ तेरा॥5.42॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'ण्' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

य

यत्र-तत्र-सर्वत्र बोलबाला जिन मुनियों का।

आपस में सम्बन्ध है गहरा श्रावक-श्रमणों का॥5.43॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'य' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

स

सहज अकम्प स्वरूप प्रभू का ऋषि-मुनि भी ध्याते।

ज्ञान शरीरी होने को ही भवि जिनपथ जाते॥5.44॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'स' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

म

मन तू अब तो ध्यान लगा ले, निज में रम जाना है।

गुरुवर कहते यतन करो रत्नत्रय पाना है॥5.45॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'म' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

स्

स्वातम की शुद्धि करने को शान्ती मन लाना।

शाश्वत सुख पाना हो तो परमातम गुण गाना॥5.46॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'स्' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

त

तत्त्वों का दिग्दर्शन होता जिनधुनि के द्वारा।

आत्म तत्त्व को ध्याओ भव्यो छूटे तन-कारा॥5.47॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'त' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

ल

लम्पटता हो विषयों की तो जनम-मरण होता।

छूट जाए विषयासक्ति तो निजानन्द होता॥5.48॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'ल' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

क्ष

लक्ष्य बना लें यदि निजपद तो सरल होय जीना।

आतम हित के हेत सदा ही निज रस को पीना॥5.49॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'क्ष' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

मी

लक्ष्मीं हो पुण्यों से संचित तो व्रत तप धारें।

करें शान्ति से जीवन यापन इच्छाएँ मारें॥5.50॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'मी' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

दृ

दृष्टि न सम्यक् होवे तब तक मिथ्या मल होता।

सम्यग्दृष्टि को जीवन में भव-भय नहीं होता॥5.51॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'दृ' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

ष

दृष्टवा अपलक श्रीजिनवर को कर्म बंध दूटे।

मिथ्या-माया-मोह भव्य का पलभर में छूटे॥5.52॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'ष' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

ट

अष्ट कर्म के नष्ट करन का ज्ञान प्रभु देते।

भविजन निज पुरुषारथ बल से निजपद वर लेते॥5.53॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'ट' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

वा

वाणी गुरु की मिश्री जैसी कानों में घुलती।

हो अशुद्धि जितनी कर्मों की तत्क्षण ही धुलती॥5.54॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'वा' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

न

नमन करूँ मैं नाथ आपको भवबन्धन नाशो।

ध्यान में ऐसी हो स्थिरता निज स्वरूप भासो॥5.55॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'न' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

को

कोप लालिमा गुरु नयनों में कभी नहीं होती।

कर्म कालिमा आम जनों में भावशुद्धि खोती॥5.56॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'को' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

पि

पिला रहे हो तुम सबको गुरु धर्माभूत प्याला।

कृपा करो अब काटो स्वामी मेरा कर्म जाला॥5.57॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'पि' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

कु

कुसंस्कार मिट जावें सारे अब ऐसा होवे।

जैन धर्म के अतिशय न्यारे घर-घर प्रकटावें॥5.58॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'कु' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

रु

रुचिकर है बस मुझे आत्मा और न कुछ राचे।

तुम दर्शन से मन मयूर मग घड़ी-घड़ी नाचे॥5.59॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'रु' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

ते

तेरे चरण कमल जिनवर जब जहाँ भी पधराते।

सुरगण आकर स्वर्ण कमल तब वहाँ ही रच जाते॥5.60॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'ते' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

त्र

त्रय शल्यों को तजकर ही भवि व्रती कहाते हैं।

तीन गुप्तियों सहित प्रभू को मुनिजन ध्याते हैं॥5.61॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'त्र' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

बु

बुधजन ही प्रभु की भक्ति में भजन सुनाते हैं।

उनको पढ़-सुनकर सज्जन सब आनन्द पाते हैं॥5.62॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'बु' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

ધ

प्रभु के पद चिह्नों पर चल कर हम स्वातम ध्यावें॥5.63॥

स

स्तव करूँ मैं मन वच तन से जिनगुण मन धारूँ।

हरुँ कर्म के बन्धन सारे परिजन ममत निवारुँ॥5.64॥

ॐ ह्रीं अर्हं वर्तमानशासननायक 'स' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...

त

तन का ताप मिटाने को तन मन से जिनवर घ्याँ।

दूर रहें सब सन्तापों से निज में ही सुख पाएँ॥5.65॥

ॐ ह्रीं अर्हं वर्तमानशासननायक 'त' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...



तथैव विद्या बुद्धि पाऊं जैसी मुनिजन धारें।

हम भी अपनी कर्म कालिमा निर्मल मन कर टारें॥5.66॥

ॐ ह्रीं अर्हं वर्तमानशासननायक 'थै' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...

व

वस्तु स्वरूप जान कर सब ही सच्चा सुख पावें।

तज कर सबसे नेह सदा निज में ही रम जावें॥5.67॥

ॐ ह्रीं अर्हं वर्तमानशासननायक 'व' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...

साम मंत्र प्रभु का जपे, जो भी गवि दिन रात।

भक्ति में पल पल झुके, जोड़े दोनों हाथ॥5॥

ॐ ह्रीं जिन नाम मंत्र महिमा प्रतिपादकाय अर्ह महाबीजाक्षरसहिताय
श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।



वंशवृद्धिकर स्तुति

सूते च यो जिनकुले स हि वीरवंशो,
वीरं विहाय मनुतेऽन्यकुलाधिदेवम्।
आलोकमाप्य जगतीह रवेः प्रचण्डं,
जात्यन्धवद् भ्रमति वा किल कौशिकः सः ॥6॥

(छन्द दोहा)

सू सूना सूना जग लगे, बिना धर्म निस्सार।
गुरुवर दीजे ज्ञान मम, हो जाए उद्धार ॥6.1॥

ॐ ह्रीं अर्हं वर्तमानशासननायक 'सू' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...

ते तेरा-मेरा करत ही, जीवन बीता जाय।
कब जिय की सदबुद्धि हो, कब हो मुक्ति उपाय? ॥6.2॥

ॐ ह्रीं अर्हं वर्तमानशासननायक 'ते' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...

च चन्द्र-रवि नित गगन में, दें परिक्रमा मेरु।
दो सूरज दो चाँद हैं, सम्बन्धित इक मेरू ॥6.3॥

ॐ ह्रीं अर्हं वर्तमानशासननायक 'च' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...

यो योनी लाख चुरासि में, फिरे भटकता जीव।
जिस दिन स्वातम में रमे, आनन्द अमृत पीव ॥6.4॥

ॐ ह्रीं अर्हं वर्तमानशासननायक 'यो' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...

जि जिने जाने तत्त्व को, छूटा देह अनुराग।
पर से ममता त्याग कर, धारण किया विराग ॥6.5॥

ॐ ह्रीं अर्हं वर्तमानशासननायक 'जि' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...

न नहीं सतावें जीव को, ना मन करें विकार।
आपहि आपे में रमें, तो भवसागर पार ॥6.6॥

ॐ ह्रीं अर्हं वर्तमानशासननायक 'न' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...

कु

कुल-जाती यदि शुद्ध हो, तो जिय पर उपकार।

दीक्षा लेकर कर सकें, स्वात्म का उद्धार॥6.7॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'कु' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

ले

लेना हो तो ज्ञान लें, देना हो तो दान।

भूलें कृत उपकार को, पर का हो अहसान॥6.8॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'ले' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

स

सहन करें उपसर्ग को, मन में मैत्री धार।

चाहे कोई प्राण ले, तो भि न वैर विचार॥6.9॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'स' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

हि

हिम्मत हो तो धार लें, बारह व्रत सुखकार।

बिन साहस श्रद्धा धरें, तो भी हो हितकार॥6.10॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'हि' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

वी

वीतराग-सर्वज्ञ-हित, अरिहत की पहचान।

अर्ध कर्म अरि नाशते, दोष अठारह हान॥6.11॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'वी' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

र

रसना इन्द्रिय के वशी, होकर बाँधे कर्म।

अब नाशें हम कर्म को, यही धर्म का मर्म॥6.12॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'र' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

वं

वंशज पारसनाथ के, फिर भी भटकें लोक।

अब पारस सी ले क्षमा, छूट जाए भव रोग॥6.13॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'वं' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

शो

शोभा श्रीमण्डप धरा, जन-जन की मनहार।

त्रिभुवन तिलक विराजते, धुनि झेलें गणधार॥6.14॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'शो' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

वी

वीर वही कहलाए जो, जीते शत्रु अपार।

महावीर उसको कहें, जो होवे भव पार॥6.15॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'वी' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

रं

रंज न करते शोक में, मन में राग न द्वेष।

वीतराग गुरु शोभते, समता का परिवेश॥6.16॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'रं' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

वि

विश्व तत्त्व जिन जानते, जानें आतम देव।

सुर-नर चरणों में झुके, करें चरण की सेव॥6.17॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'वि' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

हा

हानि लाभ चिंता नहीं, मुक्त मनस व्यापार।

चिंतन करते स्वात्म का, तत्त्वज्ञान उर धार॥6.18॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'हा' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

य

यत्नाचार - विवेक हो, श्रावक - मुनिजन लक्ष्य।

खाद्य अभक्ष्य हि त्याग दें, खायें जो हो भक्ष्य॥6.19॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'य' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

म

मन्मथ को जीतें तजें, सहस अठारह दोष।

शीलवान-बलवान जिन, ज्ञान गुणों का कोष॥6.20॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'म' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

नु

नुपुर बाँध के नाचती, नीलांजन दरबार।

नृत्य-मध्य पूर्णायु हो, ऋषभ तजें घर बार॥6.21॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'नु' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

ते

तेल तिलों में ही रहे, ज्यों शरीर में आत्म।

ज्ञानीजन ही जानते, आतम में परमात्म॥6.22॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'ते' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

न

सुन्दर रूप अनूप जिन, परमौदारिक देह।

समवशरण में दर्श कर, उपजे प्रभु गुण नेह॥6.23॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'न' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...

य

यत्न मुक्ति का कर रहे, षट् आवश्यक पाल।

मन थिर कर 'जिन' ध्यावते, मैं पूजूं नत भाल॥6.24॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'य' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...

कु

कुसंस्कार मेटो प्रभो! बसो हृदय में आन।

सिवा आपके हृदय में, और न कोई मान॥6.25॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'कु' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...

ला

लाभ-हानि ना सोचते, तिष्ठे मुनि धर ध्यान।

तीन योग से पूजते, अतिशायी गुणवान॥6.26॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'ला' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...

धि

धक्कारें विष भोग को, होते हैं दुखदाय।

भोगों से ही रोग हों, कर्मोदयी रूलाय॥6.27॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'धि' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...

दे

देव-देवियाँ स्वर्ग से, आते मध्यम लोक।

शिशु जिन को ले मेरु पे, न्हवन करें दें ढोक॥6.28॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'दे' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...

व

वसुन्धरा पावन हुई, पड़े जहाँ जिन पाद।

मन मन्दिर आओ प्रभो! मिले आत्म का स्वाद॥6.29॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'व' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...

म्

रम्य मनोहर रूप जिन, देखत मन न अघाय।

अपलक निरखें इन्द्र जिन, नयना सहस बनाय॥6.30॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'म्' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...

आ

आगम के आलोक में, भास भिन्न जिय-देह।

पैनी छैनी बुद्धि से, रमें स्वात्म धर नेह॥6.31॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'आ' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...

लो

लोभ पाप का बाप है, भविजन बचना जान।

है कषाय सबसे बड़ी, रहती दस गुण थान॥6.32॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'लो' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...

क

कमल नयन गुरुदेव हैं, दया भाव की खान।

तरु सम छाया शिष्य को, मिले शरण में आन॥6.33॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'क' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...

मा

मानी मान न त्यागते, पड़े नरक में जाय।

रावण-कौरव कंस का, वंशज नहीं रहाय॥6.34॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'मा' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...

प

प्यास सेठ की ना बुझी, मरकर मेंढक होय।

मेंढक पूजा भाव से, चला देवपद होय॥6.35॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'प' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...

य

यदि अक्षय सुख चाहिए, जपो मंत्र नवकार।

पाँच परम परमेष्ठी, भविजन को हितकार॥6.36॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'य' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...

ज

जन्म-जरादिक दोष हर, श्री जिन गुण सम्पन्न।

भक्त धन्य तुम दर्श से, जड़-चेतन कर भिन्न॥6.37॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'ज' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...

ग

गमन करें इक समय में, पहुँचे शिवपुर थान।

सर्व सिद्ध अवगाहना, शिर से एक समान॥6.38॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'ग' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...

ती तीर मिले संसार का, हो जाँँ भव पार।

यथाख्यात चारित्र हो, निधि रत्नत्रय धार॥6.39॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'ती' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

ह हलचल तीनों लोक में, शांति कहीं नहि होय।

जो गुरुवर की शरण हो, तो दुख कहीं न होय॥6.40॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'ह' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

र रक्षा करिए स्वामी मम, कष्ट दे रहे कर्म।

कष्ट नष्ट कर पाउ अब, जीवन में हो धर्म॥6.41॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'र' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

वे: रश्मि को प्राप्त कर, जो घूमे बन अन्ध।

या उलूक सम ना दिखे, मानो हो जन्मांध॥6.42॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'वे:' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

प्र प्रथम हि भाव विशुद्ध हों, फिर होवे निष्काम।

चारित की हो सम्पदा, भवि हों पूरित काम॥6.43॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'प्र' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

च चरण आपके अघ हरेँ, वचन हरेँ अज्ञान।

जो तुमरी शरणा गहे, हो आतम उत्थान॥6.44॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'च' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

ण् कण्ठ अधर तालु नहीं, हिले-खिरे जिन वाणि।

जो जिनधुनि उरमें धरे, होय कर्म की हानि॥6.45॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'ण्' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

डं डंका बजता लोक में, बजे दुन्दुभि वाद्य।

तीन लोक के नाथ जिन, जगत गुरु हैं आद्य॥6.46॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'डं' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

जा

जाप मंत्र जो भी करे, हों विभाव चकचूर।

हो जाता भय मुक्त भवि, पिये आत्म रस पूर॥6.47॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'जा' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

त

इत्यादिक जिय पाप कर, भव भव भोगे जाय।

सर्व कर्म मल धोय कर, शान्ति अन्त में पाय॥6.48॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'त' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

य

यम भी हारा नाथ से, भागा जान बचाय।

जो त्रिभुवन को जीतता, प्रभु से क्षमा कराय॥6.49॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'य' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

न्

वन्दन से बन्धन मिटे, कटे कर्म का जाल।

शरणागत निष्पाप हो, अणुव्रत पाँचों पाल॥6.50॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'न्' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

ध

धर्माभूत का पान कर, होते भवि अविकार।

श्री गुरुवर की शरण में, लेते चारित धार॥6.51॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'ध' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

व

वर्चस्व है प्रभु आपका, हो जग के हितकार।

शिष्यों को आशीष दो, भक्तों के दुखहार॥6.52॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'व' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

द्

त्वद् भक्ति से नाथ जी, कटते कर्म अपार।

करमों के पर्वत सभी, खण्ड खण्ड निरधार॥6.53॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'द्' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

भ्र

भ्रमण करें जो लोक में, वे भोगी लाचार।

वे निज को ना जानते, जन्म मरण संसार॥6.54॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'भ्र' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

म

महा मोह का ताप ये, कैसे होवे दूर?

हो अभाव भव भव अगर, कर्म होंय सब चूर॥6.55॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'म' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...

ति

तिमिर मिटा अज्ञान का, हुए ज्ञानधर पूर्ण

मोह कर्म-अरि जीत कर, मद दुश्मन का चूर्ण॥6.56॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'ति' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...

वा

वादी जीते आपने, ज्ञान केवली पाय।

मिथ्या तम को नाशने, ज्ञान सु ज्योति जगाय॥6.57॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'वा' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...

कि

किरण दिवाकर ज्ञान की, एक ही होय अनन्त।

लेकिन हो छद्मस्थ तो, जान न पाते सन्त॥6.58॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'कि' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...

ल

लज्जित हूँ दुष्कर्म से, कैसे हो कल्याण?

गुरुवर मुझको शरण दो, होय पाप की हान॥6.59॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'ल' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...

कौ

कौन हूँ मैं ये सोच कर, छुटे नहीं तन राग।

भेदज्ञान विज्ञान से, जगे भक्ति अनुराग॥6.60॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'कौ' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...

शि

शिवपुर का साम्राज्य ले, पाया पद विश्राम।

सदा सदा को पा लिया, शाश्वत मुक्तिधाम॥6.61॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'शि' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...

कः

कः कर्ता पर द्रव्य का, बनते हैं सब आप।

भूल सुधारे आपनी, रमें स्वयं में आप॥6.62॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'कः' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...

सः कर्ता यः करोति ये, बतलाते जिनराज।

अतः संभालें कर्म को, कहते हैं मुनिराज॥6.63॥

ॐ ह्रीं अर्हं वर्तमानशासननायक 'सः' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...

जिसके हों कुल देवता, वर्धमान भगवान।

पूर्णार्ध्य अर्पण करे, पाएगा शिवथान ॥6॥

ॐ ह्रीं वर्धमान कुल कीर्ति प्रतिपादकाय अर्ह महाबीजाक्षरसहिताय
श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

इच्छित फल देने वाली स्तुति

रागादिदोष - युत - मानस - देवतानां,
सेवा किमप्यतिशयं न ददाति कस्य।
सेवां करोतु जिनकल्पतरोः सदैव,
सेवा किमल्पफलदाऽप्यफलाऽपि तस्य ॥7॥

(छन्द स्रग्विणी)

रा

राग छोड़े बिना नहीं कभी मुक्ति हो।
दोष कामादि तज कर के ही युक्ति हो॥
प्रभु वर्द्धमान को सिर झुकाता रहूँ मैं।
पाठ वर्धमान स्तोत्र रचाता रहूँ मैं॥7.1॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'रा' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...

गा

गान गुण से हृदय में ही जिन भक्ति हो।
नाथ की भक्ति से ही चरित शक्ति हो॥प्रभु...॥7.2॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'गा' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...

दि

दिन रैन रहें हम प्रभू भक्ति में।
होय प्रीति सदा निज गुण अभिव्यक्ति में॥प्रभु...॥7.3॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'दि' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...

दो

दोष लागे तो प्रायश्चित ले लें सभी।
होवे लेने से नियमों के ना डर कभी॥प्रभु...॥7.4॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'दो' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...

ष

षट् विद्याओं का दान प्रभु ने दिया।
सारे जग ने उन्हीं का ही पालन किया॥प्रभु...॥7.5॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'ष' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...

यु

युक्ति तो सिर्फ गुरुपद में ही प्राप्त हो।
भक्ति गुरुवर मेरे मन-वचन व्याप्त हो॥
प्रभु वर्द्धमान को सिर झुकाता रहूँ मैं।
पाठ वर्द्धमान स्तोत्र रचाता रहूँ मैं॥7.6॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'यु' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्द्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...

त

तप त्याग से जीवन सफल हो प्रभो!
तपसी जीवन का उत्साह मन में रहो॥प्रभु...॥7.7॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'त' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्द्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...

मा

मान-माया से सब ही सदा दूर हों।
कोप-लालच कषाएँ भी चकचूर हों॥प्रभु...॥7.8॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'मा' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्द्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...

न

नष्ट हो जाएँ मेरे करम ये सभी।
ये जीवन सफल होवे मेरा तभी॥प्रभु...॥7.9॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'न' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्द्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...

स

सब कलाएँ बहत्तर पुरुष की कही।
एक आजीविका दूजी मुक्ती मही॥प्रभु...॥7.10॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'स' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्द्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...

दे

देव देवी समवशर्ण आते सही।
सुनने को जिन धुनि बैठते वे वहीं॥प्रभु...॥7.11॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'दे' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्द्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...

व

वसुधा अष्टम बनी है महा रत्न से।
धूलि-कण्टक रहित बैठे सब यत्न से॥प्रभु...॥7.12॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'व' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्द्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...

ता ताप-सन्ताप होते वहाँ पर नहीं।
 ना क्षुधा ना तृषा ना ही निद्रा कही॥
 प्रभु वर्द्धमान को सिर झुकाता रहूँ मैं।
 पाठ वर्द्धमान स्तोत्र रचाता रहूँ मैं॥7.13॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'ता' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्द्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

नां गगनांगन में सुरगण चले आ रहे।
 नृत्य गीतों से अम्बर को गुंजा रहे॥प्रभु...॥7.14॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'नां' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्द्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

से सेवा करने का जिनमें नहीं चाव हो।
 उनमें सेवा का भी नहीं कभी भाव हो॥प्रभु...॥7.15॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'से' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्द्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

वा वायु भी नाथ निःसंग ही चालता।
 जो अकेला चले वो चरित पालता॥प्रभु...॥7.16॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'वा' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्द्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

कि किया पुरुषार्थ प्रभु ने निजानन्द ले।
 आज लक्ष्य हमारा भी होता है ये॥प्रभु...॥7.17॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'कि' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्द्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

म मद मदन नशे उर में समता धरें।
 अपने तन में निजातम का अनुभव करें॥प्रभु...॥7.18॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'म' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्द्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

प् प्यास जागी न अब तक हृदय ज्ञान की।
 अब लगी है लगन स्वात्मा ज्ञान की॥प्रभु...॥7.19॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'प्' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्द्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

य

यथा नाम गुण हैं प्रभु के सभी।
नाम लेके सहस्र जपता सौधर्म भी॥
प्रभु वर्द्धमान को सिर झुकाता रहूँ मैं।
पाठ वर्द्धमान स्तोत्र रचाता रहूँ मैं॥7.20॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'य' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्द्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...

ति

तिरते - तिरते ही पहुँचे जगत तीर पे।
कैसे पहुँचें प्रभो अब जगत शीश पे॥प्रभु...॥7.21॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'ति' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्द्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...

श

शर्ण आया गुरुदेव जो भी तेरी।
हुआ भक्त वो ही ये महिमा तेरी॥प्रभु...॥7.22॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'श' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्द्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...

यं

यं पशु-देव-नर काय नन्तों घरे।
किन्तु मुक्तिरमा को नहीं वे वरें॥प्रभु...॥7.23॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'यं' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्द्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...

न

नर काया हुई है सफल मुक्ति से।
छिदे नाथ मेरा स्त्रिलिंग भक्ति से॥प्रभु...॥7.24॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'न' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्द्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...

द

दयासिंधु के गुण सदा मन धरें।
नयन बंद हों तो भी गुण उच्चरें॥प्रभु...॥7.25॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'द' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्द्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...

दा

दान देकर चतुर्विध खुशी सब हुए।
इस भव- पर भव सदा वे सुखी ही भए॥प्रभु...॥7.26॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'दा' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्द्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...

तिर जाते भगत तेरे नहीं है इक नाम से।

ति

फिर क्यों ना तिरें हम सहस नाम से?

प्रभु वर्द्धमान को सिर झुकाता रहूँ मैं।

पाठ वर्द्धमान स्तोत्र रचाता रहूँ मैं॥7.27॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'ति' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्द्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...

क

कह के भगवन तुम्हें नाथ! मुनि तिर गए।

हो गया धन्य मैं तो गुरु मिल गए॥प्रभु...॥7.28॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'क' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्द्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...

स्

स्मरण मात्र से कटते संकट सभी।

गुरुवर! हम पर करादो कृपा तुम अभी॥प्रभु...॥7.29॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'स्' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्द्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...

य

यही राग की आग सबको दहे।

मिले नीर समता जो अगनी बुझे॥प्रभु...॥7.30॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'य' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्द्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...

से

सेवा में थे तिहारी शतक इन्द्रगण।

लोक तीनों से पूजित प्रभु के चरण॥प्रभु...॥7.31॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'से' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्द्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...

वां

भवांतरेऽपि ना प्रभु को भुलाएँ।

है अरदास प्रभु से ये पूरी कराएँ॥प्रभु...॥7.32॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'वां' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्द्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...

क

करण लब्धि होवे यही भावना है।

श्रीजिन कथा ही बड़ी पावना है॥प्रभु...॥7.33॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'क' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्द्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...

रो भरो सौख्य सारे प्रभु शर्ण में।
है अतिशय ये भारी युगल चर्ण में॥
प्रभु वर्द्धमान को सिर झुकाता रहूँ मैं।
पाठ वर्द्धमान स्तोत्र रचाता रहूँ मैं॥7.34॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'रो' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्द्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

तु तुम्हीं नाथ होते समवशर्ण शोभित।
तुम्हीं नाथ मेरे हृदय में विराजित॥प्रभु...॥7.35॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'तु' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्द्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

जि जिनके सुमरण से ही मन में आनन्द हो।
उनके दर्शन से मानों निजानन्द हो॥प्रभु...॥7.36॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'जि' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्द्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

न नयनों से हम जिन्हें देख पाते नहीं।
वे तो बसते हैं केवल सिधालय मही॥प्रभु...॥7.37॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'न' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्द्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

क कदापि तुम्हें भूल सकता नहीं मैं।
मिले नाथ शक्ति रहें हम स्वयं में॥प्रभु...॥7.38॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'क' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्द्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

ल अल्प बुद्धि को ही नाथ मैं धारता।
कैसे वर्णन करूँ गुण-है अज्ञानता॥प्रभु...॥7.39॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'ल' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्द्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

प पग-पग पर ये मोह हमको छलता रहे।
धोखा खा के भी जग - आत्म चलता रहे॥प्रभु...॥7.40॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'प' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्द्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

त

तथ्य से पूर्ण जिनके वचन हैं कहे।
उनकी वाणी सुनें मोह ना मन रहे॥
प्रभु वर्द्धमान को सिर झुकाता रहूँ मैं।
पाठ वर्द्धमान स्तोत्र रचाता रहूँ मैं॥7.41॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'त' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्द्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...

रो:

तरो: कल्प वर्णन तो मन सुख भरे।
किन्तु दर्शन प्रभु का तो सब दुख हरे॥प्रभु...॥7.42॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'रो:' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्द्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...

स

सज्जनों के वचन भव का भंजन करें।
हैं वे विघ्नों के नाशक चरण सिर धरे॥प्रभु...॥7.43॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'स' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्द्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...

दै

दैव देता ये कायर ही कहते सदा।
कर लो पुरुषार्थ चेतन विफल ना कदा॥प्रभु...॥7.44॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'दै' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्द्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...

व

वक्त्र अनुपम हो जिनवर का मोहित करे।
हों चतुर्मुख समवर्ण शोभित अरे! प्रभु...॥7.45॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'व' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्द्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...

से

सेवाभावी जो शिष्य गुरु के कहे।
उनकी भक्ति के वश में गुरु भी हुए॥प्रभु...॥7.46॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'से' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्द्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...

वा

वाणि वीणा के तारों में सरगम बजे।
भक्त भक्ति में भजनों पे खुद ही नचे॥प्रभु...॥7.47॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'वा' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्द्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...

कि कितनी पूजा की मैंने प्रभु आप की।
किंतु किरिया न छूटी कभी पाप की॥
प्रभु वर्द्धमान को सिर झुकाता रहूँ मैं।
पाठ वर्द्धमान स्तोत्र रचाता रहूँ मैं॥7.48॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'कि' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्द्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

म मनन करता रहूँ मैं तो जिनवाणि का।
ध्यान ही एक पथ है मुक्ति पाने का॥प्रभु...॥7.49॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'म' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्द्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

ल कल्प अनन्तों बिताए प्रभु लोक में।
मैं भटकता रहा मूर्ख जग-शोक में॥प्रभु...॥7.50॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'ल' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्द्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

प पर पदार्थों पे होते ना मोहित कहीं।
कर सके कोई गुरु को प्रभावित नहीं॥प्रभु...॥7.51॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'प' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्द्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

फ फल की आशा न इच्छा को पूरी करे।
निर्वाछक ही भक्ती से मुक्ती वरे॥प्रभु...॥7.52॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'फ' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्द्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

ल लम्बी शिवराह है ये गृही के लिए।
किन्तु साक्षात होती श्रमण के लिए॥प्रभु...॥7.53॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'ल' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्द्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

दा दाता गुरुवर ने सबको दिया ज्ञान है।
जड़ से भिन्न ये आतम तो गुणवान है॥प्रभु...॥7.54॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'दा' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्द्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

पू

प्याला ज्ञान का तुमने पिलाया है जो।
कर गया मन को मतवाला मेरे ही वो॥
प्रभु वर्द्धमान को सिर झुकाता रहूँ मैं।
पाठ वर्द्धमान स्तोत्र रचाता रहूँ मैं॥7.55॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'पू' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्द्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

य

यही मतवालापन तो दिवाना करे।
छोड़ के घर को अपने वो दिक्षा धरे॥प्रभु...॥7.56॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'य' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्द्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

फ

सफल होता वही जो मन पे संयम धरे।
मनोबल से ही अपने वो करमन हरे॥प्रभु...॥7.57॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'फ' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्द्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

ला

लाभ शुभ चाहो तो न्याय नीति करो।
दान में धन लगाओ तो सुख को भरो॥प्रभु...॥7.58॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'ला' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्द्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

पि

पिया तूने जो निजरस का प्याला अरे!
भूल जाएगा विषयों में आनन्द भरे॥प्रभु...॥7.59॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'पि' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्द्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

त

तप का आनन्द जब भी कभी पाएगा।
भाव शुद्धी निजानन्द तभी आएगा॥प्रभु...॥7.60॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'त' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्द्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

स्

स्याद्वाद प्रभु ने सिखाया है जो।
वाद-विवाद सबका मिटाता है वो॥प्रभु...॥7.61॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'स्' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्द्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

य

यथारथ किंया तत्त्व वर्णन तुम्हीं ने।
मिली मुक्ति धारे वचन उर जिन्होंने॥
प्रभु वर्द्धमान को सिर झुकाता रहूँ मैं।
पाठ वर्द्धमान स्तोत्र रचाता रहूँ मैं॥7.62॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'य' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्द्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

पूर्णार्घ्य

वीतराग सेवा कही , सर्व विघ्न क्षयकार।
सुरतरु समजिनदेव हैं, अतिमाय फल दातार ॥7॥

अर्घ्य- ॐ ह्रीं वीतराग सेवा पुण्य प्रतिपादकाय अर्ह महाबीजाक्षरसहिताय
श्रीवर्द्धमानजिनेन्द्राय नमः पूर्णार्घ्य निर्वपामीति स्वाहा।

xxxxxxxxxxxxxxxxxxxxxxxxxxxxxxxx

सर्व अनिष्ट ग्रह निवारक स्तुति

ये व्यन्तरादिसुर-भावन-देव-वृन्दाः,
कृत्वा तु यस्य नमनं सुखमाप्नुवन्ति।
देवाधि-देव-शुभ-नाम-पवित्र-मन्त्रो,
व्याहन्त्यनिष्टमखिलं किमु विस्मयन्ति ॥8॥

(सखी छन्द)

ये

ये भविजन भक्ति करावें, वे निशदिन जिन गुण गावें।
नित पूजा पाठ रचाते, हर्षित हो मोद मनाते ॥8.1॥

ॐ ह्रीं अर्हं वर्तमानशासननायक 'ये' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...

व

व्यय करते संपत्ति सारी, फिर भी आनन्द अपारी।
मन-वच तन सेव करावें, प्रभु चरणों में सुख पावें ॥8.2॥

ॐ ह्रीं अर्हं वर्तमानशासननायक 'व' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...

य

यम तुम से डर कर भागे, प्रभु अन्तर में अनुरागे।
तप बल से यम को जीता, कर दिया कर्म घट रीता ॥8.3॥

ॐ ह्रीं अर्हं वर्तमानशासननायक 'य' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...

न्

न्यारा तन-चेतन जाना, स्वातम को ही हितु माना।
नित आतम रमण करावें, निजमें निज सुखको पावें ॥8.4॥

ॐ ह्रीं अर्हं वर्तमानशासननायक 'न्' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...

त

तरणी जिन चरण सुहाई, मुनि निर्विकल्प सुखपाई।
निष्कांक्षित तप आचरते, शुचि ज्ञान केवली लभते ॥8.5॥

ॐ ह्रीं अर्हं वर्तमानशासननायक 'त' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...

रा

रागी जब तन-मन होता, तब भोगों में सुख पाता।
जब भी विवेक मनजागे, संसार से डर जिय भागे ॥8.6॥

ॐ ह्रीं अर्हं वर्तमानशासननायक 'रा' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...

दि

दिन रात धर्म मन लाएँ, तो दुर्गति से बच जाएँ।

जिन धर्म है मुक्ति प्रदाता, सब जीवों को सुखदाता॥8.7॥

ॐ ह्रीं अर्हं वर्तमानशासननायक 'दि' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

सु

सुरगण भी जिन गुण गावें, जिन धुनि सुनि मन हरषावें।

नन्दीश्वर द्वीप में जाते, वसु दिन जिन पूज रचाते॥8.8॥

ॐ ह्रीं अर्हं वर्तमानशासननायक 'सु' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

र

रत्नाकर गुण निधियों के, स्वामी केवल दिनकर के।

निज गुण अनन्त प्रकटाए, शुभ समवशरण दरशाए॥8.9॥

ॐ ह्रीं अर्हं वर्तमानशासननायक 'र' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

भा

भारत है देश हमारा, है आर्यखण्ड में न्यारा।

हम भारतमाता कहते, जननी सम आदर देते॥8.10॥

ॐ ह्रीं अर्हं वर्तमानशासननायक 'भा' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

व

वचनामृत नाथ पिला दो, जीने का लक्ष्य दिला दो।

जब तक नहीं मंजिल पाएँ, तब तक पुरुषार्थ कराएँ॥8.11॥

ॐ ह्रीं अर्हं वर्तमानशासननायक 'व' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

न

नमता है त्रिभुवन तुमको, हम तो नहीं जाने निज को।

हम शरण तिहारी आए, मानो निज वैभव पाए॥8.12॥

ॐ ह्रीं अर्हं वर्तमानशासननायक 'न' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

दे

देवों के देव कहाये, देवाधिदेव पद पाये।

तुम दिव्यध्वनि खिरजाती, जीवों को अभय कराती॥8.13॥

ॐ ह्रीं अर्हं वर्तमानशासननायक 'दे' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

व

वन उपवन खिल खिल जावें, षट् ऋतु इक संग आजावें।

हरियाली जग छा जाती, जनता जिन महिमा गाती॥8.14॥

ॐ ह्रीं अर्हं वर्तमानशासननायक 'व' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

वृ

वृद्धापन जब आ जाता, अक्षम तब तन हो जाता।

जो ज्ञान वृद्ध हो जाते, वे जग सम्मानित भाते॥8.15॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'वृ' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

नृ

नन्दन वन आतम विचरें, तपसी तप बल से निखरें।

जिनका मन निज में रमता, उनको जग से भय लगता॥8.16॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'नृ' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

दाः

वृन्दाः भवि जिनगुण गावें, चारित की आस लगावें।

हे तीन लोक के स्वामी, रत्नत्रय दो शिवगामी॥8.17॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'दाः' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

कृ

कृत-कारित-मोदन करते, अनुसार सुख-दुख भरते।

आतम को कसे कषाएँ, हम कैसे इन्हें नशाएँ॥8.18॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'कृ' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

तृ

त्यागें मोह-काम विकारा, पावें सुभाव अविकारा।

मन सलिल समान सरल हो, ऐसे भवि जीव विरल हों॥8.19॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'तृ' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

वा

वाणी जिनकी कल्याणी, सुनकर सुख पाते प्राणी।

पशुओं को भी हितकारी, भवि जीवों ने उर धारी॥8.20॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'वा' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

तु

चतु करम घातिया नासे, शुचि केवल दिनकर भासे।

हम तुमसे याचना करते, तुम वाणी हिरदय धरते॥8.21॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'तु' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

य

यम को संयम से जीता, मैं गाऊँ जिन गुण गीता

कैसे तुम गुण अपनाऊँ, अल्पज्ञ शक्ति नहि पाऊँ॥8.22॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'य' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

स

स्थिर हो जीव जब निज में, कुछ भी न सुहावे जग में।

विषयों में चित नहीं लाता, निज चिंतन में रस आता॥8.23॥

ॐ ह्रीं अर्हं वर्तमानशासननायक 'स' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

य

यदि निज रस पाना चाहो, तो गुरु की शरण में आओ।

वे निरासक्त हो जीते, निज आनन्द अमृत पीते॥8.24॥

ॐ ह्रीं अर्हं वर्तमानशासननायक 'य' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

न

नन्दीश्वर द्वीप महाना, आते जहाँ सुरगण नाना।

फल कल्पवृक्ष के लावें, भक्ती में नाचें- गावें॥8.25॥

ॐ ह्रीं अर्हं वर्तमानशासननायक 'न' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

म

मन मन्दिर नाथ विराजें, शत अष्ट कमल दल लाजें।

निज अश्रु से चरण पखारूँ, मन वचन प्रभु पर वारूँ॥8.26॥

ॐ ह्रीं अर्हं वर्तमानशासननायक 'म' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

नं

कृत्स्नं जु कर्म खिपावे, वो शाशवत निज पद पावे।

शक्ती दो हमको स्वामी! हम भी होवें - शिवगामी॥8.27॥

ॐ ह्रीं अर्हं वर्तमानशासननायक 'नं' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

सु

सुख चाहें जीव अपारा, दुख तो मन नाहिं विचारा।

सुख-दुख जीवन के अंगा, मरते दम तक रहें संगी॥8.28॥

ॐ ह्रीं अर्हं वर्तमानशासननायक 'सु' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

ख

खण्डित कर दूँ पर्यायें, शिवपथ को सरल बनायें।

निज गुण कुछ प्रकट करा लूँ, नारी भव सफल बना लूँ॥8.29॥

ॐ ह्रीं अर्हं वर्तमानशासननायक 'ख' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

मा

माया का खेल अनूठा, दृष्टा सच्चा दृश्य झूठा।

अपनी सत्ता पहचानें, नहीं फँसें देख लें-जानें॥8.30॥

ॐ ह्रीं अर्हं वर्तमानशासननायक 'मा' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

पू

प्याला ज्ञानामृत पी लें, निज भेद ज्ञान में जी लें।

चेतन है ज्ञान सरूपी, काया मल ढेर अनूपी॥8.31॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'पू' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...

नु

अनुपम गुरुवर का द्वारा, शरणागत दुःख निवारा।

भवि चरण शरण में आओ, गुरुवर को शीश झुकाओ॥8.32॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'नु' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...

व

वश होय करम बलवाना, दुष्कर्म करे मनमाना।

गुरु शरणा जिय पा जावे, तो आवागमन मिटावे॥8.33॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'व' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...

न्

नन्तों भव बीत गए हैं, नहीं आतमज्ञान लहे हैं।

अब जागो मोही प्राणी, जिनवाणी सुन हो ज्ञानी॥8.34॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'न्' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...

ति

तिरते जो भवसागर में, स्वाधीन रहें वे निज में।

वे आतम बल से जाते, शिवरमणी गले लगाते॥8.35॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'ति' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...

दे

देवों को भी है, दुर्लभ, ये नरतन रतन अमोलक।

मानुष तन महिमा जानो, साधन मुक्ती का मानो॥8.36॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'दे' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...

वा

वास्तव में सब अज्ञानी, नहीं जग की रीति पिछानी।

जो जानें भविजन ज्ञानी, वे करें करम की हानी॥8.37॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'वा' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...

धि

धिक् धिक् जिन कुल उपजावे, सब खाद्य अखाध हि खावे।

जो भक्ष्य वही तुम खाओं, जो है अभक्ष्य नहीं खाओ॥8.38॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'धि' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...

दे

देना-लेना कुछ ना है, केवल व्यवहार कहा है।

निश्चय से तो सब 'पर' है, मेरा तो शिवपुर घर है॥8.39॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'दे' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

व

वही ज्ञान सत्य को पाता, जो गुरुचरणों में आता।

उसने ही निज सुख जाना, सब कहते उसे सयाना॥8.40॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'व' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

शु

शुद्धि जो वचन मन तन हो, तो समझो आतम शुध हो।

यह युक्ति है जैन धरम की, होवे मुक्ती चेतन की॥8.41॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'शु' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

भ

भक्ती में शक्ती न्यारी, सर्वस्व समर्पण भारी।

श्रद्धा के बल से हि जानें, शुद्धातम सिद्ध प्रमाने॥8.42॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'भ' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

ना

है नाद आपका अनहद, सब जीवों को हो सुखप्रद।

तुम हो प्रभु केवलज्ञानी, हम पूजें शिवपुरगामी॥8.43॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'ना' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

म

महा मुश्किल शिवमग जाँ, भव जलधि तीर नहीं पाँ।

कैसे तुमसे मिल सकते, ये अरज नाथ हम करते॥8.44॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'म' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

प

परमोत्कृष्ट तुम स्वामी, मैं भी तुम पथ अनुगामी।

शिवपथ पर चलता जाऊँ, नहीं अवसर कभी गँवाऊँ॥8.45॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'प' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

वि

विश्व तत्त्वों के ज्ञाता हैं, दुखियों के दुख त्राता हैं।

दुख जलधि में गोते खाऊँ, कैसे इससे मुक्ती पाऊँ?॥8.46॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'वि' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

त्र

त्रय शल्यों के निरवारी, सुज्ञान की ज्योति प्रजारी।

मैं भी निशल्य हो जाऊँ, बन व्रती चरित अपनाऊँ॥8.47॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'त्र' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...

म

मत करम करो दुखदाई, जिनवाणी है सुखदाई।

जिसने निज भाव सुधारा, वो हुआ भवोदधि पारा॥8.48॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'म' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...

न्

नहे व्रत नियम हि पालो, सांसारिक आपद टालो।

नियमों में दृढ़ता रखें, पुण्यों के फल को चाखें॥8.49॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'न्' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...

त्रो

मित्रो तुम साधो मन को, फिर स्थिर कर लो तनको।

वसु योगाभ्यास कराओ, शिवपथ पर बढ़ते जाओ॥8.50॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'त्रो' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...

व्

व्याजहिपूजा गुण गाओ, जिन गुण में ही रम जाओ।

जिन गुण हैं बहु उपकारी, हो संयम चारित धारी॥8.51॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'व्' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...

या

यादें हों जन्म-मरण की, लत छूटे दुष्कर्मन की।

ईश्वर को यदि नहीं भूलें, तो यशःकीर्ति को छूलें॥8.52॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'या' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...

ह

हम प्रभु की महिमा जाने, जिनधर्म प्रभावना ठांनें।

वात्सल्य रखें साधर्मी, नहीं करें विवाद विधर्मी॥8.53॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'ह' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...

न्

मन्द होती यदि कषाएँ, तब जिय निगोद निकसाएँ।

दुश्मन कषाय ही होती, नहि दिखे तो अन्तर सोती॥8.54॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'न्' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...

तू

निहत्य दैव करें पौरुष, समता हो मा तुष मा रूष।

फिर भी मेहनत रत रहना, नहीं धीरज अपना तजना॥8.55॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'तू' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

य

यस्य ना विनय अज्ञानी, हो विनत मति सुज्ञानी।

वे अहंकार से भरते, सब जन उन से ही डरते॥8.56॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'य' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

नि

निर्ग्रन्थ तपोधन भारी, बहु ऋद्धि-सिद्धियाँ धारी।

इनके चरणों में आओ, श्रद्धा धरे-शीश झुकाओ॥8.57॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'नि' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

ष

नष्ट पाप अनन्त करावें, तो किरपा भगवन्त पावें।

चउ घातिया कर्म नशाए, अरिहन्त परम पद पाए॥8.58॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'ष' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

ट

अटके जो भवसागर में, भटकेंगे वे भव भव में।

सो भोग विषय को त्यागो, अपने आतम हित लागो॥8.59॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'ट' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

म

मन तो वानर सम जानो, मद्य मोह पिया हो मानो।

संयम की डोर से बाँधो, आराधना चउ आराधो॥8.60॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'म' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

खि

खिलने को सुमन खिलावें, दिनकर भी नभ नित आवें।

जब तक किरणें नहीं पाते, तब तक नहीं कमल खिलाते॥8.61॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'खि' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

लं

लंपटता भोग पिछानो, छुरी शहद लपेटी मानो।

ज्ञानावरणी को नाशो, अब आतम ज्ञान प्रकाशो॥8.62॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'लं' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

कि

कितने भव सबने धारे, नहीं निज का ज्ञान विचारे।

अब मोह नींद से जागो, निज चेतन में अनुरागो॥8.63॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'कि' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

मु

मुनिराज बड़े बड़भागी, जिन विषय वासना त्यागी।

इनके चरणों में आओ, कुछ ज्ञान चेतना पाओ॥8.64॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'मु' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

वि

विपरीत-एकान्त-विनय को, संशय-अज्ञान कुनय को।

जानो, विश्वास जगाओ, अज्ञान अनादी मिटाओ॥8.65॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'वि' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

स्

स्त्री जाती को प्रभु ने, कहा सक्षम शिक्षा पाने।

बलि बन्द वर्द्धमान कराई, हुआ सर्वोदय सुखदाई॥8.66॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'स्' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

म

मन वच तन सुथिर कराओ, नित आतमराम को ध्याओ।

'पर' से नहीं मोह कराएँ, जितना सम्भव बच जाएँ॥8.67॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'म' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

य

यही श्रेष्ठ उपाय बताया, जीवन भी सरल बनाया।

शुभ सदाचरण अपनाएँ, यह-पर भव सफल कराएँ॥8.68॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'य' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

न्

बन्दीजन विरद सुनावें, भूपति उन्हे मुक्त करावें।

प्रभु जन्म दिवस के ऊपर, पिता दान देंय भर भर कर॥8.69॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'न्' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

ति

तिल-तिल तन खण्ड करावें, नाना विधि दुख उपजावें।

गुरु नरकों दुःख सुनाते, हम सुन कर ही दुख पाते॥8.70॥

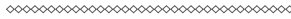
ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'ति' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

पूर्णार्घ्य

भवनत्रिक भी जिन नमें, पा जाँँ सुख चैन।

कर्म हमारे भी झड़ें, जपें नाम दिन-रैन॥८॥

ॐ ह्रीं कर्म निर्जरा प्रतिपादक अहं महाबीजाक्षरसहिताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः
पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।



कालसर्पादि योग निवारक स्तुति

आस्तां सुदुःषम-कला-कलिकाल-कालस्,
त्वन्नाम-दर्श-मननं प्रतिमाप्यलं स्यात्।
हस्तंगते गरुड-मन्त्र-विधान-सिद्धेः,
कालादि-सर्प-कृतयोग-भयेन किं स्यात् ॥9॥

(छन्द सोरठा द्वितीय वलय)

आ

आस्था मन में धार, व्रत संयम धारे सभी।
होगा बेड़ा पार, डरें नहीं मन में कदा ॥9.1॥

ॐ ह्रीं अर्हं वर्तमानशासननायक 'आ' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...

स्

स्थिर हों परिणाम, पंच अणुव्रत धार लो।
लो सुरपुर विश्राम, जिनवाणी कहती हमें ॥9.2॥

ॐ ह्रीं अर्हं वर्तमानशासननायक 'स्' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...

तां

तांडव करते इन्द्र, जन्म महोत्सव नाथ का।
धरते नाम जिनेन्द्र, सहस नाम जपते तभी ॥9.3॥

ॐ ह्रीं अर्हं वर्तमानशासननायक 'तां' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...

सु

सुकीरति जग विस्तार, जब जिन यौवन शोभते।
भाव विकारी टार, वीतराग भगवन्त हो ॥9.4॥

ॐ ह्रीं अर्हं वर्तमानशासननायक 'सु' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...

दुः

दुःखम काल निर्धार, काल भेद छह जानते।
छोड़ दिया घरबार, अथिर जान संसार को ॥9.5॥

ॐ ह्रीं अर्हं वर्तमानशासननायक 'दुः' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...

ष

षट् विधाएँ जु दान, आदिनाथ तीर्थेश दें।
कर्मभूमि यहाँ मान, करें प्रवृत्ति नगरजन ॥9.6॥

ॐ ह्रीं अर्हं वर्तमानशासननायक 'ष' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...

म

मनहर छवि पीताभ, श्री जिनवर तन कांति है।

लुब्ध हि मम अमिताभ, कंचन सम दिपती महा॥9.7॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'म' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

क

करमन की गति टार, तप करते बन जाय जिन

स्वयं तिरे संसार, स्वयं बोध शंभू भए॥9.8॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'क' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

ला

लाभ ज्ञान सुखकार, केवलज्ञानी जिन हुए।

सुख अनन्त दातार, कर्म घातिया घात के॥9.9॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'ला' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

क

कथा बहुत दुखकार, काल अनादी जगत की।

कैसे उतरें पार, भव भव भटकें जीव सब॥9.10॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'क' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

लि

लिपटें नाग विशाल, चन्दन तरु पर शीत हित।

कटे करम जंजाल, तप करते जिन मुक्ति को॥9.11॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'लि' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

का

काल अनादी मान, जीव भटकते लोक में।

भिन्न आत्म-तन जान, सिद्ध होय जब तप करें॥9.12॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'का' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

ल

लपटें आगहि राग, झुलसाए देहातमा।

जब जागे जिय भाग, जाल नसे संसार का॥9.13॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'ल' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

का

काल लब्धि को पाय, जीव तिरें संसार से।

संयम तप अपनाय, करे कर्म की निर्जरा॥9.14॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'का' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

ल लटके उदर मंझार, जीव उलट नव मास लो।
भोगे कष्ट अपार, जनमत ही दुख भूलता॥9.15॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'ल' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...

स् स्वानुभूति जु पाय, ज्ञान भानु जब उदित हो।
पुनः न जग में आय, सिद्ध होय जिय शिव बसे॥9.16॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'स्' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...

त् त्वन्नाम सुखदाय, नाम सहस जपता रहूँ।
सम्मति दे जिनराय, बैठूँ गुरूपद नाव में॥9.17॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'त्' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...

व वश इन्द्रिय बलवान, होय विजेता जगत में।
जिनवर महिमावान, कर्मनाश केवली भए॥9.18॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'व' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...

न् वन्दित हैं भगवान, शत इन्द्रन के वृंद से।
करके प्रभु गुणगान, मैं पूजूँ बहु चाव जिन॥9.19॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'न्' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...

ना नाशवान संसार, शाश्वत एक हि आत्मा।
गुण जिन अपरम्पार, कागज तरु - मसि सिंधु कम॥9.20॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'ना' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...

म मन्त्र महा नवकार, मंत्रों में सबसे बड़ा।
जपते मुनि हितकार, भक्त जपें परमेष्ठि नित॥9.21॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'म' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...

द दयासिंधु गुणखान, वंदन जिनवर का करें।
अनुपम धीरजवान, पूजित हों- प्रभु पूजते॥9.22॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'द' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...

श

दर्शन जिन सुखकार, कौन जगत में है सुखी?

जिनवचनों का सार, धर्म बिना सुख है नहीं॥9.23॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'श' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...

म

मत करना अपकार, पीड़ा देय न अन्य को।

पाओ सौख्य अपार, जिन वच-"सब निज सम कहे"॥9.24॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'म' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...

न

नमन करूँ शत बार, जो स्वादी निज आत्म रस।

बहे ज्ञान रस धार, भव्य जनों के हृदय में॥9.25॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'न' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...

नं

ज्ञानं सुख की खान, दिव्य ध्वनि जिनवर खिरे।

दो मुझको वरदान, दोष हरूँ निज - आतमा॥9.26॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'नं' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...

प्र

प्रभु तुम सुख करतार, कर्म काट शिवपुर गए।

हो मम बेड़ा पार, कृपा होय बस आपकी॥9.27॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'प्र' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...

ति

तिरस्कृत होते हाय! दुष्कर्मों से ही सभी।

अतः शरण में आय, आशिष चाहूँ आपसे॥9.28॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'ति' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...

मा

मानो प्रभु उपकार, मोक्ष मार्ग दर्शा दिया।

जिनपद जग में सार, करूँ समर्पण भाव से॥9.29॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'मा' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...

पू

प्राप्य मुझे शिवधाम, शिवपथ जिन प्रकटावते।

निज पद लूँ विश्राम, धोय करम मल नाथ जी॥9.30॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'पू' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...

य यही आस जिनराय, हो उपयोग सु भक्ति में।
हाथ जोड़ सिर नाय, वर्द्धमान बन्दू सदा॥9.31॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'य' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

लं लंका सुवर्ण थाय, रावण की नगरी कही।
सका न लेश बचाय, कर्मों से अपने जली॥9.32॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'लं' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

स् स्फुटं बिंब वर्द्धमान, दर्शन बारम्बार हों।
महावीरजी थान, शीश झुका वन्दन करें॥9.33॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'स्' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

या यान चरण मुनिराज, शिवपुर राही के लिए।
चलें आत्म हित काज, वैभव निजपद का मिले॥9.34॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'या' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

त् त्वत् नाम सुखकार, मुनि प्रणम्य सागर गुरू।
जपें हो एकाकार, पार होय भवसिंधु से॥9.35॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'त्' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

ह हस्तिनागपुर गाय, भू जन्म शांतिकुंथ-अर।
चार कल्याण कहाय, तीनों श्री जिनराज के॥9.36॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'ह' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

स् स्यादवाद कहलाए, वक्ता की शैली कथन।
वाद-विवाद मिटाए, अनेकान्त का आसरा॥9.37॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'स्' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

तं तं जिनवर को ध्याय, हो जाओ निश्चल स्वयं।
महिमा अकथ जिनाय, वरणी जाय न गणधरा॥9.38॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'तं' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

ग

गगन गमन हो आप, नित्य मनुज सम ही चलें।

जोड़ चरण दो हाथ, सन्मति जिनवर को नमूं॥9.39॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'ग' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

ते

ते भी धन्य कहाय, जो शरणागत वीर के।

भवसागर तिर जाय, आश्रय ले वर्द्धमान का॥9.40॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'ते' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

ग

गजस्नान वत गाय, श्रावक के नियमादि सब।

तब हि व्रती कहलाय, प्रतिमा धारण जब करे॥9.41॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'ग' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

रु

रुक; ना आगे जाय, घोर तिमिर मिथ्यात्व का।

समकित पार लगाय, श्रद्धा रख जिनवाणी पर॥9.42॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'रु' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

ड

डरो न व्रत हि गहाय, शांति सिंधु गुरु कह गए।

प्रायश्चित मुनि पाय, दोष कोय हो जाए तो॥9.43॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'ड' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

म

मन मन्दिर हो जाय, रात दिवस जिन भक्ति कर।

आदर से पधराय, नयनों में प्रभु की छवि॥9.44॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'म' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

न्

अन्तर नाहिं कषाय, बाहर में चारित पले।

मन दर्पण हो जाय, अन्तरंग-बहिरंग सब॥9.45॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'न्' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

त्र

त्रय गुप्तियाँ धराय, पंच महाव्रत इन्द्रि जय।

पालन साधु कराय, तेरह विधि चारित्र का॥9.46॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'त्र' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

वि

विश्व वंद्य जिनराय, सुर नर पशु पूजित प्रभु।

त्रिभुवन पति कहलाय, तीन लोक के नाथ जिन॥9.47॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'वि' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

धा

धारेण गुण निष्काम, शुद्ध, बुद्ध शुचि ज्ञान के।

बुलवा लो निज धाम, धँसा हुआ जग कीच में॥9.48॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'धा' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

न

नम्र सुभाव धराय, जो झुकता जिन पाद में।

होवे सिद्ध सु भाय, दर्श विशुद्धी प्राप्त हो॥9.49॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'न' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

सि

सिद्धि प्राप्त कराय, शिवपथ पर जो जन चलें।

संयम चित्त धराय, धन्य धन्य वे सिद्ध जिन॥9.50॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'सि' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

द्धे

सिद्धे: सिद्धि पाय, णमोकार मंत्र हि सुमर।

पहुँचे शिवपुर जाय, अंजन चोर निरंजना॥9.51॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'द्धे:' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

का

काल ग्रास बन जाय, कंचन कामिनि भोगते।

तन को नित्य तपाय, जो चाहें शिवरमणि को॥9.52॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'का' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

ला

बलान्माम बुलवाय, बोली कोयल की सदा।

मन में मोद मनाय, अर्चन करता नाथ तुम॥9.53॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'ला' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

दि

दिव्यध्वनी खिराय, नाथ बने अरिहन्त जब।

अनुभव आत्म कराय, जिनवाणी सुन जीव भवि॥9.54॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'दि' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

स

सन-सन हवा चलाय, साधु तपें तप चौहटे।

लेश न देह हिलाय, थिर हो आसन माँडते॥9.55॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'स' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

प

अर्पण मन वच काय, आप्तागम-गुरु को नमन।

देश-धर्म चित्त लाय, धन दूँ तन दूँ लाज दूँ॥9.56॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'प' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

कृ

सुकृत हि संग जाय, दान्या सो भोग्या महा।

त्यौं-त्यौं धन बढ़ जाय, ज्यों ज्यों देते दान को॥9.57॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'कृ' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

त

तप से देह तपाय, साधु आत्म विशुद्धि को।

पूरब पात्र तपाय, दुग्ध तपे ज्यों बाद में॥9.58॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'त' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

यो

योग त्रिध्यान लगाय, कार्य सफलता के लिए।

बिना त्रियोग लगाय, भोजन में भी स्वाद ना॥9.59॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'यो' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

ग

गमन सीमा निर्धार, दिग्रत दस दिशि में करे।

आवागमन निवार, देश व्रती परदेस में॥9.60॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'ग' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

भ

भय नहिं सप्त विचार, निर्भय हो समकिति सदा।

पाले निरातिचार, व्रत अनर्थ दंड हि धरे॥9.61॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'भ' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

ये

ये जिनवर गुण गाय, धीर वीर गंभीर जिन।

वह निज दोष मिटाय, ग्रह सब उसके शांत हों॥9.62॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'ये' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

न

नर भव को तरसाय, सुरपति वैभव त्यागता।

संयम नहिं धर पाय, महिमा नरतन ज्ञान जिन॥9.63॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'न' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...

किं

किंचित् नाहिं थकाय, परमौदारिक देह जिन।

धातु न सप्त धराय, निर्मल तन स्फटिक सम॥9.64॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'किं' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...

स्

स्पन्दन नहिं पाय, जिनवर नयनों में कभी।

साम्य भाव दर्शाय, अर्ध निमीलित नेत्र हैं॥9.65॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'स्' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...

या

याचक बन मैं आय, वीतरागता दो मुझे।

पाप हि ताप नशाय, पूर्व काल में जो किए॥9.66॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'या' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...

त्

सत् स्वरूप दर्शाय, था अब तक अनजान मैं।

किरपा नन्त कराय, हो पहचान अब स्वात्मा॥9.67॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'त्' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...

पूर्णार्घ्य

दुखम काल में भी हमें, जिन बिंब दर्शन होय।

अर्घ्य चढ़ा शुभ में रमें, निश्चय शुद्धि होय॥9॥

ॐ ह्रीं जिन बिंब दर्शन महात्म्य प्रतिपादकाय अर्ह महाबीजाक्षरसहिताय
श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः पूर्णार्घ्य निर्वपामीति स्वाहा।

xxxxxxxxxxxxxxxxxxxxxxxxxxxxxxxx

सर्व रोगहरण स्तुति

रागादि-रोग-हरणाय न कोऽत्र वैद्यः,
कर्माष्ट बन्ध-विघटाय रसायनं न।
यो यन्न वेत्ति स न तत्र मतं प्रमाणं,
वैद्यस्त्वमेव तव वाक्च रसायनं तत् ॥10॥

(छन्द शेर चाल)

रागादिक दोष मेटने जिन शरण हम आए।

रा

संवर करें तप-निर्जरा से मोक्ष हो जाए॥

प्रभु वर्द्धमान की करूँ श्रद्धा से अर्चना।

संकट मिटें सबके यही है भक्त कामना॥10.1॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'रा' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...

गा

गायन करें नर्तन करें जिनराज भक्ति में।

झूमे सदा हम डूब के आनन्द तृप्ति में॥प्रभु...॥10.2॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'गा' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...

दि

दिवि में जो देव हैं सभी वे भी करें पूजा।

इक भक्ति मार्ग ही सही गृही को न है दूजा॥प्रभु...॥10.3॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'दि' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...

रो

रोग भव ये पाँच कोड़ी लाख अडसठ कहे।

अरू सहस्र निन्यानु शतक पाँच चौरासी रहे॥प्रभु...॥10.4॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'रो' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...

ग

गणधर भी आपके गुणों को गा नहीं सके।

सामान्य जन तो नाम जिन जपने में ही थके॥प्रभु...॥10.5॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'ग' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...

ह

हरने को रोग कौन है समर्थ लोक में?

हों एक संग ही उदय तन -नारकी शोक में॥

प्रभु वर्द्धमान की करूँ श्रद्धा से अर्चना।

संकट मिटें सबके यही है भक्त कामना॥ 10.6॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'ह' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

र

रमते रहें जो हर समय हम धर्म ध्यान में।

नहीं दुर्गति हो हम रहें जिन चर्ण यान में॥ प्रभु...॥10.7॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'र' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

णा

णाण हो यदि सम्यक् तो सदबुद्धि साथ दे।

वर्ना तो कुमति जीव को नरकों में पटक दे॥ प्रभु...॥10.8॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'णा' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

य

यदि करना हो अभाव भव-भव में भ्रमण का।

तो करते रहें कीर्तन जिनवर के गुणन का॥ प्रभु...॥10.9॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'य' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

न

नरेन्द्र - इन्द्र आदि सबके नम्र माथ हैं।

जो नेक राह पर चलें प्रभु उनके साथ हैं॥ प्रभु...॥10.10॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'न' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

को

कोई ना मेरू को चलायमान कर सके।

कोई ना सिंधु पार भुजाओं से कर सके॥ प्रभु...॥10.11॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'को' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

त्र

त्रय लोक में हो पूज्य सबके द्वारा आप ही।

आशीष मिले नाथ गुण प्रकटाएँ कुछ हम भी॥ प्रभु...॥10.12॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'त्र' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

वैसा ही फल पायेंगे जैसा बोएँगे यहाँ।

वै

सो बोएँ हम भी अच्छा ये भावना महा॥

प्रभु वर्द्धमान की करूँ श्रद्धा से अर्चना।

संकट मिटें सबके यही है भक्त कामना॥10.13॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'वै' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

द्यः

वंच्यः हो आप ही प्रभो! शतेन्द्र देव से।

पूजित हो हम सभी से आप तीन योग से॥प्रभु...॥10.14॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'द्यः' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

क

करनी कथा तुमको अगर संसार दुखों की।

घबरा के भव दुखों से करो कथा मुक्ति की॥प्रभु...॥10.15॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'क' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

मर्मा

धर्मन्धता न हो कभी जीवन के सफर में।

सब एक संग मिल के रहें प्यार- अमन में॥प्रभु...॥10.16॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'मर्मा' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

ष्

कर्माष्ट नाशने को व्रत पुरुषार्थ चाहिए।

वृत्त-संयमादि लेके शुद्धि भाव चाहिए॥प्रभु...॥10.17॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'ष्' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

ट

मैं अष्ट द्रव्य से जिनेन्द्र की करूँ पूजा।

प्रतिमा सहित सल्लेखना, भव ना धरूँ दूजा॥प्रभु...॥10.18॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'ट' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

ब

बन्ध कर्म टाल जो सम्बन्ध जिन करें।

वे भक्त भी भगवान के ही मोक्ष पथ चलें॥प्रभु...॥10.19॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'ब' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

नन्दन हैं सिद्धार्थ के श्री वर्द्धमान जी।

नू

हम बन्दना करें सदा त्रिशला के लाल की॥

प्रभु वर्द्धमान की करूँ श्रद्धा से अर्चना।

संकट मिटें सबके यही है भक्त कामना॥ 10.20 ॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'नू' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

ध

दुदधर करूँ मैं तप यही है मेरी भावना।

निज में रमण कर जान लूँ स्वरूप आपना॥ प्रभु...॥10.21॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'ध' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

वि

विपरीत हैं हवाएँ नाव डगमगा रही।

बिगड़ी मेरी संभाल जिन अरदास है यही॥ प्रभु...॥10.22॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'वि' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

घ

घनघोर घटा मोह की है सबके मनछाई।

निर्मोह आप ही मिले ये शुभ घड़ी आई॥ प्रभु...॥10.23॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'घ' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

टा

टालें सभी विभाव तो स्वभाव धुन लगी।

आए स्वभाव में तो अन्तर चेतना जगी॥ प्रभु...॥10.24॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'टा' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

य

ये यन्त्र-मंत्र-तंत्र भी मरते न बचावें।

अतएव भक्त आपकी ही शरण में आवें॥ प्रभु...॥10.25॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'य' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

र

रहते हैं सिद्ध तो सदा ही मुक्तिधाम में।

विराजते हैं सिद्ध अनन्त एक साथ में॥ प्रभु...॥10.26॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'र' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

साधू की शान्त मूर्ति देख मन ना भरे।

सा

मम नैन आपको ही एकटक निरख रहे॥

प्रभु वर्द्धमान की करूँ श्रद्धा से अर्चना।

संकट मिटें सबके यही है भक्त कामना॥ 10.27 ॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'सा' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

य

यश कीर्तिनाथ आपकी फैली त्रिलोक में।

हम काल त्रय तिहुँ योग से नित आपको नमें॥ प्रभु...॥10.28 ॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'य' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

न

नंत सिद्धों के सब शीश होते समान हैं।

आगे तो क्योंकि धर्म द्रव्य का अभाव है॥ प्रभु...॥10.29 ॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'न' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

न

नरभव सफल उन्हीं का जो निर्दोष तप करें।

करते तप निष्कांक्ष वे शिवपुर गमन करें॥ प्रभु...॥10.30 ॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'न' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

यो

योगत्रय के साधुजन जो घोर तप करें।

वे अल्पकाल में ही ज्ञान केवली वरें॥ प्रभु...॥10.31 ॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'यो' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

य

यही तो अनवरत चले शिवराह साधना।

सदा सोलह कारण की ही भाँँ भावना॥ प्रभु...॥10.32 ॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'य' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

न्

सन्त करें साधना गुर्वाज्ञा ना टालें।

पन्च महाव्रत भी निरतिचार वे पालें॥ प्रभु...॥10.33 ॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'न्' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

नहीं ज्ञान अब तक हुआ आत्मा का।

नहीं जाना निज को किया ज्ञान सबका॥

प्रभु वर्द्धमान की करूँ श्रद्धा से अर्चना।

संकट मिटें सबके यही है भक्त कामना॥10.34॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'न' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

वे

मुनि ही तपें तप जिन्हें खेद हो ना।

तजें देह ममता धरें ध्यान अपना॥प्रभु...॥10.35॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'वे' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

त

यही सत्य मार्ग जो आगम ने जाना।

है पुरुषार्थ वो ही जो परमार्थ माना॥प्रभु...॥10.36॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'त' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

ति

तिमिर हर प्रभो! आपको नित नमूँ मैं।

जिन महावीर के ध्यान में रत रहूँ मैं॥प्रभु...॥10.37॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'ति' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

स

सम्पूर्ण ज्ञान के धनी तुम वर्द्धमान हो।

बहिरंग-अन्तरंग लक्ष्मी युत श्रीमान हो॥प्रभु...॥10.38॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'स' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

न

नरभव से ही हों मुक्त योगी-ऋषी-मुनी।

रत्नत्रयों के स्वामी भी वे ही महा गुणी॥प्रभु...॥10.39॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'न' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

त

तत्त्वों के ज्ञाता हो के भी मद आप ना करें।

हम आपसे जिनराज की नित वन्दना करें॥प्रभु...॥10.40॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'त' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

त्रय लोक में समान आपके कोई नहीं।

त्र

शुभ लक्षणों से युक्त देह आपकी कही॥

प्रभु वर्द्धमान की करूँ श्रद्धा से अर्चना।

संकट मिटें सबके यही है भक्त कामना॥10.41॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'त्र' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

म

मन के मालिक जो बनें वे वीतराग हों।

चार घाति घात कर अरिहन्त देव हों॥प्रभु...॥10.42॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'म' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

तं

तं देव वीतराग की होवे अभ्यर्थना।

जो भक्ति भाव से करें सिद्धों की अर्चना॥प्रभु...॥10.43॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'तं' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

प्र

प्रण है ये भक्त दर से खाली न जाएगा।

झोली भरेगी द्वार पे तो लौट जाएगा॥प्रभु...॥10.44॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'प्र' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

मा

माया के जाल में ही जीव आज सब फँसे।

निकले नहीं तो कुगतियों में जाएँगे धँसे॥प्रभु...॥10.45॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'मा' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

णं

जिणाणं जपें तो दुर्गति भी होय ना कभी।

नहिं विघ्न कोई आय सिद्ध काम हों सभी॥प्रभु...॥10.46॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'णं' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

वै

वैद्य हो तुम ही प्रभो भव रोग मेटना।

बस एक लक्ष्य है मेरा मुक्ति को साधना॥प्रभु...॥10.47॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'वै' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

सावद्य दोष मेटने सामायिक धारना।

द्य

सामायिक ही सबसे बड़ी है जिनाराधना॥

प्रभु वर्द्धमान की करूँ श्रद्धा से अर्चना।

संकट मिटें सबके यही है भक्त कामना॥ 10.48 ॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'द्य' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

स्

स्थित रहें निश्चित समय तिहुँयोग रोक के।

निवृत्त गृही साधु सम मानों विलोक के॥ प्रभु...॥ 10.49 ॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'स्' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

त्

वस्त्वपेक्षा कहें आत्मा तो नित्य है।

पर्यायापेक्षा यही आत्मा अनित्य है॥ प्रभु...॥ 10.50 ॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'त्' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

व

वश होय इन्द्रियों के मन को ना रोकना।

भटके चतुर्गति जिय भवभव भ्रमण घना॥ प्रभु...॥ 10.51 ॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'व' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

मे

मेरा-तेरा करूँ सदा ना भाव भासना।

तम मोह तज अब ज्ञान की ज्योती प्रकाशना॥ प्रभु...॥ 10.52 ॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'मे' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

व

वन-वन फिरें साधू संयम को साधने।

बल भेदज्ञान के महा अज्ञान नाशने॥ प्रभु...॥ 10.53 ॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'व' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

त

तप त्याग से ही हो विशुद्ध देह-आत्मा।

हो भाव शुद्धि से ही आत्मा-परमात्मा॥ प्रभु...॥ 10.54 ॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'त' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

वचनों के नहिं हाथ-पाँव-घाव कराते।

व

वाणी मधुर से घाव पर मरहम हैं लगाते॥

प्रभु वर्द्धमान की करूँ श्रद्धा से अर्चना।

संकट मिटें सबके यही है भक्त कामना॥ 10.55 ॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'व' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

वा

वाणी प्रभु की सुन के सब जीव धन्य हों।

अब तक हुए न भाव शुद्ध वे भाव नव्य हों॥ प्रभु...॥ 10.56 ॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'वा' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

क्

वक्त्रं जिनेन्द्र सुरनरोरग नेत्र मोहना।

सौन्दर्य देख भागे मदन मुँह छिपा अपना॥ प्रभु...॥ 10.57 ॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'क्' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

च

चन्द्रसूर्य कोटि फीके प्रभु के सामने।

समवशरण भेद ना ही दिवस रैन में॥ प्रभु...॥ 10.58 ॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'च' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

र

रवि रथ सहस चार सुरगण चलावते।

राज सिंह वृषभ अश्व का वे रूप धारते॥ प्रभु...॥ 10.59 ॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'र' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

सा

सार है संसार का भव भव अभाव हो।

नरभव मिले जीवन सफल फिर जीव का हो॥ प्रभु...॥ 10.60 ॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'सा' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

य

यति मुनि ऋषि अनगार भेद चार कहे हैं।

पुलाक-बकुश कुशील, निर्ग्रथ स्नातक भी हैं॥ प्रभु...॥ 10.61 ॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'य' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

नं

प्रभु वर्द्धमान की करूँ श्रद्धा से अर्चना।

ॐ ह्रीं अर्हं वर्तमानशासननायक 'नं' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...

त

वर्णा पतन निश्चित कुगतियों में जाय के॥ प्रभु...॥10.63॥

ॐ ह्रीं अर्हं वर्तमानशासननायक 'त' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...

त्

होवे जो भेद ज्ञान तो सुख आत्मा वरे॥ प्रभु...॥10.64॥

ॐ ह्रीं अर्हं वर्तमानशासननायक 'त' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...

पूर्णार्घ्य

राग-रोग को नाशने, जिन वच होय सहाय।

कर्म रिपू के छेदने, वसु विधि अर्घ्य चढ़ाय ॥10॥

ॐ ह्रीं जिनवच महिमामण्डित- प्रतिपादकाय अर्ह महाबीजाक्षरसहिताय
श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।



मिथ्या आग्रह नाशक स्तुति

शस्त्रास्त्रभूविकृतिलोहित-नेत्रवन्तं,
क्रोडीकृताघ-ममतार्त-विरुपरौद्रम्।
देवं मनन्ति जगति प्रविजृम्भितेऽपि,
चिद्वोधतेजसि सतीह किमन्धता वा ॥11॥

(छन्द अडिल्ल)

शमन कषायों का करें हम हर्ष धर।

श

मन वच तन कर भक्ति भाव जिन दर्शकर॥

इस स्तोत्र की महिमा अगम अपार है।

वर्द्धमान को वन्दन बारम्बार है॥11.1॥

ॐ ह्रीं अर्हं वर्तमानशासननायक 'श' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...

स्

हस्त जोड़ सिर झुका नमन प्रभु को करें।

प्रभु चरणों में अपने पापों को हरेँ॥इस...॥11.2॥

ॐ ह्रीं अर्हं वर्तमानशासननायक 'स्' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...

त्रा

त्रासित हो जग जीव कष्ट को भोग कर।

छूट जाएँ कर भक्ति नाथ तिहुँ योग धर॥इस...॥11.3॥

ॐ ह्रीं अर्हं वर्तमानशासननायक 'त्रा' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...

स्

स्पन्दन नहिं नयन नाथ तो थिर रहें।

निज में निज को जान आत्म प्रीती धरेँ॥इस...॥11.4॥

ॐ ह्रीं अर्हं वर्तमानशासननायक 'स्' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...

त्र

त्रय लोकों के स्वामि इन्द्र पूजा करें।

समवशरण में जिनध्वनि सुन सब मोह हरेँ॥इस...॥11.5॥

ॐ ह्रीं अर्हं वर्तमानशासननायक 'त्र' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...

भू

भू भंगिमा से कोप कोई जन जहाँ करे।
सहनशीलता से तब दूजा शान्ती धरे॥
इस स्तोत्र की महिमा अगम अपार है।
वर्द्धमान को वन्दन बारम्बार है॥11.6॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'भू' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...

वि

विपरीत ज्ञान भी कारण है मिथ्यात का।
पर से सम्बन्ध जोड़ सोचता भ्रात का॥इस...॥11.7॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'वि' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...

कृ

कृत कारित कर मोदन नित आस्रव करे।
व्रत संयम ले धार तो संवर वरे॥इस...॥11.8॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'कृ' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...

ति

तिय पिय मात पिता भ्राता सब गौर है।
निज सम है सब नहीं किसी से वैर है॥इस...॥11.9॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'ति' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...

लो

लोकोपकारी धर्म महा ये जैन है।
रहें परस्पर प्रीती धार तो चैन है॥इस...॥11.10॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'लो' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...

हि

हितकारी जिन वचन महा करुणा भरे।
जो कोई धारे उर वो ही समता धरे॥इस...॥11.11॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'हि' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...

त

तप से ही निर्जरा कही जिनदेव ने।
तप से ही गुण प्रकट आत्म मनभावने॥इस...॥11.12॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'त' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...

ने

नेत्र बनावे सहस इन्द्र शिशु जिन लखे।
नहीं होय सन्तुष्ट चाहे इकटक निरखे॥
इस स्तोत्र की महिमा अगम अपार है।
वर्द्धमान को वन्दन बारम्बार है॥11.13॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'ने' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...

त्र

त्रय गुप्ति पन समिति साधु जन पालते।
अष्ट मातृका सम हितकारी जानते॥इस...॥11.14॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'त्र' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...

व

वस्त्र शस्त्र नहीं पास दिगम्बर साधु हैं।
समकित चारित ज्ञान तप हि आराधु हैं॥इस...॥11.15॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'व' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...

न्

आनन्द मंगल होय जहाँ प्रभु भक्ति हो।
वीतराग चारित पालन की शक्ति हो॥इस...॥11.16॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'न्' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...

तं

तं देवं जिनराज मेरे आराध्य हैं।
उन सा ही तप त्याग मेरे से साध्य है॥इस...॥11.17॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'तं' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...

क्रो

क्रोड़ों पाठ करें तो जागे चेतना।
चलना है शिवराह नहीं चित्त मोड़ना॥इस...॥11.18॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'क्रो' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...

डी

ठोड़ी पर तिल होय जो आकर्षित दिल होय
नयनों को प्यारा लगे मोहित हो सब लोय॥इस...॥11.19॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'डी' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...

कृ

कृत कर्मों की चले शृंखला जन्मों तक।
नाशे पिछले निर्जरा आगे संवर धर॥
इस स्तोत्र की महिमा अगम अपार है।
वर्द्धमान को वन्दन बारम्बार है॥ 11.20 ॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'कृ' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

ता

तामसिक भोजन से उत्तेजित हों नसें।
सात्विक भोजन होय चित्त में प्रभु बसें॥ इस...॥ 11.21 ॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'ता' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

घ

घड़ी घड़ी वो करता चिंतन तत्त्व का।
चिन्तन से ही मिला ज्ञान निज सत्त्व का॥ इस...॥ 11.22 ॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'घ' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

म

मन में बने विचार यही संरम्भ है।
साधन लिए जुटाय तो समारम्भ है॥ इस...॥ 11.23 ॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'म' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

म

काम शुरु करना ही तो आरम्भ है।
कृत कारित मोदन कषायानुबन्ध है॥ इस...॥ 11.24 ॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'म' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

ता

ताला तप हि लगाय कर्म को रोकते।
शिव राह बढ़ते जाएँ स्वात्म को पोषते॥ इस...॥ 11.25 ॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'ता' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

र्त

आर्त रौद्र द्वय ध्यान त्याग निज में रमें।
ऐसे वीर मुनीन्द्र साधु को नित नमें॥ इस...॥ 11.26 ॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'र्त' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

वि

सर्व विभाव नशाय सुभाव में आवते।
ऐसे गुणी गृहस्थ आत्मनिधि पावते॥
इस स्तोत्र की महिमा अगम अपार है।
वर्द्धमान को वन्दन बारम्बार है॥11.27॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'वि' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...

रू

रूपस्थ ध्यानी साधु सदा निज रस पीते।
भेद विज्ञानी निज चिन्तन में रत रहते॥इस...॥11.28॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'रू' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...

प

पन पापों को त्याग अणूत्रत हम धरें।
दस धर्मों को धार चरित हम आचरें॥इस...॥11.29॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'प' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...

रौ

रौद्र ध्यान को त्याग धर्मध्यानी बनें।
धर्माचरण से ही आत्मज्ञानी बनें॥इस...॥11.30॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'रौ' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...

द्र

कद्र नहीं अभिमान, 'अहं' ही मन पले।
दुर्गतियों का मूल मान-शिवपथ चलें॥इस...॥11.31॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'द्र' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...

म्

अम्बर तजकर होय दिगम्बर सौख्यभर।
मिटे कषाय संयोग चित्त में हर्ष घर॥इस...॥11.32॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'म्' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...

दे

देने को है दान-ज्ञान लें हर्ष धर।
अज्ञान अनादि मिटाय रमें निज प्रीत कर॥इस...॥11.33॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'दे' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...

वं

त्वं दुख हर्ता नाथ दुखी हम ध्यावते।
सुखकर्ता हो आप चरण सिर नावते॥
इस स्तोत्र की महिमा अगम अपार है।
वर्द्धमान को वन्दन बारम्बार है॥11.34॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'वं' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...

म

मनसा वाचा काय धर्म धारण करें।
वर्द्धमान को वन्दन बारम्बार है॥इस...॥11.35॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'म' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...

न

नगर-नगर में धर्म प्रभावना करें।
वात्सल्य साधर्मी जन पर हम धरें॥इस...॥11.36॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'न' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...

न्

अन्तिम भव धर मुक्त होंय जिनराजजी।
हम पूजें जिन चरण शरण में आय जी॥इस...॥11.37॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'न्' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...

ति

तिमिर मोह नश ज्ञान होय पर - आपना।
ध्यान अनल से कर्म रिपु संहारना॥इस...॥11.38॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'ति' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...

ज

जन्म जयन्ती इसीलिए उत्सव करें।
विजय पाय निजराज आठ कर्मन हरें॥इस...॥11.39॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'ज' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...

ग

गणधर जिनवाणी सुन गूँथे द्वादशांग।
चौदह पूर्व रहें जिसमें एका दशांग॥इस...॥11.40॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'ग' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...

ति रें भव जलधि अपार ज्ञान कैवल्य वर।
 पूजें जिन अरिहन्त सदा तिहुँ योग धर॥
 इस स्तोत्र की महिमा अगम अपार है।
 वर्द्धमान को वन्दन बारम्बार है॥11.41॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'ति' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...

प्र थम आदि जिन अन्त श्री वर्धमान जिन।
 वन्दें हम दिन रैन श्री चौबीस जिन॥इस...॥11.42॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'प्र' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...

वि श्व विजयी जिनराज ज्ञाता तत्त्व के।
 हम भी ज्ञानी होय जड़-निज सत्त्व के॥इस...॥11.43॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'वि' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...

जृ ष्मिक ग्राम में आए केवली वीर हो।
 हम पूजें अरिहन्त भक्ति में चूर हों॥इस...॥11.44॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'जृ' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...

म् सम्मानित नृप करें चरण की अर्चना।
 सुर-तिर्यच भी करते जिन पद वन्दना॥इस...॥11.45॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'म्' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...

भि षग् तुम्हीं महाव्याधि के अब शान्ति कर।
 अरज करें करबद्ध नाथ भव रोग हर॥इस...॥11.46॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'भि' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...

ते गुरु मम उर में बसें विद्यासागर सन्त।
 समता भावी निस्पृह करें भ्रमण का अन्त॥इस...॥11.47॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'ते' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...

पि

पिला दिया धर्मामृत प्रभु ने मन भर कर।
मेघ गर्ज सम खिरता जिन धुनि का निर्झर॥
इस स्तोत्र की महिमा अगम अपार है।
वर्द्धमान को वन्दन बारम्बार है॥11.48॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'पि' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...

चि

चिन्मय चेतनता से जिय विस्मय धर।
पाले जिन-आज्ञा श्रद्धा उर में घर॥इस...॥11.49॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'चि' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...

द्वो

चिद्वोधाय साधु हरषे उपदेश कर।
भवि आनन्दित हो जिनधुनि रसपान कर॥इस...॥11.50॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'द्वो' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...

ध

धनुष ध्यान सन्तान करें निज लक्ष्य पर।
तीन योग एकाग्र होय जीवन सफल॥इस...॥11.51॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'ध' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...

ते

तेजोमय हो गया भक्त जिन दर्श कर।
आनन्दित हो गया गुरुपद पर्श कर॥इस...॥11.52॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'ते' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...

ज

जन्म-मरण की परम्परा को मेटने।
दीक्षा ले तप करें कर्म को काटने॥इस...॥11.53॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'ज' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...

सि

सिद्ध शिला पर नाथ विराजित हो गए।
भक्त जनों के नयन अगोचर हो गए॥इस...॥11.54॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'सि' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...

स

समवशर्ण में भव्य जीव ही आ पाते।
वर्द्धमान की पूजा से यश को पाते॥
इस स्तोत्र की महिमा अगम अपार है।
वर्द्धमान को वन्दन बारम्बार है॥11.55॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'स' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...

ती

तीर मिला भव जलधि मनुज भव पाय के।
तप से ही निज सुख मिले शिव जायके॥इस...॥11.56॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'ती' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...

ह

हर्षित हो जिन दर्शन जिसने पा लिया।
कर्म मलों को उसने अपने धो लिया॥इस...॥11.57॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'ह' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...

कि

किया विनाश मिथ्यात सुज्ञान को पायके।
धारा उर सम्यक्त शरण गुरु आयके॥इस...॥11.58॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'कि' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...

म

मन वच तन से धर्मध्यान करता रहूँ।
होय मुदित मन हृदयानन्द भरता रहूँ॥इस...॥11.59॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'म' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...

नू

चिन्तन से भी दूर हो गए नाथ हैं।
जिनवर आप अचिन्त्य भक्त के साथ हैं॥इस...॥11.60॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'नू' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...

ध

धर्मचक्र जिनवर विहार में आगे हो।
साथ चल रहे भवि मानो अब जागे हों॥इस...॥11.61॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'ध' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...

ताप मिटाने करते पूजा भाव से।
जिनभक्ती में लीन हुए स्वभाव से॥
इस स्तोत्र की महिमा अगम अपार है।
वर्द्धमान को वन्दन बारम्बार है॥ 11.62॥

वादी जीते ज्ञान केवली पाय के।
हुआ ज्ञान प्रकाश मिथ्यातम नाश के॥ इस...॥11.63॥

पूणाईर्घ्य

रागी-द्वेषी देव लख, वीतराग के दर्श।

अर्घ्य चढ़ाऊँ भक्ति से, होवे हिरदय हर्ष ॥11॥

ॐ ह्रीं वीतराग दर्शनात् पापक्षय प्रतिपादकाय अर्ह महाबीजाक्षरसहिताय
श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पुण्योदयकरी स्तुति

पुण्योदयेन तव तीर्थकराख्यकर्म-
माहात्म्यतः कलिलघातिविधिप्रणाशात्।
तीर्थोदयोऽभवदिहात्म-हिताय वीर!
पुण्यद्विषैर्नु महिमा कथमभ्युपेतः ॥12॥

(छन्द स्रग्विणी)

पु पुण्यात्मा ही दर्शन करे नाथ का।
भावों से दर्श करके बने आप सा॥
श्री पावापुरी वीर का धाम है।
भक्त आकर यहाँ लेते विश्राम हैं॥12.1॥

ॐ ह्रीं अर्हं वर्तमानशासननायक 'पु' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...

ण् मण्डित वसु गुण हो कर्मों को नाश के।
हो प्रभु आप ही सिद्ध जग शीश पे॥श्री...॥12.2॥

ॐ ह्रीं अर्हं वर्तमानशासननायक 'ण्' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...

यो निष्प्रयोजन नहीं साधु कुछ भी करें।
प्रभु की छवि उर में वे अपने धरें॥श्री...॥12.3॥

ॐ ह्रीं अर्हं वर्तमानशासननायक 'यो' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...

द दया सिंधु शिष्यों से व्रत पलवावते।
श्रावक को शिव पथ पर ही चलवावते॥श्री...॥12.4॥

ॐ ह्रीं अर्हं वर्तमानशासननायक 'द' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...

ये येन केन मिले ज्ञान गुरुवर चरण में।
करें समर्पण आय गुरूपद शरण में॥श्री...॥12.5॥

ॐ ह्रीं अर्हं वर्तमानशासननायक 'ये' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...

न

नगन दिगम्बर वेष धारा नाथ ने।
मुक्ति रमा आ गई प्रभु के सामने॥
श्री पावापुरी वीर का धाम है।
भक्त आकर यहाँ लेते विश्राम हैं॥12.6॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'न' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...

त

तम छाया है लोक गहन मिथ्यात का।
कैसे जाने हम स्वरूप सम्यक्त्व का? श्री...॥12.7॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'त' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...

व

वश नहीं हों ये पंचेन्द्रिय बलवान हों।
इनके कारण सभी जीव परेशान हों॥ श्री...॥12.8॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'व' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...

ती

तीर्थ मंगल जहाँ वीर के पग पड़े।
भक्त जन दर्श कर आप शिवमग बड़े॥ श्री...॥12.9॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'ती' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...

थ

अर्थ पुरुषार्थ से ही तो वैभव मिले।
शरण आओ प्रभु की सुमन मन खिले॥ श्री...॥12.10॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'थ' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...

क

कर सहस नेत्र इन्द्र प्रभु को लखे।
आप के नाम की जाप मन में जपे॥ श्री...॥12.11॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'क' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...

रा

राज्य शिव के लिए मार्ग शिव पर चलो।
निधि रत्नत्रय सभी हस्तगत कर चलो॥ श्री...॥12.12॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'रा' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...

यथाख्यात चारित होय चाहें सदा।

ख

इसलिए मूल गुण साधु लें सर्वदा॥

श्री पावापुरी वीर का धाम है।

भक्त आकर यहाँ लेते विश्राम हैं॥12.13॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'ख' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...

य

यही मार्ग है आत्म कल्याण का।

जो दिखाया प्रभु ने निज उत्थान का॥श्री...॥12.14॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'य' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...

क

कर की जो भी लकीरें तुम्हें नापसन्द।

दो उनको मिटा लिखों अपनी पसन्द॥श्री...॥12.15॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'क' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...

र्म

धर्म दौलत जगत में सभी जीव की।

कर्म अच्छे करें राह हो मुक्ति की॥श्री...॥12.16॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'र्म' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...

मा

मान करना नहीं; नर्क की राह है।

हाल रावण का देखो गया नर्क है॥श्री...॥12.17॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'मा' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...

हा

हाय! धिक्कार हो पापियों को सदा।

भूल स्वातम को ध्याएँ नहीं वे कदा॥श्री...॥12.18॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'हा' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...

त्

सत्य ही आत्मा शाश्वत है कहा।

क्षणभंगुर है ये तन सदा ही रहा॥श्री...॥12.19॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'त्' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...

मू

रम्य है आत्मा की कहानी सुनो।
काल अनादि भ्रमी तो शिवपथ चुनो॥
श्री पावापुरी वीर का धाम है।
भक्त आकर यहाँ लेते विश्राम हैं॥ 12.20 ॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'मू' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

य

यही मार्ग मुक्ती कहें वीर स्वामी!
नहीं भूलें निज को बनें मोक्षगामी॥ श्री...॥ 12.21 ॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'य' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

तः

अतः रचना जानो ये निज - पर के हित की।
प्रणम्य गुरु ने सुभावों सहित की॥ श्री...॥ 12.22 ॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'तः' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

क

करे कर्म नाशन का कोई उपाय।
रमें मोक्ष में जा सदा सौख्य पाय॥ श्री...॥ 12.23 ॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'क' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

लि

लिपटती कषायें कसें आत्मा को।
नहीं राग द्वेष तो स्पर्श स्वयं को॥ श्री...॥ 12.24 ॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'लि' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

ल

लम्पटी को कभी शान्ति आतम न हो।
ना विकारों से मुक्ती निजातम की हो॥ श्री...॥ 12.25 ॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'ल' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

घा

घात घातिया कर्म नाथ अरिहन्त हों।
शत इन्द्रों से पूजित वीर जिनन्द हों॥ श्री...॥ 12.26 ॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'घा' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

ति

तिर जाते भवि तीन योग संवर करें।
होय निर्जरा तप से कर्मन को हरेँ॥
श्री पावापुरी वीर का धाम है।
भक्त आकर यहाँ लेते विश्राम हैं॥ 12.27 ॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'ति' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

वि

विजयी होय भवि जो निज-पर को जानते।
पर की ममता त्याग स्वात्म सरधानते॥ श्री... ॥ 12.28 ॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'वि' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

धि

धिक् कहते ही पाप युगादि में तजे।
हा-मा-धिक् थी दंड व्यवस्था जान लें॥ श्री... ॥ 12.29 ॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'धि' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

प्र

प्रभु की शान्त छवि को निरखता रहूँ।
नैन कब तृप्त हों नाथ मैं क्या करूँ? श्री... ॥ 12.30 ॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'प्र' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

णा

गुणानां अनन्तं प्रभु वन्दन करूँ।
वीर के चरण अर्पण मैं तन मन करूँ॥ श्री... ॥ 12.31 ॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'णा' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

शा

शान्ति पूरण सभी के घरों में रहे।
स्तोत्र वर्धमान पूजा रचाते रहें॥ श्री... ॥ 12.32 ॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'शा' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

त्

नित्य सब में परस्पर बड़ी प्रीति हो।
जैन दर्शन में नहिं कुप्रथा रीति हो॥ श्री... ॥ 12.33 ॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'त्' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

ती तीन ही रत्न हैं जग में उत्तम कहे।
 ज्ञान सम्यक् चरित ये ही दुर्लभ रहे॥
 श्री पावापुरी वीर का धाम है।
 भक्त आकर यहाँ लेते विश्राम हैं॥ 12.34 ॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'ती' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...

थो अर्थोपार्जन करें न्याय नीति से हम।
 पात्र दान करें भाव भक्ति से हम॥ श्री... ॥ 12.35 ॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'थो' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...

द दया - करुणा से सहयोग कराते रहें।
 अपने भावों में शुद्धि बढ़ाते रहें॥ श्री... ॥ 12.36 ॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'द' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...

यो योजना ऐसी हो सबको रोज़ी मिले।
 रोटी - कपड़े में हो विघ्न वे भी टलें॥ श्री... ॥ 12.37 ॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'यो' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...

भ भक्त जन साधु सन्तों की सेवा करें।
 गुरु भक्ति बड़े झोली अपनी भरें॥ श्री... ॥ 12.38 ॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'भ' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...

व वन उपवन नदी प्रकृति रक्ष हो।
 पर्यावरण सही ये भी प्रत्यक्ष हो॥ श्री... ॥ 12.39 ॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'व' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...

दि दिवस-रैन पुण्यों का अर्जन करें।
 वृद्धावस्था में भावों से कीर्तन करें॥ श्री... ॥ 12.40 ॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'दि' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...

हानि-लाभ न सोच काम अच्छे करें।

हा

अपनी नज़रों में हम तो कभी ना गिरें॥

श्री पावापुरी वीर का धाम है।

भक्त आकर यहाँ लेते विश्राम हैं॥12.41॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'ह' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

त

आत्म गुण ही प्रकट हों यही चाहिए।

जीवन जीने की सबको कला चाहिए॥श्री...॥12.42॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'त' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

म

मन वचन तन की शुद्धि से संवेग हो।

ये संकल्प-विकल्प भी तभी शान्त हों॥श्री...॥12.43॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'म' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

हि

हित मित रित हो हमारा ये भोजन सभी।

पानी ऋतु से ना विपरीत होवे कभी॥श्री...॥12.44॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'हि' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

ता

ताला अशुभास्रवों पर लगाया करें।

होवे संवर ये कोशिश कराया करें॥श्री...॥12.45॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'ता' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

य

यजन करके प्रभु का भजन हम करें।

गुण गायन से ही मन को पावन करें॥श्री...॥12.46॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'य' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

वी

वीतरागी प्रभु की ही महिमा रही।

वीतशोक भी जिनवर की संज्ञा कहीं॥श्री...॥12.47॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'वी' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

रस परित्याग भी बाह्य तप है महा।

र

अन्तरंग तपों में हो प्रवृत्ति कहा॥

श्री पावापुरी वीर का धाम है।

भक्त आकर यहाँ लेते विश्राम हैं॥12.48॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'र' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...

पु

पुण्यशाली हों जो जिन न्हवन नित करें।

ताप भौतिक जगत के ये तीनों हरेँ॥श्री...॥12.49॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'पु' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...

ण

गण्य हों पुण्य हों वे गुणाग्रही हों।

स्वर्ग के देव भी कृष्ण गुण मोही हों॥श्री...॥12.50॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'ण' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...

य

यति-मुनि भी निराकुल तपों को तपें।

ऋषि-अनगार भी नाम प्रभु का जपें॥श्री...॥12.51॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'य' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...

द्वि

त्याग द्विदल करें मूल हिंसा का है।

सूक्ष्म जीवों सहित दाल दही मिश्र है॥श्री...॥12.52॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'द्वि' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...

चै

विचै जन न प्रभु महिमा को मानते।

वृद्धजन तो प्रभु नाम सरधानते॥श्री...॥12.53॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'चै' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...

नु

स्वानुभूतिनुसारी जो पूजा करें।

अष्ट कर्मों को अपने वे साधु हरेँ॥श्री...॥12.54॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'नु' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...

म

मणि मंत्र तंत्र ना मरते बचावें।
हो आयु करम तो सहाई करावें॥
श्री पावापुरी वीर का धाम है।
भक्त आकर यहाँ लेते विश्राम हैं॥12.55॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'म' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...

हि

हितैषी विरागी हो जिनदेव स्वामी।
हो सर्वज्ञ कैवल्य दिनकर सुनामी॥श्री...॥12.56॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'हि' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...

मा

मानी की गती हो बाण सम ही कही।
वो भी ऊपर से गिरता धरा पे युं ही॥श्री...॥12.57॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'मा' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...

क

कषायें न हों वे ना पीड़ा सतावे।
सदा ध्यान जिन में ही मन को लगावे॥श्री...॥12.58॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'क' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...

थ

थकें देव गणधर न गुण पूरे गाएँ।
तो स्तुति प्रभु की कहो किं बताएँ॥श्री...॥12.59॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'थ' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...

म

मन्द सुगन्ध अनिल हो समवशरण।
चव अंगुल अधर हों भू से प्रभु चरण॥श्री...॥12.60॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'म' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...

भू

अभ्युदय से तो सुख हो गृही का कहा।
कहें निःश्रेयस सौख्य तो मुक्ती वहा॥श्री...॥12.61॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'भू' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...

यु

श्री पावापुरी वीर का धाम है।

ॐ ह्रीं अर्हं वर्तमानशासननायक 'यु' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...

पे

लें समोशरण में नाम इन्द्र भी ये॥ श्री...॥12.63॥

ॐ ह्रीं अर्हं वर्तमानशासननायक 'पे' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्यम्...

तः

जो भी जिनगृह में आकर करें ठाठ से॥श्री...॥12.64॥

ॐ ह्रीं अर्हं वर्तमानशासननायक 'तः' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...

अर्घ्य चढ़ा आनन्द से, करें नाथ गुणगान ॥12॥

ॐ ह्रीं पुण्योदय गरिमा प्रतिपादकाय अर्हं महाबीजाक्षरसहिताय
श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।



समृद्धिवर्धक स्तुति

गर्भोत्सवे प्रतिदिनं पृथुरन्नवृष्टि-
जन्मोत्सवे सकल-लोक-सुशान्त-वृत्तिः।
सर्वातिशायनगुणा दश जन्मनस्ते,
सूक्ष्मेण को गणयितुं गुणतां तु शक्तः ॥13॥

(छन्द चौपाई)

ग

गगन मार्ग आए सुर सारे,
गर्भ में आए सन्मति प्यारे।
गर्भ शोधना शची कराए,
सीप में मोती सम पधराए॥13.1॥

ॐ ह्रीं अर्हं वर्तमानशासननायक 'ग' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...

र्भो

गर्भोत्सव सबका मन हरता,
सुवर्ण पन्द्रह मास बरसता।
ले जाती थी परजा भर-भर,
सुख शान्ति फैली थी घर-घर॥13.2॥

ॐ ह्रीं अर्हं वर्तमानशासननायक 'र्भो' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...

त्

सत्यमती श्रुत अवधी धरते,
भव भव के कल्मष को हरते।
प्रभुवर की महिमा है न्यारी,
दर्शन कर हों भवि अविकारी॥13.3॥

ॐ ह्रीं अर्हं वर्तमानशासननायक 'त्' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...

स

सर्व घाती कर्मों को चूरा,
भरा ज्ञान से हिरदय पूरा।
देवी देव करें जयकारा,
गूँज उठा नभ मण्डल सारा॥13.4॥

ॐ ह्रीं अर्हं वर्तमानशासननायक 'स' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...

वे

वे मेधावी हो जाते हैं,
जो जिनवाणी सुन पाते हैं।
हिरदय में धारण कर लेते,
नरभव के फल को पा लेते॥13.5॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'वे' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

प्र

प्रज्ञाधारी पूर्व भवों से,
सोलह कारण के भाने से।
सोलह स्वप्न देखतीं माता,
शिशु हों तीर्थकर विख्याता॥13.6॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'प्र' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

ति

तिलांजलि दी भौतिक धन को,
पाया है अब निज गुणधन को।
मुझको भी प्रभु धनी बनाओ,
आत्मगुणों की प्राप्ति कराओ॥13.7॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'ति' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

दि

दिवस-रैन का भेद भुलाते,
मणि- रत्नों का प्रकाश पाते।
समवशरण की शोभा भारी,
भामण्डल की छवि उजियारी॥13.8॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'दि' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

नं

नंदन हैं त्रिशला माता के,
राजकुँवर सिद्धार्थ पिता के।
स्वर्गों से मोह तज कर आए,
जननी उदर आप पधराए॥13.9॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'नं' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

पृ

पृथक् विक्रिया देव कराते,
नारकि जिय अपृथक् कराते।
सुरतन मूल रहता विमान में,
नारकि विक्रिया करते तन में॥13.10॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'पृ' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

थु

पृथु रत्न वृष्टि नित होती,
प्रजा दुःख दरिद्रता खोती।
पन्द्रह मास रतन नित बरसें,
मात-पिता निज मन में हरषें॥13.11॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'थु' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

र

रत रहते सेवा में निशदिन,
देव देविचाँ आते ततछिन।
गूढ़ प्रश्न माता से करती,
माता झट से उत्तर देतीं॥13.12॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'र' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

त्

नित्य मनोरंजन करती हैं,
माता के श्रम को हरती हैं।
शिशुजिन पद्मासन में रहते,
तनिक कष्ट माँ को नहीं देते॥13.13॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'त्' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

न

नरभव उसका सफल कहाया,
जिसने संयम को अपनाया।
मुझको भी संयम पथ चलना,
अरज नाथ तुम शरणे रखना॥13.14॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'न' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

वृ

वृद्ध जनों पर संकट भारी,
अर्द्धमृतक सम देह दुखारी।
काया घिरती है रोगों से,
उदासीनता हो भोगों से॥13.15॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'वृ' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

ष

शिष्ट जनों की शोभा न्यारी,
बोलचाल होती संस्कारी।
इनका संग साथ जो पाते,
दानव भी मानव बन जाते॥13.16॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'ष' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

टि

टिका रहूँ प्रभु गुरुचरणों में,
लक्ष्य यही है बस जीवन में।
सदा रहे सद् बुद्धी मेरी,
करूँ सर्वदा स्तुती तेरी॥13.17॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'टि' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

ज

अर्ज यही है जिन चरणों में,
साता हो सब दुष्कर्मों में।
संवर रोके कर्म का आना,
निर्जर संचित कर्म निशाना॥13.18॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'ज' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

नृ

जन्म नहीं होगा अब तेरा,
हुआ कर्म का नाश घनेरा।
चरम शरीरी कहलाते हो,
शिवपुर तद्भव से जाते हो॥13.19॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'नृ' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

मो

मोक्ष कहा तन से छुटकारा,
सदा-सदा आतम सुखन्यारा।
गति पंचम से आगति नाहीं,
आतम रस का पान कराहीं॥13.20॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'मो' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

तृ

जित्वा राग द्वेष को जीते,
समरस गुरु निरन्तर पीते।
गुरुसम समता मैं भी पाऊँ,
गुरु चरणों में नमन कराऊँ॥13.21॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'तृ' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

स

समकित ज्ञान चरित सुखकारी,
रत्नत्रय को पाना भारी।
मुनिपद पूजित है भविजन से,
श्रावक पद पाएँ यत्नों से॥13.22॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'स' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

वे

वेगवान हैं सभी कषाएँ,
सामान्य जन वश नहीं पाएँ।
हो विवेक तो बच सकते हैं,
मन पर संयम रख सकते हैं॥13.23॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'वे' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

स

सर्व असाता कर्म नशाता,
जब जिय भेद ज्ञान पा जाता।
जान आपको आप रमावे,
अशुभ कर्म भी शुभ हो जावे॥13.24॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'स' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

क

कथन करूँ मैं सदा आपका,
खण्डन हो वे मम पापों का।
अब मैं प्रीति लगाऊँ प्रभु से,
छूट जाऊँ भव सन्तापों से॥13.25॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'क' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

ल

लड़ी टूट जाए कर्मों की,
शान्ति होय सब दुष्कर्मों की।
नशे श्रृंखला जन्म-मरण की,
शरणागत हूँ प्रभु चरणन की॥13.26॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'ल' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

लो

लोकालोक विलोकी जिनवर,
हुए केवली मेरे प्रभुवर।
ज्ञान सूर्य का हुआ उजाला,
सब कुछ प्रभु का देखा-भाला॥13.27॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'लो' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

क

कर्म सन्तति चली आ रही,
कब पाऊँ मैं मोक्ष की मही?
हे भगवन अब तो साता दो,
इन कर्मों की शान्ति करा दो॥13.28॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'क' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

सु

सुन्दर है आत्मा इस जग में,
आत्मा से उजियारा जग में।
लोक आत्मा से सुन्दर है,
सुन्दरता मेरे अन्दर है॥13.29॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'सु' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

शा

शाम होय जीवन की मेरे,
सामने हों प्रभु चरणन तेरे।
अधरों पर प्रभु नाम तिहारा,
होय समाधी मरण हमारा॥13.30॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'शा' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

नू

नन्ही बूंदें जल की मन को,
सुखकर लगती हैं इस तन को।
जिह्वा को तालू पे लगाओ,
ध्यान में अमृत बूंदें पाओ॥13.31॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'नू' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

त

हित मित रित भोजन को लेना,
औषधि की भी जरूरत हो ना।
रोगों से भी बच जाते हैं,
भोगो में नहिं फंस पाते हैं॥13.32॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'त' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

वृ

वृष्टि धर्म मुनिराज कराते,
श्रावक निज अज्ञान मिटाते।
चतुर्मास आनन्द रस बरसे,
पात्रदान से भविजन हरषे॥13.33॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'वृ' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

त्ति:

वृत्ति: शान्त होवे भव्यों की,
भावना भाएं जगजन सुख की।
सम्पत्ति का भी दान कराते,
जीवन भी परमार्थ बिताते॥13.34॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'त्ति:' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

स

समिति पाँच गुप्ती त्रय जानो,
पंच अणुव्रत सुखकर मानो।
तेरह विधि चारित्र बताया,
भिन्न भिन्न हैं चेतन-काया॥13.35॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'स' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

व

सर्वान्त में वर्द्धमान आए,
पावापुर में ध्यान लगाए।
पद्म सरोवर नाम कहाया,
प्रात अमावस निज पद पाया॥13.36॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'व' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

ति

तिलक लगाते नर मस्तक पर,
शक्ति मुक्त होने की सत्वर।
बिन्दी से नारी को सजाते,
सूक्ष्म रूप शक्ति बतलाते॥13.37॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'ति' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

शा

शास्त्रों का वाचन सुखकारी,
सुधि आती स्वातम मनहारी।
स्वाध्याय से ज्ञान हो अपना,
पूर्ण होय मुक्ती का सपना॥13.38॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'शा' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

य

यम-नियमों का पालन करना,
इस भव-पर भव में सुख भरना।
धागा हो सुई मिल जाती है,
नियम से आतम तिर जाती है॥13.39॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'य' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

न

नगन दिगम्बर मुद्रा लख कर,
सुर नर पशु आनन्द में भरकर।
झुक झुक चरणों शीश नवाते,
धन्य भाग्य गुरु दर्शन पाते॥13.40॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'न' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

गु

गुरु दर्शन से पाप नशावें,
गुरु की महिमा गा नहिं पावे।
व्रत ले जीवन सफल बनावें,
गुरु गुण गायन नित्य करावें॥13.41॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'गु' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

णा

परिणामों की होय विशुद्धी,
रत्नत्रय से तन मन शुद्धी।
ज्यों ज्यों शुद्धी बढ़त जाती,
शिवरमणी मन में मुस्काती॥13.42॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'णा' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

द

दमन करें हम इच्छाओं का,
शमन करें चारों कषायों का।
घोर तपों को तपते जाते,
शिवपुर को मुनि पास ही पाते॥13.43॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'द' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

श

शम दम यम मय साधू जीवन,
लखते मुदित भाव जिन न्हवन।
जिन दर्शन से निज दर्शन कर,
हों प्रसन्न स्वातम अनुभव कर॥13.44॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'श' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

ज

जल से फल तक आठ द्रव्य ले,
अर्घ्य मनोहारी कर में ले।
चले पूजने वर्द्धमान को,
अपना मन पावन करने को॥13.45॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'ज' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

न्

अन्तिम भव हो तप करने को,
तप से मुक्तिरमा वरने को।
हो जाए भव भव का अभाव,
हों विशुद्ध अब अपने भाव॥13.46॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'न्' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

म

मनमन्दिर में नाथ बिठाऊँ,
उनको अपनी अरज सुनाऊँ।
सुनो नाथ निज शरण में ले लो,
हमको भी अपने सम कर लो॥13.47॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'म' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

न

नहीं जगत में मन है लगता,
निज में रमना अच्छा लगता।
काया से अब मोह छुड़ा दो,
शिवपथ पर ही शीघ्र बढ़ा दो॥13.48॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'न' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

स्

अस्त होय या रवि निकले जब,
होय लालिमा दोनों ही सम।
सुख के पीछे दुख आता है,
दुख ही फिर सुख को लाता है॥13.49॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'स्' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

ते

ते जिनवर मेरे आराध्य,
जिनके लिए सभी कुछ साध्य।
प्रभु भक्ती का झरता झरना,
प्रभु भक्ती में ही अब रमना॥13.50॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'ते' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

सू

सूना सूना जग गुरुवर बिन,
मोक्ष मार्ग भी नहीं गुरु बिन।
गुरुवर प्राणाधार हमारे,
गुरु के ऊपर जीवन वारें॥13.51॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'सू' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

क्ष

लक्ष्य यही हो अब जीवन का,
टूटे बंधन इन कर्मों का।
तप की ऐसी अनल जलाऊँ,
भवसागर को शीघ्र सुखाऊँ॥13.52॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'क्ष' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

मे

मेरे मन वच तन हैं अर्पण,
जिनवर को सब भाव समर्पण।
एक-एक सीढ़ी चढ़ जाऊँ,
रत्नत्रय की निधि ले पाऊँ॥13.53॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'मे' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

ण

रणभूमी नहीं पीठ दिखावें,
कर्मभूमि शुभ कर्म करावें।
शुभ से ही शुद्धी में जाएँ,
भाव शुद्धी शुद्धातम पाएँ॥13.54॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'ण' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

को

कोप मान माया नहिं करने,
करें क्रिया हम लालच हरने।
ये कषाएँ ही दुख देती हैं,
सौख्य चैन सब हर लेती है॥13.55॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'को' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

ग

गमन साधु करते ईर्या पथ,
चार हाथ लख करके जन पथ।
वचन भी हित मित मुख से झरते,
खड़े अंजुलि आहार करते॥13.56॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'ग' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

ण

णमो जिणाणं साधु नमते,
आक्रमण खुद निज पर करते।
कायोत्सर्ग करें ममता तज,
नाम प्रभु का ही हर पल भज॥13.57॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'ण' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

यि

अयि! स्थायी है वास सिद्धालय,
प्रभु भक्ति को बने जिनालय्।
यथा शक्ति हम भक्ति कराएँ,
भक्ती से भवदधि तिर जाएँ॥13.58॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'यि' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

तुं

तुंगमान मुनि मानतुंग का,
ध्यान धरा श्री आदिनाथ का।
श्री भक्तामर स्तोत्र रच दिया,
स्वातम का उत्थान कर लिया॥13.59॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'तुं' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

गु

गुरु प्रणम्य का अर्हम योग,
जो करते गुरु चरण संयोग।
मिले स्वास्थ्य संपति अधिकाय,
जीवन में आनन्द भर जाय॥13.60॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'गु' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

ण

गुण गायन कैसे हो गुरु का,
महाब्रती गुण के सागर का।
परीषह बाईस हैं सहते,
ज्ञानकोष भी इनको कहते॥13.61॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'ण' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

तां

निर्विषतां हि प्राप्त करें जो,
सुख अचिंत्य भरपूर लहें वो।
नित प्रभु का गुणगान कराएं,
पूजा भक्ती भाव रचाएं॥13.62॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'तां' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

तु

अपितु जपे श्रुतदेवी नाम,
सोलह गौः कहते सुख धाम।
इन सोलह नामों को पढ़ता,
पात्र सरस्वती का प्रिय बनता॥13.63॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'तु' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

श

शयन करें इक करवट साधू,
आराधन चारों आराधू।
तपसी ना इन सम कोई देखा,
नहिं प्रमाद की किंचित् रेखा॥13.64॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'श' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

वक्त्र नाथ का कितना प्यारा,
तीन लोक में हो उजियारा।
सुर-नर-पशु सबके मन हरता,
चुम्बक सम आकर्षित करता॥13.65॥

तः

अतः करें गुरुदेव की सेवा,
सेवा से मिलता है मेवा।
ज्ञान की मेवा को यदि चाहो,
तो प्रणम्य गुरु शरण में आओ॥13.66॥

ॐ ह्रीं अर्हं वर्तमानशासननायक 'तः' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...

गर्भागम से पूर्व ही, बरसें रतन अपार।

नाचें गाएँ अर्घ्य ले, नमें वीर बहु बार ॥13॥

ॐ ह्रीं गर्भकल्याणक अतिशय प्रति प्रादकाय अर्ह महाबीजाक्षरसहिताय
श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।



जन्मोत्सव स्तुति

निःस्वेदताऽस्ति वपुषो मलशून्यता ते,
स्वाद्याकृतिः परमसंहननं सुरूपम्।
सौलक्ष्य - सौरभ - मपार - समर्थता च,
सप्रीतिभाषण-मथा-सम-दुग्धरक्तम् ॥14॥

(छन्द ज्ञानोदय)

निः

निःश्रेयस सुख चाहो तो तुम, जिनवर शरण में आ जाना।

जिनवाणी को हृदय धार कर, शिवपुर पथ को पा जाना ॥14.1॥

ॐ ह्रीं अर्हं वर्तमानशासननायक 'निः' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...।

स्

स्वेद-खेद ये दोष अठारह, शिशु जिनवर में नहीं होते।

पूर्व भवों के पुण्यों से इन, दोषों को शिशु जिन खोते ॥14.2॥

ॐ ह्रीं अर्हं वर्तमानशासननायक 'स्' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...।

वे

वे जब मात उदर में आते, गर्भ शोधना शची करे।

सुरगण मात पिता पूजा कर, महलों में जयकार करें ॥14.3॥

ॐ ह्रीं अर्हं वर्तमानशासननायक 'वे' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...।

द

दया क्षमा का वास हृदय में, समता जिन धारण करते।

सब जीवों पर करुणा करके, वात्सल्य सब पर धरते ॥14.4॥

ॐ ह्रीं अर्हं वर्तमानशासननायक 'द' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...।

ता

ताला लगा दिया अशुभास्रव, आठ वर्ष में अणुव्रत लें।

रहें सदा निज आत्मध्यान में, पाप ताप सन्ताप टलें ॥14.5॥

ॐ ह्रीं अर्हं वर्तमानशासननायक 'ता' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...।

स्

रहस्य कहा है अन्तराय को, शत्रु मोहनी कर्म कहा।

रज है ज्ञाना-दर्शनावरणी, यही ज्ञान तो प्रमुख रहा ॥14.6॥

ॐ ह्रीं अर्हं वर्तमानशासननायक 'स्' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...।

ति

तिमिर मोह को हरा नाथ ने, ज्ञान किरण को विकसाया।

मुझको भी दो ज्ञान ज्योति अब, मैं भी चरण शरण आया॥14.7॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'ति' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

व

वही भक्त जो श्री जिन आगे, आठों द्रव्य चढ़ाता है।

समकित ज्ञान चरित को पाकर, आठों कर्म नशाता है॥14.8॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'व' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

पु

पुद्गल भिन्न है जीव भिन्न है, यही ज्ञान दुर्लभ जानो।

भेद ज्ञान जब प्राप्त कर लिया, तो मन से भी सरधानो॥14.9॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'पु' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

षो

षोडश कारण भावना भाय, दर्श विशुद्धि दृढ़ता लाय।

केवलि या श्रुत केवलि पद में, तीर्थकर प्रकृति बँधाय॥14.10॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'षो' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

म

मन वांछित फल भवि पा लेते, जिन दर्शन से चित्त हर्षाय।

निःकाचित निधत्ति कर्म भी, जिन दर्शन से ही नश जाय॥14.11॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'म' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

ल

लज्जित होना पड़ता उनको, धर्म-कर्म में छल करते।

देव शास्त्र गुरु का अविनय कर, नरकों के दुख भी सहते॥14.12॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'ल' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

शू

शूकर - कूकर वे ही बनते, जो निशि भोजन करते हैं।

हिंसा के कारण जग में दुख, छेदन-भेदन भरते हैं॥14.13॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'शू' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

न्

चिन्तन करके तत्वों का जो, निजाचरण में लाते हैं।

वे ही संयम को अपनाते, आगे बढ़ते जाते हैं॥14.14॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'न्' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

य

यही भावना भावि जीवों के, गुणस्थान बढ़वाती है।

क्षपक श्रेणी चढ़ ऊपर जाय, केवली पद दिलवाती है॥14.15॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'य' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

ता

तारणहारा अपना चेतन, प्रभु सहाई हो जाते।

भाव शुभाशुभ त्याग शुद्धातम, अपने पद को पा लेते॥14.16॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'ता' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

ते

तेरा-मेरा करते करते, जाए उमर बुढ़ापा आय।

कब स्वातम में रमूं निरन्तर, मेरा पुण्य साथ ही जाय॥14.17॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'ते' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

स्

कस्य संग में कोई निभाय, साथ कोई नहीं जाता है।

अपनी-अपनी उम्र भोग कर, हँस तभी उड़ जाता है॥14.18॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'स्' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

वा

वादा करते सात जन्म का, नहीं निभाते एक जन्म।

कैसी है ये रीत प्रीत की, याद रहे बस अपना ग़म॥14.19॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'वा' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

द्या

आद्या कृति षट्खण्डागम जी, भूतबलि पुष्पदन्त रचाय।

मंगलाचरण लिखा जो गुरु ने, महामंत्र नवकार कहाय॥14.20॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'द्या' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

कृ

कृत दुष्कर्म हुए जो मेरे, उन्हें भोगना है मुझको।

सुख दुख नहीं दे सकता कोई, स्वयं खिराना है मुझको॥14.21॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'कृ' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

तिः

विश्वमूर्तिः जिनवर मेरे, मन मन्दिर में राज रहे।

जीवन के हर पल में उनका, मेरे मन पर राज रहे॥14.22॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'तिः' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

प

परम प्रभा जिनके चरणों की, मम मन में होती द्युतिमान।

इस ही अतिशय से हो जाता, मेरे पापों का अवसान॥14.23॥

ॐ ह्रीं अर्हं वर्तमानशासननायक 'प' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...।

र

रत्न इन्द्रनील मणियों की, घरा सुशोभित समवशरण।

दर्पण सम सोहे वहाँ वसुधा, सबको मिलती जहाँ शरण॥14.24॥

ॐ ह्रीं अर्हं वर्तमानशासननायक 'र' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...।

म

महामंत्र नवकार जपें सब, तन-मन में आनन्द भरे।

जन्म समय भी पढ़ें निरन्तर, अन्त पढ़े जब जीव मरे॥14.25॥

ॐ ह्रीं अर्हं वर्तमानशासननायक 'म' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...।

सं

संत शिरोमणि विद्यासागर, इस युग के अरिहन्त कहे।

कोटि नमन उनके चरणों में, वन्दन शत-शत बार रहे॥14.26॥

ॐ ह्रीं अर्हं वर्तमानशासननायक 'सं' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...।

ह

हनन करें हम वसु करमों का, मनन करें सप्त तत्त्वों का।

शमन करें हम चार कषाएँ, दमन करें इच्छाओं का॥14.27॥

ॐ ह्रीं अर्हं वर्तमानशासननायक 'ह' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...।

न

नमन करें सब अरिहन्तों को, सब सिद्धों का धारें ध्यान।

आचार्यों को वन्दन करके, सर्व साधुओं का सम्मान॥14.28॥

ॐ ह्रीं अर्हं वर्तमानशासननायक 'न' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...।

नं

नंदन हैं त्रिशला माता के, सिद्धारथ दाम्पत्य सुमन।

कुण्डलपुर में जन्म हुआ था, पावापुर से मोक्ष गमन॥14.29॥

ॐ ह्रीं अर्हं वर्तमानशासननायक 'नं' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...।

सु

सुमरण करें जिनेन्द्र देव का, प्रतिदिन तीनों योग से।

अन्त समय सुमरण ही होगा, जिनागम गुर्वाशीष से॥14.30॥

ॐ ह्रीं अर्हं वर्तमानशासननायक 'सु' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...।

रू

रूपी हैं पुद्गल पदार्थ सब, एक अरूपी है जिय भूप।

निज चेतन को भिन्न जान लें, तो ही हो वह ज्ञान अनूप॥14.31॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'रू' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

प

परम पूज्य गुरु के चरणों में, शरण प्राप्त जो कर लेते।

वे ही भव सागर तिर जाते, आत्म ज्ञान को पा लेते॥14.32॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'प' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

म्

गम्य है जो केवल योगी के, नहिं जानें सामान्य जन।

ऐसा है वह ईश्वर जग में, फिर भी पूजें मन वच तन॥14.33॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'म्' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

सौ

है सौभाग्य उन्हीं का उत्तम, घर में जो वैराग धरें।

बारह व्रत का पालन करके, भावना हो गृह त्याग करें॥14.34॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'सौ' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

ल

लम्बी राहों पर भी साधक, सहज गमन कर लेते हैं।

प्रभु कृपा से गुर्वाश्रय से, मंजिल को पा लेते हैं॥14.35॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'ल' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

क्ष

लक्ष्य बनाया जिसने अपना, निजाधीन पद पाने का।

वह चिन्ता नहीं करे देह की, स्वातम में रम जाने का॥14.36॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'क्ष' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

य

यही भावना मुक्ति मार्ग की, जीवन को आबाद करे।

शिवपथ पर बढ़ता वह राही, वही राह निर्बाध करे॥14.37॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'य' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

सौ

सौगन्ध लेके करें गमन तो, नहीं भटकते शिवमग से।

सिद्ध शिला पर जा पधराते, जिनवर-गुरु की भक्ती से॥14.38॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'सौ' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

र

रग-रग में संस्कार दौड़ते, शिष्टजनों के जीवन में।

हँस समान हो शोभा उनकी, काग सहस्र समूहन में॥14.39॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'र' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

भ

भरत भ्रात प्रतिशल्य मिटाकर, बाहुबली योगीश भए।

बाहुबली को शीश झुका कर, भरतराज चक्रीश हुए॥14.40॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'भ' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

म

मदिरा मोह की पी लेते जो, निज-पर का कुछ भान नहीं।

सप्त व्यसन में फँस कर वे, जाते नरक-निगोद मही॥14.41॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'म' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

पा

पादाम्बुज में वर्धमान के, जो भी शीश झुका जाते।

तीर्थकर पद की महिमा से, वैभव अपना पा जाते॥14.42॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'पा' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

र

रश्मि सूर्य की आ जाए तो, घोर तिमिर में उजियारा।

जीवन के आपत्ति काल में, बने मदद लघु भी सहारा॥14.43॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'र' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

स

सजग रहो तुम हर पल भाई! लो विवेक भी प्रकटाय।

धारण कर लो पंच अणुव्रत, निश्चय दिवि में ही जाय॥14.44॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'स' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

म

मन वच तन से लीन रहें हम, देव शास्त्र गुरु भक्ति में।

तीन काल सामायिक कर लें, वृद्धि साधना शक्ति में॥14.45॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'म' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

थ

अर्थ उपार्जन करो जवानी, बचपन में हो ज्ञानार्जन।

पुण्यार्जन हो वृद्धावस्था, भाव सभी प्रभु को अर्पण॥14.46॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'थ' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

ता

ताम-झाम हो लाख इकट्ठा, काम वक्त पर नहीं आता।

जितनी जरूरत कर लों संचय, शेष साथ कुछ नहीं जाता॥14.47॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'ता' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

च

चमर दुरें चौंसठ जिनवर पर,मानो झरना नीर बहे।

नज़र लगे तो चमर दुराओ,बुरी नज़र नहीं शेष रहे॥14.48॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'च' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

स

समय बढ़ा बलवान लोक में, नर नारायण बन जाए।

गिरे अर्श से फर्श पे आके, रंक - राव भी हो जाए॥14.49॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'स' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

प्री

प्रीत जगत में करो सभी से, वात्सल्य सब पर हो जाय।

लगे कुटुम्ब सम वसुधा सारी, बिन्दु सिन्धु में जाय समाय॥14.50॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'प्री' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

ति

तिमिर अज्ञान में सूरदास हों, ज्ञान ज्योति में चक्षु खुलाय।

बन्द नयन खोले गुरुवर ने, गुरुदेव को शीश झुकाय॥14.51॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'ति' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

भा

भामंडल हो प्रभु के पीछे, कोटि रवि फीके हो जाएँ।

भूत भावि अरु वर्तमान के, सात जन्म भवि को दर्शाएँ॥14.52॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'भा' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

ष

षट् अनायतन कहे गुरु ने, कुगुरु कुदेव कुधर्म है बताय।

जो भी इन का संग करता है, नैया सागर बीच डुबाय॥14.53॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'ष' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

ण

णमोकार जप करू निवारण, राग द्वेष अरु मोह कषाय।

स्वातम को कर लूँ मैं निर्मल, अपने आठों करम नशाय॥14.54॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'ण' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

म

मन वच तन से करूँ समर्पण, गुरु चरणों में खुशी मनाय।

आशिष गुरुवर का मिल जाय, तो मेरी बिगड़ी बन जाय॥14.55॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'म' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

था

थाम लिया मुझको गुरुवर ने, धर्म ध्यान में दिया लगाय।

जीवन हुआ स्वर्ग सम मेरा, दुर्गतियों से लिया बचाय॥14.56॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'था' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

स

समता भाव अगर मन आए, तो भावों की शुद्धि बढ़ाय।

लगे सभी जिय अपने ही सम, तो फिर किसका बुरा कराय॥14.57॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'स' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

म

मन पावन करने को ही मैं, निशदिन प्रभु का नाम रटाय।

सब जीवों में प्रभु दिखते हैं, प्रभु में अपनी छवि दिखाय॥14.58॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'म' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

दु

दुश्मन को भी मीत बना लूँ, हे जिन ऐसे भाव बनाय।

मैत्री रहे सभी से मेरी, नहीं पराया कोय रहाय॥14.59॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'दु' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

गू

रूग्ण कभी स्थिर नहीं होता, पीड़ा में ही दुखी रहे।

आसन-ध्यान लगे नहीं उससे, जन्म मनुज का व्यर्थ रहे॥14.60॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'गू' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

ध

धन तो धरा का है धरा पर, ही धरा रह जाएगा।

गया सिकन्दर कर फैलाए, तू भी यों ही जाएगा॥14.61॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'ध' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

र

रस नहीं निजातम पी सका जो, व्यर्थ ही नर भव धरा।

ज़िन्दगी नीरस होय उसकी, कुगतियों में ही पग धरा॥14.62॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'र' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

शक्य है मुक्ति मार्ग जाना, मन से संयम श्रेष्ठ हो।

हैं सहायक निमित्त सारे, प्राणी जगत से मुक्त हो॥14.63॥

तड़पते हैं जग में अनाड़ी, जो खिलाड़ी भव पार हों।

भोग भुजंग पे हों खड़े वे, काम मोह मद क्षार हों॥14.64॥

रख है वर्धमान स्तोत्र, महिमा बड़ी भगवान की।

भक्ती भाव रचाएँ पूजा तो, हो गती सम्मान की॥14.65॥

ॐ ह्रीं अर्हं वर्तमानशासननायक 'म्' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्यम्...

पूणाईर्घ्य

अतिशायी बल रूपजिन, रक्तदुग्ध सम श्वेत।

हित मित बच बोलें प्रिय, अर्घ्य आत्म हित हेत ॥14॥

ॐ ह्रीं जन्मातिशय प्रतिपादकाय अर्ह महाबीजाक्षरसहिताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय
नमः पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।



केवलज्ञानोत्सव स्तुति

क्रोशं चतुःशतमिलाफलके सुभिक्षः,
शून्यश्च जीववधभुक्त्युपसर्गतायाः।
विद्येश्वरः खगमनं नख-केश-वृद्धि-
छाया-विहीन-मनिमेष-मुखं चतुष्कम् ॥15॥

(छन्द पद्धरी)

क्रो

क्रोध लोभ आदिक विनशाय,
माया मान चित्त नहिंलाय।
रहित कषाय दशा प्रकटाय,
वर्धमान को शीश नवाय ॥15.1॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'क्रो' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...

शं

शंभव स्वयं प्रभु जिनराय,
सहस नाम जपते सुखदाय।
प्रभु प्रभाव से सुधरें काज,
तुम वाणी सबकी सिरताज ॥15.2॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'शं' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...

च

चत्वारी मंगल बतलाएँ,
अर्हत सिद्ध साधु मन लाएँ।
कथित केवली धर्म हमारा,
भविजन को भव पार उतारा ॥15.3॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'च' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...

तुः

चतुः दान की महिमा गाएँ,
औषधि अभय दान दिलवाएँ।
पात्रदान उत्तम आहारा,
ज्ञान दान से हो भव पारा ॥15.4॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'तुः' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...

श

शहद कभी ना कोई रवाय,
मानो सात हि गाँव जलाय।
साक्षात् हिंसा का कारण,
शहद तर्जे तो पाप निवारण॥15.5॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'श' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

त

तत्त्व सात तो सबहि जानें,
लेकिन उनको कितने मानें।
कितने चिन्तन मनन कराते,
कितने धारण कर तिर जाते॥15.6॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'त' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

मि

मिला ना काम करें जो चोखा,
खाया है अपनों से धोखा।
विद्या गुरु शरण में आएँ,
अपना जीवन सफल बनाएं॥15.7॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'मि' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

ला

लाभ सभी जन शुभ ही चाहें,
लेकिन काले कर्म कराएं।
हानी की नहीं सोचे कोय,
बिना भाग्य तो हानी होय॥15.8॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'ला' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

फ

फल-फूलों का भक्षण करते,
किंतु न तरुवर रक्षण करते।
वृक्ष सभी जो कटवा देंगे,
तो आक्सीजन कैसे लेंगे?॥15.9॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'फ' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

ल

लट्टू जैसा ही घूमे जीव,
चतुर्गति में भ्रमे सदीव।
आजीविका करे घबराय,
किसको अपनी व्यथा सुनाय॥15.10॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'ल' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...

के

केवलज्ञान बिना नहीं ज्ञानी,
मुनियों की छद्मस्थ निशानी।
केवलज्ञान रवि जब निकले,
सुनने चले संज्ञी भवि सकले॥15.11॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'के' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...

सु

सुन जिन धुनि स्वातम को जानें,
धन्य धन्य निज जीवन मानें।
मुनिप्रणम्य ने गुरु गुण गाया,
गुरु से प्रेम पिता का पाया॥15.12॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'सु' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...

भि

भिन्न है जड़-चेतन ये जाना,
ममता तज समता को लाना।
समता सामायिक का सारा,
सामायिक हो भली प्रकारा॥15.13॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'भि' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...

क्षः

निरक्षः जिन भविरक्षण करते,
भक्त प्रभु की वाणी सुनते।
जिनपति की हम शरणे आये,
प्रभु भक्ती से कर्म खपाय॥15.14॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'क्षः' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...

शू

शून्य एक के आगे लाय,
संख्या आगे बढ़ती जाय।
बिना एक के शून्य लगाय,
तो अब शून्य व्यर्थ ही जाय॥15.15॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'शू' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

नू

चन्द पलों में पाप कराय,
बरसों नरकों का दुख पाय।
अच्छे कर्म करें हम सारे,
सुर बन दुख दारिद्र निवारें॥15.16॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'नू' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

य

यही भावना मन से भाय,
जीवन में सुख ही उपजाय।
सुख णिज अन्तर आतम पाते,
दुख संसार भ्रमण करवाते॥15.17॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'य' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

शू

निश्चित जीना मरना भाई,
तप बिन केवल देह सुखाई।
अवीपाक निर्जरा कराय,
मुक्ती का उत्तम फल पाय॥15.18॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'शू' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

च

चन्द्र ज्योतिषी इन्द्र कहाय,
पद प्रतीन्द्र सूरज बतलाय।
छ्यासठ सहस पिछत्तर नौसो,
कोड़ा कोड़ी तारे सहसो॥15.19॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'च' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

जी

जीवा जीव मिलें हो जब ही,
आस्रव हो त्रियोग से तब ही।
सब झगड़ों का मूल यही है,
भेद ज्ञान की विधि कही है॥15.20॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'जी' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

व

वध नहिं करें कभी जीवों का,
कहर पड़े उनकी आहों का।
प्राण सभी को अपने प्यारे,
जियो और जीने दो सारे॥15.21॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'व' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

व

वश होकर हम इच्छाओं के,
सुख नहिं पाते हैं जीवन के।
तप इच्छा निरोध कहलाया,
तब ही मन सन्तोष उपाया॥15.22॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'व' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

ध

धर्म स्वभाव वस्तु बतलाया,
चारित भी है धर्म कहाया।
नहिं सुभाव से हमको हटना,
यही धर्म है गहना अपना॥15.23॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'ध' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

भु

भुक्ति उपसर्ग जीव वध हाना,
हो सुभिक्ष चव कोस प्रमाना।
गगन गमन सब विधा ईश्वर,
इत्यादिक अतिशय केवल वर॥15.24॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'भु' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

क

क्या साँसों का ताना बाना,
जिय कब आया कब है जाना?
कौन जानता है जीवन में,
निज को जान रमें बस निज में॥15.25॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'क' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

त

सत्य यही है ज्ञान स्वयं का,
दुर्लभ होना भेद ज्ञान का।
भिन्न करें प्रज्ञा छैनी से,
छूट जाएँगे भव बन्धन से॥15.26॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'त' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

यु

युक्ती से ही मुक्ति मिलेगी,
युक्ति मिले जब लगन लगेगी।
लगन लगाओ गुरु चरणों में,
साता आएगी करमों में॥15.27॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'यु' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

प

परम्परा से मार्ग बताया,
श्रावक धर्म हमें सिखलाया।
साक्षात रत्नत्रय धारण,
मुनिव्रत ही मुक्ती का कारण॥15.28॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'प' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

स

समता स्याद्वाद सुखदाई,
सामायिक से कर्म नशाई।
एकदेश हो जाए निर्जरा,
महाव्रती की पूर्ण निर्जरा॥15.29॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'स' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

र्ग

उपसर्ग किया था कुर्युधर ने,
लौहा भूषण तपाए उसने।
पाँचों पाण्डव को पहनाए,
तीन बड़े तो मोक्ष सिधाए॥15.30॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'र्ग' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

ता

तारे ज्यों डर कर छिप जाँएँ,
दिनकर जब नभ में आ जाँएँ।
यों ही क्षण भंगुर पर्यायें,
जिय नित नूतन रूप बनायें॥15.31॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'ता' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

या:

मत्या: काम करे जब कोई,
तभी सफलता निश्चित होई।
बिन सोचे जो काम करावें,
वे ही जन पीछे पछतावें॥15.32॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'या:' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

वि

विविध द्रव्य ले पूजा करने,
अपने दुष्कर्मों को हरने।
हम सब गुरुचरणों में आँएँ,
हाथ जोड़ कर शीश नवाँएँ॥15.33॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'वि' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

द्ये

विद्येश्वर जग में तुम जिनवर,
तीन लोक के ज्ञाता प्रभुवर।
सब विद्याओं के हो स्वामी,
तुम ही घट-घट अन्तर्यामी॥15.34॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'द्ये' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

श

शाश्वत पद पाया है तुमने,
मोक्ष मार्ग दर्शाया तुम ने।
सदाकाल सिद्धालय वासी,
अजर अमर अक्षर अविनाशी॥15.35॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'श' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

व

वर्धमान हो जग के प्यारे,
तुमने जग के काज संवारे।
पशु बली को बन्द कराया,
नारी को सम्मान दिलाया॥15.36॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'व' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

रः

अनीश्वरः जिन आप कहाते,
जन जन के मन को तुम भाते।
विश्वमूर्ति जग ज्येष्ठ जिनेश्वर,
विश्वज्योति तुम ही परमेश्वर॥15.37॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'रः' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

ख

हे खग मृग हे मधुकर श्रेणी,
तुम देखी सीता मृगनैनी।
तद्भव मोक्षगामी श्री राम,
वन वन भटके दुख-परिणाम॥15.38॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'ख' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

ग

गगन विहारी प्रभु कहलाते,
भू से चव-अंगुल पर जाते।
स्वर्णकमल पद तल शोभित हों,
सुरगण रचते मन मोहित हों॥15.39॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'ग' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

म

मन्मथ का मद हरा प्रभु ने,
विजित किया निज मन भी तुमने।
जीव त्रिलोकी शरण में आए,
करी वन्दना मन हरषाए॥15.40॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'म' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

नं

नंगानंग मुनीश्वर जानो,
सोनागिरि से सिद्ध प्रमानो।
इसी श्रमणागिरि ध्यान लगाया,
मोक्ष महल अक्षय पद पाया॥15.41॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'नं' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

न

विनय महा गुण श्रेष्ठ बताया,
विद्वानों का भूषण गाया।
मुक्तिरमा की सखी बखानी,
शील व्रतों की महिमा मानी॥15.42॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'न' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

ख

सुमुख आपका सबसे प्यारा,
कामदेव भी तुमसे हारा।
चतुर्मुखी समोशरण में सोहें,
चारित सुन सुर-नर-पशु मोहें॥15.43॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'ख' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

के

केवलज्ञान के अतिशय दस हों,
परमौदारिक काया झट हो।
पाँच सहस्र धनु ऊपर जाएँ,
अधर चवांगुल गमन कराएँ॥15.44॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'के' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

श

शरण सभी को मिल जाती है,
दिव्य ध्वनि भी खिर जाती है।
शत्रु मित्र सब मिल कर आएँ,
जन्म जन्म के वैर नशाएँ॥15.45॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'श' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

वृ

वृद्धावस्था महा दुखदाई,
अर्ध मृतक सम जानो भाई!
दो जन पकड़-पकड़ कर लाते,
अरथी चार जने ले जाते॥15.46॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'वृ' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

द्धि

सिद्धि से ही होती ऋद्धि,
ऋद्धियों से हो आतम सिद्धि।
आत्म सिद्धि से टूटें बन्धन,
मिट जाता है जग का क्रन्दन॥15.47॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'द्धि' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

छा

छाया होय न केवलज्ञानी,
पलकों की टिमकार न मानी।
निरक्षरी जिन धुनि है खिरती,
तालु-अधर-जीभ नहीं हिलती॥15.48॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'छा' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

या

या शक्ती सब जीवों में है,
उसी शक्ति से जीवन हो है।
कृत करमों से पर्यायें हो,
भ्रमण चतुर्गतियों में जिय हो॥15.49॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'या' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

वि

विद्या विनय की प्राप्ति कराती,
विनयी को पात्रता दिलाती।
पात्रता से ही धन को पाता,
धन से फिर सब सुख मिल जाता॥15.50॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'वि' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

ही

हीयमान यहाँ बल विद्या बुद्धि,
अवगाहना आयु की वृद्धि।
पंचम काल में हो नहीं ऋद्धि,
ना ही हो निज पद की सिद्धि॥15.51॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'ही' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

न

नदियां पियें ना अपना नीर,
चाहे न गैया अपना क्षीर।
वृक्ष न खाएँ कभी अपने फल,
पथिक हो छाया से शीतल॥15.52॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'न' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

म

मदद सभी की करें सदा,
सबको खुशियाँ दें सर्वदा।
परस्परोपग्रहो जीवन है,
वचन वीर के ये पावन हैं॥15.53॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'म' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

नि

तन निमित्त चेतन उपादान,
दोनों को हि आश्रय बलवान।
निमित्त मदद से ही उपादान,
पा जाता है शिवपुरथान॥15.54॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'नि' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

मे

मेरा निमित्त बड़ा कमजोर,
उपादान में तो है ज़ोर।
यदपि निमित्त नहीं करता काम,
बिन निमित्त भी हो नहीं काम॥15.55॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'मे' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...

ष

षट्पद फूलों पर गुंजार,
करते जब भी आए बहार।
आम बौर लख कोयल गाए,
मम मन नित जिन नाम रटाए॥15.56॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'ष' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...

मु

मुनिजन होते धीर गंभीर,
गुरु-आज्ञा पालें वर वीर।
अन्त सल्लेखना मरण कराएँ,
उठें नींद ज्यों सुर पुर जाएँ॥15.57॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'मु' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...

खं

खं विहाय नहीं बड़ा हो कोय,
छोटा नहीं अणू से होय।
वर्धमान जो जिनपथ जाए,
क्षुद्र वही जो भव भटकाए॥15.58॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'खं' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...

च

चन्द्र सूर्य दोनों गतिमान,
मेरु परिक्रमा दें नित आन।
काल विभाग इन्हीं से होय,
घंटा-मिनट या सैकिंड होय॥15.59॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'च' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...

तु

ष्

क

म्

पूर्णार्घ्य

ईश्वर सब विद्याओं के, गगन गमन मुख चार।

परमौदारिक देह हो, नयन नहीं टिमकार ॥15॥

ॐ ह्रीं चतुर्दश केवलज्ञानातिशय प्रतिपादकाय अर्हं महाबीजाक्षरसहिताय
श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आनन्ददायी स्तुति

जन्मक्षणे प्रथित - पर्वत - मन्दराख्ये,
सौधर्म - देव - विहितस्रपनोपचारे।
आनन्दनिर्भररसेन सुविस्मितः सन्,
'वीरं' चकार तव नाम सुरेन्द्रमुख्यः ॥16॥

(छन्द विष्णुपद)

ज

जन्म जन्म के पातक सारे क्षण में हर लेती।
स्तुति आप की अन्तर्मन को पावन कर देती ॥16.1॥

ॐ ह्रीं अर्हं वर्तमानशासननायक 'ज' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...

न्

आनन्द में तन की सुध खोकर आतम सुध पाते।
भाव शुभाशुभ छोड़ के साधु शुद्ध भाव लाते ॥16.2॥

ॐ ह्रीं अर्हं वर्तमानशासननायक 'न्' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...

म

ममता त्यागें समता धारें मोह विनाश करें।
राग द्वेष अज्ञान मिटा कर ज्ञान प्रकाश करें ॥16.3॥

ॐ ह्रीं अर्हं वर्तमानशासननायक 'म' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...

क्ष

क्षण-क्षण में पर्याय बदलती क्षण भंगुरता है।
इसी ज्ञान को पाने आया मन तत्परता है ॥16.4॥

ॐ ह्रीं अर्हं वर्तमानशासननायक 'क्ष' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...

णे

क्षणे क्षणे जो धरे रूप नव मन को हरता है।
इसीलिए भोगों में फँस कर प्राणी मरता है ॥16.5॥

ॐ ह्रीं अर्हं वर्तमानशासननायक 'णे' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...

प्र

प्रतिदिन जीते मरते हैं सब जग नश्वर जानें।
बन सकता है आतम सबका परमात्म मानें ॥16.6॥

ॐ ह्रीं अर्हं वर्तमानशासननायक 'प्र' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...

थि

थिर है नहीं जगत का वासा बस पंचम गति है।

यही जान पंचम गति जायें नहीं आगति है॥16.7॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'थि' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

त

तप करना ही लक्ष्य मनुज का नर तन पाया है।

वर्ना तप का उल्टा पत है जग भटकाया है॥16.8॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'त' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

प

पत राखन हारा मन्दिर है तीर्थ पपौरा में।

वृद्धा की पत राखी प्रभुने पंच कल्याणक में॥16.9॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'प' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

व

पर्वत पर्वत बूँद गिरे गिरि कैसे सहते हैं।

घुष्टों के बचनों को जैसे साधू सहते हैं॥16.10॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'व' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

त

तरसें इन्द्र भी नर काया को दिवि वैभव तज दें।

नर नरेन्द्र बन कर के भी नहीं संयम को धरते॥16.11॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'त' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

म

मन वच तन से करें प्रार्थना प्रभु हमको वर दें।

घर में रह कर भी हम अपना आत्म कल्याण करें॥16.12॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'म' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

न

मन्द सुगन्ध चले वायु जब समवशरण भू में।

हर्षित हो कर भवि सुनते-रमते जिनवाणी में॥16.13॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'न' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

द

दमन करें पंचेन्द्रियों को तो मन वश में आता।

मन के मालिक बनें स्वयं तो अरिहन्त पद पाता॥16.14॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'द' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

रा राज जगत पर चाहें सब जन मन को नहीं जीतें।
जो मन को जीतें वे हरदम स्वातम रस पीते॥16.15॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'रा' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...

ख राख्या है पद ऊँचा जिसने कर्म करे नीचा।
जाता है दुर्गतियों में नहीं धर्म तरु सींचा॥16.16॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'ख' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...

ये ये जन पदवी छोटी हो पर कर्म बड़े करते।
स्वर्गों से सुरगण भी आकर दर्श करें उनके॥16.17॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'ये' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...

सौ सौधर्मेन्द्र शिशु जिन को ले मेरु पर जाते।
क्षीर-नीर से न्हवन कराके जिनवर गुण गाते॥16.18॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'सौ' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...

ध धन को दौलत कहते भाई दो लातें लगती।
लगे पीठ सीधी हो जाती छाती पर झुकती॥16.19॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'ध' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...

र्म कर्म भूमि है करमों का फल पाने आए हैं।
सत्करमों से संचित कर्म नशाने आए हैं॥16.20॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'र्म' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...

दे देवों के भी देव जिनेश्वर वर्धमान स्वामी।
आओ विराजो मम उर पुष्कर तीर्थकर नामी॥16.21॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'दे' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...

व वश नहीं चलता मानव जीवन विनश जाए इक दिन।
नहीं पता कब आए वो दिन रटो नाम छिन छिन॥16.22॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'व' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...

वि

विश्व विजेता वीर ने केवल स्वातम को जीता।

बाहर निष्क्रिय अन्तर सक्रिय पढ़ ली मन गीता॥16.23॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'वि' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

हि

हित मित प्यारे वचन बोलते सुन सब हर्षित हों।

अनुयायी हम वर्धमान के कहते गर्वित हों॥16.24॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'हि' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

त

तप कीना प्रभु बारह वर्ष तक केवलज्ञान हुआ।

इन्द्रभूति गौतम भी आकर सन्मति शिष्य हुआ॥16.25॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'त' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

स्

स्थिति रही वीर के तन की वर्ष बहत्तर तक।

हाथ जोड़ कर शीश नवाएँ चरणों में मस्तक॥16.26॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'स्' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

न

नगन दिगम्बर गुरु हमारे साक्षात तीरथ।

स्वयं तिरें सबको तारें ये करते पुरुषारथ॥16.27॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'न' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

प

पत्नी भोजन दे जननी सम ममता की मूरत।

दे सलाह मंत्री सम जानो समता की सूरत॥16.28॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'प' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

नो

नोकरमों का फल है ये तन शिवसाधन जानो।

इसके मालिक बन जाओ तो मुक्ति पास मानो॥16.29॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'नो' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

प

पति ही केवल परिवार का संरक्षण करता।

स्वयं कष्ट सह कर के भी बच्चों के दुख हरता॥16.30॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'प' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

चा

चारित ही जिनधर्म मूल है मोह दूर करता।

यथाख्यात पालेगा जो भी शिव रमणी वरता॥16.31॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'चा' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

रे

अरे! भाई क्या भूल गए तुम क्यों आए जग में।

नरकों में दुख भोग रहे जब खाई थी कसमें॥16.32॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'रे' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

आ

आज मिला उत्तम कुल-गोत्र जन्म दिगम्बर में।

दुर्लभ हैं संयोग ये सारे लगो आत्महित में॥16.33॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'आ' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

न

नमन करो आप्तागम गुरु को जो शिव दाता हैं।

परम सहाई भवि जीवों के मुक्ति प्रदाता हैं॥16.34॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'न' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

नू

निजानन्द में लीन रहें गुरु राग-द्वेष त्यागी।

शरणागत हो जाओ इनके सच्चे वैरागी॥16.35॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'नू' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

द

दया सिंधु मुनिराज सभी को अभयदान दाता।

ज्ञान दान भी देते सबको भेद ज्ञान भाता॥16.36॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'द' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

नि

निर्यापक हैं मुनि श्रेष्ठ हैं शिष्य वृन्द सारे।

शिष्य प्रभावी विद्या गुरु के हैं जग में न्यारे॥16.37॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'नि' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

भ

निर्भर आत्म-स्व-अधीन हैं जिनधर्मों गुरुवर।

पिच्छी- कमण्डलु लिए हाथ में पद विहार सत्वर॥16.38॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'भ' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

र

घर को त्याग चले अब इनका वसुधा ही परिवार।

रोटी इनके पीछे भागे करते गृही पुकार॥16.39॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'र' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...।

र

रसना इन्द्रिय वश में कर ली षट् रस के त्यागी।

अन्य इन्द्रियाँ भी गुलाम हैं समता अनुरागी॥16.40॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'र' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...।

से

सेवा तन की त्यागी गुरु ने कृत कारित मोदन।

निरासक्त ए. सी. हीटर तजें समुद्दिष्ट भोजन॥16.41॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'से' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...।

न

नम्र सत्य अन्वेषी साधू जिनलिंग दरशाते।

सरदी गरमी उपसर्गों में भी नहीं घबराते॥16.42॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'न' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...।

सु

सुभग सहज ये चर्चा करते समिति ईर्या जाते।

खड़े-खड़े इक बार अहारा अल्प अंजुलि पाते॥16.43॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'सु' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...।

वि

विनयवान हैं बुद्धिमान हैं जग जल कमल रहें।

गमना गमन कराते भी ये अन्तर लीन रहें॥16.44॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'वि' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...।

स्

स्वामी संज्ञा से शोभित ये परम हंस होते।

अर्द्ध रात्रि के बाद तनिक ये अल्प नींद सोते॥16.45॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'स्' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...।

मि

मितव्ययी हैं अर्थशास्त्र से पूर्ण कमण्डलु है।

जल भरने का मुख है चौड़ा टोंटी का लघु है॥16.46॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'मि' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...।

तः

अतः गुरुपद में जीवन शैली शिक्षा को पा लें।

स्याद्वाद से सब विवाद के कारण को टालें॥16.47॥

ॐ ह्रीं अर्हं वर्तमानशासननायक 'तः' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

स

सर्वागम के रहस्य गूढ़ को सरल बना देते।

हँसते-हँसते गुरु प्रणम्य मुनि तत्त्व सिखा देते॥16.48॥

ॐ ह्रीं अर्हं वर्तमानशासननायक 'स' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

न

अन्ध भक्ति जो करते जग में कुगुरु कुदेव कुधर्म।

नहिं जानते मोक्ष मार्ग वे नहिं धर्म का मर्म॥16.49॥

ॐ ह्रीं अर्हं वर्तमानशासननायक 'न' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

वी

वीतराग सर्वज्ञ हितैषी हैं अपने ईश्वर।

जीवन मुक्त सकल परमात्मा हैं ये परमेश्वर॥16.50॥

ॐ ह्रीं अर्हं वर्तमानशासननायक 'वी' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

रं

रं रं स्वर आग्नेयी धारणा में जब आ जाता।

ध्याता भी तब ध्यानानल में शीतलता पाता॥16.51॥

ॐ ह्रीं अर्हं वर्तमानशासननायक 'रं' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

च

चन्द्र चाँदनी फैल रही ज्यों निशा नदी तट पर।

यशः चन्द्रिका विद्यागुरु फैली वसुधा-अम्बर॥16.52॥

ॐ ह्रीं अर्हं वर्तमानशासननायक 'च' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

का

काम करें श्रावक विवेक से चौके मे आकर।

यही भावना भाते मन में गुरु हों परमेश्वर॥16.53॥

ॐ ह्रीं अर्हं वर्तमानशासननायक 'का' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

र

रति-उर्वशी कोई भी नहिं डिगा सके मुनि को।

झंझावात हिला सकता क्या मन सुमेरु गिरि को॥16.54॥

ॐ ह्रीं अर्हं वर्तमानशासननायक 'र' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

त तत्त्व मनन में गुरु प्रणम्य का जीवन बीत रहा।
उनकी तेज तपस्या से कर्मन घट रीत रहा॥16.55॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'त' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

व वस्तु सुभाव जान गुरुवर निजानन्द में लीन रहें।
अरज यही हम भी गुरुपद में अपने में तल्लीन रहें॥16.56॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'व' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

ना नाम ख्याति की नहीं कामना अर्ह योग बताया है।
बना रहे नीरोग सभी को सबके मन भी भाया है॥16.57॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'ना' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

म मरहम लगा रहे घावों पर जो पापों से पड़े हुए।
शान्ति पा रहे रूग्ण भक्त भी गुरु चरणों में पड़े हुए॥16.58॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'म' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

सु सुख की खान है आतम सबका अब पहचान करें।
तन की ममता को तज कर वे स्वातम भान करें॥16.59॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'सु' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

रे रेत फिसलती ज्यों मुट्ठी से साँसे फिसल रहीं।
क्षण क्षण करके प्रतिदिन सबकी आयु निकल रही॥16.60॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'रे' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

न् बन्द हुआ खाता कषाय का मन निर्मल होता।
जिन वचनों पर श्रद्धा कर भवि मोह तिमिर खोता॥16.61॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'न्' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

द्र हरी दरिद्रता वचनों की भावों को शुद्ध किया।
गुरु ने पावन वचनों से मुझको प्रतिबुद्ध किया॥16.62॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'द्र' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

मुक्ति मार्ग पर चलें स्वयं भी सबको प्रेरणा दें।

हम भी अरज करें स्वामी से हमें सान्त्वना दें॥16.63॥

ख्यात शिरोमणि सन्त जिन्हों के जग से पूजित हैं।

वे प्रणम्य गुरु आत्मगुणों से जग में भूषित हैं॥16.64॥

"यः करोति सःकर्ता एवं" गुरु ने समझाया।

हम भी रत्नत्रय से अपनी करें शुद्ध काया॥16.65॥

ॐ ह्रीं अर्हं वर्तमानशासननायक 'यः' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्यः...

जिन अभिषेक सुमेरु पर, होने आनन्दकार।

रत्नजड़ित होते कलश, क्षीर-नीर की धार ॥16॥

ॐ ह्रीं जिन अभिषेकोत्सव प्रतिपादकाय महा अर्ह महाबीजाक्षरसहिताय
श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।



सर्पादि भय निवारक स्तुति

क्रीडाक्षणे सुरतुकैः सह शैशवेऽपि,
आयात एव भुवि संगमनाम देवः।
नागस्य रूपमवधार्य भयाय रौद्रं,
निर्भीरभू - 'महतिवीर' इति प्रसिद्धिः ॥17॥

(छन्द चौपाई)

क्री

क्रीड़ा करें साधु कर्मों से,
गुणस्थान हों ऊपर नीचे।
छटे - सातवें में झूलें नित,
करने को अपना आतम हित ॥17.1॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'क्री' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...

डाल

डाल डाल फलते फल फूल,
करमों के नश जाते शूल।
हरदम याद प्रभु की आती,
जागृति भवि चेतनता पाती ॥17.2॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'डाल' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...

क्ष

क्षण भर में ही भाव बदलते,
स्वर्ग - नर्क - अपवर्ग संभलते।
नाना विध पर्याय धरे है,
चेतन ज्ञान से दूर रहे हैं ॥17.3॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'क्ष' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...

जे

क्षणे तुष्ट हों क्षणे रुष्ट हों,
वे जन नहीं सन्तुष्ट कभी हों।
जो भी प्रभु के शरणे आते,
वे ही भवसागर तिर जाते ॥17.4॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'जे' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...

सु

सुध लो जिनवर नाथ हमारी,
एक यही हमरी लाचारी।
हम वृत-संयम रख नहिं पावें,
तो कैसे कल्याण करावें॥17.5॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'सु' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

र

रटना हम जिननाम लगावें,
वृद्धावस्था यही कर पावें।
शिथिल इन्द्रियाँ हो जाती हैं,
प्रबल वासना हो जाती है॥17.6॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'र' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

तु

तुमने तो प्रभु सिद्ध कर दिया,
निज में निज को प्राप्त कर लिया।
हम अज्ञानी यहीं फँसे हैं,
भोगों की कीचड़ में धँसे हैं॥17.7॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'तु' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

कैः

कैः जानें निज रूप सुहाना,
योगी ने अनुभव से जाना।
शेष जनों को गम्य नहीं है,
मन लगता पर रमता नहिं है॥17.8॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'कैः' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

स

सत्यारथ के हेत भटकते,
वे ही सही कोशिश हैं करते।
कोशिश कामयाब कर देती,
मंजिल मिलने पर सुख देती॥17.9॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'स' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

ह

हम भी मंजिल पाना चाहें,
लेकिन मुश्किल हैं शिवराहें।
कैसे आसन - अशन बनावें,
कैसे निज में निज को पावें॥17.10॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'ह' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

शै

शैशव काल महा सुख दाई,
चिन्ता कोई ना होती भाई!
प्यार सभी बच्चों को करते,
बच्चे प्रश्न अनेकों करते॥17.11॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'शै' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

श

शनैः शनैः आयु बढ़ती है,
अन्य विषय में रूचि जगती है।
पहले कंचे-कलम सुहाने,
फिर फुटबाल के हों दीवाने॥17.12॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'श' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

वे

वे माता का आँचल छोड़ें,
यार-दोस्तों से मन जोड़ें।
परिवर्तन है नियम प्रकृति,
अब भोगों में होय प्रवृत्ति॥17.13॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'वे' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

पि

पिस जाती हैं सब इच्छाएँ,
कर्मों की चक्की जु चलाएँ।
दाने हों तो दाँत न होते,
दाँत होंय दाने नहीं पाते॥17.14॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'पि' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

आ

आना जाना लगा हुआ है,
द्वन्द्व सभी में बना हुआ है।
दिवस-रैन हो भला-बुरा हो,
सुख दुख से ही समय जुड़ा हो॥17.15॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'आ' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

या

याद आ जाती जब बचपन की,
दादी जी के शास्त्र पठन की।
वर्णीजी भी समझाते थे,
नियम सभी को दिलवाते थे॥17.16॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'या' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

त

तप-संयम व्रत भी पलवाते,
स्वयं ही व्रत महिमा बतलाते।
तीजरोट- पंचमि-दशमी व्रत,
अनन्त चतुर्दशी और रविव्रत॥17.17॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'त' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

ए

एक बार व्रत दें वर्णीजी,
लाल मनोहर सहजानन्दजी।
"क्रोध में कभी न भोजन करना,
समता भाव हृदय में रखना"॥17.18॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'ए' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

व

वर्णीजी आदर्श थे मेरे,
ब्रह्म वाक्य थे वचन सुनहरे।
"परिचय - परिग्रह से तुम बचना,
नहीं प्रदर्शन कभी भी करना"॥17.19॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'व' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

भु

भुवन मोहिनी मुस्कानों से,
लूटा सबको प्रिय वचनों से।
विद्या गुरु का सम्मोहन है,
चुम्बक सम ही आकर्षण है॥17.20॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'भु' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

वि

विद्यासिंधु बीना बारहा थे,
मम कापी लख मुस्काए थे।
आशिष को जब हाथ उठाया,
ग्रंथ प्रकाशन तब ही पाया॥17.21॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'वि' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

सं

संग नहीं है संघ सिवाय,
शरण आपकी जो भी आय।
दीक्षित तुमसे हो जाता है,
दृष्टि सम्यक् पा लेता है॥17.22॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'सं' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

ग

गण्य पुण्य भगवान वीर हैं,
करुणा सागर धीर-वीर हैं।
मेरे तो आराध्य वीर हैं,
हरी वीर ने भ्रमण पीर है॥17.23॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'ग' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

म

हम सबके प्रभु प्राणाधार,
हमें लगाएँगे भव पार।
प्रभु को शत शत नमन हमारे,
चरणों पर बलिहारी सारे॥17.24॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'म' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

ना

नाम प्रभू का ही पहचानूं,
भक्ति की रीति नहीं जानूं।
रग-रग में मेरी दौड़ रहा है,
व्रत पालन का भाव बड़ा है॥17.25॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'ना' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

म

महल मकान आदि सब नश्वर,
एक आत्मा ही अविनश्वर।
जल घट सम इस तन को जानो,
घृत घट सम स्वातम को मानो॥17.26॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'म' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

दे

देव देवियाँ भी आते हैं,
जिन चरणों में झुक जाते हैं।
मूल देह रहती विमान में,
वैक्रियक होवे समवशरण में॥17.27॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'दे' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

वः

स्वः आतम अनुपम अविनाशी,
शुद्ध सिद्ध सिद्धालय वासी।
सिद्ध हमें भी ये ही करना,
भिन्न भिन्न देहातम लखना॥17.28॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'वः' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

ना

ना रत्नत्रय हमने जाने,
तो फिर जगत ज्ञान क्या माने?
रत्नत्रय को जान लिया तो,
नहिं कुछ जाना तो विस्मय क्यों?॥17.29॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'ना' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

ग

गज स्नान वत् श्रावक जीवन,
भोगों में भी करें प्रतिक्रमण।
फिर भी मन धुलता रहता है,
तन भी तो हल्का रहता है॥17.30॥

ॐ ह्रीं अर्हं वर्तमानशासननायक 'ग' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...।

स

स्याद्वाद की महिमा भारी,
मिट जाती है शंका सारी।
वाद विवाद मिटाने हेतु,
अनेकान्त का बाँधे सेतु॥17.31॥

ॐ ह्रीं अर्हं वर्तमानशासननायक 'स' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...।

य

यही तत्त्व अनुपम बतलाए,
दयानन्द भी जान न पाए।
वक्ता की है कथन की शैली,
धुलती है मन चादर मैली॥17.32॥

ॐ ह्रीं अर्हं वर्तमानशासननायक 'य' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...।

रू

रूपी जितने भी पदार्थ है,
वे सब पुद्गल ही यथार्थ है।
जो अपना आतम उपकारी,
वो तो अमूर्तिक अविकारी॥17.33॥

ॐ ह्रीं अर्हं वर्तमानशासननायक 'रू' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...।

प

रहें परस्पर प्रेमभाव से,
भव भव संचित वैर-अभाव से।
मालिक नौकर को धन देता,
नौकर तन से सेवा करता॥17.34॥

ॐ ह्रीं अर्हं वर्तमानशासननायक 'प' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...।

म

मन चंचल वानर सम जानो,
ऊपर से पी मदिरा मानो।
व्रत संयम श्रंखला लगाओ,
शास्त्र पठन में इसे रमाओ॥17.35॥

ॐ ह्रीं अर्हं वर्तमानशासननायक 'म' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...।

व

वन उपवन में रहते साधू,
दर्शन ज्ञान चरित आराधू।
तप घोरातिघोर कर जाते,
हम अनुमोदन ही कर पाते॥17.36॥

ॐ ह्रीं अर्हं वर्तमानशासननायक 'व' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...।

धा

धारा ज्ञान की अविरल बहती,
धारा कर्म को धोती रहती।
अब अपना अवगाहन होवे,
स्वातम निर्मल पावन होवे॥17.37॥

ॐ ह्रीं अर्हं वर्तमानशासननायक 'धा' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...।

र्य

आर्य जनों का आर्यखण्ड है,
बल बुद्धि विद्या प्रचण्ड है।
ज्ञान गुरू पहचाना जाता,
देश-विदेश में जाना जाता॥17.38॥

ॐ ह्रीं अर्हं वर्तमानशासननायक 'र्य' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...।

भ

भरत नाम से भारत मानो,
वीर प्रसू भारत भू जानो।
ऋषभ देव सुत भरत यही थे,
चक्रवर्ति पद प्राप्त किए थे॥17.39॥

ॐ ह्रीं अर्हं वर्तमानशासननायक 'भ' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...।

या

यारी सच्ची जो कहलाती,
दुग्ध नीर सम शोभा पाती।
तन दो मन एक हि हो जावे,
इक दूजे बिन रह नहिं पावे॥17.40॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'या' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

य

यह चेतन चेतन में रमता,
तो फिर तन को याद न रखता।
पाण्डव जलते रहे अगन में,
तन न ध्यान पहुंचे शिवपुर में॥17.41॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'य' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

रौ

रौद्र ध्यान तो मन नहिं लाएं,
धर्म ध्यान में समय बिताएं।
शुक्ल ध्यान जो धर लेते हैं,
वे भव सागर तिर जाते हैं॥17.42॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'रौ' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

द्रं

द्रंद्रं निरदंग बजे जब,
गगनांगन में सुरी नचें तब।
जन्म कल्याणक में जब आते,
सुरक्षित सब ही नाचते गाते॥17.43॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'द्रं' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

नि

निर्जन वन हो या शमशान,
लग जाता साधू का ध्यान।
नहीं चित्त आकुलित ही होता,
सहज हि कर्म मलों को धोता॥17.44॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'नि' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

भी

हो निर्भीक बड़े शिवपथ पर,
व्रत संयम का आश्रय लेकर।
गलती हो प्रायश्चित ले लें,
ऐसा ना हो व्रत ही ना लें॥17.45॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'भी' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

र

रति ने प्रभु लख कहा अनंग से,
क्या तुम जी न गए हो इन से?
कामदेव लज्जित हो जाता,
इनका तो स्वातम से नाता॥17.46॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'र' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

भू

भूतकाल को भूलो भाई!
चिन्ता भावि तजो दुखदाई।
वर्तमान पुरुषार्थ कराओ,
काल भावि को उज्ज्वल पाओ॥17.47॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'भू' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

र्म

धर्म भाव से काल धर्म को,
देख नीलाजंन धाए वन को।
हो विरक्त यह वसुधा त्यागी,
लगन स्वात्मा में ही लागी॥17.48॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'र्म' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

ह

हक तो सबको याद ही रहता,
कर्तव्य सब कोही भुलाता।
मात पिता वसीयत सब चाहें,
सेवा करना कोई ना चाहे॥17.49॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'ह' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

ति

तिरें तिरावे भावना भावें,
जिनवाणी पर बलि बलि जावें।
जननी सम जिनवाणी जानो,
जिनवाणी सुन मुक्ती मानो॥17.50॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'ति' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

वी

वीर - अतिवीर - महावीर जिनं,
सन्मति वर्धमान प्रणम्य।
पाँच नाम अन्तिम तीर्थकर,
जगत जनों को हों क्षेमंकर॥17.51॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'वी' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

र

रस इक-दो का नित त्याग करें,
जीवन में भाव विराग दरे।
क्रमशः सम्यक् सोपान चढ़ें,
शिवपथ पर हम अविलम्ब बढ़ें॥17.52॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'र' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

इ

इत्यादिक पाप जु नाश करें,
अन्तर में ज्ञान प्रकाश भरे।
यह मोह-अन्ध अवसान करे,
सबको सुज्ञान प्रदान करे॥17.53॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'इ' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

ति

तिमिर अज्ञान हि बढ़ता जाता,
नहिं शिवपथ हमको दिखलाता।
अब गुरुवर उपदेश को पाय,
हम भी शिव मारग पर सिधाय॥17.54॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'ति' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

ॐ ह्रीं अर्हं वर्तमानशासननायक 'प्र' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...

ॐ ह्रीं अर्हं वर्तमानशासननायक 'सि' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...

ॐ ह्रीं अर्हं वर्तमानशासननायक 'द्धिः' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...।

ॐ ह्रीं निर्भय गुण प्रतिपादकाय अर्हं महाबीजाक्षरसहिताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय
नमः पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

संदेह निवारक स्तुति

शङ्का निधाय हृदि तौ गगनं चरन्तौ,
ऋद्धीश्वरौ विजय-संजयनामधेयौ।
त्वामीश! वीक्ष्य लघु दूरत एव हर्षात्,
प्रोच्चार्य 'सन्मति' सुनाम गतौ विशङ्कौ ॥18॥

(छन्द दोहा)

शं

शंका तज निःशंक हो, जिनवाणी मन धार।

मनवच तन कर पूजिए, हो स्वातम उद्धार॥18.1॥

ॐ ह्रीं अर्हं वर्तमानशासननायक 'शं' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...

कां

निःकांक्षित अंग जानिए, महा गुणों की खान।

जीवन में पालें सदा, होवे निज कल्याण॥18.2॥

ॐ ह्रीं अर्हं वर्तमानशासननायक 'कां' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...

नि

निर्विचिकित्सा अंग तृतीय, जीवों का हितकार।

किसी प्राणि से ग्लानि ना, समता भाव विचार॥18.3॥

ॐ ह्रीं अर्हं वर्तमानशासननायक 'नि' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...

धा

धारण कर गुण हृदय में, वात्सल्य निरधार।

साधर्मी जन से मिलें, मैत्री भाव प्रसार॥18.4॥

ॐ ह्रीं अर्हं वर्तमानशासननायक 'धा' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...

य

यश ख्याति अरू नाम की, इच्छा मन नहीं शेष।

जो भटके शिवराह से, कुगति में ही प्रवेश॥18.5॥

ॐ ह्रीं अर्हं वर्तमानशासननायक 'य' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...

ह

हृदय भरा हो भाव से, पूजें श्री भगवान।

जग में मंगल हो सदा, बनें गुणों की खान॥18.6॥

ॐ ह्रीं अर्हं वर्तमानशासननायक 'ह' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...

दि

दिपता अनुपम तेज से, गुरु का उन्नत भाल।

वन्दन करूँ परोक्ष में, तीन योग तिहुँ काल॥18.7॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'दि' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

तौ

सः तौ ते स्वीकारते, उत्तम है जिनधर्म।

रमो सदा स्वभाव में, यही धर्म का मर्म॥18.8॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'तौ' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

ग

गगन विहारी देव हैं, श्री जिनेन्द्र भगवान।

चरणों में खिलते कमल, अद्भुत महिमा वान॥18.9॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'ग' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

ग

गणपति इन्द्रभूती ने, बन्दे वीर जिनेश।

शंकाएँ सब मिट गई, धारा जिन लिंग वेष॥18.10॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'ग' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

नं

नंबर पूरे ही मिलें, भाव क्रिया संयोग।

बिना भाव के पूजते, कम हो नम्बर योग॥18.11॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'नं' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

च

चरण पड़े जहाँ नाथ के, रचते कमल सुरेश।

महिमा जिनवर की बड़ी, हम भी नमें जिनेश॥18.12॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'च' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

र

रमना हो यदि स्वात्म में, मन वच काय से लीन।

निज में निज का ध्यान कर, हो जाओ तल्लीन॥18.13॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'र' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

नू

वन्दित सुर पूजित चरण, तीन लोक के नाथ।

मैं पूजूँ नित भाव से, चरणों में रख माथ॥18.14॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'नू' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

तौ तौ गच्छन्तौ भज रहे, सहस नाम जिन भूप॥

आस्रव शुभ होगा सदा, पुण्य हि मिले अनूप॥18.15॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'तौ' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

ऋ ऋषि मुनि यति सब ध्यावते, पद पंकज भगवान।

हम भी चाहें पूजना, लगे हमारा ध्यान॥18.16॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'ऋ' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

द्ध्री ऋद्धी सिद्धि के नाथ हों, मुनि खेचर चक्रीश।

ये सब जिनवर की शरण, बन्दें त्रिभुवन ईश॥18.17॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'द्ध्री' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

श् नश्वर हैं संसार में, पुद्गल सभी अजीव।

शाश्वत केवल आत्मा, रमते रहें सदीव॥18.18॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'श्' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

व वसुधा पर सब परवशी, भू को अपनी मान।

संग किसी के जाए ना, निर्धन या धनवान॥18.19॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'व' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

रौ रौनक पूरे विश्व में, जलवा चेतन जान।

जब तक स्वातम देह में, तब तक ही पहचान॥18.20॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'रौ' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

वि विद्यासिंधु साधू परम, संत शिरोमणि मान।

जादूगर हैं लोक में, आकर्षण बलवान॥18.21॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'वि' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

ज जय जयकार करें सभी, जब हों गुरु-उपदेश।

दूर दूर से यात्रीगण, आकर नमें हमेशा॥18.22॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'ज' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

य

यहाँ जगत के जीव सब, चेतनता का पुंज।

शिवपथ पर जो भी चलें, पाएँ मोक्ष निकुंज॥18.23॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'य' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

सं

संध्या-प्रातः लालिमा, होती एक समान।

ज्ञानीजन जाने रहस्य, करते निज कल्याण॥18.24॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'सं' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

ज

जय कारा प्रभु को करें, जग में गूँजे नाद।

भव्य जीव कीर्तन करें, मन में हो आल्हाद॥18.25॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'ज' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

य

यश कीरति वैभव सभी, भवि जीवों के होय।

काम करें निस्वार्थ वे, स्वयं प्रशंसा होय॥18.26॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'य' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

ना

नाम मंत्र महिमा परम, जपें सदा दिन-रैन।

णमोकार के कारणे, जीवन में सुख चैन॥18.27॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'ना' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

म

मन्त्र महा नवकार है, सब को ही सुखकार।

सुने जनमते यश मिले, अन्त आत्म उद्धार॥18.28॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'म' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

धे

कामधेनु जग में सदा, इच्छित करे प्रदान।

गौः वत्स वात्सल्य है, प्रीति सभी से मान॥18.29॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'धे' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

यौ

यौ गत्यौ परलोक में, जिय की दशा अशुद्ध।

हो स्वयंभू स्वमेव, तब हि स्वात्म विशुद्ध॥18.30॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'यौ' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

तू

गत्वा परगति में करे, जब भी जीव प्रयाण।
होय अनाहारक गती, विग्रह में पहचान॥18.31॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'तू' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

वा

वाग्गंगा श्री वीर की, करती नय कल्लोल।
भव्य जनों का मन हरे, जिनवाणी अनमोल॥18.32॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'वा' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

मी

मीत बनो तुम आत्म के, तजो देह से प्रीत।
रमण निजातम में करो, यही धर्म की रीत॥18.33॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'मी' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

श

शमन कषायों का करें, राग-द्वेष अवसान।
मोह रिपू का हनन कर, पावें आतम ज्ञान॥18.34॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'श' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

वी

वीतराग जिनदेव हैं, भव्य जीव हितकार।
स्वयं सिद्ध जिन हो गए, भव्यों पर उपकार॥18.35॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'वी' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

क्ष

लक्ष्य होय अब मुक्ति का, तन मन निर्मल होय।
गुरु चरणों में शीश धर, चारित वृद्धि होय॥18.36॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'क्ष' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

य

यही मोक्ष मार्ग कहा, बढें साहसी लोग।
रत्नत्रय निधि प्राप्त हो, स्वानुभूति संयोग॥18.37॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'य' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

ल

लस्त - पस्त हो जाएँ वे, हीन संहनन होय।
कायर चलें न मुक्तिपथ, ये महिमा मुनि होय॥18.38॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'ल' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

घु

घुलघुल कर गिरिकर्म के, हो जाते लघु रूप।

आसानी से पार कर, जिय बनते शिव भूप॥18.39॥

ॐ ह्रीं अर्हं वर्तमानशासननायक 'घु' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

दू

दूर्वा ज्यों भू फैलती, वर्षा ऋतु संयोग।

समवशरण में त्याग लें, वैरागी सब लोग॥18.40॥

ॐ ह्रीं अर्हं वर्तमानशासननायक 'दू' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

र

रटते रहो जिन नाम को, संयम नियम धराय।

हो जाओगे मुक्त सब, भवदधि पार कराय॥18.41॥

ॐ ह्रीं अर्हं वर्तमानशासननायक 'र' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

त

तप उपलब्धि देह नर, तप कर देह तपाय।

वरना तप का उलट पत, निश्चय पतन कराय॥18.42॥

ॐ ह्रीं अर्हं वर्तमानशासननायक 'त' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

ए

एक बार चल मोक्षपथ, हो आनन्द अपार।

हो जाए स्वाधीन तू, निज पर निज उपकार॥18.43॥

ॐ ह्रीं अर्हं वर्तमानशासननायक 'ए' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

व

वस्तु स्वभाव धर्म है, आतम-दर्शन ज्ञान।

शेष सभी संयोग है, लक्षण योग पिछान॥18.44॥

ॐ ह्रीं अर्हं वर्तमानशासननायक 'व' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

ह

हवा बहे निःसंग ज्यों, त्यों मुनि गमन कराय।

पिछी कमण्डलु हाथ में, परापेक्ष ना भाय॥18.45॥

ॐ ह्रीं अर्हं वर्तमानशासननायक 'ह' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

र्षा

वर्षा ऋतु में मेघ ज्यों, गरज गरज बरसाय।

दिव्यध्वनि सुन नाथ की, भव्य जीव हरषाय॥18.46॥

ॐ ह्रीं अर्हं वर्तमानशासननायक 'र्षा' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

तू

जपें सदा त्वन्नाम जिन, पाप करम विघटाय।

दाँत वज्र सम हो रहें, नैनन ज्योति बढ़ाय॥18.47॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'तू' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

प्रो

प्रोत्साहन दें स्वयं को, शिवपथ बढ़ने काज।

यथाख्यात चारित्र हो, राखे नरभव लाज॥18.48॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'प्रो' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

चू

च्यवन होय दिवि से जिय, जन्म धरा पर पाव।

दीक्षा ले चर्या करे, भव भव होय अभाव॥18.49॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'चू' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

चा

चारण ऋद्धीधर मुनी, चौमासे में आय।

चर्या करके गृही-गृह, गगन मार्ग से जाय॥18.50॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'चा' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

र्य

आर्य खण्ड में जन्म ले, जीव अति पुण्यवान।

हो विवेक भोजन-भजन, मोक्ष मार्ग पहचान॥18.51॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'र्य' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

स

सन्त शिरोमणि विद्या गुरु, शिवपथ पथिक महान।

परम प्रभावी शिष्यगण, आज्ञावर्ती सु जान॥18.52॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'स' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

नू

नन्त भवों के पुण्य ही, उदय में आए आज।

देश-विदेश के लोग भी, धन्य कहें महाराज॥18.53॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'नू' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

म

मति श्रुत आतम ज्ञान के, धारक श्री गुरुदेव।

सिंह वृत्ति से विचरते, हो स्वाधीन स्वमेव॥18.54॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'म' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

ति तिर्यचों में भी सुगुण, अणुव्रत लें भवि जीव।
झरनों का जल पी-भखें, सूखी घास सदीव॥18.55॥

ॐ ह्रीं अर्हं वर्तमानशासननायक 'ति' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

सु सुन्दर आतम से लगे, जग ये सुन्दर सार।
आत्म बिना तो देह ये, है अजीव निस्सार॥18.56॥

ॐ ह्रीं अर्हं वर्तमानशासननायक 'सु' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

ना नारा आदीनाथ ने, दिया जगत को येह।
"कृषि करो या ऋषि बनो" जैसे क्षेत्र विदेह॥18.57॥

ॐ ह्रीं अर्हं वर्तमानशासननायक 'ना' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

म मद - मत्सर को त्याग दो, करे नीच गति लोक।
लघुता से प्रभुता भली, पुरुषार्थ संयोग॥18.58॥

ॐ ह्रीं अर्हं वर्तमानशासननायक 'म' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

ग गगन अनन्त है लोक में, वसुधा अपरम्पार।
क्योंकि सब चाहते यही, वायू अरू आधार॥18.59॥

ॐ ह्रीं अर्हं वर्तमानशासननायक 'ग' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

तौ तौ तन-चेतन योग से, चलता है संसार।
बिना कर्म के आत्मा, तन तज हो भव पार॥18.60॥

ॐ ह्रीं अर्हं वर्तमानशासननायक 'तौ' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

वि हों विनीत साधू सभी, करें आत्म सम्मान।
देख तड़पते जीव को, देते अभय सु दान॥18.61॥

ॐ ह्रीं अर्हं वर्तमानशासननायक 'वि' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

शङ् शंका आदिक दोष सब, समकित के ही होय।
इनसे रहित ही पालिए, दर्श विशुद्धी होय॥18.62॥

ॐ ह्रीं अर्हं वर्तमानशासननायक 'शं' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

कौए के हो कण्ठ में, फले दाख जब रोग।

भाग्यहीन को ना मिले, भली वस्तु संयोग॥18.63॥

ॐ ह्रीं अर्हं वर्तमानशासननायक 'कौ' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...

चारण मुनियों को हुआ, संशय तत्त्वों माँहि।

शिशुजिन दर्श निःशंक हो, 'सन्मति' कह कर - जाँहि ॥18॥

ॐ ह्रीं ज्ञान गुण नैशिष्ठ्य प्रति पादकाय अर्ह महाबीजाक्षरसहिताय
श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

187

दीक्षाप्रदायी स्तुति

तीर्थेश्वरा विगतकाल- चतुर्थकेऽस्मिन्,
संदीक्षिता बहुलसंख्यक - भूमिनाथैः।
जानन्नपि त्वमगमो न हि खेदमेको,
वाचंयमो द्विदशवर्षमभी-र्विहृत्य ॥19॥

(छन्द विष्णुपद)

ती तीर्थकर जिन पूज्य है ये विश्व जानता है।
जिनवाणी को त्रिभुवन का हर जीव मानता है॥19.1॥

ॐ ह्रीं अर्हं वर्तमानशासननायक 'ती' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...

थे तीर्थेश जिन तिरे जहाँ से सिद्ध क्षेत्र कहलाए।
सब तीर्थों की करें वन्दना अब नहीं वृद्धि पाएँ॥19.2॥

ॐ ह्रीं अर्हं वर्तमानशासननायक 'थे' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...

श् नश्वर है संसार ये सारा जो भी दिखता है।
शाश्वत सब का आतमा जो ज्ञाता-दृष्टा है॥19.3॥

ॐ ह्रीं अर्हं वर्तमानशासननायक 'श्' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...

व वश होकर के विषय वासना जिय फँसता जाता।
दंशित भोग भुजंग जीव कभी साता नहीं पाता॥19.4॥

ॐ ह्रीं अर्हं वर्तमानशासननायक 'व' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...

रा राग-द्वेष हैं शत्रु हमारे भव-भव भटकाते।
निर्मल शान्त निराकुल होकर स्वातम सुख पाते॥19.5॥

ॐ ह्रीं अर्हं वर्तमानशासननायक 'रा' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...

वि विपरीत मान्यता सच मानें तो यही मूढ़ता है।
दिखता है जो सब जग झूठा अनदेखा सच है॥19.6॥

ॐ ह्रीं अर्हं वर्तमानशासननायक 'वि' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...

ग

गगनांगन में सुर-सुरियाँ सब नृत्य कराते हैं।

जब ऐरावत पर सुधर्म शिशु जिन ले जाते हैं॥19.7॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'ग' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

त

तत्त्व ज्ञान के बिना जीव जग में भरमाते हैं।

तन की ममता में ही वे स्वातम को भुलाते हैं॥19.8॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'त' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

का

काम भोग ये रोग बुरे जीवों के बैरी हैं।

बढ़ें व्याधियाँ मानव तन में विष सम जहरी हैं॥19.9॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'का' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

ल

लकुटी लेकर चले हाथ में पैर न चल पाते।

रोग बढ़ा है वृद्धावस्था कोई न बच पाते॥19.10॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'ल' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

च

चन्द्र सूर्य नित मेरू की परिक्रम्मा करते हैं।

घंटा घड़ी मिनट सैकिण्ड सब इससे बनते हैं॥19.11॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'च' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

तु

तुमसे ही भवि जीवों ने निज-आत्म ज्ञान पाया।

भेद ज्ञान का रहस्य जान जिय तन मन हरषाया॥19.12॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'तु' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

र्थ

अर्थ व्यर्थ है अधिक सभी व्यसनों में जाता।

पुण्योदय से मिली सम्पति पापानुबंध कराता॥19.13॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'र्थ' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

के

केवल क्रिया हो बिना भाव के फलित नहीं होती।

भाव सहित ही क्रिया शोभती मनवांछित देती॥19.14॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'के' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

सू

स्वात्म हमारा बुरे काम से हमें बचाता है।

अन्तर ध्वनि को नहीं सुनें तो बच नहीं पाता है॥19.15॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'सू' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

मि

मिला हमें पुण्यों से जो भी खुशी मनाते हैं।

प्राप्त है जु पर्याप्त उसी में तुष्ट हो जाते हैं॥19.16॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'मि' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

नू

अन्यमती सत्ता को मानें ईश्वर की जग में।

बुरा-भला सब ईश्वर करता यही सोच मन में॥19.17॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'नू' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

सं

संतप्त जीव दुःखों से पीड़ित मन ही मन रोते।

जिनवाणी उनको समझाती चेतन! क्यों सोते?॥19.18॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'सं' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

दी

दीक्षा धारण करें तपस्वी तन ममत्व त्यागें।

गुर्वाज्ञा का पालन करते संयम अनुरागें॥19.19॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'दी' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

क्षि

क्षिप्र-क्षिप्र तन गलता जाता मृत्यु आ जाती।

मृत्यु महोत्सव मने नहीं जिय वेदना तड़पाती॥19.20॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'क्षि' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

ता

ताल-मेल हो योग-भोग संगीत हो जीवन में।

आनन्दित होते सब प्राणी अपने तन-मन में॥19.21॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'ता' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

ब

बन्दीजन को मुक्त करें नृप तिर्थकर सुत हों।

इन्द्र दिखाए दस भव नाटक देख प्रजा खुश हो॥19.22॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'ब' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

हु

बहुत हुई इच्छाएँ पूरी फिर भी शेष रहें।

जब तक पूर्ण नहीं हो जाती मन में क्लेश सहे॥19.23॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'हु' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

ल

लज्जित हो जाते थे पहले हा मा धिक् सुनकर।

इस कलियुग में फाँसी से भी शर्म नहीं मुख पर॥19.24॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'ल' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

सं

संख्या थोड़ी उन जीवों की जो स्वाध्याय करे।

उनसे भी थोड़े वे जानो जो आचरण करें॥19.25॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'सं' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

ख्

ख्याति नाम के कारण जो जन दान कराते हैं।

अगला भव हाथी का हो शुण्डा लटकाते हैं॥19.26॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'ख्' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

य

यदि अक्षय सुख पाना चाहो गुरुपद में आओ।

उनका आशिष लेकर सब निज में ही रम जाओ॥19.27॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'य' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

क

कल क्या होगा किसने जाना चिंता करो नहीं।

जियो आज में शुभ भावों से होगा भला सही॥19.28॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'क' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

भू

भूमण्डल में गिरि नदि झरने द्वीप सिंधु जानो।

सुन्दर-सुन्दर नाम हैं इन के आगम सरधानो॥19.29॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'भू' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

मि

मिलना है मुझको अपने से तन मन शक्ति भरो।

शरणागत हूँ नाथ आपकी गुरुवर दया करो॥19.30॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'मि' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

ना

ना मैं चाहूँ सोना चाँदी ना हीरों का हार।

मैं तो चाहूँ मरण समाधि स्वातम का उद्धार॥19.31॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'ना' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

थै:

नाथै: कृपा को पाकर मेरा दिल भी खिल जाता।

मानों ईश कृपा से आतम वैभव मिल जाता॥19.32॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'थै:' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

जा

जानन हारा सबके तन में घुस कर बैठा है।

तन सबको दिखता चेतन तो ज्ञाता-दृष्टा है॥19.33॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'जा' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

न

नग्र पर तन नग्र तिष्ठे सुरनितपांय पड़े।

भक्तसदा जयकारे करते गुरुवर पास खड़े॥19.34॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'न' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

न्

जमीकन्द के एक-एक कण में जीव असंख्य रहें।

जैन धर्म के कुलाचार में यही अभक्ष्य कहे॥19.35॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'न्' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

न

नज़र दूसरे की से गिरता शायद उठ पाए।

नज़र से अपनी जो गिर जाता वह नहीं उठ पाए॥19.36॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'न' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

पि

पिला दो गुरुवर निज रस प्याला ऐसी शक्ति मिले।

चारित की हो जाए पूर्णता स्वानुभूति मिले॥19.37॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'पि' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

त्

पीत्वा ज्ञान सुधा रस जो भी खारा जल पीते।

वे जीवित ही मुरदों से भी हुए गए बीते॥19.38॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'त्' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

व

वश में करके पाँच इन्द्रिया अरु चंचल मन को।

मन के मालिक बन कर ही तुम भूलोगे तन को॥19.39॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'व' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

म

मन्त्र शक्ति से ज़हर उतरता नाग अगर डसता।

आयु कर्म हो जाए पूर्ण तो जिय ना बच सकता॥19.40॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'म' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

ग

गमन कराते सर्व साधु भू चार हाथ लखके।

छोटे-छोटे जीवों पर भी करुणा को करके॥19.41॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'ग' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

मो

मोह शत्रु है, दुर्निवार नहीं जीत सके कोई।

वर्धमान का भक्त नशावे जो साहसी होई॥19.42॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'मो' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

न

नमन करें हम सौ सौ प्रभु को हाथ जोड़ झुकते।

जिन चरणों में शीश नवाते अशुभ कर्म रुकते॥19.43॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'न' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

हि

हिरदय में तो भरी हुई है प्रभू-भाव भक्ती।

लेकिन ले पाई हूँ केवल अणुव्रत यथा शक्ती॥19.44॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'हि' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

खे

खेचर भूचर सुर सुरेन्द्र सब ये ही कहते हैं।

प्रभु पालकी हम उठायेगे चुप नहीं रहते हैं॥19.45॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'खे' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

द

दया करो दुखभंजन अब तो हमें ही आज्ञा दो।

प्रभु कहते वो ही उठाए जो मुझ सम होता हो॥19.46॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'द' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

मे

मेरा तेरा करते ही ये जीवन बीत रहा।

संचित कर्म नशाऊँ पहले स्वातम मीत हुआ॥19.47॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'मे' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

को

कोरा कागज था मन मेरा वीर का नाम लिखा।

अब तो मुझको कुछ नहीं भावे वीर ही वीर दिखा॥19.48॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'को' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

वा

वाचन करते जब गुरुवर आध्यात्मिक ग्रंथों का।

देते हैं दृष्टान्त अनोखे ज्ञान होय सबका॥19.49॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'वा' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

चं

चंद्र मरीचि सम धवल गुरु की काँति फैल रही।

दिग् दिगन्त में गुरु गरिमा की किरणें खेल रही॥19.50॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'चं' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

य

यशस्वी गुरुवर हैं मेरे भवि चरणों में आते।

प्रायश्चित ले अपने सारे पाप नशा देते॥19.51॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'य' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

मो

मोक्ष मार्ग तो सरल बहुत पर बिरले जाते हैं।

संसारी जीवों को तो बस भोग ही भाते हैं॥19.52॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'मो' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

द्वि

द्विदल दही अरू दाल का मिश्रण जिय उत्पत्ति हो।

अतः त्याग दो दूर से इसको 'नहिं खाना' व्रत लो॥19.53॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'द्वि' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

द

दमन करो सब इच्छाओं का जो है तुष्ट रहो।

शिकवा है तो भव बाकी स्वीकार है तो खुश हो॥19.54॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'द' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

श

शमन होय जब काम कषायें जीवन सरल बने।

नहीं कोई भी व्यसन सुहावे भाव हों शुभ्र घने॥19.55॥

ॐ ह्रीं अर्हं वर्तमानशासननायक 'श' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

व

वश होकर निद्रा के सब ही निशि में शयन करें।

रागी विषय भोग में त्यागी आतम ध्यान करें॥19.56॥

ॐ ह्रीं अर्हं वर्तमानशासननायक 'व' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

ष

भारतवर्ष हमारा प्यारा सब देशों में न्यारा।

भारतमाता पर वीरों ने अपना जीवन वारा॥19.57॥

ॐ ह्रीं अर्हं वर्तमानशासननायक 'ष' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

म

मन्दिर-मस्जिद-गुरुद्वारे सब मज़हब बनाते हैं।

धर्म तो वस्तु स्वभाव बताया प्रभु गुण गाते हैं॥19.58॥

ॐ ह्रीं अर्हं वर्तमानशासननायक 'म' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

भी

भीख मिले तब याद करें ईश्वर अल्ला गुरु को।

वर्ना तो सब विषयानन्द में भूल जाएँ प्रभु को॥19.59॥

ॐ ह्रीं अर्हं वर्तमानशासननायक 'भी' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

वि

निर्विकल्प होकर ध्याओ तुम पंच परम प्रभुको।

वृक्ष के नीचे आकर भी क्या माँगो छाया को?॥19.60॥

ॐ ह्रीं अर्हं वर्तमानशासननायक 'वि' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

ह

हृदय भरे शुभ भावों से तब क्रिया करो भाई!

फलीभूत हो निश्चय ही तुम को आनन्ददाई॥19.61॥

ॐ ह्रीं अर्हं वर्तमानशासननायक 'ह' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

त

सत्य बात पर अटल रहो चाहे सौ झूठे हों?

सत्य विजयी ज्यों तेल बूंद जल लीटर ऊपर हों॥19.62॥

ॐ ह्रीं अर्हं वर्तमानशासननायक 'त' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

यतन करावें निज को जीते वर्धमान सम हों।

जिन भक्ति गुरु भक्ति से गम्भीर-धीर हम हों॥19.63॥

ॐ ह्रीं अर्हं वर्तमानशासननायक 'य' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...

दीक्षित हो वीरा करें, बन में तप बिन खेद।

पावापुर में योग धर, हुए नाथ निर्वेद॥19॥

ॐ ह्रीं महाव्रत धारकाय अर्हं महाबीजाक्षरसहिताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः
पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

196

चारित्र विशुद्धि वर्धक स्तुति

प्राप्त - क्षयोपशममात्रकषायतुर्यो,
मत्तेऽपि वृद्धि-मुपयाति परं चरित्रम्।
त्वं 'वर्धमान' इति नाम भुवि प्रपन्नो,
न्यासे प्रभाव इह नामनि भावमुख्यात् ॥20॥

(छन्द सोरठा)

प्रा प्राप्त करें मुनिराज, केवलज्ञान महान हो।
हम अर्चे हित काज, आतम ज्ञान अनूप हो॥20.1॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'प्रा' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...

प् आप्त भए जिनराज, सर्वज्ञ वैरागी हितू।
पाएँ शिव साम्राज, निज पुरुषारथ कारणे॥20.2॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'प्' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...

त तप कर कर्म खपाय, घाति कर्म बलवान जो,
दिव्यध्वनी खिराय, भविजन पर उपकार कर॥20.3॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'त' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...

क्ष क्षमा भाव उर धार, नहीं शत्रू कोई जगत।
वैर नहीं स्वीकार, वैर मित्रता से हटे॥20.4॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'क्ष' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...

यो योग मिला सुखदाय, उत्तम कुल अरु गोत का।
मोक्ष महा सुख पाय, रत्नत्रय धारण करो॥20.5॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'यो' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...

प पवन चले सुखकार, मन्द सुगन्ध सुहावनी।
समवशरण उपकार, सब जीवों को सुख मिले॥20.6॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'प' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...

श

शक्ति समान उपास, शक्ति नहीं सरधा धरे।

जिस मन सरधा वास, अजर अमर सुख को भरे॥20.7॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'श' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

म

मन वच तन धर ध्यान, स्वानुभूति का लाभ हो।

चारित ही सुखदान, जन्म मरण का नाश हो॥20.8॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'म' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

मा

मानव जीवन सार, नर भव से निज पद लहे।

दूर हों सर्व विकार, मन निर्मल हो नीर सम॥20.9॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'मा' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

त्र

त्रय लोकों के नाथ, अरिहन्त परमेष्ठि कहे।

चरणों में धर माथ, धन्य कहें निज को सभी॥20.10॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'त्र' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

क

कर्दम कमल रहाय, लिप्त न होवे कीच में।

रहता नीर विहाय, अद्भुत पंकज है कला॥20.11॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'क' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

षा

वरषा मेघ झराय, उमड़ घुमड़ गरजें सदा।

यों जिन ध्वनि खिराय, मन मयूर भवि नाचते॥20.12॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'षा' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

य

यहाँ नहीं कुछ सार, जो आया वो ही गया।

क्षणभंगुर संसार, जन्म मर्ण के जीव वश॥20.13॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'य' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

तु

तुमको पूजें देव, शत इन्द्रन नित आयके।

करें चरण की सेव, धन्य धन्य जिनदेव तुम॥20.14॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'तु' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

र्यो

कुन्दकुन्दार्यो मुनय, मंगल जिनवर - शास्त्र।

रक्षक मूलाग्राय, हाथ जोड़ वन्दन करें॥20.15॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'र्यो' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

म

मन मन्दिर पधराय, वर्धमान जिनस्वामि को।

श्री जिनवर गुण गाय, कीर्तन सहसहि नाम का॥20.16॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'म' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

ते

मतेऽपि बुद्धि पाय, जीव हि शुभ विचार हों।

जे संस्कार दिलाय, मात-पिता उत्तम कहे॥20.17॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'ते' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

पि

पिया धर्म रस सार, समवशरण जिनधुनि खिरे।

निज अज्ञान निवार, आनन्दित हों भक्त जन॥20.18॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'पि' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

वृ

वृत्ती चरित कराय, व्रत लेते जिय भव्य सब।

शिवपथ पर बढ़ जाय, चारित के सोपान चढ़॥20.19॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'वृ' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

द्धि

शुद्धि भाव कराय, रत्नत्रय निधि पाय कर।

निर्मलता मन लाय, घाती कर्म विनाशने॥20.20॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'द्धि' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

मु

मुक्त जीव अविकार, लोक शीश पे राजते।

संसारी संसार, भटकें तीनों लोक में॥20.21॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'मु' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

प

पद विहार मुनिराज, ईर्या समिती से करें।

आतम हित के काज, चार हाथ लख चालते॥20.22॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'प' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

या याद करें दिन रात, भोग विषय पंचेन्द्रिय।
निज से हो मुलाकात, त्यागी व्रतियों की सदा॥20.23॥
ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'या' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...

ति तिरना हो भव सिंधु, नाव चरित की चढ़ चलो।
वर्धमान जग बंधु, रत्नत्रय कहें सम्पदा॥20.24॥
ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'ति' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...

प पञ्च पाप विनशाय, मिथ्यातम को मेट कर।
आवागमन मिटाय, सम्यग्दृष्टि जीव हो॥20.25॥
ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'प' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...

रं रंक - राव कहलाय, जीव जगत में आय के।
बिन संयम मर जाय, भव धर गिनती कारणे॥20.26॥
ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'रं' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...

च चमड़ी प्यारी नाय, सभी काम को पूछते।
चाम हि अंत नशाय, कृति कृत्य जग में रहे॥20.27॥
ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'च' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...

रि रिपु मोहानि बतलाय, निज-पर हित जाना नहीं।
कब रिपु दमन कराय, मोह तिमिर छाया घना॥20.28॥
ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'रि' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...

त्र त्रय लोकी पद पाय, त्रिभुवन से पूजित भए।
घाति कर्म विनशाय, अजर अमर सुख को लहे॥20.29॥
ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'त्र' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...

म् गम्य न आतम होय, अमूर्तिक गुरुवर कहें।
रूपी तो जड़ होय, चेतन लखता- जानता॥20.30॥
ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'म्' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...

तृ

त्वं प्रभु सबहि सहाय, दीन दुखी को लोक में।

नाम हि मंत्र कहाय, महामंत्र नवकार है॥20.31॥

ॐ ह्रीं अर्हं वर्तमानशासननायक 'तृ' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

वं

वंश पिछान कराय, जग में ऊँच अरू नीच की।

दुष्टन वंश मिटाय, कौरव-रावण-कंस के॥20.32॥

ॐ ह्रीं अर्हं वर्तमानशासननायक 'वं' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

व

वर उत्तम कहलाय, पाँच वर्ष अन्तर रहे।

सत्रह बाईस आयु, वर कन्या दोनों सुखी॥20.33॥

ॐ ह्रीं अर्हं वर्तमानशासननायक 'व' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

र्ध

करमन अर्ध खपाय, संज्ञा अर्ध नारीश्वर।

आधे कर्म रहाय, ईश्वर सकल विराजते॥20.34॥

ॐ ह्रीं अर्हं वर्तमानशासननायक 'र्ध' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

मा

मानव जग भटकाय, आप सरूप न जान कर।

गुरु शरणागत पाय, आतम रूप पिछानता॥20.35॥

ॐ ह्रीं अर्हं वर्तमानशासननायक 'मा' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

न

नर भव कठिन सु पाय, भेद ज्ञान जो जानले।

निधि रत्नत्रय पाय, सिद्ध शुद्ध राजत सदा॥20.36॥

ॐ ह्रीं अर्हं वर्तमानशासननायक 'न' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

इ

इसी ज्ञान को पाय, भक्ति अभेद जिनेश की।

प्रभु मैं एक सुभाय, निश्चय से ये जानिए॥20.37॥

ॐ ह्रीं अर्हं वर्तमानशासननायक 'इ' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

ति

तिरना है संसार, कैसे नाथ तिराय हम?

भवदधि होवे पार, रत्नत्रय की नाव चढ़॥20.38॥

ॐ ह्रीं अर्हं वर्तमानशासननायक 'ति' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

ना

नाशें निज दुष्कर्म, पालें संवर पुण्यमय।

भवसागर सेतर्ण, तिष्ठें चरित जहाज में॥20.39॥

ॐ ह्रीं अर्हं वर्तमानशासननायक 'ना' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...।

म

मन्त्र जपो नवकार, मुक्ति अगर चाहो कभी।

भवदधि तारणहार, पंच परम परमेष्ठि हैं॥20.40॥

ॐ ह्रीं अर्हं वर्तमानशासननायक 'म' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...।

भु

त्रिभुवनपति कहलाय, श्री अरिहन्त जिनेश्वर।

दिव्यध्वनी खिराय, आत्मज्ञान जग को दिया॥20.41॥

ॐ ह्रीं अर्हं वर्तमानशासननायक 'भु' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...।

वि

विद्या धन को पाय, नष्ट कभी नहीं होय जो।

खरचें तो बढ़ जाय, चोर न चोरी कर सके॥20.42॥

ॐ ह्रीं अर्हं वर्तमानशासननायक 'वि' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...।

प्र

नहिं प्रविष्ट हो आय, हिरण सिंह मुख में स्वयं।

ना ही वरण कराय, कायर का लक्ष्मी कभी॥20.43॥

ॐ ह्रीं अर्हं वर्तमानशासननायक 'प्र' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...।

प

पश्चिम निकले भानु, जिनवच झूठे होंय ना।

सर्प तजे न विषाणु, दुष्ट न छोड़े दुष्टता॥20.44॥

ॐ ह्रीं अर्हं वर्तमानशासननायक 'प' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...।

नू

वन्दित चर्ण जिनाय, तीन लोक पूजित महा।

नमें शतेंन्द्रन आय, समवशरण में नित्य ही॥20.45॥

ॐ ह्रीं अर्हं वर्तमानशासननायक 'नू' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...।

नो

नोकर्मन फल जान, जीव शरीरादिक सभी।

करमों का फल मान, भव-भव में आवागमन॥20.46॥

ॐ ह्रीं अर्हं वर्तमानशासननायक 'नो' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...।

न

न्याय करो सब कोय, बेगुनाह को दण्ड ना।

चर्म श्वास सो होय, लौह भस्म संसार में॥20.47॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'न' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

या

या चेतनता होय, सब जीवों में व्याप्त जो।

ये ही शाश्वत होय, शेष सभी संयोग हों॥20.48॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'या' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

से

सेवा गुणी कराय, सेवा से मेवा मिले।

सज्जन मैत्री थाय, दुर्जन होय तटस्थता॥20.49॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'से' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

प्र

प्रथम निरोगी काय, द्वयम अटूटी सम्पदा।

पत्नी हो सुखदाय, सुत आज्ञाकारी सदा॥20.50॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'प्र' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

भा

भावना बारह भाय, प्रभु विरक्त संसार से।

बन में गमन कराय, पंचमुष्टि कच लौंच कर॥20.51॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'भा' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

व

वच जिन नाहि सुहाय, कर्म डसे जब जानियो।

रुचिकर नीम चबाय, सर्प डसे तब जानियो॥20.52॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'व' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

इ

इह भव पर भव होय, यश-अपयश संसार में।

पुण्य-पाप फल सोय, भव-भव भरमन परंपरा॥20.53॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'इ' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

ह

हमको शक्ति प्रदाय, कर्म कटे संसार में।

युक्ती मुक्ति उपाय, शुद्ध सिद्ध हो सर्वदा॥20.54॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'ह' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

ना

नारि न अरि कहाय, ममता की मूरति कही।

सुरगण रमण कराय, जँह पूजा हो नारि की॥20.55॥

ॐ ह्रीं अर्हं वर्तमानशासननायक 'ना' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

म

मनका माल फिराय, मनवा घूमे लोक में।

ये तो सुमरण नाय, मनवा-मनका एक हो॥20.56॥

ॐ ह्रीं अर्हं वर्तमानशासननायक 'म' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

नि

निर्मल चित्त कराय, मन वच तन के योग से।

सुख सम्पति अधिकाय, रोग शोक भागें सभी॥20.57॥

ॐ ह्रीं अर्हं वर्तमानशासननायक 'नि' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

भा

भाव हि शुद्ध कराय, होय चरित की पूर्णता।

पुलकित मन उमगाय, दुर्लभ सब संयोग हों॥20.58॥

ॐ ह्रीं अर्हं वर्तमानशासननायक 'भा' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

व

वन्शी चैन बजाय, घर में रहकर ध्यान में।

आतम भी सुख पाय, संयम को धारण करे॥20.59॥

ॐ ह्रीं अर्हं वर्तमानशासननायक 'व' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

मु

मुनिजन शरणा पाय, श्रावक भी अनुमोदते।

शिवमारग चलवाय, शाश्वत निज पद पाय हो॥20.60॥

ॐ ह्रीं अर्हं वर्तमानशासननायक 'मु' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

ख्

ख्याति चाह नहिं होय, शान्ति सदा मन में रहे।

जीवन सहज हि होय, दुख चिन्ता मन से मिटे॥20.61॥

ॐ ह्रीं अर्हं वर्तमानशासननायक 'ख्' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

या

याद न भोग कराय, स्वातम में ही रमण हो।

मरण समाधी पाय, जीव मुक्त हो जगत से॥20.62॥

ॐ ह्रीं अर्हं वर्तमानशासननायक 'या' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

सत्य पंथ दर्शाय, आचार्य करुणा करें।

ॐ ह्रीं अर्हं वर्तमानशासननायक 'त' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...

पुर्णाध्य

चारित वृद्धि कारणे, करते शमन कषाय।

महिमा है जिन नाम की, भाव शुद्धि बढ़ जाय ॥20॥

ॐ ह्रीं नाम निक्षेपऽपि गुणवृद्धि कारणाय अर्हं महाबीजाक्षरसहिताय
श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

रौद्र उपद्रव नाशक स्तुति

दीक्षोत्सवे तपसि लीनमना बभूव,
चैको भवान् प्रविजहार सहिष्णुयोगी।
उज्जैनके पितृवने समधात् समाधि-
मुग्रैरुपद्रवसहेऽप्यतिवीर' संज्ञा ॥21॥

(छन्द अर्द्ध ज्ञानोदय)

दी

दीप्त ऋद्धि योगीश हुए तुम, कठिन गहन तप को करते।

इसीलिए प्रभु तीन योग से, हम तुम चरणों में नमते ॥21.1॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'दी' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...

क्षो

क्षोभ मोह को तुमने नाशा, समता से भरपूर हुए।

भविजन भी तुम शरण में आकर, क्रोध कषाय से दूर हुए ॥21.2॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'क्षो' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...

त्

तत्परता से ज्ञान ज्योति को, तुमसे ही पाने आए।

चिंतन कर जिन गुण रत्नों का, तुमसा ही बनने आए ॥21.3॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'त्' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...

स

सम रसता आए हम में भी, जो है उसमें तुष्ट रहें।

यथाशक्ति तप कर पाएँ तो, हम मन में संतुष्ट रहें ॥21.4॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'स' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...

वे

वेगवान हों शुभ करमों में, अशुभ कर्म कल पर टालें।

गुरुचरणों में नम्री भूत हो, सम्यक् चारित को पालें ॥21.5॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'वे' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...

त

तप संयम को धारण करके, हम भी कर्म खपा जाएँ।

गुर्वाशीष से शक्ति प्राप्त कर, निज में ही निज को पाएँ ॥21.6॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'त' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...

प

परम पंच परमेष्ठि शरणा, जो भव्य लेते सुखदाय।

उन पर होती प्रभु की करुणा, वे भी अजर अमर पद पाय॥21.7॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'प' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

सि

सिद्धों का सुख अनुपम जानो, नंत काल तक सुखी रहें।

नहीं लौट कर आता कोई, अपने में ही मगन रहें॥21.8॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'सि' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

ली

लीन रहें सब स्वातम में ही, ज्ञान लहर आती जाती।

यदि ऐसा नहीं होवे तो फिर, कूटस्थ जिय संज्ञा आती॥21.9॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'ली' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

न

नहीं कभी मरता है चेतन, जीव तभी तो कहलाता।

सिद्धालय में भी तो आतमा, सुख का अनुभव कर पाता॥21.10॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'न' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

म

मन वच तन से आस्रव होता, आस्रव के त्रय द्वार कहे।

इन द्वारों की करें सुरक्षा, संवर पहरेदार रहे॥21.11॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'म' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

ना

ना ही कोई रोक सके जिय, ना कोई बाधक बनता।

अगर जीव प्रभु का आश्रय ले, स्वमेव हि साधक बनता॥21.12॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'ना' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

ब

बन्द करे संवर आस्रव को, तप से निर्जरा हो जाती।

सकल कर्म का क्षय होते ही, आत्मा लोक शीर्ष जाती॥21.13॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'ब' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

भू

भूतकाल तो सब जीवों का, मिथ्या तिमिर में ही होता।

वर्तमान हो ज्ञान प्रकाशित, तो भविष्य सुखमय होता॥21.14॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'भू' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

व

वरदायी माँ सरस्वती ही, निज सरूप से मिलवाती।

भेदज्ञान की शिक्षा देकर, जिय प्रभु सम ही दिखलाती॥21.15॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'व' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...

चै

चैको ज्ञाता दृष्टा है जो, उसका अनुभव करवाती।

स्व संवेदन के बल पर ही, स्वानुभूति शिव-दरशाती॥21.16॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'चै' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...

को

कोटि उपाय करें हम अपने, मोक्ष लक्ष्य को पाने के।

केवल गुरुवर ही पथ दर्शक, सत्य धर्म बतलाने के॥21.17॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'को' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...

भ

भगवन जिन वर्धमान शरण्य, सर्वोदय को प्रकटाया।

बलि प्रथा को बन्द कराके, धर्म अहिंसा बतलाया॥21.18॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'भ' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...

वा

वानप्रस्थ कर्तव्य गृही का, बच्चों को सौंपो सब काम।

राग द्वेष तज साम्य भाव से, जीवन में ले लो विश्राम॥21.19॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'वा' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...

न्

हन्ता हैं प्रभु कर्म शत्रु के, शान्त भाव से जीत लिया।

पहले विजित किया खुद को तब, आत्म बल को प्राप्त किया॥21.20॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'न्' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...

प्र

प्रजाजनों को आदिनाथ ने, प्रजापति बन ज्ञान दिया।

असि मसि कृषि विद्या वाणिज्य, शिल्प कला विज्ञान दिया॥21.21॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'प्र' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...

वि

विद्याधर ने ज्ञानसागर से, ज्ञान कोष हस्तगत किया।

आजीवन वाहन तज कर के, गुरुवर का विश्वास लिया॥21.22॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'वि' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...

ज

जन्म मरण का रोग मिटाने, जिन वच औषधि को पाया॥

स्वस्थ हुए हो तुम तो स्वामी, अब जग को भी समझाया॥21.23॥

ॐ ह्रीं अर्हं वर्तमानशासननायक 'ज' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

हा

हाहाकार मचा दुनिया में, कोरोना महामारी का।

समाधान दिया योग अर्हम, इसी रोग से बचने का॥21.24॥

ॐ ह्रीं अर्हं वर्तमानशासननायक 'हा' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

र

रस तज नीरस भोजन करते, वाणी से रस झरता है।

गुरु मुख से वचनों को सुनकर, कभी नहीं मन भरता है॥21.25॥

ॐ ह्रीं अर्हं वर्तमानशासननायक 'र' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

स

सरल प्रणम्य सिंधु का जीवन, हरदम हँसते रहते हैं।

रहस्य गूढ़ ग्रन्थों का वे तो, क्षणभर में समझाते हैं॥21.26॥

ॐ ह्रीं अर्हं वर्तमानशासननायक 'स' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

हि

हिरदय में हो प्रेम भाव बस, सब में ही अपनापन हो।

यही धर्म का मर्म है भाई, समतारस मन भावन हो॥21.27॥

ॐ ह्रीं अर्हं वर्तमानशासननायक 'हि' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

ष्

विष्णु ब्रह्म महेश तुम्ही हो, सहस्र अठोत्तर नाम रहे।

एक नाम लेकर ही तिरते, सहस्र नाम क्या बात कहें?॥21.28॥

ॐ ह्रीं अर्हं वर्तमानशासननायक 'ष्' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

णु

अणु से लघु होता नहीं कोई, दीर्घ नहीं होता नभ से।

है महत्व सब का ही जग में, कम न कोई इक दूजे से॥21.29॥

ॐ ह्रीं अर्हं वर्तमानशासननायक 'णु' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

यो

योगी योग साधते हैं बस, साधना तो अविराम चले।

मन वच तन हो जाएँ वश तो, चारित भी निरदोष पले॥21.30॥

ॐ ह्रीं अर्हं वर्तमानशासननायक 'यो' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

गी

गीर्वाण करते नियोग सब, तीर्थकर के जीवन में।

नहीं कोई कल्याणक सुर बिन, अशन-वसन दें सुर घर में॥21.31॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'गी' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

उ

उग्र कहे मैं घटती जाती, माँ कहती सुत बढ़ता है।

ब्याज धनी का बढ़ता है पर, निर्धन का धन घटता है॥21.32॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'उ' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

ज्

इज्या पूजा अर्चन वन्दन, ये सब केवल साधन हैं।

साध्य सभी से है निज पद ही, चार कही आराधन हैं॥21.33॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'ज्' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

जै

जैन धर्म के जिनवर चौबिस, चौबीसों का भजन करो॥

धर्मचक्र के चौबिस आरे, चौबिस घंटे यजन करो॥21.34॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'जै' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

न

नगन दिगम्बर गुरु हमारे, बालक सम विचरण करते।

लेते हैं इक बार अहारा, पद विहार केवल करते॥21.35॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'न' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

के

केवलज्ञान उपाय के साधु, धनु सहस्र पंच पर राजें॥

सिंहासन से चव अंगुल पर, अन्तरिक्ष में अधर विराजें॥21.36॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'के' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

पि

पिसनहारी की एक मढ़ैया, शहर जबलपुर बनी हुई।

आटा पीस-पीस बनवाई, श्रद्धा उसकी अटल रही॥21.37॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'पि' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

तृ

तृष्णा बढ़ती भोगों में तो, काया घिरती रोगों में।

पूर्ति करें चाहे जितनी भी, तृप्ति नहीं होती सच में॥21.38॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'तृ' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

व

वश होकर रसना इन्द्री जिय, भक्ष्य-अभक्ष्य सभी खाता।

हो विवेक करूणा मन में तो, जीव हिंसा से बच जाता॥21.39॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'व' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

ने

नेमिनाथ दूल्हा बन चाले, रूदन सुना था पशुओं का।

कंगना हार सिंगार उतारा, बाना धार लिया मुनिका॥21.40॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'ने' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

स

सम्बन्धों का धागा कोमल, प्रेम भाव जब ही छूटे।

रिश्तों में कटुता आ जाती, दिल का बंधन भी टूटे॥21.41॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'स' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

म

मदिरा पान करें जो प्राणी, हानि देह को पहुँचाते।

दुखद अन्त हो परिवारों का, स्वयं भी अल्पायु पाते॥21.42॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'म' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

धा

धार्मिक - धार्मिकता में अंतर, धार्मिक तो दिख सकते हैं।

धार्मिकता हो उनके अन्दर, तभी दया कर सकते हैं॥21.43॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'धा' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

तृ

मृत्यु से डरते हैं सारे, मगर मृत्यु अनिवार्य है।

भिन्न भिन्न है तन अरु चेतन, तो चिंता परिहार्य है॥21.44॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'तृ' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

स

समय बड़ा बलवान जगत में, रैंक भि राजा बन जाता।

पुण्य क्षीण हो जाएँ तो सब, श्वान देव भी बन जाता॥21.45॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'स' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

मा

माया दुराचारिणी जानो, नारी भव दिलवाती है।

आ जाए जब मन निर्मलता, तो माया से बच जाती॥21.46॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'मा' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

धि

सुविधिनाथ भी नाम प्रभु का, मगरमच्छ है पद लक्षण।

पुष्पदन्त जिनवर उपकारी, भविजन का करते रक्षण॥21.47॥

ॐ ह्रीं अर्हं वर्तमानशासननायक 'धि' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

मु

मुक्ति रमा पति नाथ जिनेश्वर, धवल वर्ण छविधारी है।

सुप्रभ कूट से निजपद पाया, चिदानन्द अविकारी हैं॥21.48॥

ॐ ह्रीं अर्हं वर्तमानशासननायक 'मु' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

त्रै

उत्रै ध्यान करें पारस प्रभो, कमठ करे उपसर्ग निदान।

केवलज्ञान हुआ जिनवर को, समवशरण रचना शुभजान॥21.49॥

ॐ ह्रीं अर्हं वर्तमानशासननायक 'त्रै' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

रु

रुपये-पैसे को धन मानें, गुण सम्पत्ति का नहिं ध्यान।

कोठी वाहन सब ही छूटें, पर भव में क्या पाय नदान॥21.50॥

ॐ ह्रीं अर्हं वर्तमानशासननायक 'रु' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

प

पन इन्द्रियों को विजित करें, चंचल मन अंकुश संयम।

हुए स्वयंभू स्वयं जीत कर, बने त्रिलोकाधीश अनुपम॥21.51॥

ॐ ह्रीं अर्हं वर्तमानशासननायक 'प' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

द्र

द्रवीभूत होते नर नारि, सुनें रूदन जिय अपरम्पार।

लेकिन उनको दया न आती, जिनके अदया ही संस्कार॥21.52॥

ॐ ह्रीं अर्हं वर्तमानशासननायक 'द्र' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

व

वरण किया है मुक्ति रमा का, शाश्वत निज गुण पाने को।

भक्त शरण में आएँ गुरु की, निज झोली भर वाने को॥21.53॥

ॐ ह्रीं अर्हं वर्तमानशासननायक 'व' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

स

सम्यक् दर्शन ज्ञान चरित तप, चारों आराधन पाएँ।

रत्नत्रय सोपान चढ़ें हम, जीवन सफल बना जाएँ॥21.54॥

ॐ ह्रीं अर्हं वर्तमानशासननायक 'स' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

हे

हेम - रजत मय थाल सजाकर, आठों द्रव्य बनाए हैं।

भाव - भक्ति से पूजा करके, वर्धमान गुण गाए हैं॥21.55॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'हे' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

पू

प्याला पी लो, ज्ञानामृत का, विषय वासना छूटेगी।

आतम रस का स्वाद मिलेगा, जन्म वल्लरी टूटेगी॥21.56॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'पू' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

य

यही एक कल्याण मार्ग है, हुई एकता रत्नत्रय।

सम्यग्दर्शन ज्ञान चारित ये, तप संयम से कर लो क्रय॥21.57॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'य' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

ति

तिमिर मोह-अज्ञान का छाया, जिन शास्त्रों का ज्ञान नहीं।

अन्य मती जो भी कहते वो, मानें निज का भान नहीं॥21.58॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'ति' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

वी

वीरों का है धर्म जैन तो, कायर पाल नहीं सकते।

परिषह बाईस सहते साधू, निर्बल सुन के ही कँपते॥21.59॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'वी' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

र

रति अरति से विरहित स्वामी, दोष अठारह मुक्त हुए।

शुक्लध्यान से जाना निजको, गुण अनंत संयुक्त हुए॥21.60॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'र' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

सं

संगति करो साधु की निश दिन, होगा आतम का कल्याण।

जीवन जी लो सहज भाव से, जीने दो उन्हें ससम्मान॥21.61॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'सं' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

ज्ञा

ज्ञानवान हो सभी साधुजन, देते भविजन को सुज्ञान।

नहीं स्वार्थ होता है मन में, नहीं परापेक्षा बहुमान॥21.62॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'ज्ञा' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

पूणाईय

अतुलितसाहस वीर का, सहें रुद्र उपसर्ग।

रहे अकंप विकास कर, गए नाथ अपवर्ग ॥21॥

ॐ ह्रीं आत्मबल प्रकटाय अर्हं महाबीजाक्षरसहिताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः
पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।



अनिष्ट बंधन विनाशी स्तुति

या बंधनैश्च विविधैः किल संनिबद्धा,
संपीडिता विलपिता समयेन नीता।
भक्त्योल्लसेन विभुतां प्रविलोकमाना,
सा चन्दना गतभया तव लोकनेन॥22॥

(छन्द विष्णुपद)

या

याचक बन कर आया हूँ भगवन तेरे द्वारे।
मुझे शक्ति-भक्ति दे प्रभु मैं हूँ तेरे सहारे॥22.1॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'या' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...

बं

बंद करो इस मृत्यु भोज को खाते हों जो भी।
मृतक के घरवाले करते सब रोते रोते भी॥22.2॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'बं' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...

ध

धन दौलत ही नहीं है सब कुछ रिश्ते न तोड़ो।
सुनो ! कभी तो इनसे ऊपर उठ रिश्ते जोड़ो॥22.3॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'ध' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...

नै

नैराश्य की करो न बातें रहो सकारात्मक।
वे डूबेंगे नदि तनाव में रहें नकारात्मक॥22.4॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'नै' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...

श

पुनश्च कहना यही ज़रूरी अच्छी सोच रखो।
दीनदुखी जीवों पर भी तुम करुणावान रहो॥22.5॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'श' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...

च

चन्द रुपयों के लिए किसी को मत पीड़ा देना।
रुपये अगर कोई वापिस दे ब्याज नहीं लेना॥22.6॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'च' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...

वि

विद्या देती सदा विनय को विनयी पात्र होता।

लक्ष्मी का भी पात्र विनयी हो धन सो सुख होता॥22.7॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'वि' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...

वि

विविधैः रूप धरे जो नव नवमन मोहित करता।

वही रूप रमणीय पतिंगा जिस पर जल मरता॥22.8॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'वि' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...

धैः

विविधैः भोगों को भोगा तो निज को भोग बनाया,

निज स्वरूप में रमा नहीं तो अन्त समय पछताया॥22.9॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'धैः' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...

कि

क्योंकि फँसा था चारुदत्त भी रूप बसन्त सेना।

वैश्या से बचकर कोई भी बाहर निकले ना॥22.10॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'कि' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...

ल

लगी लगन ऐसी वैश्या से दिखता नहीं जमाना।

दीनारें बत्तिस करोड़ दी फिर भी न पहचाना॥22.11॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'ल' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...

सं

संस्मरण जिनवर का कर लो अपनी साँसों में।

गई साँस नहीं आए दुबारा यतन करो जितने॥22.12॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'सं' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...

नि

निर्णय करो तुम्हीं भावों से अच्छे कर्म करो।

या फिर दुर्भावना रखो तो करनी आप भरो॥22.13॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'नि' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...

ब

बढ़ा हुआ जो रोग मानसिक वो तनाव होवे।

जीवन सहज गुज़ारें जो भी वे प्रसन्न हों वे॥22.14॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'ब' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...

झ बद्धा हुए कर्मों से वे कर्मबन्ध होते।
जो कर्मों से नहीं बँधे वे कर्ममुक्त होते॥22.15॥
ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'झा' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...

सं संज्ञा है जिनकी स्वामी वे साधु दिगम्बर है।
मही आवरण कोई उन पर अवनी-अम्बर है॥22.16॥
ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'सं' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...

पी पीड़ा दे यदि कोई किसी को वो भी हिंसा है।
मन वच तन से ठेस ना पहुँचे यही अहिंसा है॥22.17॥
ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'पी' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...

डि डिगा ना पाए शिवपथ से कोई सम्यग्दृष्टी को।
निश्चय प्राणाधार मानता देव-शास्त्र-गुरु को॥22.18॥
ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'डि' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...

ता ताने देते हों अपने तो जीवन भार नज़र आए।
लेते बदला स्वयं विधाता हिंसक पार नहीं पाए॥22.19॥
ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'ता' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...

वि विष से एक जनम जिय मरता विषयों से भव-भव में।
भोगों में आसक्त न होवे रमे आत्म कानन में॥22.20॥
ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'वि' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...

ल लगन लगा लें अब स्वातम में पर से नेह तजें।
भव भरमन से बच जाएंगे प्रभु का नाम जपें॥22.21॥
ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'ल' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...

पि पिला दिया प्याला जिनवर ने ज्ञान सुधा रस का।
तृष्णा शान्त हुई है मन से मोह मिटा तन का॥22.22॥
ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'पि' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...

ता ताला लगा दिया इन्द्रियों पर संयम का पहरा।
रंग चढ़ा है आत्म प्रीति का चेतन पर गहरा॥22.23॥
ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'ता' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...

स समय-समय की बात कर्म अपने ही जान सहे।
फल होता है सब्र का मीठा जान के मौन रहे॥22.24॥
ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'स' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...

म मन वच तन कृत कारित अनुमोदन संयोजन।
संरम्भ समारम्भ आरम्भ शत आठ भेद मोचन॥22.25॥
ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'म' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...

ये ये सब पापास्रव कारण इनको हम बन्द कर लें।
इक शत वसु मनके माला प्रभु नाम जपन कर लें॥22.26॥
ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'ये' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...

न नहीं जाप करनी वो कहते गिन गिन क्या जपना?
बिना गिने भी नहीं जपे तो व्यर्थ रहा कहना॥22.27॥
ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'न' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...

नी नीराजन करते जो प्रभु का सुबह शाम जानो।
पुण्य कोष बढ़ जाता उनका रोग रहित मानो॥22.28॥
ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'नी' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...

ता ताने बाने कर्मों के चाबी भरते तन में।
जब तक चाबी देह खिलौना चले तभी जग में॥22.29॥
ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'ता' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...

भ भवतारक हो नाथ तुम्हीं तो अवलम्बन देते।
पतित जनों को भवसागर से पार करा देते॥22.30॥
ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'भ' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...

क

भक्त प्रभू की प्रेम भाव से करे नित्य पूजा।

जिनपूजा से बढ़ कर उसको काम नहीं दूजा॥22.31॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'क' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...

त

इत्यादिक नामों से हम तुम स्तुति करते हैं।

प्रभु नाम जपन से ही कर्मों का क्षय कर पाते हैं॥22.32॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'त' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...

यो

योजन सौ तक जिनवाणी का नाद गूँजता है।

चहुँ दिशि में मागध देवों का अतिशय होता है॥22.33॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'यो' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...

ल्ल

होंय प्रफुल्ल भव्य जन सारे जिन धुनि को सुन कर।

यथाशक्ति कल्याण करें भवि स्वातम-संयम धर॥22.34॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'ल्ल' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...

से

सेवा भावी भक्त मूर्ति लख मूर्तिमान पूजे।

भाव भक्ति से पूजा करके कर्मों से छूटे॥22.35॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'से' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...

न

नई नई स्तुतियों से जिन- अर्चन करते हैं।

दान अरु पूजा से ही भवि पुण्यार्जन करते हैं॥22.36॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'न' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...

वि

विगत भवों में जो कुछ कीना उदय में आया है।

इस भव के भी कृत कर्मों के फल को पाया है॥22.37॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'वि' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...

भु

प्रभुता आती जिस लघुता से वो लघुता शुभ हो।

नीचे गिरकर जो भी उठता उच्चता उसकी हो॥22.38॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'भु' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...

तां तांडव नृत्य करें सुधर्म जब प्रभु जन्मोत्सव हो।
हर्ष मनाएँ सभी प्रजाजन महा महोत्सव हो॥22.39॥
ॐ ह्रीं अर्हं वर्तमानशासननायक 'तां' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...

प्र प्रभु का चरणाश्रय लेकर के पहले नमन करें।
फिर अनन्य भावों से सब मिल कीर्तन-भजन करें॥22.40॥
ॐ ह्रीं अर्हं वर्तमानशासननायक 'प्र' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...

वि विविध रूप धर नटी प्रकृति सबका चित्र लुभाती।
जगह-जगह जल दर्पण मुख लख मानो खुद इतराती॥22.41॥
ॐ ह्रीं अर्हं वर्तमानशासननायक 'वि' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...

लो लोलुप विषयों में फँस बाहर निकल नहीं पाता।
ज्यों मक्खी का जीवन बलगम में फँस तड़पाता॥22.42॥
ॐ ह्रीं अर्हं वर्तमानशासननायक 'लो' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...

क कमल खिले कीचड़ में फिर भी जल से ऊपर हो।
मुख, चक्षु, कर, पद, की तब ही उपमा कमल से हो॥22.43॥
ॐ ह्रीं अर्हं वर्तमानशासननायक 'क' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...

मा माला में तो सुमन स्वयं ही सब जुड़ते जाते।
अष्ट द्रव्य अर्पण कर के यों भवि गुणमाला गाते॥22.44॥
ॐ ह्रीं अर्हं वर्तमानशासननायक 'मा' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...

ना नाचें गाएँ वर्धमान स्तोत्र विधान स्वाएँ।
धर्मध्यान में समय बिताकर पुण्य कोष भर जाएँ॥22.45॥
ॐ ह्रीं अर्हं वर्तमानशासननायक 'ना' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...

सा सामायिक सौभाग्य गृही का ध्यान लगाने को।
त्याग करें सावद्य सभी कुछ शान्ती पाने को॥22.46॥
ॐ ह्रीं अर्हं वर्तमानशासननायक 'सा' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...

च

चन्दन घिस कर तिलक करें जब किसी के माथे पर।

अपनी अँगुलियाँ भी महकें तब खुशबू आने पर॥22.47॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'च' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

न्

सन्तोषी ही सदा सुखी होता है ज़माने में।

बीत जाएँ कितने ही भव जिय निजपद पाने में॥22.48॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'न्' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

द

दया क्षमा करुणा धृति ये सब आभूषण मुनिराज।

संयम तप धारी, गुरुवर को पूजे सकल समाज॥22.49॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'द' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

ना

नाम ख्याति चिंता नहीं धर्म प्रभावना काम।

शुद्धाहार इक बार लें साधु प्रवचन दें अभिराम॥22.50॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'ना' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

ग

गगन गमन नख केश वृद्धि न चतुर्मुखी सुखकार।

सप्त धातु वर्जित तन प्रभु का परमौदारिक सार॥22.51॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'ग' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

त

तप्त स्वर्ण सम वर्ण प्रभु का तीन लोक के नाथ।

चमर चतुर्दश दुरें सदा ही छत्र लगे त्रय माथ॥22.52॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'त' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

भ

भगवन हों केवली सकल भामण्डल छवि देत।

सूर्य करोड़ों का नहीं होता ऐसा तेज॥22.53॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'भ' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

या

यादृकान्ति जिन मुख कही हरे कोटि उपमान।

थे उतने परमाणु दिव्य रची देह भगवान॥22.54॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'या' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

तपसी साधु अनूप हैं हो नहीं कवलाहार।

पुष्प वृष्टि होती सदा खिरे दिव्य ध्वनि सार॥22.55॥

ॐ ह्रीं अर्हं वर्तमानशासननायक 'त' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...

पवन बहे शीतल सुगन्ध नेत्र युगल निस्पन्द।

भवि जिन धुनि रस को पियें ज्यों भँवरे मकरन्द॥22.56॥

ॐ ह्रीं अर्हं वर्तमानशासननायक 'व' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...

लोकालोक विलोकते केवलज्ञानी जिनन्द।

उन ही केवली को सदा पूजें धरि आनन्द॥22.57॥

ॐ ह्रीं अर्हं वर्तमानशासननायक 'लो' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...

कन्यादान को पूज्य कहें अरु गर्भ में ही दें मार।

उन जैसा नहीं कोई अभागा बेटे दें दुत्कार॥22.58॥

ॐ ह्रीं अर्हं वर्तमानशासननायक 'क' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...

नैम धर्म की लाज रखें जो रक्षा धर्म करता।

धर्मा चरण तो होता ना ही ना चाहत फल रखता॥22.59॥

ॐ ह्रीं अर्हं वर्तमानशासननायक 'ने' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...

नन्द-भाभी के रिश्ते की जो भी करते निन्दा।

हर लड़की ससुराल में भाभी पीहर में नन्दा॥22.60॥

ॐ ह्रीं अर्हं वर्तमानशासननायक 'न' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...

पूणाध्य

पापोदय से चन्दना, पड़ी बंधनों जाय।

रो रो करी पुकार जब, वर्धमान भी आय ॥22॥

ॐ ह्रीं मनोवाञ्छित फल प्राप्ताय अर्हं महाबीजाक्षरसहिताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय
नमः पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा॥

उत्कृष्ट पद प्रदायी स्तुति

ज्ञानोत्सवेऽशुभदतीव सभा पृथिव्या,
गत्वोपरीह जिन! पञ्चसहस्र-दण्डान्।
मिथ्यादृशां न भवतो मुख-दर्श-पुण्य-
मुच्छ्राय एव भगवन्! सुविराजमानः ॥23॥

(छन्द ज्ञानोदय)

ज्ञा

ज्ञान शरीरी नित्य निरंजन, वर्धमान प्रभु को वन्दन।

तीन योग से तीन काल में, करूँ भाव से अभिनंदन॥23.1॥

ॐ ह्रीं अर्हं वर्तमानशासननायक 'ज्ञा' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...

नो

नोकरमों के कारण ही इन, करमों ने मुझको घेरा।

धोखे से ही फँसा लिया, अब जनम-मरण का फेरा॥23.2॥

ॐ ह्रीं अर्हं वर्तमानशासननायक 'नो' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...

त्

उत्सव हो जब मन्दिर जी में, सभी प्रफुल्लित होते हैं।

तैयारी में सकल जैन जन, खूब उल्लसित होते हैं॥23.3॥

ॐ ह्रीं अर्हं वर्तमानशासननायक 'त्' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...

स

सबसे सुन्दर स्वातम अपना, सारी दुनियाँ में जानो।

स्वात्म बिना तो जगत अँधेरा, कुछ भी नहीं पहचानो॥23.4॥

ॐ ह्रीं अर्हं वर्तमानशासननायक 'स' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...

वे

वेगवान है चंचल मन ये, सरपट नित दौड़ा जाता।

अभी यहाँ है अभी वहाँ है, कहाँ कहाँ पर नहीं जाता॥23.5॥

ॐ ह्रीं अर्हं वर्तमानशासननायक 'वे' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...

शु

शुभ करमों के फल को चाहे, कर्म तो अशुभ ही करता।

अशुभ कर्म करने पर भी जिय, नहीं कभी किसी के डरता॥23.6॥

ॐ ह्रीं अर्हं वर्तमानशासननायक 'शु' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...

भ

भक्त चाहता भगवन होना, कोटी प्रयास करावे।

धर्म ध्यान में जीवन यापन, अपने कर्म झरावे॥23.7॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'भ' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

द

दशा बिगड़ती देख देख कर, इस कलयुगी ज़माने की।

छोटे छोटे कपड़े पहनें, आँखें झुकें सयाने की॥23.8॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'द' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

ती

तीव्रतर विभाव तीव्रतम, लेश्या अशुभ पिछानो।

मन्द मन्दतर भाव मन्दतम, लेश्या शुक्ल ही मानो॥23.9॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'ती' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

व

वन्दनीय हैं तीन लोक से, श्री जिनेन्द्र तीर्थकर।

घातिया कर्म नशाते प्रभु, जीवन-मुक्त जिनेश्वर॥23.10॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'व' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

स

सन-सन करती हवा चले जब, साधु परमेष्ठी ध्याते।

मन स्थिर बलवान विराजें, सुर नर खेचर गुण गाते॥23.11॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'स' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

भा

भामण्डल से तेज प्रकाशित, सूर्य चन्द्र भी शरमाते।

भूत भावि वर्तमान सप्त भव, सब जीवों के दरशाते॥23.12॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'भा' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

पृ

पृथ्वी पर ही स्वर्ग झलकता, न्याय नीति से रहते।

आनन्दित प्रत्येक समय हों, दुख-संकट सब ही सहते॥23.13॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'पृ' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

थि

थिरकते हैं कदम उनके, जो सदा प्रसन्न होते।

संकलेश में रहें जो, सर्वदा वे खिन्न होते॥23.14॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'थि' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

व्

व्यर्थ है उनका तो जीना, जो तप-संयम नहीं करते।

दिवि के देव भी नर तन पाकर, तप करने को हि तरसते॥23.15॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'व्' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

या

याद आते सदा वे साधू, जो शिवपथ को दरशाते।

स्वयं भी राही हैं शिवपुर के, शिष्यों को भी चलवाते॥23.16॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'या' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

ग

गति तो चलना है पैदल ही, प्रगति साईकिल दिलवाती।

लगती है गति फिर भी धीमी, मोटर साइकिल मन भाती॥23.17॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'ग' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

त्

भूत्वा शुचि पूजा कर लें हम, प्रभू भक्ती भावों से।

शुभोपयोग में ही समय जाय, होवें मुक्त विभावों से॥23.18॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'त्' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

वो

वोच्छं आचार्य आराधन, कहते चारों हि क्रम से।

दर्शन-ज्ञान-चरित-तप सम्यक्, पालें आजीवन रूचि से॥23.19॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'वो' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

प

पतन हुआ करता है उनका, जो तपश्चर्ण नहीं करते।

सदाचरण होता है जिनका, सुख शांति वे ही भरते॥23.20॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'प' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

री

रीती है सम्यग्दर्शन की, जिन कुल में जो जन्म लहें।

मोल जानते वे स्वात्म का, निधि रत्नत्रय शुद्ध गहें॥23.21॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'री' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

ह

हन्ता हैं जो चव करमों के, वे जिन अरिहन्त कहाते।

केवलज्ञानी श्री जिनवरके, हम तो निश दिन गुण गाते॥23.22॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'ह' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

जि

जिन ने अरिहन्तो की पूजा, कर के शुभ फल को पाया।

उन सेठ धनंजय ने सुत विष, को पल में दूर कराया॥23.23॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'जि' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

न

नर-सुर सब ही अरिहन्तों की, पूजा करने को आते।

पूजा करके निज भावों में, अत्यन्त विशुद्धि को लाते॥23.24॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'न' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

प

परम पूज्य मुनि विद्यासागर, सम अरिहन्त हमारे हैं।

दुनियाँ में लाखों लोगों के, गुरुवर ही तो सहारे हैं॥23.25॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'प' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

ज्

पञ्च परम परमेष्ठी जिनवर, जैन जनों के प्राणाधार।

पद सर्वोत्कृष्ट में शोभित, जिन-गुरु संज्ञा है हितकार॥23.26॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'ज्' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

च

चमन बना देते गुरु जग को, आर्यखण्ड गुलज़ार रहे।

तेरह विध चारित्र पालते, जीवों पर उपकार रहे॥23.27॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'च' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

स

सहस्र अठोतर नाम जपें जो, सब सुख उनको मिल जाते।

कल्पतक जिनपद की छाँव में, मनवांछित वे पा जाते॥23.28॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'स' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

ह

हस्तिनागपुर कल्याणक थल, शांति कुन्धु अर जिनवर के।

गर्भ जन्म तप ज्ञान सुकेवल, करें यही सुर-नर मिलके॥23.29॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'ह' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

स्

आस्रव हैं दुखकार घनेरे, इन पर रोक लगाओ।

संवर - तप के द्वारा ही फिर, शुचि निर्जरा को पाओ॥23.30॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'स्' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

द

दर-दर भटका लिए भव वन में, जिनवर द्वार अभी पाया।

अब भी नहीं चेतता चेतन, शरण न प्रभुवर की आया॥23.31॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'द' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

ण्

खण्ड-खण्ड पर्यायों को मैं, कब खण्डित कर दूँ स्वामी ?

चिदानन्द पद पाऊँ अब तो, अजर-अमर अन्तरयामी॥23.32॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'ण्' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

डा

डाल-डाल पर हैं दिवान्धमनु, भारत देश उजाड़ा है।

रिश्वत का बाज़ार गर्म है, पाप का बजा नगाड़ा है॥23.33॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'डा' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

न्

जन्म हो पुत्रों का घर घर में, पूत-सपूत कोई पाए॥

पुण्य-पाप का फल ही केवल, सुपुत्र-कुपुत्र को दर्शाए॥23.34॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'न्' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

मि

मिथ्या माया मोह करे जो, भरे पाप का घड़ा नया।

पहले पाप तो छूटे नाहिं, आगे बंध हो पुनः नया॥23.35॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'मि' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

थ्

मिथ्यातम फैला है लोक में, नज़र नहीं कुछ भी आए।

ज्ञान दिवाकर उदित होय तो, विघटित मिथ्यातम हो जाए॥23.36॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'थ्' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

या

न्यायमूर्ति ही दूर कर सकें, अन्यायों की कुरीती को।

अपराधी को सजा दिलाकर, थापें न्याय अरू नीति को॥23.37॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'या' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

दृ

मम दृग पथ में वीर विराजें, भुवन तीन के जो स्वामी।

जब चाहूँ मैं दर्शन पाऊँ, वर्धमान प्रभु अभिरामी॥23.38॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'दृ' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

शां

शांतिनाथ चक्री तीर्थकर, कामदेव कहलाए थे।

षट् खण्डों पर विजय प्राप्त कर, गंगा धर्म बहाए थे॥23.39॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'शां' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

न

नमन करे जो नंत गुणी को, वह शिवपुर को गमन करे।

नहीं आगति जीव की होवे, स्वानुभूति में रमण करे॥23.40॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'न' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

भ

भव भव भ्रमण करे जियरा ये, काल अनन्तों बीत गए।

जाने कब जागेगा चेतन, कब निजपद विश्राम लिए?॥23.41॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'भ' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

व

वश में करके पाँचों इन्द्रियाँ, चंचल मन उपशमन किया।

जो जिन चरण शरण में आया, उसका संकट हरण किया॥23.42॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'व' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

तो

तोड़ दिया परिवार से नाता, छोड़ दिया घरबार सभी।

स्वातम में ही आनन्द आया, दीक्षा ले तल्लीन तभी॥23.43॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'तो' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

मु

मुदित हुए जल धारा करके, मानो जिन चरणन परसे।

पुलकित हुए वचन मन तन सब, जब जिन धुनिका जल बरसे॥23.44॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'मु' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

ख

खण्डित कर दूँ मोह महागिरि, आगम का अध्ययन करूँ।

शास्त्रोक्त विधि ध्यान लगाकर, कर्म घातिया दहन करूँ॥23.45॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'ख' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

द

दया सिंधु मुनिराज सभी को, देते अभयदान अरु ज्ञान।

जिन वचनों की औषधि से ही, भव रोगों का करें निदान॥23.46॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'द' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

श

दर्शन करके बड़े बाबा का, होता है आनन्द महान।

छोटे बाबा की स्मृति में, करते भक्त सभी गुणगान॥23.47॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'श' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

पु

पुण्योपार्जन करें वृद्धजन, तीनों योग करें पावन।

आए शिथिलता जब इन्द्रियों में, लगता कीर्तन मन भावन॥23.48॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'पु' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

ण्

दण्ड विधान प्रकृति करती, पापी को भी दण्ड मिले।

जो इस भव में बच जाता है, अगले भव में कर्म फले॥23.49॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'ण्' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

य

यदि नहीं भाग्य में होता है, तो सुख भी अल्प ही मिले।

हो पुण्य साथ में उसके तो, ये धरती भी धन उगले॥23.50॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'य' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

मु

मुरझाया मन भी खिल जाता, गुरुवर के दर्शन करके।

फिर भूल स्वयं के दुःखों को, वह गुण गाता गुरुवर के॥23.51॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'मु' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

च्

हो शोच्यां दशा किसी की भी, वर्धमान का पाठ करो।

कष्ट तिरोहित हो क्षण भर में, सुख को भी भरपूर भरो॥23.52॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'च्' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

छ्रा

पुण्य मुच्छ्राय सहस्र भवों के, पाँच सहस्र धनु जिन राजें।

जीव अनेकों मिथ्या दृष्टि, समवशरण में नहीं जाते॥23.53॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'छ्रा' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

य

यश ख्याति के कारण ही जो, दान कराते इस भव में।

होवे गति तिर्यच हाथी की, शुण्डा लटके पर भव में॥23.54॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'य' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

ए

एक बूँद यदि खाए शहद की, पाप लगे उसको भारी।

सात ग्राम ज्यों जलें एक संग, अग्नि तीव्र ऐसी जारी॥23.55॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'ए' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

व

वन - जंगल में वृक्ष रगड़ते, दावानल तब जलती है।

प्रकृतियोग से वर्षा हो तो, तब ही अग्नी बुझती है॥23.56॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'व' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

भ

भर लें झोली रत्न प्रजाजन, जग जननी के आँगन से।

एक दिवस में तीन बार ही, साढ़े तीन क्रोड़ बरसें॥23.57॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'भ' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

ग

गणधर चौदह सौ बावन हों, तीर्थकर चौबिस के जान।

कहीं पाठ भेद चौदह सौ, त्रेपन-उनसठ गणी महान॥23.58॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'ग' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

व

वश में हो जाते भक्तों के, गुरुदेव भी आज यहाँ।

मन वच तन अर्पण कर भविजन, गुरुपद बैठें तुष्ट महा॥23.59॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'व' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

न्

जिनान् जपता जो त्रिकाल में, तीनों योग लगा करके।

अविनश्वर पद पाता क्रम से, आशिष गुरुवर की पाके॥23.60॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'न्' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

सु

वसुपूज्य सुत वासुपूज्य जिन, चंपापुर में हुए महान।

पाँचों कल्याणक चंपापुर, बालयति पहले पहचान॥23.61॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'सु' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

वि

विकसित होते नयन कमल यों, जैसे जल में कमल खिले।

हर्षित होते हैं मानव भी, जब कोई धन गड़ा मिले॥23.62॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'वि' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

राजा करें प्रजा का पालन, पुत्र समान ही प्रीति से।

प्रजा भी पिता समान भूप का, आदर करती तन मन से॥23.63॥

ॐ ह्रीं अर्हं वर्तमानशासननायक 'रा' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...

जन्म लिया यदि भारत भू पर, पुण्यवान हो जीवन में।

नर भव पाकर भवाभाव कर, जा पहुँचो तुम शिवपुर में॥23.64॥

ॐ ह्रीं अर्हं वर्तमानशासननायक 'ज' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...

मात पिता का आदर करके, उन चरणों में सिर धर लो।

उनकी सेवा करने में ही, धन्य-धन्य निज को कर लो॥23.65॥

ॐ ह्रीं अर्हं वर्तमानशासननायक 'मा' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...

नः मंगल करने को स्वामी, कृपा आपकी वांछित है।

अरज करो स्वीकार हमारी, जन जन तुम्हें समर्पित है॥23.66॥

ॐ ह्रीं अर्हं वर्तमानशासननायक 'नः' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...

पूणाध्य

समवशरण में शोभते, केवलज्ञानी नाथ।

पद अनर्घ्य के कारणे, नमें जोड़ युग हाथ ॥23॥

ॐ ह्रीं शाश्वत पद प्राप्ताय अर्हं महाबीजाक्षरसहिताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः

पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अहंकार नाशी स्तुति

मानोद्धतः सकलवेदपुराणविद् यो,
मानादिभूस्थजिन-बिम्बमथेन्द्र-भूतेः।
मानो गतो विलयतामवलोक्य तेऽस्य,
सामर्थ्यमन्यपुरुषेषु न दृश्यते तत् ॥24॥

(छन्द पद्धती)

मा

माया मान महा जंजाल,
काट दिया सब जग का जाल।
जन्म दिवस पर घर को त्याग,
मात-पिता के तज अनुराग ॥24.1॥

ॐ ह्रीं अर्हं वर्तमानशासननायक 'मा' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...

नो

नोकरमों वश ममता खपाय,
प्रभु के मन में समता समाय।
चव कर्मों का करके संहार,
हुए नाथ केवली अवीकार ॥24.2॥

ॐ ह्रीं अर्हं वर्तमानशासननायक 'नो' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...

द्ध

उद्धत शुक्ल ध्यान कर धारण,
करें अघाती कर्म निवारण।
शेषायु रही एक ही मास,
प्रतिमा योग घरें सायास ॥24.3॥

ॐ ह्रीं अर्हं वर्तमानशासननायक 'द्ध' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...

तः

यतः होय निरवाण जिनाय,
तन परमाणु नहीं खिर जाय।
नख अरु केश शेष रह जाय,
इन्द्र मंजूषा में पधराय ॥24.4॥

ॐ ह्रीं अर्हं वर्तमानशासननायक 'तः' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...

स

सन्त शिरोमणि विद्यासागर,
संयम स्वर्ण जयन्ती पाकर।
गुरु गुण प्रति श्रद्धा उद धार,
हुए प्रफुल्लित भक्त अपार॥24.5॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'स' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

क

कलकल गंगा सम गुरु वाणि,
अवगाहन करते भवि प्राणि।
परमहंस गुरु प्रज्ञावान,
क्रीड़ा निज में करें पुमान॥24.6॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'क' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

ल

लम्पटता है विषय कषाय,
भोगेच्छा भी नहीं नशाय।
स्वाध्याय करते जो सज्जन,
वे जिन वच का करते चिंतन॥24.7॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'ल' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

वे

वेदों का अध्ययन कराय,
इन्द्रभूति त्रय बन्धु बताय।
मान स्तम्भ लख मान गलाय,
वर्धमान समोसृत में जाय॥24.8॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'वे' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

द

दर्शन करके वीर जिनाय,
तीनों दीक्षा लें हरषाय।
पन्द्रह सौ शिष्यों के संग,
तिष्ठे सब होकर निस्संग॥24.9॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'द' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

पु

पुष्कर उर उनके विकासय,
मनपर्यय सत्वर प्रकटाय।
वीर देशना भी गिर जाय,
भक्ति रंग में सभी रंगाय॥24.10॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'पु' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

रा

राजा श्रेणिक भी थे आय,
साथ में सारी परजा लाय।
हाथी पर भूपति पधराय,
पद तल गज मेंढक मर जाय॥24.11॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'रा' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

ण

णमो जिणाणं जपते जाय,
मन्द कषाएँ करते जाय।
मेंढक मरकर देव कहाय,
तत्क्षण समवशरण में आय॥24.12॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'ण' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

वि

वाद - विवाद मिटाने हेतु,
अनेकान्त का बाँधा सेतु।
शैली उत्तम है स्याद्वाद,
सप्त भंग रीती निरबाध॥24.13॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'वि' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

द्

विद्या सिंधु सूरि मन लाय,
शिष्य प्रणम्य सिंधु कहलाय।
परम प्रभावक साधु कहाय,
योग अर्ह सबको सिखलाय॥24.14॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'द्' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

यो

यो पण्डित ज्ञानी कहलाय,
जड़ चेतन को भिन्न कराय।
प्रच्छन्न अगनी काष्ठ रहाय,
मक्खन दुग्ध मांहि छिप जाय॥24.15॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'यो' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

मा

मायाचारी है दुखदाय,
सरल भाव होते सुखदाय।
इसीलिए निज भाव सुधार,
प्रभु चरणों पर जीवन वार॥24.16॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'मा' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

ना

मानादिक भी दुख के कारण,
इनका भी हम करें निवारण।
नीच गती में ये पहुँचाय,
भाव अज्ञानी के प्रकटाय॥24.17॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'ना' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

दि

दिशाबोध देते जो गुरुवर,
दशा सुधर जाती है सत्वर।
गुर्वाशीष भक्त पा जाय,
बिगड़े काम सभी बन जाय॥24.18॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'दि' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

भू

भूत्वा शुचि जिन मन्दिर जाय,
जीवन अपना सुखी बनाय।
शिव मारग का परिचय पाय,
आतम का कल्याण कराय॥24.19॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'भू' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

स

वानप्रस्थ जीवन जब आय,
मोह परिग्रह से घट जाय।
कुछ धन सौंपे परिवारीजन,
मन्दिरजी में भी दें कुछ धन॥24.20॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'स' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

थ

थक जाती है जब ये देह,
नहीं छुटे विषयाशा नेह।
कैसे इनको शान्त कराय,
कैसे निज में रमण कराय॥24.21॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'थ' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

जि

जिसने जीता है चंचल मन,
उसने ही कीना वश में तन।
जो मन के मालिक बन जाय,
वे ही घातिया कर्म नशाय॥24.22॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'जि' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

न

नव नव प्रकृति रूप धराय,
भारत संस्कृति यही कहार।
एक देश में राज्य अनेक,
है अनेकता में भी एक॥24.23॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'न' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

बि

बिम्ब जिनेश्वर दर्शन पाय,
भव्य जनों का मन हर्षाय।
नशिया सोनी जी कहलाय,
समवशरण स्वर्णिम दरशाय॥24.24॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'बि' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

म्

रम्य मनोहर मन्दिर जान,
स्वर्णगिरि तीरथ पहिचान।
बहुतेरे जिनगृह को पाय,
मुग्ध सभी दर्शक हो जाय॥24.25॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'म्' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

ब

बन्द नयन जब भी हो जाय,
तब भी जिनदर्शन तो पाय।
चौबीसों जिन का है अतिशय,
जीवन का हर पल मंगलमय॥24.26॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'ब' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

म

मन्मथ पर जो भी जय पाय,
वो ही महापुरुष कहलाय।
कठिन साधना शील कहाय,
ऋद्धि सिद्धि स्वमेव ही आय॥24.27॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'म' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

थे

थे वे पांडव पाँच महान,
जिनने तन अपना नहिं मान।
अग्नि परीषह विजित कराय,
मुक्ति रसा तब ही मिल जाय॥24.28॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'थे' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

न्

धन्य नकुल सहदेव कहाय,
सरवारथ सिद्धि में जाय।
तैतिस सागर आयु पाय,
अगले भव में हों शिवराय॥24.29॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'न्' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

द्र

द्रवीभूत हो जाता हिरदय,
करें पशु हत्या जो करते निरदय।
जाने जो पशुओं की पीर,
आँखों से भी बहता नीर॥24.30॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'द्र' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

भू

भू पर जितने प्राणी होंय,
उतने खाद्य पदारथ होंय।
जो भी संचय करते अन्न,
हो अवश्य कोई अप्रसन्न॥24.31॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'भू' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

ते:

मान इन्द्र भूते: गल जाय,
हिरदय में निर्मलता आय।
वर्धमान के दर्शन पाय,
सम्यग्ज्ञान तुरत हो जाय॥24.32॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'ते:' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

मा

मान ज्ञान छूटा तत्काल,
टूटा मोह अन्ध का जाल।
समकित-ज्ञान-चरित सुखकार,
दीक्षा लेने को तैयार॥24.33॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'मा' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

नो

ज्ञानोत्सव का हुआ प्रसार,
वर्धमान प्रति श्रद्धा धार।
गुरू पूर्णिमा यही कहाय,
भव्य जनों के मन को भाय॥24.34॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'नो' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

ग

गणधर तीनों भाई बताय,
हुए भक्त शिष्य अधिकाय।
गणपति चार ज्ञान को धार,
हुए शेष साधु अविकार॥24.35॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'ग' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

तो

तोला-माशा पल में होय,
ऐसा प्राणी सफल न होय।
अस्थिर उसका जीवन जान,
बने स्वयं वह दुख की खान॥24.36॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'तो' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

वि

विघटित इनका व्यक्तित्व मान,
नहीं सलीका जीवन जान।
लेकिन यदि गुरु किरपा पाय,
तो स्वातम कल्याण कराय॥24.37॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'वि' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

ल

लड़का-लड़की विधिवत ब्याह,
जैन मती संस्कार रचाय।
करें यात्रा धर उपवास,
तो जीवन में सुख का वास॥24.38॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'ल' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

य

यह नरभव की कक्षा जान,
तन से हो तन पुण्य निधान।
पुण्य फला अरिहन्ता मान,
अर्हत ही हों सिद्ध सु जान॥24.39॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'य' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

ता

ताला तोड़ कर्म-तप धार,
तप से हों दैविक सुख सार।
तप भी साधक गहन कराय,
बाधा उत्तम तप नहिं आय॥24.40॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'ता' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

म

मतवाला साधक हो जाय,
तप बिन तन माटी कहलाय।
इसीलिए सम्यक् तप धार,
करे घातिया कर्म प्रहार॥24.41॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'म' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

व

वर्धमान का शरणा पाय,
मुदित सभी का मन हो जाय।
वर्धमान जिन रचें विधान,
नाचे गाएं आनन्द मान॥24.42॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'व' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

लो

लोकान्तिक ब्रह्मर्षि कहाय,
शेष एक ही भव रह जाय।
दीक्षा कल्याणक में आय,
वैराग्य वर्धक गुण गाय॥24.43॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'लो' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

क्

वक्ता आगमोक्त बतलाय,
हो निःशंक मन श्रद्धा लाय।
श्रद्धा से ही समकित पाय,
ज्ञान चरित सम्यक् हो जाय॥24.44॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'क्' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

य

सुर निकाय चारों के आय,
कल्याणक जिन पाँच मनाय।
सात भांति सेना हरि लाय,
अवधी अम्बर दें गुंजाय॥24.45॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'य' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

ते

ते जिन जन्मोत्सव में आय,
शिशु जिन मेरू पर ले जाय।
क्षीर नीर से न्हवन कराय,
दायें पग चिह्न लख हरषाय॥24.46॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'ते' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

स्

स्वामी वन में ध्यान लगाय,
नर- सुर जय जयकार कराय।
वन में केवल प्रभु रह जाय,
सब निज निज थल गमन कराय॥24.47॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'स्' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

य

यही मोक्ष का मारग कहलाय,
शिवपथ प्रभु जी गमन कराय।
कर्म चार पर कर संहार,
पाया ज्ञान केवली सार॥24.48॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'य' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

सा

सात कदम पहले नर जाय,
फिर विद्याधर गमन कराय।
गगन गमन सुरगण ले जाय,
जब शिविका जिनवर पधराय॥24.49॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'सा' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

म

महिमा अपरम्पार जिनाय,
परमात्म ये सकल कहाय।
सुर-नर-पशु भी भक्ति कराय,
अपना जीवन सफल बनाय॥24.50॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'म' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

थ

सामर्थ्य जब तन न रहाय,
इच्छा शक्ति भी घट जाय।
लेकिन जो बल आत्म जगाय,
वे भक्ति शक्ति पा जाय॥24.51॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'थ' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

र्य

आर्यजनों की संस्कृति होय,
यही विरासत भारत होय।
ऋषभदेव सुत भरत बताय,
भारत देश तभी कहलाय॥24.52॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'र्य' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

म

मतवाला जो निज में होय,
स्वात्म रमण करावे सोय।
नाम ख्याति भी उन की होय,
करें प्रतिष्ठा सब ही लोय॥24.53॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'म' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

न्

धन्य धन्य वे सज्जन जान,
जो पुण्यार्जन करें महान।
बंद पुण्यानुबंधि ही होय,
इस भव-पर भव भी सुख होय॥24.54॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'न्' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

य

यश प्रशस्त होवे सुखदाय,
अल्प समय भवसिंधु तिराय।
दान-धर्म अग्रणी रहाय,
धीर-वीर उपकार कराय॥24.55॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'य' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

पु

पुराकाल से गुरू बताया,
जिन भक्ति में समय लगाय।
मेढंक पूजा भाव कराय,
पूजा फल दिवि देव बताय॥24.56॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'पु' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

रु

रुकना नहीं मुमुक्षु शान,
शिवपथ पर ही चलना ठान।
स्वयं बोध स्वयंभू भगवान,
अजर अमर प्रभु की पहचान॥24.57॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'रु' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

षे

अनन्तचक्षुषे शीश झुकाय,
शत शत वंदन नित्य कराय।
समवशरण जिन धुनि सुन पाय,
भव भव का भी वैर नशाय॥24.58॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'षे' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

पु

सत्त्वेषु सब मैत्री धराय,
गुणियों में आनन्द को पाय।
साधर्मी में प्रीत रखाय,
विसंवाद सब ही मिट जाय॥24.59॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'पु' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

न

विनत होय जिन चरणों आय,
मन दुर्भाव सभी भग जाय।
शनैः शैनः शुद्धात्म कराय,
भव्य जीव मुक्ति को पाय॥24.60॥

ॐ ह्रीं अर्हं वर्तमानशासननायक 'न' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...।

दृ

दृग् पथ मम जिननाथ समाय,
पापों से भी मुझे बचाय।
जब भी चिन्तन मन में होय,
मानो प्रभु दर्शन हो मोय॥24.61॥

ॐ ह्रीं अर्हं वर्तमानशासननायक 'दृ' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...।

श

नश्वर जो भी लोक दिखाय,
संग नहीं जिय कुछ भी जाय।
अविनाशी आतम बतलाय,
ज्ञान ज्योति सब जग दरशाय॥24.62॥

ॐ ह्रीं अर्हं वर्तमानशासननायक 'श' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...।

य

यह जिनवाणी जो समझाय,
मानें सब ही मन वच काय।
हम अभाव भव भव कर जाय,
सिद्ध लोक से नहीं फिर आय॥24.63॥

ॐ ह्रीं अर्हं वर्तमानशासननायक 'य' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...।

ते

ते साधू तप धोर कराय,
जो कर्मों का क्षय कर पाय।
अन्तरंग-बहिरंग तप जान,
तप से ही आतम कल्याण॥24.64॥

ॐ ह्रीं अर्हं वर्तमानशासननायक 'ते' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...।

ॐ ह्रीं अर्हं वर्तमानशासननायक 'त' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...

ॐ ह्रीं अर्हं वर्तमानशासननायक 'तु' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...

ॐ ह्रीं अज्ञानतिमिर निवारणाय अर्हं महाबीजाक्षरसहिताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय
नमः पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।



संकट मोचन स्तुति

साक्षाद् विलोक्य सचराचरविश्वमन्तः,
कैवल्य-बोधवदनन्तसुखस्य भोक्ता।
यैर्मन्यते जिन! सदापरमात्मरूप-
मित्थं कथं वद भवेयु-रिहार्तयुक्ताः ॥25॥

(छन्द विष्णुपद)

सा

साक्षात् जो हृदय विराजे वर्धमान स्वामी।
मेरे सुख दुख सभी जानते वे अन्तर्यामी ॥25.1॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'सा' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...

क्षा

क्षान्ति विश्व में होय सदा महा मंगल दायी।
राग द्वेष से रहित हों प्राणी सुख आनन्ददायी ॥25.2॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'क्षा' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...

द्

कश्चिद् जन हो रोग शोक संकट से घिरा हुआ।
प्रभु चरणों की शरण में आए तो भवपार हुआ ॥25.3॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'द्' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...

वि

विपुल ज्ञान गुण राशि साधु जीवन में प्रकटाई।
इसीलिए मुनि नाम के आगे सागर लिखते भाई ॥25.4॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'वि' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...

लो

लोकालोक विलोकी जिन सिद्धेश्वर कहलाते।
अष्ट कर्म का काष्ठ दहन कर लोक शीश जाते ॥25.5॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'लो' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...

क्

शक्य नहीं सामान्य जनों को दीक्षा ले जाएँ।
पैनी ज्यों तलवार धार सम कैसे चल पाएँ? ॥25.6॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'क्' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...

य

यही सोच उन महामानव की जो महाव्रत धारें।

जिन दीक्षा लें ध्यान करें वे संचित कर्म निवारें॥25.7॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'य' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

स

सम्यग्दर्शन ज्ञान चरित ये तीन रतन प्यारे।

जो भी बाह्यान्तर तप तपते वे त्रियोग धारें॥25.8॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'स' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

च

चरण कमल जिनराज के जो हिरदय धारें।

मानों जिन पद नौका सम भवासिधुं पार तारें॥25.9॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'च' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

रा

राग-द्वेष पन पाप विवर्जित काम मोह नाशें।

ज्ञान ज्योति आलोकित करके सम्यग्ज्ञान प्रकाशें॥25.10॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'रा' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

च

चन्दन से जिनपद अर्चन मन शीतलता लाऊँ।

सब जीवों को क्षमा करूँ अरू सबसे क्षमा कराऊँ॥25.11॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'च' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

र

रज गुरुपद की पाकर ये जीवन धन्य बनाऊँ।

रत्नत्रय को धारण करके, मैं बोधि ज्ञान पाऊँ॥25.12॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'र' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

वि

विश्व विभूषित षट् द्रव्यों से कैसे निज पहचान?

सात तत्त्व का करूँ विवेचन हो आनन्द महान॥25.13॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'वि' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

श

अविनश्वर पद पाकर मैं सदा सुखी हो जाऊँ।

लीन अनन्तानन्त काल तक निज में रमण कराऊँ॥25.14॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'श' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

व

नश्वर हैं यह विषय भोग अरू पुद्गल भी सारे।

निरव-निरख जिन प्रतिमा को हम निज अज्ञान निवारें॥25.15॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'व' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

म

मन मन्दिर में प्रभु विराजें मन्द कषाय होती।

निवृत्ति चरित से कर्म की क्षीण प्रकृति होती॥25.16॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'म' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

न्

वन्य पशु जंगल में पहले खुश हो वास कराते।

अब पीड़ित हो भूख प्यास से नगरों में आते॥25.17॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'न्' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

तः

अन्तः प्रेरणा से पीड़ित जन काम भले कर पाते।

शुभ कार्यों को करते करते सीढ़ी चरित चढ़ जाते॥25.18॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'तः' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

कै

कैवल्य उपाया अर्हत देव ने जीवन मुक्त हुए।

पन शत धनु पर, अन्तरिक्ष में स्वामी अधर हुए॥25.19॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'कै' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

व

वन में स्थित रहकर प्रभु ने आतम ध्यान लगाया।

कर्मशत्रु से युद्ध किया तो सहज हि उसे हराया॥25.20॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'व' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

ल्

हो निःशल्य प्रभु शुक्ल ध्यान में आत्मलीन हुए।

भागे कर्म घातिया डर कर शक्ति विहीन हुए॥25.21॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'ल्' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

य

यदपि चतुष्टय अनंत पाय परमातम सकल हुए।

कर्म अघातिया विजित किए सिद्धातम निकल हुए॥25.22॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'य' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

बो

स्वयं बोध से हुए स्वयंभू पर हित भी करवाते।

धर्म-चक्रि मोहारि विजयी जिन व्यापि विश्व कहाते॥25.23॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'बो' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

ध

दुद्धर तप करके जिनवर ने कर्म नशाए हैं।

द्वार प्रभु के आकर हमने पुण्य कमाए हैं॥25.24॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'ध' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

व

भवतः मुक्त हुए प्रभुवर अब नयन अगोचर होते।

इसीलिए हम जड़ वचनों से आराधन कर पाते॥25.25॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'व' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

द

दयानिधान करुणा सागर हम पर कृपा कराओ।

रागी द्वेषी के दर तज कर भव्यों जिन दर आओ॥25.26॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'द' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

न

नन्दन वन में क्रीड़ा करते दिवि के सुरगण सारे।

अतिम कानन में रमते हैं ऋषिगण मुनिजन प्यारे॥25.27॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'न' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

न्

छन्दोवद्ध रचना सुर ताल में रम्य सुशोभित होती।

ज्यों नदि पर तट बंध बने हों तो रक्षा हो पाती॥25.28॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'न्' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

त

तरुवर ज्यों ज्यों फलते फल से सब झुक झुक जाते।

ज्ञानी भी गुण प्रकटाते यों नभीभूत होते॥25.29॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'त' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

सु

सुहित करें प्रभु सर्व लोक का संकट हर लेते।

मैं भी बनूँ आप सा भगवन क्यों न शक्ति देते?॥25.30॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'सु' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

ख

सुख दुख धूप-छांव सम जीवन में आते जाते।

द्वंदात्मक है जग सारा यहाँ मौसम बदलते जाते॥25.31॥

ॐ ह्रीं अर्हं वर्तमानशासननायक 'ख' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

स

शस्य श्यामला वसुन्धरा वर्षा में सज जाती।

वर्षा योग में जनता गुरू संग पुण्य कमा पाती॥25.32॥

ॐ ह्रीं अर्हं वर्तमानशासननायक 'स' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

य

होंय यशस्वी वे ही जन निस्वार्थ करें सेवा।

एकाहारी साधु से लें श्रावक गुण मेवा॥25.33॥

ॐ ह्रीं अर्हं वर्तमानशासननायक 'य' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

भो

भोर होय तो तारे छिपते तब प्रभात होता।

केवल चेहरे ही बदलें जग तो चलता रहता॥25.34॥

ॐ ह्रीं अर्हं वर्तमानशासननायक 'भो' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

क

क्या क्या समझाते साधु जन कितनी परिषह सहते।

किंतु ना चिकने घट समान संसारी जन सुनते॥25.35॥

ॐ ह्रीं अर्हं वर्तमानशासननायक 'क' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

ता

तात मात भ्राता भगिनी सब रिश्ते भूल गए।

अपने में ही सीमित होकर धन पर फूल गए॥25.36॥

ॐ ह्रीं अर्हं वर्तमानशासननायक 'ता' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

यै

यै: जन नहीं प्रभु को जानें ना ही जान पाते।

प्रभु तो केवल योगि गम्य हैं अनुभव में आते॥25.37॥

ॐ ह्रीं अर्हं वर्तमानशासननायक 'यै' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

र्म

मर्मस्थल पर पीड़ा होती भेद कोई खोले।

अवर्णवाद कर देता कोई झूठ मूठ बोले॥25.38॥

ॐ ह्रीं अर्हं वर्तमानशासननायक 'र्म' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

न

शान्त भाव से कही गई कटु बात भी सह लेते।

प्यार छिपा शब्दों के पीछे क्रोध में नहीं होते॥25.39॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'न' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

य

यहाँ लोक में स्वार्थ बिना नहीं रिश्ते पलते हैं।

मीठा बोलें छुरी बगल में रख कर चलते हैं॥25.40॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'य' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

ते

ते घर पर आ जाए कोई खुशी दिखाते हैं।

लेकिन कैसे टले यहाँ से भावना भाते हैं॥25.41॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'ते' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

जि

जिनवाणी यों हमको ज्ञान सुधा पिलवाती है।

जैसे माता दुग्ध पिला तन पुष्ट बनाती है॥25.42॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'जि' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

न

किया न अब तक आत्म दर्श अब दर्शन पाना है।

जिन दर्शन से निज दर्शन का भाव बनाना है॥25.43॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'न' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

स

सहस चक्षु से रूप निहारे इन्द्र शिशु जिनका।

क्योंकि जिनवर से ही मिलता ज्ञान निजातम का॥25.44॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'स' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

दा

दान है उत्तम पात्र दान औषधि अभयाहारा।

ज्ञान दान है सर्वोत्तम पर भव भी सुखकारा॥25.45॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'दा' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

प

परमेष्ठि हैं प्रभु हमारे प्राणाधार सबके।

नौका काष्ठ समान विचारों भवदधि से तिरके॥25.46॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'प' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

र

रत रहते जो स्वाध्याय में जिनवाणी अनुसार।

निरतिचार पालन कर लेते होते भव पारा॥25.47॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'र' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...

मा

मात पिता सम नहीं कोई जो मित्र हो बच्चों का।

लेकिन बच्चों के मन में विश्वास न हो उनका॥25.48॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'मा' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...

त

स्वात्म ज्ञान शुभ समवशरण में सुर नर पशु पाते।

जिनवर का वैभव लख करके सब ही हरषाते॥25.49॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'त' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...

म

मरुस्थल में फूल खिलाना कहें असम्भव है।

किन्तु आज विज्ञान ने इस युग में किया सम्भव है॥25.50॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'म' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...

रू

रूप प्रभु का महा मनोहर कामदेव शरमाए।

हम तो आतम उन्नति चाहें नो कर्म फल तन पाए॥25.51॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'रू' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...

प

परम पावनी मोक्ष दायिनी जिनवाणी माता।

दुख संकट में जपता जो भी मिल जाती साता॥25.52॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'प' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...

मि

मित्र समान सभी जीवातम भेद नहीं कोई।

रूप रंग तो भिन्न सभी का पन इंद्रियाँ सोही॥25.53॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'मि' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...

त

सत्य समान न तप है कोय झूठ समान न पाप।

अपने में अपने को खोजें हो जाएँ निष्पाप॥25.54॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'त' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...

थं

इत्थं स्वार्थ विहाय करें जो कार्य सफल होता।

महापुरुषों का जीवन तो बस परहित ही होता॥25.55॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'थं' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

क

कलिकाल में संघे शक्ति गुरुवाणी कहती।

इसीलिए विद्या गुरु संघ में यही रीति रहती॥25.56॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'क' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

थं

इत्थं वैभव समवशरण में जिन सम कोई न पावे।

द्वादश कोठों में बैठें सुन दिव्यध्वनि हरषावें॥25.57॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'थं' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

व

यह वशीकरण इक मंत्र है पर को वश में करो।

प्रभु वर्धमान की देशना निज को विजित करो॥25.58॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'व' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

द

दम्भ ईर्ष्या लोभ मोह जीवों को दुखदाता।

जो निज में सन्तुष्ट हों वो ही सुखी रह पाता॥25.59॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'द' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

भ

भक्त और भगवान का रिश्ता तो अनमोल हो।

जिनवर आगे प्रायश्चित पाप की गठरी खोल दो॥25.60॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'भ' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

वे

वेद पुराण का पाठ भी ज्ञानी नहीं बनाते।

इन्द्रभूति गौतम गणी हुए दर्श प्रभु पाके॥25.61॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'वे' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

यु

यह युवा वर्ग ही लोक में परिवर्तन को लाता।

अनुभव होश है वृद्ध का जोश जवानी पाता॥25.62॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'यु' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

रि

रिक्त कोष पुण्यों का हो तो संचित भी नष्ट होता।

आत्म बने परमात्मा कर्म नाश जब होता॥25.63॥

ॐ ह्रीं अर्हं वर्तमानशासननायक 'रि' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...।

हा

हानिलाभ की चिंता ना ही मीत सभी के हैं।

नहीं विजित करना है जग को जीतना निज को है॥25.64॥

ॐ ह्रीं अर्हं वर्तमानशासननायक 'हा' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...

३

आर्त रौद्र ये ध्यान द्वय भेजें दुर्गतियों में।

कर्मोदय पिछला है आया धारें समता मन में॥25.65॥

ॐ ह्रीं अर्हं वर्तमानशासननायक 'त' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...

यु

युक्त्या समकित ज्ञान चरित शिवपुर पहुँचावे।

युक्ति से ही मुक्ति होती जिनवाणी बतलावे॥25.66॥

ॐ ह्रीं अर्हं वर्तमानशासननायक 'यु' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...

क

जिन भक्ति से दृढ़ता आती शक्ति हृदय जगावे।

शिवपथ पर चलने की हिम्मत राही पा जावे॥25.67॥

ॐ ह्रीं अर्हं वर्तमानशासननायक 'क' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्यम्...

ताः

विरामता: रुचि हो स्वातम में समकित ज्योति जगे।

होंय शिथिल कर्मों के बन्धन भोग भुजंग भगे॥25.68॥

ॐ ह्रीं अर्हं वर्तमानशासननायक 'ताः' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...

पूणाईर्य

सुख अनन्त भोक्ता प्रभु, ज्ञाता विश्व सरूप।

भक्त दुखी ना हो सकें, जानें जो जिन भूप ॥25॥

ॐ ह्रीं अनन्त सुख प्राप्तये अर्हं महाबीजाक्षरसहिताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः

पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कुलदीपक दायी स्तुति

अभ्यन्तरे बहिरपीश! विभासमानो,
विश्वं तिरस्कृतमहोऽत्र चिदर्चिषैतत्।
हे ज्ञातृवंश-कुल-दीपक! चेतनायां,
यत् सद् विभाति यदसन्न विभाति तत्र ॥26॥

(छन्द सोरठा)

अ

अरिहंताणं मंत्र, पाप कर्म का क्षय करे।

आतम होय स्वतंत्र, यही मंत्र का फल कहा ॥26.1॥

ॐ ह्रीं अर्हं वर्तमानशासननायक 'अ' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...

भू

सभ्य हुआ कई बार, मुक्त नहीं संसार से।

यह ही दुःख अपार, कैसे मेरी मुक्ति हो? ॥26.2॥

ॐ ह्रीं अर्हं वर्तमानशासननायक 'भू' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...

य

भविष्य में भी नाथ, जैन धर्म मुझको मिले।

मैं नहीं होऊँ अनाथ, देव शास्त्र गुरु साथ हों ॥26.3॥

ॐ ह्रीं अर्हं वर्तमानशासननायक 'य' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...

न्

पिञ्जर अस्थि देह, कैसे छूटे मोह मम।

कब मैं होऊँ विदेह, परम शान्ति मुझको मिले ॥26.4॥

ॐ ह्रीं अर्हं वर्तमानशासननायक 'न्' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...

त

तरणि समान जिनेश, तीर्थकर वर्धमान हैं।

कर्म करें निःशेष, भव्य अनेक तिरा रहे ॥26.5॥

ॐ ह्रीं अर्हं वर्तमानशासननायक 'त' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...

रे

रेत फिसलती हाथ, अन्त समय सब छूटता।

पुण्य-पाप ही साथ, देह साथ नहीं दे सके ॥26.6॥

ॐ ह्रीं अर्हं वर्तमानशासननायक 'रे' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...

ब

बन्द होय ये नैन, जागृत करले चेतना।

अधरों पर जिन बैन, अन्त मरण सन्यास हो॥26.7॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'ब' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

हि

हिम सम शीतल जान, मुनिजन के शीतल वचन।

जिनवाणी को मान, निश्चय से चारित बढे॥26.8॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'हि' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

र

रवि शशि ज्योतिर्मन, फीके - भामण्डल प्रभा।

ज्ञान ज्योति द्युतिमान, सबके हिरदम में सदा॥26.9॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'र' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

पी

पीत वर्ण भगवान, तप्त स्वर्ण सम जानिए।

बालारुण सम मान, शांति नाथ जिनराज जी॥26.10॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'पी' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

श

भक्ति मुनीश कराय, धन्य धन्य हों भक्त जन।

मन वच तन गुण गाय, ध्यान धरूँ चौबीस जिन॥26.11॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'श' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

वि

विद्या सिंधु मुनीश, हैं उपास्य इस लोक में।

पाद सरोरुह श्रीश, मेरे हृदय विराजते॥26.12॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'वि' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

भा

भारत देश महान, सब देशों में मुकुट सम।

साधु सुशोभित जान, जन जन के आराध्य हैं॥26.13॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'भा' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

स

सन्त शिरोमणिनाथ, अरिहन्त सम जग में कहे।

दीनानाथ अनाथ, तीन योग बन्दूँ सदा॥26.14॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'स' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

मा

माता जिन जग मात, त्रिभुवन में पूजित कहे।

जननी जग विख्यात, हैं महान सुरलोक से॥26.15॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'मा' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

नो

नोट बने वरदान, वोटों की इस दौड़ में।

बचा हुआ ईमान, बिरले हैं संसार में॥26.16॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'नो' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

वि

विश्व विजयि पचरंग, लहराता है जैन ध्वज।

कथन के सातों भंग, हैं अनादि इस लोक में॥26.17॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'वि' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

श्

श्वास श्वास में नाम, जिनवर का गूँजे सदा।

सबसे प्रिय मम काम, चौबीसों घंटे जपूँ॥26.18॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'श्' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

वं

त्वं छवि आठों याम, नयनों में घूमे मेरे।

मन में जिन अविराम, नेत्र खुले या बन्द हों॥26.19॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'वं' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

ति

तितने ही परमानु, शिशु जिन रूप सुशोभते।

होय उदित जिन भानु, समवशरण भगवन लगे॥26.20॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'ति' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

र

रवि का होय विमान, खींचे सोलह सहस सुर।

गज-सिंह, अश्व समान, वृषभ रूप में सोहते॥26.21॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'र' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

स्

पुस्तक करे पुकार, बच्चों से दूर हि धरो।

पानी अग्नि सम्हार, लिखने में अंगुलि दुखें॥26.22॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'स्' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

कृ

कृति का हो विस्तार, लेखक मन आनन्द हो।

श्रम का हो निरधार, जब तक रवि शशि नभ रहें॥26.23॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'कृ' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

त

तप संयम अनुराग, धारण करे निजातमा।

तब ही होय विराग, रत्नत्रय भी प्राप्त हों॥26.24॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'त' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

म

मन में होय विवेक, भोजन में भी शुद्धि हो।

करमन खिरें निषेक, दीक्षा हो मुनिराज की॥26.25॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'म' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

हो

होय कर्म मल चूर, भाव शुद्धि बढ़ती रहे।

निजानन्द भरपूर, निर्मल सुख झरना झरे॥26.26॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'हो' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

त्र

त्रय छत्र लगे विशाल, श्री जिनवर के शीश पर।

सुर नर पशु नत भाल, समवशरण जिन धुनि सुने॥26.27॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'त्र' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

चि

चिन्मय चेतन ज्ञान, ज्ञान सु केवल पूर्ण है।

चेतनता वरदान, चेतन बिन सब शून्य है॥26.28॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'चि' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

द

दया बिना नहीं धर्म, सब गुण उपजें धर्म से।

वस्तु सुभाव हि धर्म, धर्माश्रय से सुखमिले॥26.29॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'द' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

चि

अर्चित सुर नर राज, त्रिभुवन वंदित जिनचरण।

पूजित पशु समाज, समवशरण जिन शोभते॥26.30॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'चि' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

चै

दोषै सर्व विहाय, अन्तरात्मा मैं बनूँ।

गुण अनन्त मन लाय, चिदानन्द चैतन्य के॥26.31॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'चै' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

त

तन्मय भक्ति कराय, तीन लोक के नाथ की।

आतम शुद्धि उपाय, मैं होऊँ परमात्मा॥26.32॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'त' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

तृ

सदसत् सपन दिखाय, पढ़े पाठ गणधर वलय।

दृढ़ता मन में आय, साधु संगति पाय के॥26.33॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'तृ' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

हे

हे देवों के देव, वर्धमान जिनराज जी।

हम करते पद सेव, तुम सा बनने हेत ही॥26.34॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'हे' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

ज्ञा

ज्ञानामृत ही सार, सुख अनंत अर्णव कहा।

बल अनन्त को धार, चेतन ही ध्यातव्य है॥26.35॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'ज्ञा' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

तृ

तृष्णा भाव नशाय, शान्त होय संसार में।

समता भाव धराय, शिवपथ पर वे चल रहे॥26.36॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'तृ' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

वं

वंश हि नष्ट कराय, कोढ़ी सुत उपजे जहाँ।

पूर्व कर्मोदय आय, पूज्यपाद गुरु भाषते॥26.37॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'वं' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

श

शयन करें मुनिराय, देह परिश्रम शान्ति को।

पिछले पहर जगाय, आतम ध्यान लगावते॥26.38॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'श' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

कु

कुमति विनाश कराय, वीतराग सर्वज्ञ हितू।

सुमतिनाथ जिनराय, ज्ञान प्रकाशक नाथ॥26.39॥

ॐ ह्रीं अर्हं वर्तमानशासननायक 'कु' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...।

ल

हों लवलीन जिनाय, प्रभुभक्ति के कारणे।

अब शिवपंथ लगाय, जय जय जय गुरुदेव जी॥26.40॥

ॐ ह्रीं अर्हं वर्तमानशासननायक 'ल' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...।

दी

दीन दुखी जो आय, गुरु चरणों की शरण में।

उन पर दया कराय, जिन शासन महिमा बढ़े॥26.41॥

ॐ ह्रीं अर्हं वर्तमानशासननायक 'दी' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...।

प

पर्वत सहन कराय, वर्षाघात को देहपे।

सज्जन ज्यों सह जाय, दुर्जन के कटु वचन को॥26.42॥

ॐ ह्रीं अर्हं वर्तमानशासननायक 'प' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...।

क

कलिमल तुरत नशाय, स्वातम को पावन करे।

मन निर्मल हो जाय, चारित पथ आकृष्ट हो॥26.43॥

ॐ ह्रीं अर्हं वर्तमानशासननायक 'क' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...।

चे

चेतन चेत कराय, आतम हित पुरुषार्थ कर।

मोहनि नींद जगाय, काल बिताया सोवते॥26.44॥

ॐ ह्रीं अर्हं वर्तमानशासननायक 'चे' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...।

त

तप ही है सुखदाय, दूर अशुचि हो कर्म की।

पत विलोम दुखदाय, नरभव को असफल करे॥26.45॥

ॐ ह्रीं अर्हं वर्तमानशासननायक 'त' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...।

ना

नारायण बन जाय, नर पुरुषार्थ जो करे।

नर भव का फल पाय, स्वातम का कल्याण हो॥26.46॥

ॐ ह्रीं अर्हं वर्तमानशासननायक 'ना' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...।

यां

करुण दशायां पाय, मत हिम्मत को हार तू।

इक दिन ऐसा आय, जीवन हो उज्ज्वल सदा॥26.47॥

ॐ ह्रीं अर्हं वर्तमानशासननायक 'यां' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

य

यस्य विभाव नशाय, निर्मलता चित्त में धरे।

गुण गाए हरषाय, वीतराग सर्वज्ञ हितू॥26.48॥

ॐ ह्रीं अर्हं वर्तमानशासननायक 'य' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

तू

यत् चेतनता आय, श्री जिनवर सुज्ञान में।

दर्पण सम झलकाय, आदि - अन्त - वर्तमान युत॥26.49॥

ॐ ह्रीं अर्हं वर्तमानशासननायक 'तू' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

स

सहजानन्द दिलाय, नाथ कृपा मुझ पर करो।

स्वातम सौख्य बढ़ाय, अनुगृहीत भव भव रहूँ॥26.50॥

ॐ ह्रीं अर्हं वर्तमानशासननायक 'स' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

दू

तद् गुण प्राप्त कराय, प्रतिदिन जिनवर को नमूं।

भव दुख दियो मिटाय, तीन लोक के नाथ जिन॥26.51॥

ॐ ह्रीं अर्हं वर्तमानशासननायक 'दू' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

वि

विद्यमान जिन बीस, क्षेत्र विदेह विराजते।

भक्ति भाव नत शीश, सबके चरणों में नमूं॥26.52॥

ॐ ह्रीं अर्हं वर्तमानशासननायक 'वि' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

भा

भामण्डल छवि होय, रवि शशि से भी शतगुनी।

निकट छवि जो होय, सात जनम निज जानते॥26.53॥

ॐ ह्रीं अर्हं वर्तमानशासननायक 'भा' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

ति

तिरते हैं भवि लोय, चारित गुरूपद घाट से।

सबका मंगल होय, जिनशासन गरिमा अगम॥26.54॥

ॐ ह्रीं अर्हं वर्तमानशासननायक 'ति' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

य

यथाख्यात हो जाय, चारित जब भी साधु का।

भवदधि पार कराय, नरभव से मुक्ती मिले॥26.55॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'य' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

द

दरशन भाव कराय, चला मेंढक जिन पूजने।

गज पग प्राण गँवाय, लहा वैभव जा स्वर्ग में॥26.56॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'द' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

स

सदाचरण दरशाय, जाति वंश कुल उच्चता।

आम तरू पर आय, फल नहीं होय बबूल का॥26.57॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'स' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

न्

नन्त गुणों का वास, आतम में प्रत्येक ही।

कर ले जो अभ्यास, सहजहि गुण प्रकटाय ले॥26.58॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'न्' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

न

नदियाँ द्वय बतलाय, वारि निमग्ना-उन्मग्ना।

निमग्ना देय डुबाय, उन्मग्ना बाहर करे॥26.59॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'न' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

वि

विश्व जयी जिनराय, वर्धमान आदर्श मम।

निज को विजित कराय, परापेक्षा किंचित नहीं॥26.60॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'वि' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

भा

भारत रीति कहाय, पहलें पर का पेट भर।

शेष बचे तो खाय, वर्ना प्रभु का नाम जप॥26.61॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'भा' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

ति

तिमिर मोह हटवाय, गुणालोक हो हृदय में।

निज-पर भिन्न दिखाय, स्वातम में आनन्द हो॥26.62॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'ति' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

त

तन-मन वशहि कराय, शक्ति स्वयंभू जागती।

मुक्ती टिकट कटाय, निज पद में विश्राम ले॥26.63॥

ॐ ह्रीं अर्हं वर्तमानशासननायक 'त' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

त्र

त्रय छत्र शीश लगाय, तीन लोक के नाथ जिन।

महिमा त्रिभुवन गाय, सद्धर्म डंका नित बजे॥26.64॥

ॐ ह्रीं अर्हं वर्तमानशासननायक 'त्र' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

पूर्णार्घ्य

कुल दीपक निजवंश के, है चैतन्य विकास।

जितने ज्ञेय पदार्थ हैं, ज्ञान ज्योति उद्भास ॥26॥

ॐ ह्रीं चैतन्य विकास प्रतिपादकाय अर्हं महाबीजाक्षरसहिताय
श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

xxxxxxxxxxxxxxxxxxxxxxxxxxxxxxxx

सम्यक्त्व प्रदायी स्तुति

त्वं चित्क्रमाक्रमविवर्तविशुद्धि-युक्तः,
स्वात्मानमात्मनि विभाव्य विभावमुक्तः।
वैभाविकं वपुरिदं जिन! पश्यसि स्वं,
सम्यक्त्वकारणमहो व्यभवत् परेषाम्॥27॥

(छन्द चौपाई)

त्

यत्न करें जो सदा भक्ति का,
फल मिलता उन को मुक्ती का।
श्रावक श्रमण प्रभु गुणगाते,
यथायोग्य शिवपथ पर जाते॥27.1॥

ॐ ह्रीं अर्हं वर्तमानशासननायक 'त्' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...

वं

वंदनीय प्रभु होंय सभी से,
सुरनर पशु संज्ञी भव्यों से।
थकें सुरेन्द्र नाथ गुण गाते,
हम अज्ञानी कहाँ कह पाते॥27.2॥

ॐ ह्रीं अर्हं वर्तमानशासननायक 'वं' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...

चि

चिन्मय चेतन महाप्रभावी,
जिन मुनि होते समता भावी।
स्वयं तरे भव्यों को तारें,
हम भी अपने भाव सुधारें॥27.3॥

ॐ ह्रीं अर्हं वर्तमानशासननायक 'चि' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...

त्

सत्य यही संयम सब पालें,
अणुव्रत ले पापों को टालें।
जिनवाणी का शरणा पाएँ,
आत्म तत्व पहचान कराएँ॥27.4॥

ॐ ह्रीं अर्हं वर्तमानशासननायक 'त्' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...

क्र

क्रमशः शिशु जिन बढ़ते जाते,
बालेन्दु सम शोभा पाते।
जिन क्रीड़ा सब को सुखकारी,
मात-पिता जनमन हितकारी॥27.5॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'क्र' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

मा

माया मान महा दुखदाई,
जो त्यागें हो धर्म सहाई।
कसतीं आतम चार कषाएँ,
पाँच पाप संसार बढाएँ॥27.6॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'मा' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

क्र

क्रम से सम्यग्दर्शन धारें,
हो सुज्ञान-अज्ञान निवारें।
फिर सम्यक्चारित अपनाएँ,
अपना आतम बल प्रकटाएँ॥27.7॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'क्र' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

म

महाव्रत पालें महा वलधारी,
नगन दिगम्बर तन अविकारी।
साहसी जन स्वातम में जागें,
कायर तो डर कर के भागें॥27.8॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'म' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

वि

विनयशील जो जन कहलाते,
वे ही शिवपुर पात्र बताते।
सीधे तरूवर काम में आएँ,
टेढ़े तरू सब छोड़ के जाएँ॥27.9॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'वि' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

व

वश इन्द्रियाँ- मन को कर पाएँ,
निज में ही स्थिर हो जाएँ।
मोक्ष मार्ग तब सरल बनाएँ,
सहज हि शिवपुर राज कराएँ॥27.10॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'व' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

त

आर्त रौद्र ध्यानों को त्यागें,
संयम में ही मन अनुरागें।
स्वातम में ही भरा खजाना,
पुरुषार्थ से ही सुख पाना॥27.11॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'त' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

वि

शविधन सघन सब ही मिट जावें,
जो जन प्रभु चरणों में आवें।
प्रभु शरणागत को नहि चिंता,
देव भी बनते उनके मिन्ता॥27.12॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'वि' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

शु

शुक्ल ध्यान से कर्म नशाएँ,
निज आतम में रमते जाएँ।
जो निज में ही निजको ध्याते,
वे ही अन्त परम पद पाते॥27.13॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'शु' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

द्धि

ऋद्धि सिद्धि स्वयमेव ही आती,
मुनि मन को ललचा नहिं पाती।
जो भी इनको दास बनाते,
वे सब आखिर दुख ही पाते॥27.14॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'द्धि' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

यु

युक्ती से ही मुक्ती मिलती,
जान सकें साधू ही युक्ती।
गुरु सेवा कर युक्ती पाएँ,
हम भी जन्म सफल कर जाएँ॥27.15॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'यु' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

क

शक्य हमें हम ध्यान लगाएँ,
निजानन्द निज वैभव पाएँ।
है अनमोल धरोहर ये ही,
दृष्टि अगोचर है स्वातम ही॥27.16॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'क' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

तः

स्वान्तः सुखाय जो रचना होवे,
अन्य भी उसमें रमना चाहें।
इष्ट है केवल आनन्द पाना,
पाठक भी झूमें मनमाना॥27.17॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'तः' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

स्

स्वतः स्वयंभू हमको होना,
सभी विकारों को है खोना।
गुरु तो केवल हमें जगाते,
हम ही जागृति से सुखपाते॥27.18॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'स्' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

वा

वानप्रस्थ का समय बताता,
घर-गृहस्थी से छोड़े नाता।
बच्चों को देकर अधिकारा,
घर में रहें होय अविकारा॥27.19॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'वा' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

त

सत्य अहिंसा परम धर्म है,
अल्प परिग्रह धर्म मर्म है।
पंचाणुव्रत सब ही धारें,
पर पदार्थ से मोह निवारें॥27.20॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'त' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

मा

क्षमा करें अरु क्षमा करावें,
सुख दें और स्वयं भी पावें।
वीर क्षमा भूषण को धारें,
कायर नहीं धर्म स्वीकारें॥27.21॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'मा' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

न

नयनों में आजाए जाला,
नाक से बहता बलगम नाला।
कानों में लग जाए ताला,
यही बुढ़ापा है, दुखवाला॥27.22॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'न' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

मा

मानव भव का मान बढ़ाओ,
नरतन को तप से हि तपाओं।
संयम भाव महा उपकारी,
भवि जीवों को है हितकारी॥27.23॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'मा' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

त

कृत्य सभीजन श्रेष्ठ करायें,
इस भव पर भव यश को पायें।
क्रिया में वास रहे जनहित का,
तो कारण होवे निज हित का॥27.24॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'त' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

म

मन वच तन स्वातम में रमाएं,
निज में निजानंद को पाएं।
एक यही सपना है मेरा,
डालूं निज चेतन में डेरा॥27.25॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'म' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...

नि

निज पर हित का लक्ष्य बना है,
इसीलिए पुरुषार्थ घना है।
स्वातम पर विश्वास कराएँ,
शीघ्र हि आतम बल प्रकटाएं॥27.26॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'नि' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...

वि

विद्वज्जन का आदर होता,
यदि उनमें अहंकार न होता।
फल से तरुवर लद जाते हैं,
तो वे भी तरु झुक जाते हैं॥27.27॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'वि' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...

भा

मातृ भाषा सम्मान विचारें,
गौरव की अनुभूति धारें।
भूख प्यास का शमन कराए,
भाषा की बाधा नहीं आए॥27.28॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'भा' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...

व्

भव्य जीव संवेदन राखें,
निज में ही निजरस को चाखें।
सब के सुख दुख अपने मानें,
कैसे दूर होंय दुख-ठानें॥27.29॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'व्' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...

य

यत्किञ्चित् भी यत्न कराते,
तभी सफलता को ही पाते।
निःस्वारथ हो सेवा कोई,
प्रभु कृपा से पूरा होई॥27.30॥

ॐ ह्रीं अर्हं वर्तमानशासननायक 'य' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...

वि

विकसित देशों में पैसा है,
किन्तु देश मशीनी सा है।
नहीं किसी के पास समय है,
नहीं दया से भरा हृदय है॥27.31॥

ॐ ह्रीं अर्हं वर्तमानशासननायक 'वि' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...

भा

भाव सहित जो तीरथ वन्दे,
मिटते उनके भव भव फन्दे।
नर सुर गतियों को ही पावें,
दुर्गतियों से वे बच जावें॥27.32॥

ॐ ह्रीं अर्हं वर्तमानशासननायक 'भा' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...

व

वन्दन जिन पद नित्य कराते,
कुमति दूर कर सुमति धराते।
जिनाशीष से सब सुख पावें,
बिगड़े काम तुरत बन जावें॥27.33॥

ॐ ह्रीं अर्हं वर्तमानशासननायक 'व' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...

मु

मुक्ति मार्ग तो सरल ही जानो,
लेकिन राही हुए विरल प्रमानो।
हीरा तो सब ले नहीं पावें,
सब्जी भाजी भीड़ धरावें॥27.34॥

ॐ ह्रीं अर्हं वर्तमानशासननायक 'मु' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...

क्

क्या जानें कब क्या होना है?
हमको तो भव दुव खोना है।
इसीलिए प्रभु शरण आते,
जिन गुण में ही मन को लगाते॥27.35॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'क्' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

तः

अतः सदा ही स्वात्म रमावें,
तभी शीघ्र भवदधि तट पावें।
जो निशल्य वे व्रती कहाते,
तभी निजातम में रम जाते॥27.36॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'तः' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

वै

वैभाविक भावों को होनें,
स्वातम में ही चित सर धानें।
तभी स्वभाव में आ पाएँ,
सर्व विभावों से बच जाएँ॥27.37॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'वै' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

भा

भाग्योदय से पुण्य कमाते,
पुण्यों से ही भाग्य जगाते।
भाग्य भरोसे जो रह जाते,
अन्त में वे ही जन पछताते॥27.38॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'भा' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

वि

जो विहारी आतम सर होते,
वे ही निज गुण प्रकट कराते।
उनको ही शिव सुख मिल पाता,
पापों से तो छूटे नाता॥27.39॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'वि' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

कं

कंपित होता गात्र भक्ति में,
गद्गद् स्वर हो किसी व्यक्ति में।
निज में लीन हुआ वह जानो,
जिन गुण में तल्लीन हो मानो॥27.40॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'कं' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

व

वस्तु सुभाव धर्म कहलाया,
जल सुभाव शीतल बतलाया।
अग्नि संयोग उष्ण जल होवे,
मिटे संयोग तो शीतल होवे॥27.41॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'व' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

पु

पावापुर सन्मति शिव पाए,
जल मन्दिर प्रभू चरण बनाए।
दिगम्बर श्वेताम्बर ध्याते,
निज निज विधि प्रभु के गुणगाते॥27.42॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'पु' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

रि

रितु षट् की भी शोभा जानें,
कमल मनोहर खिलते मानें!
मछलियाँ अपनी कला दिखानें,
कहीं पानी के सर्प सुहावें॥27.43॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'रि' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

दं

दंश भुजंग अगर दे जाता,
कृपा प्रभु की जहर नशाता।
जल मन्दिर का अतिशय न्यारा।
भव जल पतित को मिले किनारा॥27.44॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'दं' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

जि

जिनपद चढ़े बदाम छुहारा,
भविजन घर में हो उजियारा।
अष्टद्रव्य से जो भी पूजें,
उनके सारे पातक धूजें॥27.45॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'जि' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

न

नरतन से जो देह तपाएँ,
तप अगनी में कर्म खपाएँ।
वे निज जीवन सफल बनाएँ,
सीधे शिवपुर घर को जाएँ॥27.46॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'न' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

प

आप हमारे पालन हारे,
ज्ञान सिरवा शिवद्वार सिधारे।
हो अनन्त उपकारी स्वामी,
धर्म के नेता हो अभिरामी॥27.47॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'प' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

श

निश्चित उज्ज्वल भावी होवे,
हिरदय भी निर्मल हो जावे।
भव से पार हुए हैं वे ही,
जो चलते जिन आज्ञा से ही॥27.48॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'श' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

य

सानिध्य अर्हंत देव का,
दोष मिटा देता भव भव का।
समवशरण में जो भी आए,
दिव्यध्वनि सुन कर हरषाए॥27.49॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'य' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

सि

सिन्धु जगत का तिरे अपारा,
जिसने प्रभु को हिरदय धारा।
जो दृढ़ता से व्रत अपनाए,
वह निश्चय निज वैभव पाए॥27.50॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'सि' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

स्

मैं स्वातम को पलपल ध्याऊँ,
चिंतन, मनन तत्त्व का पाऊँ।
धर्मध्यान कर संयम धारूँ,
आर्त रौद्रद्वय ध्यान निवारूँ॥27.51॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'स्' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

वं

त्वं अनुपम महिमा के धारी,
कीर्ति आपकी जग विस्तारी।
केवलज्ञान तुम्हें जब होता,
वर्धन केश-नखों का रूकता॥27.52॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'वं' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

स

सन्त जनों का जीवन प्यारा,
दूर होय मिथ्या अँधियारा।
दृष्टि तो अन्तर में रहती,
बाहर तो बस किरिया होती॥27.53॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'स' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

म्

गम्य हो बोधिज्ञान योगि को,
विषयभोग इच्छा भोगी को।
भोगी भ्रमता है भव भव में,
भवाभाव करे योगी क्षण में॥27.54॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'म्' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

य

यही बुद्धि योगी की भारी,
करता शिवपुर की तैयारी।
घर में रहे सभी से न्यारा,
कर्म कलंक मिटाए सारा॥27.55॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'य' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

क्

वाक्य रचें हम इतने प्यारे,
पढ़ें सुनें स्मृति में धारें।
मैत्री भाव सभी से राखें,
अन्तर में आतम रस चाखें॥27.56॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'क्' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

त्

नित्य यही मैं भावना भाऊँ,
सबके सुख दुख में काम आऊँ।
कैसे सबका दुःख निवारूँ,
कैसे सबके संकट टारूँ॥27.57॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'त्' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

व

विवश होय जो क्रिया करावें,
बिना भाव के सुख नहीं पावें।
भाव परस्पर ये ही भावें,
कैसे भव दुख दूर करावें॥27.58॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'व' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

का

काल हरे यह धर्म हमारा,
स्याद्वाद से शोभित प्यारा।
जिनधुनि प्रभु मुख से खिर जाती,
मोह तिमिर अज्ञान नशाती॥27.59॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'का' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

र

रथ रुपी है काय हमारा,
रथी चलाता है जग सारा।
रथी निकल जाता जब ज्ञाता,
देह जले छूटे सब नाता॥27.60॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'र' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

ण

हो निर्वाण जहाँ जिनवर का,
उद्भव हो निर्वाण क्षेत्र का।
शाश्वत तीरथ कहलाते हैं,
यहाँ भविक जन तिर जाते हैं॥27.61॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'ण' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

म

महा व्याधि से जो पीड़ित हो,
समकित बिन वो ही विचलित हो।
समकिती मन में समता रखता,
अहो! कर्मफल यूँ भी फलता॥27.62॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'म' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

हो

होय विभंगावधि नरकों में,
वेदना से समकित हो मन में।
मुक्ति का सोपान प्रथम है,
जीवन में व्रत तप संयम है॥27.63॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'हो' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

व्

व्यायोत्पाद धौव्य गुण जानो,
हर आतम में यही प्रमानो।
वर्तमान पर्याय का व्यय हो,
तो नवीन पर्याय उदय हो॥27.64॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'व्' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

य

यही धौव्य गुण है सत्ता का,
जीव सदा ही शाश्वत रहता।
पर्यायों का व्ययोत्पाद हो,
ध्रुव सत्ता में आत्मस्वाद हो॥27.65॥

ॐ ह्रीं अर्हं वर्तमानशासननायक 'य' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...।

भ

भविजन जिनगुण गान करावें,
तो जिन छवि निज नयन समावें।
करें मुमुक्षु श्रवण शास्त्र का,
धर्म यही श्रावक श्रमणों का॥27.66॥

ॐ ह्रीं अर्हं वर्तमानशासननायक 'भ' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...।

व

वश में करें पंचेन्द्रियाँ अपनी,
चंचल मन की गति भी हरनी।
जब तक अपना मन नहीं जीता,
रहे पुण्य घट तब तक रीता॥27.67॥

ॐ ह्रीं अर्हं वर्तमानशासननायक 'व' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...।

त्

संपत् विपत् सगी दो बहनें,
पुण्य पाप फल सबको सहने!
आतम वैभव ही मिल जावे,
पुण्य बेल तब ही लहरावे॥27.68॥

ॐ ह्रीं अर्हं वर्तमानशासननायक 'त्' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...।

प

परयायों में नहीं रमना है,
स्वात्म मिलन ही मम सपना है।
देखन जानन मम सुभाव है,
निज में रमने काही चाव है॥27.69॥

ॐ ह्रीं अर्हं वर्तमानशासननायक 'प' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...।

पराक्रमकारी स्तुति

छत्रत्रयं वदति ते त्रिजगत्प्रभुत्वं,
शास्ति स्वयं न मुखतो मदगर्वशून्यः।
सत्यं सतां विधिरयं हि पराक्रमाणां,
वीरो जितेन्द्रियमना भगवानसि त्वम् ॥28॥

(छन्द ज्ञानोदय)

छ

छद्मस्थ दशा में प्रभु रहाते,
आत्मलीन निर्जन वन जाते।
मौन सहित रहते हैं स्वामी,
होते तत्वों के पारगामी ॥28.1॥

ॐ ह्रीं अर्हं वर्तमानशासननायक 'छ' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...

त्र

त्रय शल्यों से रहित कहाते,
निज में ही निज आनन्द पाते।
प्रज्ञा छैनी अद् भुत पाएं,
तन-चतेन को पृथक् कराएं ॥28.2॥

ॐ ह्रीं अर्हं वर्तमानशासननायक 'त्र' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...

त्र

छत्र त्रय प्रभु शिर पर सोहे,
दिव्यध्वनि सब का मन मोहे।
समवशरण में जब प्रभु राजें,
भामण्डल भास्कर सम साजे ॥28.3॥

ॐ ह्रीं अर्हं वर्तमानशासननायक 'त्र' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...

यं

यंत्र तंत्र अनगिनत करावें,
तो भी आयु कर्म क्षय हो जावे।
महामंत्र का जप जो होवे,
सद्गति को वह भव्य उपावे ॥28.4॥

ॐ ह्रीं अर्हं वर्तमानशासननायक 'यं' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...

व

वन गृह मरघट सम समझें जो,
शिवपथ के राही होते वो।
पाप ताप सहते हैं सारे,
आत्म शुद्धि के साधक न्यारे॥28.5॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'व' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

द

दया धर्म का मूल पिछानें,
वे गुरुवर उपकारी मानें।
त्रस-थावर पर करुणा धारें,
जगत सिंधु से पार उतारें॥28.6॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'द' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

ति

तिरें तिरावें सब जीवों को,
मुक्ति पंथ दर्शाएं सभी को।
ऐसे साधू ही शिव पाते,
घर घर में जो पूजे जाते॥28.7॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'ति' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

ते

ते गुरु मेरे हृदय बसें जो,
भव से पार लगाते हैं वो।
रत्नत्रय की नाव पधारें,
मुक्ति महल में जाय सिधारें॥28.8॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'ते' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

त्रि

त्रिभुवन के स्वामी जो होते,
सुर-नर से भी पूजित होते।
बड़े बड़े धन पति भी आते,
चरण वन्दना कर हरषाते॥28.9॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'त्रि' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

ज

विजय पराजय नहीं चाहें जो,
राग-द्वेष से वर्जित हों वो।
हितकारी प्रवचन नित देते,
निज स्वरूप में संस्थित होते॥28.10॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'ज' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

ग

गर्व करें नहीं ज्ञान ध्यान का,
समता भावी मुनि स्वभाव का।
सरदी गरमी सहन कराते,
बरसातों में ध्यान लगाते॥28.11॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'ग' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

त

कृत्य करें रत्नत्रय पालें,
आतमहित की बाधा टालें।
हित चिंतन निज पर का पावें,
बोधि ज्ञान से कर्म हरावें॥28.12॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'त' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

प्र

प्रज्ञा छलनी से जो छानें,
अशुभ भाव वे अपने हानें।
करें प्रार्थना जिन चरणों में,
रहे ना प्रीती दुष्कर्मों में॥28.13॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'प्र' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

भु

भुवन भवन में रहें समाना,
महल-मसान एक सम जाना।
नमन करें हम जिन त्रिपुरारी,
वरी जिन्हों ने प्रिय शिव नारी॥28.14॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'भु' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

त

भूत्वा शुचि जिन मन्दिर जाएँ,
षट् कर्तव्य पूर्ण कराएँ।
धर्म भाव की वृद्धि होवे,
कर्म अशुभ सब ही क्षय जावें॥28.15॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'त' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...

वं

वंदन करें लोक अधिपति को,
दान चतुर्विध दे सद् गति को।
संगति साधु सन्त लहावें,
हो स्वाधीन निजानन्द पावें॥28.16॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'वं' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...

शा

शासन नायक वीर कहाए,
जिन शासन में उद्भव पाए।
धन्य धन्य हैं भाग्य हमारे,
यथाजात मुनि लखते प्यारे॥28.17॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'शा' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...

स्

सस्मित मुद्रा मिलें किसी से,
मन आनन्दित होय हर्ष से।
आनन्द में जिन दर्श करावें,
तो हिरदय पुलकित हो जावे॥28.18॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'स्' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...

ति

तिरना नहीं जानता स्वामी!
तिरना सिरवला दो जग नामी।
जैसे गुरु सिखाएं शिष्य को,
वैसे ही वैदुष्य दो हमको॥28.19॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'ति' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...

स

नमस्त्रिलोकीनाथ हमारा,
पूजन से मन हो अविकारा।
जिन दिनकर के दर्शन पाएं,
भविजन मन पंकज विकसाएं॥28.20॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'स' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

व

भुवनत्रय में आप श्रेष्ठ हो,
त्रिभुवन भास्कर नाथ ज्येष्ठ हो।
इसीलिए तो सुर सुरेन्द्र भी,
तुम दर्शन को आते सब ही॥28.21॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'व' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

यं

अभ्यंतर परिग्रह तज पाते,
प्रबल वेग शिवपथ बढ़ जाते।
ज्ञान चक्षु को खोल दिखावें,
मुक्ती की सीढ़ी चढ़ जावें॥28.22॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'यं' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

न

नमता जो भी प्रभु चरणों में,
समता पथ चलता भावों में।
हे स्वामी तुम शरणा पावें,
मिले किनारा भव तिर जावें॥28.23॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'न' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

मु

मुकुलित कमल विहँसाते तभी,
जब नभ में दिनकर आ जाते।
ज्ञान नयन खुलते मुनियों के,
हिरदय बस जाते प्रभु उनके॥28.24॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'मु' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

ख

दुख हरता हैं वसु करमों के,
परमेश्वर हैं त्रय लोकों के।
शान्ति मिले अब दुष्कर्मों में,
शत शत वन्दन जिन चरणों में॥28.25॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'ख' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

तो

नन्तो बार ये नर तन पाया,
विषय भोग में व्यर्थ गंवाया।
अब सम्यग्दर्शन को पाया,
धन्य हो गई नारी काया॥28.26॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'तो' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

म

अमर - अजर पद पाने आया,
नाथ आपकी शरण में आया।
तुम तो हुए स्वयंभू स्वामी,
हम भी पाएं शिव अभिरामी॥28.27॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'म' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

द

दर्शनार्थ जो प्रभु के आता,
दर्शनीय वह भी बन जाता।
संयम से इस देह को साधे,
पंच परम प्रभु को आराधे॥28.28॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'द' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

ग

गर्भ में शिशु जिन आन पधारें,
छह माह पहले रत्न पिटारे।
साढ़े तीन क्रोड़ इक बारा,
गज शुण्डा सम बरसे धारा॥28.29॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'ग' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

व

सर्वश्रेष्ठ हैं जिनवर देवा,
सुर नर भी करते पद सेवा।
जग प्रसिद्ध है नाम तिहारा,
अतुल चतुष्टय वैभव न्यारा॥28.30॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'व' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

शू

शूकर कूकर बनते वे ही,
जो भोजन करते निशि में ही।
सो जैनी दिन में ही खाते,
धर्म प्रभावना नित्य कराते॥28.31॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'शू' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

न्

चिन्मय चेतननाथ आपको,
भेद ज्ञान से जानें निज को।
अब अपनी महिमा को जाना,
तन को केवल जड़ ही माना॥28.32॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'न्' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

यः

यः पद धारें वीतराग का,
हो अभाव तब द्वेष राग का।
वे ही आतम बल प्रकटाते,
अन्त में सिद्ध परम पद पाते॥28.33॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'यः' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

स

सत्य धर्म को जो भी पालें,
वे ही राग द्वेष को टालें।
फिर सम्यक चारित अपनाते,
अन्त में निज पद प्राप्त कराते॥28.34॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'स' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

त

त्याग धर्म संयम जो धारें,
अपना जीवन आप संवारें।
तप से संचित कर्म खपाते,
कर्म नाश कर मुक्ति पाते॥28.35॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'त' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

यं

यंत्र हज़ारों घर में राखें,
लेकिन स्वातम रस नहीं चाखें।
जो नवकार मंत्र को जानें,
वो परमेष्ठि पद सरधानें॥28.36॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'यं' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

स

सन सन करती हवा उड़ावे,
साधु दिगम्बर डिग नहिं पावे।
अटल ध्यान में ही रम जाते,
निज में लीन अमर पद पाते॥28.37॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'स' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

तां

तांडव नृत्य सुधर्म कराते,
जिन जन्मोत्सव आन मनाते।
पिता कि मिच्छिक दान कराते,
जन जन महल बधाई गाते॥28.38॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'तां' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

वि

विकसित सरवर पुष्कर होते,
जब नभ में दिनकर आ जाते।
धनुष सहस पन जिनवर राजें,
समवशरण सुर नर पशु साजें॥28.39॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'वि' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

धि

बोधि समाधि मुनीश्वर साधें,
हम परमेष्ठि पन आराधें।
कर्म नाश मुनि सिध बन जाते,
हम भी यही भावना भाते॥28.40॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'धि' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

र

रग-रग में झरना झरता है,
जिनवाणी अमृत मिलता है।
गुरुवर ने ही पता बताया,
सबको शिवपुर पथ दरशाया॥28.41॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'र' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

यं

सत्यं शिवं सुन्दरं जानो,
प्रभा अलौकिक प्रभु की मानो।
सुरगण चौंसठ चमर दुराते,
जिन धुनि सुन भवि आनन्द पाते॥28.42॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'यं' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

हि

हिरदय में प्रभु नाम बसाया,
नित्य स्मरण जिन गुण गाया।
अशुभास्रव नहिं इससे होता,
नाम नाथ का अधमल धोता॥28.43॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'हि' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

प

परम पिता परमात्मा ने तो,
सब कुछ दे डाला है हम को।
मिला है जो पर्याप्त है वो ही,
करे सफल जीवन को धर्म ही॥28.44॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'प' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

रा

रात-दिवस जिन भक्ति में बीतें,
काम क्रोध मद माया जीतें।
यथा शक्ति व्रत संयम धारें,
देश धर्म पर जीवन वारें॥28.45॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'रा' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

क्र

क्रम क्रम से संयम धारें,
शिवपथ की बाधा टारें।
सम्यक् चारित्र के द्वारा,
आतम हित का विस्तारा॥28.46॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'क्र' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

मा

माया - मान महा दुखकारी,
दुर्गतियां होती भयकारी।
धर्म धरे जो भी दशलक्षण,
स्वातम का भी होता रक्षण॥28.47॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'मा' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

णां

हो प्राणांत नाथ जब मेरा,
अधरों पर भी नाम हो तेरा।
नयनों में हो छवी आपकी,
पावन रज पाऊ गुरु पद की॥28.48॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'णां' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

वी

वीतराग सर्वज्ञ हितू विभु,
हैं महान अर्हन्त महा प्रभु।
उनके चरणों में ही होता,
कर्म कलंक सभी का धोता॥28.49॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'वी' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

रो

रोग कोरुना महामारी ये,
विलय होय ब्रह्मांड में ही ये।
अखिल विश्व हो स्वस्थ निरोगी,
शान्ति मिले जो रोगी-भोगी॥28.50॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'रो' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

जि

जिनवर सम कब चारित होवे,
स्वानुभूति कब मुझको होवे।
अब स्वाधीन बनूँ मैं स्वामी!
अरज करूँ सुन अन्तर्यामी॥28.51॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'जि' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

ते

ते मुनिवर हैं समता धारी,
घाति कर्म जिनवेग निवारी।
दिव्य ध्वनि से धर्म प्रसारा,
स्वयं-स्वयं को पार उतारा॥28.52॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'ते' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

न्

मन्द मन्द मुस्काने वाले,
धर्म प्रभाव बढ़ाने वाले।
ग्राम सदलगा तीर्थ बनाया,
आप तरे भव्यों को तिराया॥28.53॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'न्' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

द्रि

मन्दराद्रि कभी शिखर ना हालें,
चाहे पवन प्रचण्ड भी चाले।
यों ही मुनि मन कभी न कांपे,
ध्यान अटल जपते मन जाये॥28.54॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'द्रि' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

य

यतन करें होवें शिवराही,
नरभव का फल मिले सदा ही।
साधु जनों की संगति पाएं,
गुरु अनुयायी शिष्य कहाँ॥28.55॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'य' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

म

मन्दिर जी के शिखर हों ऊंचे,
भक्त ऊर्जा पाते नीचे।
पहले श्री जिन दर्शन पाएं,
ऊर्जा से बल आत्म बढ़ाएं॥28.56॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'म' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

ना

नाम सहस्र वसु जपन कराते,
सौधर्मन्द्र प्रभु गुण गाते।
गद्गद् स्वर उनका हो जाता,
सबका प्रभु से जुड़ता नाता॥28.57॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'ना' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

भ

भगवन का आश्रय पाएं,
वे अपना कल्याण कराएं।
बने भक्तजन भी भगवन्ता,
महिमा है जिनराज अनन्ता॥28.58॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'भ' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

ग

उड़ें गगन में पक्षी अनेकों,
भूपर लघु जिय दिखते उनको।
बड़ी बड़ी बातें करते जो,
स्वार्थों पर ही दृष्टि धरें वो॥28.59॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'ग' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

वा

वार्धक्य दुखदायी यों तो,
किन्तु पुण्यार्जन में उत्तम हो।
विषयाशा परिहार करें तो,
यही दशा भी सर्वोत्तम हो॥28.60॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'वा' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

न

नए वस्त्र धारण करके जो,
अपने पर इतराते हैं वो।
तन नूतन जब जीव धरावें,
तो फिर क्यों इतना घबरावें॥28.61॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'न' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

सि

सिर पर गठरी पाप धराएं,
किन्तु स्वर्ग में जाना चाहें।
वे जन पंगु समान ही होते,
कभी शिखर पर जा नहीं पाते॥28.62॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'सि' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

त्

गत्वा तीर्थ जो पाप कमाएं,
भाग्यहीन वे ही कहलाएं।
मुक्त्याशा से तीर्थ जो जाएं,
वे ही निज वैभव को पाएं॥28.63॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'त्' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

व

वश में मन को जो कर लेते,
वे ही मन मालिक बन जाते।
उनका जीवन पावन होता,
अजर-अमर पद को पा लेता॥28.64॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'व' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

त्वम् - तिहूँ योग से काम कराओ,
निश्चित तभी सफलता पाओ।
सच्चा आनन्द तभी प्राप्त हो,
चिन्ताएं भी सब समाप्त हों॥28.65॥

पूणाईय

तीन लोक के नाथ तूम, तीनों छत्र प्रमाण।

धीर-वीर-गम्भीर हो, शत शत करें प्रणाम ॥28॥

ॐ ह्रीं त्रिलोके छत्र त्रय महिमा प्रकटाय अर्ह महाबीजाक्षरसहिताय
श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सिंहासन दायी स्तुति

सिंहासनोपरि विराजितुमत्र लोभा,
वाञ्छन्त्युपायशतकै-भुविचित्तलोभात्।
लाभेऽपि तस्य चतुरङ्गुलमूर्ध्वमेति,
निर्लोभता वद भवत्तुलिता क्व चान्यैः ॥29॥

(छन्द सोरठा)

सिं सिंहासन पर नाथ, चार-अंगुल तिष्ठे अधर।
दीनों के भी नाथ, मंगल करते लोक में॥29.1॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'सिं' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...

हा हार गया है मोह, जगत विजेता वीर से।
प्रभु निर्मल निर्मोह, गुण अनन्त भगवन्त में॥29.2॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'हा' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...

स सत्य धर्मधर देव, उद्भव हो वाङ्मय सकल।
दिव्यध्वनि जिनदेव, खिरती भविजन हेत ही॥29.3॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'स' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...

नो देख मनोज्ञ जिनेश, अपनी भी सुध आवती।
आँख थके नहीं लेश, अपलक नाथ निहार के॥29.4॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'नो' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...

प परम पवित्र चिदात्म, त्रिभुवन में प्रभु आपका।
नहीं अन्य शुद्धात्म, धन्य धन्य जिन सिद्ध हो॥29.5॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'प' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...

रि रितु परिवर्तन होय, लख-विभाग धारें भविक।
योग भव्यजन होय, तो भी निमित्त विराग हो॥29.6॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'रि' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...

वि विश्व तत्त्व ज्ञातार, मोक्ष मार्ग नेता कहे।

कर्म शिखर भेत्तार, बन्दू जिन गुण प्राप्त हैं॥29.7॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'वि' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

रा राजें जिन अरिहन्त, समवशर्ण प्रभुतामय।

भव्य जीव विहसन्त, स्वातम का कल्याण हो॥29.8॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'रा' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

जि जिनवर का उपदेश, मिध्यातम को मेट दे।

धीरज धार हमेश, समकित का प्रकाश हो॥29.9॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'जि' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

तु तुम विवेक मन राख, घर में मुनि चौका लगे।

आतम रस को चाख, गुर्वाहार निर्बाध हो॥29.10॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'तु' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

म मन मयूर हरषाय, श्री जिनवर के दर्श कर।

जिन धुनि जल बरसाय, भविजन जलज विकास हित॥29.11॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'म' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

त्र त्रय लोकों के नाथ, सुरनर खग पशु पूजते।

सभी नवाँ माथ, आतमगुण प्रकटा सकें॥29.12॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'त्र' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

लो लोकालोक विलोक, समीचीन जिनधुनि खिरे।

सुरतरु होय अशोक, जिनवर के प्रभाव से॥29.13॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'लो' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

भा लघु भाषा शत सात, महा भाषा अष्टादशैं।

समझैं सब ही आप, निज निज भाषा में अहो॥29.14॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'भा' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

वा वाणी सुन जिनराज, नाशें भव भव वैर को।
तारण तरण जिहाज, भव सागर भी पार हो॥29.15॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'वा' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

ज् सञ्ज्ञान द्वादशांग, गणधर गूँथे भाव से।
दर्श-ज्ञान अष्टांग, सुगुण धरें उद्धार हो॥29.16॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'ज्' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

छ छने नीर का पान, अच्छा स्वास्थ्य प्रतीक।
जैन धर्म प्रतिमान, गुरुवर समझावें सबहिं॥29.17॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'छ' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

न् शिवकान्ता हितकार, यथाख्यात चारित्र हो।
करुणामय सुख सार, इन्द्रादिक भी पूजते॥29.18॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'न्' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

त् उक्त्वा जिन-पथ पाय, भविकजनों के हेत ही।
धर्म रुचि प्रकटाय, जनम भरण दुख मेट के॥29.19॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'त्' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

यु युगल चरण मुनिराय, हैं मुझको आदर्श ये।
बन्दू शीश नवाय, सद्बुद्धि सदाचरण हो॥29.20॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'यु' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

पा पार हुए जिनराय, मुक्ति कला को प्राप्त कर।
गुरुवर भी समझाय, भाव धरो संवेग नित॥29.21॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'पा' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

य यथा नाम गुण ईश, वर्धमान जिनदेव हैं।
सदा झुकाएँ शीश, आज्ञा पालें 'जिन' सदा॥29.22॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'य' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

श

शरणागत जिनराज, भव जल पतित उबार लो।

रखना मेरी लाज, निजपद गहूँ विश्राम कर॥29.23॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'श' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

त

तन 'जड़' मैं हूँ नाय, ज्ञाता दृष्टा हूँ अहम।

भेदज्ञान बतलाय, जिन कहते सुख शान्ति लो॥29.24॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'त' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

कै

कैसे परिचय पाय, मोह तजूँ इस देह का?

भाव विराग कराय, निज में निज को खोज लूँ॥29.25॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'कै' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

भु

शतकैभुवि उपाय, चिदानन्द अब प्राप्त हो।

पूजूँ गुरुवर पाँय, दया करो मुनिराज जी॥29.26॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'भु' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

वि

विनती सुन लो नाथ, मैं घबराया जगत से।

गुरुवर पकड़ो हाथ, भट कन जाऊँ लोक में॥29.27॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'वि' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

चि

आग चिराग लगाय, कुल-सुत कुसंगति करे।

गुरु कहते समझाय, कुल-कपूत ही नाशता॥29.28॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'चि' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

त्त

उत्तम-निर्जरा कहाय, संचित करमों की सदा।

संवर' करहि सहाय, अशुभासव उसका टले॥29.29॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'त्त' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

लो

लोभ न करना कोय, दुर्गति में जाना पड़े।

शौच सर्व दुख खोय, धर्म हि पार उतारता॥29.30॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'लो' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

भा

भाव हि जिन गुण गाय, अपना पुण्य बढ़ाएँ हम।

जीवन सफल बनाय, होय गमन परलोक में॥29.31॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'भा' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

त

तत्त्व जान हरषाय, कर्म बन्ध ढीले पड़े।

जो भवबंध छुड़ाय, मुक्त हो जीव सुभाव से॥29.32॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'त' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

ला

सबका भला कराय, लाभ मिले तुझको सदा।

लाभ हि भला सुहाय, अन्योन्याश्रित जान द्वय॥29.33॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'ला' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

भे

भेदहि भाव मिटाय, हैं इन्सान यहाँ सभी।

प्रेम की धार बहाय, नयापेक्ष हो एकता॥29.34॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'भे' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

पि

धर्मामृत पिलवाय, वाणी श्री अरिहन्त की।

सकल जीव हरषाय, जीवों पर उपकार हो॥29.35॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'पि' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

त

चिंतन तत्त्व कराय, कर्म मोहनि शान्त हो।

आतम ज्योति जगाय, मोक्ष मार्ग का दर्श हो॥29.36॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'त' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

स्

कस्य जन्म फलदाय, रत्नत्रय निधि पाय जो।

आवागमन मिटाय, सिद्ध स्वरूपी हो सदा॥29.37॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'स्' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

य

यत्न हि मुक्ति कराय, समकित ज्ञान चरित्र धर।

भवदधि पार कराय, श्री जिनवर की देशना॥29.38॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'य' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

च

चतुर हि श्रेष्ठ कहाय, जो स्वरूप निज जानते।

जिनवाणी को ध्याय, स्वात्म में ही रम रहे॥29.39॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'च' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

तु

तुन्कारी इकनार, क्रोध कषाय धरे महा।

पाए दुःख अपार, अन्त भला हो सब भला॥29.40॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'तु' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

र

रग रग में उल्लास, मुक्ति रमा से मिलन का।

सम्यक् चरित विलास, जिन गुण कीर्तन हो सदा॥29.41॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'र' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

ञ्

पञ्च महाव्रत धार, पालें पंचाचार गुरु।

मुनि परमेष्ठि सार, दें शिक्षा सब भविक जन॥29.42॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'ञ्' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

गु

गुरुवर पूज्य महान, छत्तिसगुण को चाहते।

करें स्वात्म रसपान, निज-पर हित हि विचारते॥29.43॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'गु' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

ल

लड़ी विचार बनाय, करें समारम्भ भाव सो।

फिर आरम्भ कराय, फँसे काल के चक्र में॥29.44॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'ल' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

मू

देवें मूल्य चुकाय, बात करें अनमोल की।

मूल्य दें नहिं पाय, क्योंकी वस्तु अमोल है॥29.45॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'मू' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

ध्

ध्यान धारणा धार, तिष्ठे थिर एकान्त में।

साधु महा अविकार, परमानन्द में झूमते॥29.46॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'ध्' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

व

सर्व विकार विनाश, आत्मलीन साधू रहें।

हो सुज्ञान प्रकाश, सम्यक् चारित पालते॥29.47॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'व' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

मे

मेरा वैभव पास, पर धन की वांछा नहीं।

दर्श ज्ञान बल वास, सुख अनन्त की चाहना॥29.48॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'मे' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

ति

तिलिस्म अजूबा देह, बने मात के उदर में।

जिय धारे तन नेह, चिता जला दे देह को॥29.49॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'ति' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

नि

निर्णय कर लो एक, अजर अमर आतम रहे।

मन में राख विवेक, तन नश्वर-जड़ जान लो॥29.50॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'नि' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

लों

रहें सदा हि निर्लोभ, अपना क्या जो दे रहे।

मन में हो नहीं क्षोभ, दान देय आनन्द लें॥29.51॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'लों' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

भ

भरे दान भण्डार, गती तीन धन की कही।

भोगें- दान अपार, नहीं तो धन का नाश हो॥29.52॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'भ' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

ता

ताल तमाल तड़ाग, सरवर तट शोभे घना।

सोहे पुष्प पराग, प्रेम प्रकृति सब मन रहे॥29.53॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'ता' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

व

वद सत्यं धर्म चरे, न्यायनीति का मूल है।

चारित करमन हरे, होवे भवदधि पार ही॥29.54॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'व' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

द

दर्शन हों जिनराज, पुण्य उदय आवे घना।

जब दर्शन मुनिराज, पात्रदान से हर्ष हो॥29.55॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'द' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

भ

भव भरमन संसार, काल अनादी से हुआ।

कैसे हो भवपार, मुनिजन मार्ग दिखा रहे॥29.56॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'भ' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

व

वसन अशन नहिं चाह, सम्यक् चारित पालते।

चलें साधु शिवराह, स्वातम में ही मगन हों॥29.57॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'व' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

तु

परिहरतुम संसार, विभो सिंधु शरणा गहो।

मुनि प्रणम्य हितकार, बोधिज्ञान दें भव्य को॥29.58॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'तु' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

लि

लिखा लकीरों हाथ, भूत भावी - वर्तमान।

पुरुषारथ हो साथ, तीन योग से नित करो॥29.59॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'लि' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

ता

तारण तरण, जिहाज, साधु दिगम्बर आप हो।

आतमहित निज काज, बैठ रत्नत्रय नाव में॥29.60॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'ता' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

क्

क्वचित नरभव पाय, जीव चले शिवराह पर।

सम्यक् चरित उपाय, पार होय संसार से॥29.61॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'क्' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

व

वस्तुत्व हिगुण सार, सत्ता शाश्वत जीव की।

संयोग हि उपकार, बहिर्भाव लक्षण जिय होंय॥29.62॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'व' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

चाह दाह मिट जाय, वे शाहों के शाह हैं।

विष सम विषय बताय, भव भव में दुर्गति करें॥29.63॥

छन्दबद्ध हि श्लोक, चाल पढ़ें मन को हरे।

द्वय तट युत नदि लोक, बहे - सर्व सुख हो वहाँ॥29.64॥

यै: मन राख विवेक, स्वात्म का कल्याण हो।

शिवपथ चलते नेक, कायर के वश में नहीं॥29.65॥

ॐ ह्रीं अर्हं वर्तमानशासननायक 'यैः' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

सिंहासन पर भी अधर, भव-तन-भोगविराग।

नहीं कोई उपमान तुम, जग पूरित है राग ॥29॥

ॐ ह्रीं सिंहासन प्रतिहार्य प्रतिपादकाय अहं महाबीजाक्षरसहिताय
श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।



छल कपट नाशी स्तुति

ऊर्ध्वं मुहुर्गदति याति च निम्वृत्तिं,
मायाविनां तु मनसा सम वक्रवृत्तिम्।
तेभ्यस्तनुस्तव विभाति सुचामरौघो,
मायातिशून्यहृदयो भवदन्यना न॥30॥

(छन्द- चौपाई)

ऊ

ऊपर-ऊपर तो सब जाएँ,
नीचे जाना कोई ना चाहें।
इसीलिए मन में अभिलाखें,
स्वर्गों में सब सुख रस चाहें॥30.1॥

ॐ ह्रीं अर्हं वर्तमानशासननायक 'ऊ' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...

ध

मध्यलोक में द्वीप असंख्य,
भविजन जाते ढाई संख्य।
आगे तो बस सुरगण जाएँ,
निज पुण्यों के फल को पाएं॥30.2॥

ॐ ह्रीं अर्हं वर्तमानशासननायक 'ध' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...

व

गर्व होवे जैन होने का,
कुल गोत्र हि उत्तम होने का।
नगन दिगम्बर गुरु हमारे,
कब स्वाधीन हों यही विचारें॥30.3॥

ॐ ह्रीं अर्हं वर्तमानशासननायक 'व' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...

मु

मुझे न जीना है बन्धन में,
कैसे नष्ट करूँ कर्मन मैं।
शरणागत हूँ नाथ तिहारी,
होना है बस स्वात्म विहारी॥30.4॥

ॐ ह्रीं अर्हं वर्तमानशासननायक 'मु' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...

हु

धरि हुलास मैं चौका लगाऊं,
नवधा भक्ति साधु - पढ़गाहूँ।
शोध शोध आहार कराऊँ,
गुरु पद रज कोशीश चढ़ाऊँ॥30.5॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'हु' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

र्ग

स्वर्ग सुखों को मैं नहिं चाहूँ,
गहने - कपड़ों पर न लुभाऊँ।
बस अपना वैभव - चाहूँ मैं,
आश्रय, गुरुपद में चाहूँ मैं॥30.6॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'र्ग' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

द

दया प्रभु की दुआ गुरु की,
है दवाई मेरे कष्टों की।
यथाशक्ति मम पुरुषारथ जो,
केवल परमारथ ही है वो॥30.7॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'द' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

ति

तिरना हो तो तुम्हीं तिराओ,
कृपा वृष्टि अपनी बरसाओ।
चातक सम मम नजर लगी है,
तन मन में तुम लगन लगी है॥30.8॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'ति' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

या

किया चयन मैंने निज हित का,
जाना सत्य सरूप जगत का।
जिनवर को मैं हृदय बसाऊँ,
एक एक पग बढ़ता जाऊँ॥30.9॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'या' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

ति

शान्ति वार्ता निज से कर ली,
मुक्तिरमा जिनवर ने कर ली।
कर्म शत्रु को दूर भगाया,
जय जय वर्धमान जिनराया॥ 30.10॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'ति' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

च

चरणों में जिन जगह दो स्वामी,
आप महासागर गुणधामी।
मम जीवन मंगलमय कर दो,
निजानन्द जीवन में भर दो॥ 30.11॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'च' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

नि

निर्भय होकर बटूं मैं आगे,
पाप कर्म सब डरकर भागे।
षट् आवश्यक पूरे होवें,
राग द्वेष मद मोह को खोवें॥ 30.12॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'नि' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

म्

म्यान में ज्यों तलवार रहे,
यों ही देह में आत्म रहे।
म्यान से ज्यों तलवार निकालें,
स्वातम भी बस यों हि संभालें॥ 30.13॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'म्' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

न

नर-नारी जब ब्याह रचाएँ,
बसा गृहस्थी चौका लगाएँ।
मुनियों को आहार कराएँ,
जीवन अपना सफल बनाएँ॥ 30.14॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'न' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

वृ

वृषभर्ता वृष नाथ तुम्हीं हो,
वृषभदेव जिननाथ तुम्हीं हो।
प्रभु से मैं अरु कुछ नहीं चाहूँ,
जनम जनम प्रभु दर्शन पाऊँ॥30.15॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'वृ' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

तिं

समदत्तिं एक दान कहा है,
रिश्तेदारी को जो दिया है।
रिश्तेदारो को सदा निभाना,
भेंट देय सन्तुष्ट कराना॥30.16॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'तिं' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

मा

मात पिता की सेवा करना,
उनकी आज्ञा पालन करना।
इनका ऋण हम चुका न सकते,
आज इन्हीं की कृपा से हँसते॥30.17॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'मा' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

या

याद करें हम सूत्र शास्त्र से,
शिवपथ में ये दीप शिखा से।
भव बन में हम भटके नाही,
घोर तिमिर में होय सहायी॥30.18॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'या' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

वि

हो विश्वास जहाँ रिश्तों में,
प्रेमभाव रहता है सब में।
तरु विश्वास सन्देह कुठारा,
हो आघात नशे व्यवहारा॥30.19॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'वि' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

नां

जिनानां सुनो तुम बिनती,
लिखने में अँगुलियाँ थकती।
बच्चों से तो दूर हि रखना,
अग्नि-नीर से सदा बचाना॥30.20॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'नां' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

तु

तुमको जब से मैने जाना,
प्रभु सा ही बनने को ठाना।
भक्ति की तो रीत ना जानूँ,
नाम मात्र प्रभु का पहचानूँ॥30.21॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'तु' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

म

मध्यलोक में हम हैं रहते,
नन्दीश्वर जिन वन्दन करते।
हे प्रभु तन तो यहीं पड़ा है,
भक्त तुम्हारी शरण खड़ा है॥30.22॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'म' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

न

दान देय धन से श्रावक तो,
अभय साधु थावर त्रस जिय को।
हम विवेक से कार्य कराएँ,
हिंसा संकल्पी - बच जाएँ॥30.23॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'न' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

सा

साधन मानव तन मुक्ती का,
साधु मुक्ति के लिए मुक्ति का।
परम्परा से हो गृहस्थ का,
साक्षात् हो सन्त जनों का॥30.24॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'सा' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

स

समकित ज्ञान चरित जब पाया,
तेज रत्नत्रय का दरशाया।
रवि कैवल्य ज्ञान प्रकटाया,
पंच सहस धनु पर जिन काया॥30.25॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'स' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...

म

हो महान प्रभु तीन लोक में,
ऊरध मध्य अधोलोक में।
शीश झुका चरणों में भक्ति से,
नमन करें हम तीन योग से॥30.26॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'म' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...

व

वक्ता तो मुख्य वीर कहाते,
प्रभु की वाणी सुन हर्षति॥
मैं भी सुनना चाहूँ वाणी,
दुखहरणी वाणी कल्याणी॥30.27॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'व' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...

क्र

चक्र धर्म में चमके आरे,
यक्षदेव ले चलते सारे।
एक सहस आरे हो उसमें,
प्रभु के आगे चलते सच में॥30.28॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'क्र' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...

वृ

वृद्ध आयु तप ज्ञान त्रयी हों,
तीनों ही जग से पूजित हों।
महिमा ज्ञान की सबसे भारी,
पर भव में भी हो उपकारी॥30.29॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'वृ' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...

ति

प्रवृत्ति दान धर्म में होवे,
फल को भोग भूमि में पावे।
भोग मिलेंगे दान से सारे,
पूजा से उपयोग हमारे॥ 30.30 ॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'ति' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

म

अर्हम् योग सदा अपनाएँ,
जीवन में स्थिरता लाएँ।
मुनि प्रणम्य हमको संबोधा,
तज दो क्रोध मान छल लोभा॥ 30.31 ॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'म' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

ते

ते गुरु विद्या संघ उपकारी,
सब मुनि आतम समताधारी।
पूर्ण संघ को शीश नवाएँ,
विद्या गुरु पर बलि बलि जाएँ॥ 30.32 ॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'ते' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

भ्

अभ्यन्तर परिग्रह को त्यागें,
बहिर परिग्रह नहीं अनुरागें।
स्वात्म को अब शुद्ध बनाएँ,
त्याग तपों में रुचि मन लाएँ॥ 30.33 ॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'भ्' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

य

यही हमारा भाग्य अनूठा,
जो जाना हर रिश्ता झूठा।
अब अपने हित जीना सीखें,
भावों में भी डर नहीं दीखे॥ 30.34 ॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'य' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

स्

स्याद्वाद है तत्त्व अनोखा,
अपनाएँ तो मिले न धोखा।
वाद-विवाद मिटाने हेतु,
अनेकान्त का है ये सेतू॥30.35॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'स्' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

त

तन से तो तुम तप को तपना,
जिनवर कहते सत्पथ बढ़ना।
निश्चित तुम भगवान बनोगे,
शाश्वत शिवसुख प्राप्त करोगे॥30.36॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'त' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

नु

अनुपम गुरु विद्यासागर हैं,
कोमल मन दृढ़ता गागर हैं।
ज्ञानसिंधु शिवराही गुरु थे,
सिद्धिप्रिया के वे प्रियवर थे॥30.37॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'नु' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

स्

नमस्त्रिधा वर्धमान जिनेशा,
मन वच तन से नमूं हमेशा।
मैं हूँ प्रभु अनुयायी तिहारा,
तुम भक्ति से हो निस्तारा॥30.38॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'स्' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

त

तव गुण पाने को हम वन्दें,
मिटें शीघ्र भव भव के फन्दे।
हम आए हैं शरण तिहारी,
भव दुख मेटो हे त्रिपुरारी॥30.39॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'त' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

व

वन में जब जिन करें निवासा,
'पर' से उनको रही न आशा।
लौकिक सुख को झट से त्यागा,
रहा न तन पर एक भी धागा॥30.40॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'व' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

वि

विघाएँ प्रभु चरण में आई,
नहिं स्वीकार किया जिनराई।
तुम्हें भरोसा था निज बल का,
नहीं सहारा लिया किसी का॥30.41॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'वि' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

भा

भानु उदित कैवल्य हुआ था,
समवशरण मघवा ने रचा था।
द्वादश कोठे थे मनहारी,
निजस्थान तिष्ठे नर-नारी॥30.42॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'भा' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

ति

तिरते लाखों दीक्षा पाते,
कुछ अणुव्रत ले कर सुखपाते।
कुछ अपने दुर्भाव सुधारें,
कुछ भव भव के बैर निवारें॥30.43॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'ति' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

सु

सुन्दर सभा सभी मन मोहे,
मौणिक मुक्ता झालर सोहे।
दिव्यध्वनि खिरती हितकारी,
सब जीवों को हो सुखकारी॥30.44॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'सु' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

चा

चारित धारें सभी सुखारी,
हरें मोह दुष्कर अतिभारी।
जो श्रोता नहीं कायबली थे,
वे भी अनुमोदना करे थे॥30.45॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'चा' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

म

महा मोक्ष फल के अधिकारी,
जिनवाणी उनको हितकारी।
अटल रहेगी उनकी भक्ती,
मार्ग मिलेगा उनको मुक्ती॥30.46॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'म' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

रौ

हरौ दुख भव भव भरमन का,
जयो सदा शासन जिनमत का।
अपनी इन्द्रियाँ-मन को जीतें,
धर्मामृत पीते दिन बीतें॥30.47॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'रौ' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

घो

घोलें मिश्री सी कानों में,
स्तुति गद्गद् उपमानों में।
प्रभु भक्ति में मैं खो जाऊँ,
निज-आतम में रमण कराऊँ॥30.48॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'घो' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

मा

मान महा दुखदायी जग में,
इसको नहीं लाओ निजमन में।
यही जीव का पतन कराने,
अन्त कुगतियों में पहुंचाने॥30.49॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'मा' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

या

माया - मान छूटे हैं जब से,
हो विराग तब ही भावों से।
छुटै विकार भाव शुद्ध होते,
तब ही सम्यक् चारित बोते॥30.50॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'या' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

ति

तिरना चाहों भवदधि तट से,
श्रीजिन शरण लहो श्रद्धा से।
खान पान सब शुद्ध हो पहले,
फिर तो जिय उपसर्ग भी सह ले॥30.51॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'ति' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

शू

शून्य होय जो हृदय भक्ति से,
बढ़े न आगे देह शक्ति से।
द्रव्य- भाव द्वय शुद्धिधारी,
मंजिल तभी मिलेगी प्यारी॥30.52॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'शू' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

न्

वन्य जीव वन में ही रहते,
तब ही हम शान्ति से रहते।
मानव जंगल नष्ट कराते,
जंगली जीव शहर में आते॥30.53॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'न्' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

य

यदि तन मन शीतल हो जाएँ,
भाव भी उज्ज्वल विमल कराएँ।
भावों से जुड़ता प्रभु नाता,
मिटे असाता आती सांता॥30.54॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'य' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

ह

हृदय हमारा हो अविकारा,
तब ही हो सकता भव पारा।
भाव विकारी नष्ट कराएँ,
निर्मल शीतल हृदय बनाएँ॥ 30.55 ॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'ह' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

द

दया धर्म का मूल बताया,
दया से ही उत्तम पद पाया।
दया के सागर गुरु हमारे,
भक्त लगाते जय जय करे॥ 30.56 ॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'द' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

यो

योग तीन से जिनवर ध्याऊं,
तीनों काल हि शीश झुकाऊँ।
अर्जन करलें रत्नत्रय का,
होय उपार्जन भी पुण्यों का॥ 30.57 ॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'यो' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

भ

भक्त बने भगवन प्रभु गरिमा,
विश्व प्रसिद्ध है जिनवर महिमा।
निशदिन जिन गुणगान ही गाएँ,
धर्म प्रभावना जैन कराएँ॥ 30.58 ॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'भ' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

व

वन्दन पूजन अर्चन करके,
भावों में प्रभु भक्ति भरके।
तीर्थ यात्रा पर हम जावें,
अतिशायी बहु पुण्य कमावें॥ 30.59 ॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'व' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

द

दयाहीन जो दुष्ट हि आते,
वे भी आयु पूर्ण कराते।
मर कर दुर्गतियों में जाते,
याद किसी को वे नहीं आते॥30.60॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'द' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

न

हिन्दुस्तान हमारा प्यारा,
जन-जन है इसका रखवारा।
दुश्मन ने यदि करी चढ़ाई,
तो फिर उसने मुँह की खाई॥30.61॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'न' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

य

यदा कदा दुश्मन आ जाते,
अपने सैनिक झट भिड़ जाते।
प्यारे देश की रक्षा करते,
प्राणों का बलिदान भी करते॥30.62॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'य' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

ना

नादानी में जो भी अपना,
नहीं पूरा कर पाते सपना।
उनका जीवन व्यर्थ कहाता,
देश-धर्म के काम न आता॥30.63॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'ना' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

न

नदियाँ सबको जल देती हैं,
गाय भी दूध हमें देती है।
वृक्ष भी अपने फल नहीं खाते,
सज्जन पर हित दान कराते॥30.64॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'न' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

पूर्णार्घ्य

ढुरें चमर प्रभु पर सदा, उच्च-निम्न गति होय।

मायाचारी हैं सभी, प्रभुमन निर्मल होय ॥30॥

ॐ ह्रीं चामर प्रतिहार्य प्रतिपादकाय अर्हं महाबीजाक्षरसहिताय
श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।



मुख तेज वर्धन स्तुति

अस्मिन्भवे भविनि रोषविभावभाजि,
चैतन्यवत्यपि मुखं न बिभर्ति तेजः।
भामण्डलं हि परितो तव भासमानं,
यद् वीर! वक्ति भविसप्त-भवानुगाथाम् ॥31॥

(छंद विष्णुपद)

अ

अगर भक्त तत्त्व ज्ञायक हो प्रभु नमन करें।

समकित आदि गुण मणियां द्रुति तेज महन्त धरें ॥31.1॥

ॐ ह्रीं अर्हं वर्तमानशासननायक 'अ' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...

स्

स्वानुभूति के रस में डूबे श्री मुनिवर अविकारी।

स्तुति के लिए करें प्रार्थना गुण रत्नत्रय धारी ॥31.2॥

ॐ ह्रीं अर्हं वर्तमानशासननायक 'स्' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...

मि

मित्र हुए तुम जीव मात्र के जिनवर उपकारी।

दूर करो सब चिन्ताओं से प्रभु करुणा धारी ॥31.3॥

ॐ ह्रीं अर्हं वर्तमानशासननायक 'मि' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...

न्

सन्त पाप क्षय करें वृत्तों से सब विद्या स्वामी।

हमको भवदधि पार लगा दो प्रभु अन्तर्यामी ॥31.4॥

ॐ ह्रीं अर्हं वर्तमानशासननायक 'न्' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...

भ

करें भक्तजन पाठ भक्ति से वर्धमान स्तोत्र का।

करुणा सागर हैं गुरुवर तो झरना करुणा स्रोत का ॥31.5॥

ॐ ह्रीं अर्हं वर्तमानशासननायक 'भ' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...

वे

वे भवि धरें विराग हृदय में जिन उर गुरु सम्मान।

चलना चाहें वे भी शिवपथ पावें पद निर्वाण ॥31.6॥

ॐ ह्रीं अर्हं वर्तमानशासननायक 'वे' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...

भ

भवत् कृपा से होता है जिन जीवों का उद्धार।

आत्मज्ञान की शिक्षा पाकर वे जाते भव पार॥31.7॥

ॐ ह्रीं अर्हं वर्तमानशासननायक 'भ' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

वि

विद्या का सागर लहराता ज्ञान सिंधु उर में।

ज्ञानसिंधु के शिष्य अनूठे मुस्काएँ मन में॥31.8॥

ॐ ह्रीं अर्हं वर्तमानशासननायक 'वि' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

नि

हो निहार आहार विहार सब ही संयम से।

सो प्रमाद भी नहीं सताए क्रिया हो शुचिता से॥31.9॥

ॐ ह्रीं अर्हं वर्तमानशासननायक 'नि' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

रो

रोगादिक से होय निवृत्ति विश्व निरामय हो।

सफल होय मानव जीवन मे भव भय निर्भय हो॥31.10॥

ॐ ह्रीं अर्हं वर्तमानशासननायक 'रो' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

ष

षट आवश्यक के पालन में कभी न व्याकुल हों।

आधि-व्याधि नशे तो अन्त समाधि निराकुल हो॥31.11॥

ॐ ह्रीं अर्हं वर्तमानशासननायक 'ष' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

वि

हैं वियोग संयोग दुखारी जीवन निष्फल हो।

बिना ब्रेक की गाड़ी जैसे बचना मुश्किल हो॥31.12॥

ॐ ह्रीं अर्हं वर्तमानशासननायक 'वि' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

भा

मनोभावना हो निःस्वारथ पूरे होते काम।

रहे भावना स्वारथ की तो नहीं मिले विश्राम॥31.13॥

ॐ ह्रीं अर्हं वर्तमानशासननायक 'भा' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

व

वश नहीं चलता काल आय कर प्राणों को हरता।

छूट जाए सामान यहीं सब पछता कर मरता॥31.14॥

ॐ ह्रीं अर्हं वर्तमानशासननायक 'व' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

भा

भारत वसुधा पर जन्मे हैं सन्त शिरोमणि नाथ।

धन्य धन्य गुरु विद्यासागर धरें चरण हम माथ॥31.15॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'भा' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

जि

जिन्होंने इच्छाएँ जीती सब साम्य भाव धारा।

उन्होंने ही नर भव फल पाया हो मुनि अविकारा॥31.16॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'जि' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

चै

चैत्य - चैत्यालय शरणा तो गुरुवर मैने पाया।

पार उतारने भव सागर पदयान "प्रणम्य" आया॥31.17॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'चै' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

त

तप से नाशें कर्म अघातिया सिद्धालय जाएँ।

समता जल से विषय भोग की ज्वाला शीघ्र बुझाएँ॥31.18॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'त' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

नू

सन्ताप सहा भव भव मैने प्रभु काल अनादी से।

मम राग द्वेष मिटाओ प्रभु! नहीं सहा जाए मुझ से॥31.19॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'नू' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

य

यह राग आग मुझको तो जला रही है स्वामी।

इन सबसे पिंड छुटे मम शरणा दो प्रभु जगनामी॥31.20॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'य' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

व

वश नहीं कीना तन मन अपना बीते लाख तिरासी।

जब विराग आया मन में तो पाया पद अविनाशी॥31.21॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'व' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

तू

नृत्य नीलांजना देख आदि ने नश्वर जग जाना।

कर केशलौच पन मुष्टि प्रभु मे मुक्ति मार्ग ठाना॥31.22॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'तू' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

य

पुण्य-पाप विभाव लखें प्रभु विरत हुए जग से।

हुए निरत मोक्ष मग में तप संवर निर्जर से॥31.23॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'य' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

पि

पिला रहे हो तुम भक्तों को वचनामृत सुखकार।

हम पतितों पर किया आपने जिनवर अति उपकार॥31.24॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'पि' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

मु

मुनिजन आतम ध्यान लगाते परमातम पद पाने को।

परमातम का चिन्तन करते कर्म कलंक मिटाने को॥31.25॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'मु' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

खं

खं विहाय कोई बड़ा न जग में सब ही लघु होते।

परमाणु से लघु नहीं कोई मध्यम सब होते॥31.26॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'खं' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

न

दान दिए थे चारों पहले तभी हों क्षायिक दान।

मैं याचक तुम शरण में आया मिले आप सा ज्ञान॥31.27॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'न' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

बि

बिना बुद्धि के प्रभु स्तवन को मैं तैयार हुआ।

समझो तुम निर्लज्ज मुझे मैं तो लाचार हुआ॥31.28॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'बि' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

भ

भव से मुक्त हुए जिनवर नहीं नयनों से दिखते।

इसीलिए जड़ वचनों से हम आराधन करते॥31.29॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'भ' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

ति

कीर्ति तिहारी है अति भारी हम गुण गाते हैं।

खाते-सोते जीवन बीतें फिर मर जाते हैं॥31.30॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'ति' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

ते

तेरा-मेरा करते ही सब दिन यों बीते जाएँ।

दया करो प्रभु मम अनुभव में आत्मराम आएँ॥31.31॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'ते' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

जः

तेजः तप से कर्म जले तो भवि मन खिलते हैं।

जयवन्तो वर्धमान जिनेश्वर मम उर बसते हैं॥31.32॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'जः' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

भा

भानु उदित हो कैवल्य का लोक प्रकाशित हो।

जिन धुनि खिरती समवशरण में ज्ञान उद्भासित हो॥31.33॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'भा' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

म

मनोमुग्धकारी छवि प्रभु की चित्रलिखित श्रोता।

जानें भिन्न-भिन्न जड़-चेतन मन विस्मित होता॥31.34॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'म' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

ण्

पुण्य उदय में सब खुश होते इतराते रहते।

पापोदय में रो-रो करके नाना दुख सहते॥31.35॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'ण्' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

ड

डरना क्या मृत्यु से इक दिन मरघट में आना।

जिय रूकता ना रोके कोई फिर भी है जाना॥31.36॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'ड' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

लं

लंकापति रावण को देखो कितना वैभव था।

लेकिन गया नरक में भाई मद जो कीना था॥31.37॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'लं' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

हि

हिरदय में जीवन्त प्रभू हैं शुद्धाहार कराएँ।

शुद्ध विचार उठेंगे मन में ले चारित तिर जाएँ॥31.38॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'हि' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

प

पढ़ना हो पुस्तक लाओ ये ही मित्र हमारी हैं।

पढ़-सुन ज्ञानी बन जाओ, जय-जय कार तुम्हारी है॥31.39॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'प' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

रि

रिपु ना कोई जग में मेरा कर्म शत्रु अन्तर में।

अन्तर - रिपुओं को जीतूँ मैं स्वातम चिंतन में॥31.40॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'रि' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

तो

तोड़ दिए करमों के बन्धन आत्म विजेता ने।

आई दौड़ के मुक्तिरमा उन मुनिवर को वरने॥31.41॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'तो' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

त

तप से ताप मिले जो तन में तन तपता जाता।

स्वातम भी तो कुन्दन के सम निखर-निखर आता॥31.42॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'त' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

व

वही बने परमात्म-स्वात्म को जिसने शुद्ध किया।

शेष न इच्छा रहे कोई भी दूर विकार किया॥31.43॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'व' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

भा

भाव भासना जब तक नहीं हो जिय जग में भटके।

अर्थ सहित भावों से पढ़ लें तो संकट कटते॥31.44॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'भा' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

स

सत्सरूप दर्शाया प्रभु ने मैं तो था अनजान।

धन्य धन्य हो मुनिवर तुमने दी स्वातय पहचान॥31.45॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'स' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

मा

मान विनाशक वर्धमान स्तोत्र सर्व सुखकारी।

श्रद्धा से पढ़ते हैं जो भी बुद्धि शुद्ध विचारी॥31.46॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'मा' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

नं

नंदन त्रिशला राजदुलारे सिद्धारथ नृप के।

अन्तिम तीर्थकर महावीरा पद वन्दन करके॥31.47॥

ॐ ह्रीं अर्हं वर्तमानशासननायक 'नं' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...।

य

होय यशस्वी वो जन जग में करें आत्मकल्याण।

घर परिवार तजे तप तपते पा जाते निर्वाण॥31.48॥

ॐ ह्रीं अर्हं वर्तमानशासननायक 'य' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...।

द

उद्धोधन देकर भव्यों पर किया महा उपकार।

इसीलिए श्री वर्धमान के गुण गाता संसार॥31.49॥

ॐ ह्रीं अर्हं वर्तमानशासननायक 'द' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...।

वी

वीतराग सर्वज्ञ प्रभु के चरणों में झुक जाएँ।

दिव्यध्यनि हितकारी सुन कर निज उद्धार कराएं॥31.50॥

ॐ ह्रीं अर्हं वर्तमानशासननायक 'वी' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...।

र

रसिक मुनिजन स्वात्म के दृष्टि न पर में जाय।

रत्नत्रय साधक गुरु मेरे बन्दू शीश नवाय॥31.51॥

ॐ ह्रीं अर्हं वर्तमानशासननायक 'र' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...।

व

वसन्त ऋतु में ज्यों दिखती हरियाली चहुँ ओर।

शरण लहें आचार्यश्री की जीवन स्वर्णिम भोर॥31.52॥

ॐ ह्रीं अर्हं वर्तमानशासननायक 'व' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...।

क

वक्ता जिनवर केवलज्ञानी ज्ञान वृष्टि करते।

संज्ञी पंचेन्द्रि भवि-सुरगण-नर-पशु भी सुनते॥31.53॥

ॐ ह्रीं अर्हं वर्तमानशासननायक 'क' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...।

ति

तिर्यचों की चाल व दृष्टि श्रेष्ठ नहीं मानी।

सम्यग्दृष्टि होय हमारी कहें सदा ज्ञानी॥31.54॥

ॐ ह्रीं अर्हं वर्तमानशासननायक 'ति' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...।

भ

भले रहें गुरु दूर मुझे तो पास ही लगते हैं।

नयन बन्द कर जब भी घ्याऊँ प्रभु ही दिखते हैं॥31.55॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'भ' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

वि

विश्वदर्शी कह समवशरण में मुनिजन ध्याते हैं।

भामण्डल आभा में भवि भव सात दिखाते हैं॥31.56॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'वि' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

स

सिंहासन है स्वर्णिम प्रभु का माणिक मणि सो हैं।

उस पर स्वर्णिम तनधारी प्रभु-चार अंगुल मोहें॥31.57॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'स' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

प

प्याला पिला दिया ज्ञानामृत पी कर भवि नाचें।

वाद्य बजाएँ गीत सुनाएं निज में ही राचें॥31.58॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'प' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

त

तन मन वच से करते हैं हम जिनवर को वन्दन।

हे स्वामी इस बार कर्म का होने नहीं बन्धन॥31.59॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'त' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

भ

भगवन मुझे भरोसा तुम पर पार लगाओगे।

डूब गया तो कैसे तारणहार कहाओगे?॥31.60॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'भ' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

वा

वास्तविक सुख का अनुभव प्रभु तुमने ही पाया।

भक्त भी निज सुख पाने हेतु चरणों में आया॥31.61॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'वा' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

नु

अनुभव करके हम स्वातम का परमातम पूजें।

अष्ट द्रव्य का थाल सजा भवि पूजें अघ धूजें॥31.62॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'नु' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

गाथा बहुत बड़ी दुःखों की हम सब भी जानें।

प्रभु वाणी को सुनना चाहें मन से सरधानें॥31.63॥

ॐ ह्रीं अर्हं वर्तमानशासननायक 'गा' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...

थाम लो भगवन मुझको मैं भवकूप में लटका हूँ।

हाथ पकड़कर मुझे उबारो मोह में अटका हूँ॥31.64॥

ॐ ह्रीं अर्हं वर्तमानशासननायक 'था' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...

सौम्य परम रस पीकर प्रभु सिद्धालय चले गए।

रहे भटकते हम जग में मन्मथ से छले गए॥31.65॥

ॐ ह्रीं अर्हं वर्तमानशासननायक 'म' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...

पूर्णार्ध्य

प्रभु मुख भामण्डल विमल, दरशाए भव सात ।

भव्य जीव जीवन्त भी, नहिं इतनी धृति पात ॥31॥

ॐ ह्रीं भामण्डल प्रतिहार्य प्रतिपादकाय अर्हं महाबीजाक्षरसहिताय
श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।



सम्मोहनकारी स्तुति

चित्रं विभो! त्रिभुवनेश! जिनेश! वीर!
न्यूने त्वयि द्रुतविहास्य-रतेन देव!
दिव्यध्वनिं तदपि कर्णयितुं तु भव्या,
आयान्ति ते रतिवशादनुयन्ति हास्यम् ॥32॥

(छन्द दोहा)

चि चिन्मय चेतनता बसे, तनकी नस-नस में।

गुण अनन्त विद्यमान हैं, हर इक आतम में॥32.1॥

ॐ ह्रीं अर्हं वर्तमानशासननायक 'चि' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...

त्रं भक्त स्तोत्रं नित पढ़े, प्रतिदिन प्रातःकाल।

चारित शुद्धि होय तो, शिवमग मिले विशाल॥32.2॥

ॐ ह्रीं अर्हं वर्तमानशासननायक 'त्रं' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...

वि विमुख हुए पर द्रव्य से, स्व सम्मुख सुख पाय।

तत्त्वों में शुद्धात्म ही, सारभूत बतलाय॥32.3॥

ॐ ह्रीं अर्हं वर्तमानशासननायक 'वि' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...

भो भोक्ता बुद्धि छोड़ कर, स्वातम का उपयोग।

जग के नाते तोड़ कर, शुद्ध हुए त्रय योग॥32.4॥

ॐ ह्रीं अर्हं वर्तमानशासननायक 'भो' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...

त्रि त्रिभुवन को इक साथ ही, करें प्रकाशित आप।

धूम - तेल - बाती बिना, दीपक सम निष्पाप॥32.5॥

ॐ ह्रीं अर्हं वर्तमानशासननायक 'त्रि' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...

भु भुवि पर जय जयकार हो, वर्धमान जिननाथ।

तुम गुण चिन्तन सरल ना, दीनानाथ अनाथ॥32.6॥

ॐ ह्रीं अर्हं वर्तमानशासननायक 'भु' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...

व

वक्र बुद्धि जो धारते, स्वातम सुख नहीं पाय।

बिना भाव क्रिया करे, सुख नहीं अनुभव आय॥32.7॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'व' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

ने

प्रभु ने होकर के विजयी, शिवपुर किया प्रवेश।

कर्म मैल भविजन हरे, चन्द्र समान शिवेश॥32.8॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'ने' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

श

शत-शत वन्दन नाथ को, करते सारे देव।

सब देवों में हैं बड़े, तीर्थकर जिनदेव॥32.9॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'श' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

जि

जिन में निज में होऊँ थिर, हो चेतन उपभोग।

चित्त सदा चंचल प्रभु, थिर ना हो उपयोग॥32.10॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'जि' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

ने

पाने ज्ञान प्रकाश मैं, आया हूँ तुम द्वार।

वर्धमान भगवान का, शासन है सुखकार॥32.11॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'ने' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

श

शल्य त्रय क्षय कर प्रभो, हुए श्रेष्ठ व्रत धार।

व्रती बने बिन मोक्ष ना, कहें सूरि हितकार॥32.12॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'श' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

वी

वीतराग सम देव ना, नमूँ नमूँ नत माथ।

दोष अठारह रहित हो, सो जोड़ूँ द्वय हाथ॥32.13॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'वी' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

र

रवि प्रकाश तुमने हरा, नित्य प्रकाशित ज्योत।

बन्द नयन द्वय खोल दो, होवे नेत्र उद्योत॥32.14॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'र' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

नू

तन्मय हो ध्याया प्रभु, गहन हृदय से आप।

मनवांछित फल पा लिया, सहज हुए निष्पाप॥32.15॥

ॐ ह्रीं अर्हं वर्तमानशासननायक 'नू' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...

यू

धर्मयूप अरिहन्त सम, विद्यासागर सन्त।

विश्व पूजता है इन्हें, सब पर करुणावन्त॥32.16॥

ॐ ह्रीं अर्हं वर्तमानशासननायक 'यू' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...

ने

प्रभु ने बतलाया हमें, कर्त्ता कर्म कराय।

कहे जिनागम भी यही, संभलें-कर्म हराय॥32.17॥

ॐ ह्रीं अर्हं वर्तमानशासननायक 'ने' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...

तू

मात तात त्वमेव हो, हे भगवन स्वयमेव।

तुम ही पालनहार हो, हो सर्वस्व त्वमेव॥32.18॥

ॐ ह्रीं अर्हं वर्तमानशासननायक 'तू' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...

व

वस्तु स्वभाव पिछानते, गुरु विद्या ध्रुव धाम।

मैं भटका संसार में, कब पाऊँ विश्राम?॥32.19॥

ॐ ह्रीं अर्हं वर्तमानशासननायक 'व' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...

यि

अयि चेतन! तम मोह हर, कर ले ज्ञान उद्योत।

कर्म कलुष धुल जाए सब, जगे चरित की ज्योत॥32.20॥

ॐ ह्रीं अर्हं वर्तमानशासननायक 'यि' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...

दु

द्रुत गति से भागे शशक, कच्छप चलता मन्द।

अन्त हुआ हारा शशक, कछुआ हि अक्लमंद॥32.21॥

ॐ ह्रीं अर्हं वर्तमानशासननायक 'दु' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...

त

तज कर सर्व विभाव को,हुए क्षोभ से दूर।

भव्य मूर्ति जिन दर्श कर, हों विकार मम चूर॥32.22॥

ॐ ह्रीं अर्हं वर्तमानशासननायक 'त' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...

वि

विघ्न नष्ट हों भक्त के, जो जप ले जिननाम।

कारण प्रभु भक्ती कही, बनते-बिगड़े काम॥32.23॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'वि' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

हा

हो महान तिहुँ लोक में, करें सभी गुणगान।

तीन योग से मैं करूँ, बारम्बार प्रणाम॥32.24॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'हा' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

स्

त्रस्त जीव अज्ञान से, नाथ ज्ञान भरपूर।

आया गुरुपद की शरण, करो मोह मम चूर॥32.25॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'स्' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

य

यम दम शम की मुक्ति से, मुक्ति मिले भगवान।

तब गुण गण को पाय के, मैं भी बनूँ महान॥32.26॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'य' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

र

तरह तरह के खेल ये, कर्म हि मुझे खिलाय।

हारा अब तक जीव ये, शरण आज प्रभु पाय॥32.27॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'र' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

ते

तेजस्वी प्रभुवदन है, अपलक देखनहार।

तुम सम सुन्दर कोई ना, पूजें भवि मनहार॥32.28॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'ते' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

न

नमन किया ना भाव से, ना ही भक्ति कराय।

अतः मिला भवदुःख ही, चारित भी नहीं पाय॥32.29॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'न' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

दे

देवाधिदेव जिनदेव हैं, वीतराग-हितकार।

जगत्पूज्य सर्वज्ञ हैं, समदर्शी- सुखकार॥32.30॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'दे' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

व

वतन आप शिवलोक है, कभी न जग में आय।

घृत बन जाए दुग्ध से, पुनः दुग्ध नहीं पाय॥32.31॥

ॐ ह्रीं अर्हं वर्तमानशासननायक 'व' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

दि

दिव्यध्वनि हम भी सुनें, समवशरण जिननाथ।

साक्षात् अरिहन्त लख, शीश नवा नत माथ॥32.32॥

ॐ ह्रीं अर्हं वर्तमानशासननायक 'दि' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

व्

व्ययोत्पाद ध्रुव जान, आतम गुण अविनाश।

केवलज्ञान सूर्य उगे, घाति कर्म चव नाश॥32.33॥

ॐ ह्रीं अर्हं वर्तमानशासननायक 'व्' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

य

यत्न करे जो मुक्ति का, परम यती पहचान।

क्षपक श्रेणि जो चढ़ गए, पाएँ केवलज्ञान॥32.34॥

ॐ ह्रीं अर्हं वर्तमानशासननायक 'य' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

ध्

ध्यान लीन मुनिराज जी, करमन क्षीण कराय।

सत्ता शाश्वत हो सदा, आवागमन नशाय॥32.35॥

ॐ ह्रीं अर्हं वर्तमानशासननायक 'ध्' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

व

वन्दित हैं जिनवर चरण, मिथ्यातम हर वाच।

जिनपद आश्रम ले लिया, आनन्द पावें सांच॥32.36॥

ॐ ह्रीं अर्हं वर्तमानशासननायक 'व' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

निं

निंदा दोष है आत्मा, विस्मय अवगुण जान।

जिन पूजे साता मिले, हो आतम उत्थान॥32.37॥

ॐ ह्रीं अर्हं वर्तमानशासननायक 'निं' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

त

तपन मिटे संसार की, वचन सुनें जिनराय।

निर्मल हो जावे हृदय, जीवन हो सुखदाय॥32.38॥

ॐ ह्रीं अर्हं वर्तमानशासननायक 'त' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

द

कदम कदम पर विघ्न हों, उदय असाता मान।

प्रभु ही तारणहार हैं, जन्म-मरण दुख हान॥32.39॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'द' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

पि

पिच्छी धारी साधुजन, हैं दयालु स्वाधीन।

करते धर्म प्रभावना, त्याग तपस्या लीन॥32.40॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'पि' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

क

कथा व्यथा से है भरी, भव अनन्त दुखकार।

ज्योति जगी अब स्वात्म में, मिली शर्ण सुखकार॥32.41॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'क' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

र्ण

वर्ण स्वर्ण षोडश प्रभो, दो हरियल दो लाल।

दो गोरे दो साँवरे, नमूं नित्य नत भाल॥32.42॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'र्ण' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

यि

अतिशायि चौबिस प्रभो, चौतिस अतिशय वान।

पर आकर्षण रहित हैं, जिनवर सभी महान॥32.43॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'यि' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

तुं

पठितुं गीता आत्म निज, हुआ आज तैयार।

बोधिज्ञान मुझको मिले, हो जाऊँ भव पार॥32.44॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'तुं' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

तु

तुम ही तारणहार हो, तारे भव्य अनेक।

हम भी आए शरण में, प्रकटे हृदय विवेक॥32.45॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'तु' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

भ

भगवन होने की लगन, लगी रहे दिन रैन।

कब विभाव का नाश हो, मिले स्वात्म में चैन॥32.46॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'भ' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

व्

कर्तव्य करते चलें, अधिकारों का ज्ञान।

जीवन जीना हो सहज, स्वाभिमान मन मान॥32.47॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'व्' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

या

त्याज्य विभाव तज दिए, हो स्वभाव सुखदान।

दर्पण केवलज्ञान का, स्वातम का हो भान॥32.48॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'या' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

आ

आस्था से शुद्धात्म हो, शान्ति मिले अपार।

वर्धमान का ध्यान हो, जीव दया उर धार॥32.49॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'आ' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

या

यात्री बन करके चलूँ, नित्य नाथ के पन्थ।

शाश्वतपद को पा सकूँ, जब होऊँ निर्ग्रन्थ॥32.50॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'या' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

न्

पिन्जर सम ये देह है, होना मुझे विदेह।

परम शांति से मैं रहूँ, हो घुटकारा देह॥32.51॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'न्' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

ति

तिरस्कार भव भव सहा, पराधीन दुखपाय।

सिंधु प्रणम्य शर्ण में, निजाधीन सुख आय॥32.52॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'ति' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

ते

ते षट्रस नीरस लगेँ, जो भी प्रभु को ध्याय।

वीतराग जिनधर्म ही, सच्चा सबकोँ भाय॥32.53॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'ते' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

र

रग-रग से बहती प्रभो, अविरल ज्ञानसु धार।

प्रतिपल बढ़ना है हमें, छूट जाए ससांर॥32.54॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'र' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

ति

पति त्रिभुवन के हो तुम्ही, कर्ताभाव न होय।

भवदधि तिरने की कला, जिनवर तुममें होय॥32.55॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'ति' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

व

वसुधा प्रभु विहार लख, पुलकित जीव समाज।

षट् ऋतुओं के फूल फल, आते एकहि साथ॥32.56॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'व' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

शा

शान निराली नाथ की, सबके मन को भाय।

लोक शीश जिय वासकर, ज्ञायक पद पा जाय॥32.57॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'शा' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

द

अभिनंदन योग्य प्रभो, कैसे तुम गुण गाय?

श्रद्धा चक्षु से लखें, बिना पलक झपकाय॥32.58॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'द' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

नु

आत्मानुशासन होय तो, वश होय अक्ष समाज।

जिन शासन में आत्म सब, करें कर्म हित काज॥32.59॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'नु' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

य

यही भावना है सही, हो सुख-शांति निवास।

सब ही जीव समान हैं, जीव दया उर वास॥32.60॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'य' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

न्

जो पंचेन्द्रि विजयी रहे, कर्म हनें दुखकार।

इक - इक इन्द्रि के वशी, बाँधें कर्म अपार॥32.61॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'न्' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

ति

यति सूरि मानतुंग की, भक्ती का चमत्कार।

जन-जन में तब था हुआ, जैन धर्म परचार॥32.62॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'ति' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

हाथ जोड़ करता सदा, वन्दन श्री जिनराज।

निज में ही थिर रह सकूँ, पूरण मम हित काज॥32.63॥

ॐ ह्रीं अर्हं वर्तमानशासननायक 'हा' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...

शास्ता कहलाते प्रभो, जैन धर्म की शान।

कीर्तन करते भक्त जन, धारें गुण अभिमान॥32.64॥

ॐ ह्रीं अर्हं वर्तमानशासननायक 'स' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...

यज्ज्ञानामृत पी लिया, हुए अमर जग आन।

जिनवच सुधा न पी सके, जन्मे-मरे निदान॥32.65॥

ॐ ह्रीं अर्हं वर्तमानशासननायक 'य' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...

अर्हम योग से हो गए, मन विकार सब नष्ट।

निरतिचार चारित्र से, क्षय हों करमन अष्ट॥32.66॥

ॐ ह्रीं अर्हं वर्तमानशासननायक 'म' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...

पूर्णार्ध्य

तीन लोक के ईश तुम, हास्य-रति-द्रुत हीन।

सूनें दिव्य धुनि प्रीत से, हर्षित रति गुण लीन ॥32॥

ॐ ह्रीं दिव्यध्वनि प्रातिहार्य प्रतिपादकाय अर्हं महाबीजाक्षरसहिताय
श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।



शोक विनाशक स्तुति

सामीप्यतोऽप्यरतिशोकमतिं विहाय,
वैडूर्यपत्र - हरिताभ - मणिप्रशाखः।
सम्प्राप्य नाम लभते विटपोऽप्यशोकः,
शोभां नरोऽपि यदि किं तव भक्तितोऽतः ॥33॥

(छन्द सोरठा)

सा

साध्य सिद्धि की आप, मैं साधन में ही रमा।

कब होऊँ निष्पाप, विलय होय तुम में विभो॥33.1॥

ॐ ह्रीं अर्हं वर्तमानशासननायक 'सा' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...

मी

मीणा गूजर जाय, श्री महावीर जी धाम।

दर्शन करने आय, जिन जन जैने तर सभी॥33.2॥

ॐ ह्रीं अर्हं वर्तमानशासननायक 'मी' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...

पू

प्यारे गुरु प्रणम्य, योग प्रणेता है अर्ह।

जिनकी वाणी रम्य, कर्णप्रिय मिश्री घुले॥33.3॥

ॐ ह्रीं अर्हं वर्तमानशासननायक 'पू' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...

य

यत्नाचार विवेक, दीक्षा ले मुनिधारते।

तपते घोर अनेक, आतम शुद्धि हेत ही॥33.4॥

ॐ ह्रीं अर्हं वर्तमानशासननायक 'य' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...

तो

तोष कराते नाथ, जिनवर जीवों के हितू।

प्रभु अनाथ के नाथ, हम पर भी किरपा करें॥33.5॥

ॐ ह्रीं अर्हं वर्तमानशासननायक 'तो' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...

पू

स्वप्न सदा सुखकार, षोडश जिन जननी लखे।

शुभ शुभ शकुन विचार, होंगे सुत तीर्थकरा॥33.6॥

ॐ ह्रीं अर्हं वर्तमानशासननायक 'पू' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...

य

व्यय-उत्पाद विचार, धौव्य सदा आतम कहा।

शक्ति नंत प्रकार, शाश्वत निज में शोभती॥33.7॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'य' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

र

चाकर हूँ मैं नाथ, शरणागत हूँ आपकी।

नत शिर जोड़ूँ हाथ, करिए अब उद्धार मम॥33.8॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'र' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

ति

तिरे दुखद भव सिंधु, चौबीसों जिनराज जी।

नमन करें रवि-इन्दु, शत इन्द्रों से पूज्य हो॥33.9॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'ति' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

शो

वीतशोक हैं आप, दोष अठारह रहित हैं।

जपूँ नाम जिन जाप, सर्व व्याधि मेरी हरो॥33.10॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'शो' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

क

कशती है मैंझाधार, भवदधि पार उतारिए।

करते नाथ पुकार, हो सल्लेखना अन्त में॥33.11॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'क' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

म

मदन विजेता आप, निजाधीन विचरण करें।

सुलभ सभी है पाप, दुर्लभ स्वात्मानुभूति है॥33.12॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'म' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

तिं

कीरतिं अपरम्पार, वैभव जिन परिपूर्ण है।

गुण गरिमा विस्तार, मानो तारों में शशी॥33.13॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'तिं' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

वि

तेरह विध चारित्र, धारें मुनिजन सर्वदा।

आतम होय पवित्र, सन्त शिरोमणि है गुरु॥33.14॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'वि' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

हा

हाय फँसा संसार, भवदुख मेरा प्रभु हरो।

शरणागत स्वीकार, जन्म-मरण दुख नाश हो॥33.15॥

ॐ ह्रीं अर्हं वर्तमानशासननायक 'हा' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...

य

आतम होय विशुद्ध, जब जिन भक्ति हम करें।

जिन धुनि सुन प्रतिबुद्ध, हर्षित होवें जीव सब॥33.16॥

ॐ ह्रीं अर्हं वर्तमानशासननायक 'य' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...

वै

वैभाविक पर्याय, पत्र पत्र जिय वास हो।

नहिं सुभाव में आय, भव भव में भ्रमता फिरे॥33.17॥

ॐ ह्रीं अर्हं वर्तमानशासननायक 'वै' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...

डू

डूब रहा तुम भक्त, भव सागर अति गहन है।

होऊँ न जग आसक्त, वीर चरण छूटे नहीं॥33.18॥

ॐ ह्रीं अर्हं वर्तमानशासननायक 'डू' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...

र्य

आर्य खण्ड जन्माय, पूरब पुण्य प्रताप से।

कुल गोत्र उत्तम पाय, मानुष भव कीजे सफल॥33.19॥

ॐ ह्रीं अर्हं वर्तमानशासननायक 'र्य' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...

प

पथिक बनूँ शिवराह, भाव यही है भक्त का।

शिवपुर की मन चाह, परिषह बाइस भी सहूँ॥33.20॥

ॐ ह्रीं अर्हं वर्तमानशासननायक 'प' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...

त्र

त्रय योग हि शिर नाय, तीर्थकर जिनको नमूँ।

नंत चतुष्टय पाय, आतम वैभव के धनी॥33.21॥

ॐ ह्रीं अर्हं वर्तमानशासननायक 'त्र' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...

ह

हलन-चलन हो नित्य, चेतन-मन वचकाय से।

संवर निर्जर सत्य, कर्म रहित हो आतमा॥33.22॥

ॐ ह्रीं अर्हं वर्तमानशासननायक 'ह' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...

रि

रिपु दुर्जय ये मोह, आतम हित होवे नहीं।

होवें सुखी विमोह, सार यही गुरुवर कहें॥33.23॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'रि' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

ता

तार्किक होवें शान्त, वीतराग छवि दर्शकर।

हो सुज्ञान हि व्याप्त, मंजिल मेरी भी यही॥33.24॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'ता' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

भ

करमन भस्म कराय, शुक्ल ध्यान अगनी जले।

जयवन्तो जिनराय, मिले सिद्ध पद ही मुझे॥33.25॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'भ' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

म

मन वच तन शिर नाय, भाव सहित परमार्थ हित।

आतम धर्म सुहाय, दर्शन-ज्ञान हि आतमा॥33.26॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'म' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

णि

अणिमा ऋद्धि कहाय, अष्ट ऋद्धि-आदिक सभी।

गुण मणि निधियाँ पाय, मुनिजन निस्पृह हि रहें॥33.27॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'णि' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

प्र

ज्ञानी पाएँ प्रबोध, दूर कषायों से हुए।

पूरण आतम शोध, समता से भरपूर हो॥33.28॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'प्र' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

शा

शास्त्रैः ज्ञान उपाय, ज्ञानी निजातम जानते।

जिनगुण गान कराय, केवलज्ञानी हैं प्रभो॥33.29॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'शा' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

खः

महामखः जिनराय, ज्ञान दर्श सुख बल धनी।

हम जिन शरणे आय, निज वैभव हमको मिले॥33.30॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'खः' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

स समरस पीते ज्ञान, स्वातम में सन्तुष्ट जिन।
निराहार भगवान, पूर्णायू तक पुष्ट हों॥33.31॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'स' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

म् गम्य नहीं अज्ञानि, परम योगी को गम्य हो।
जागे कला सुज्ञानि, पूरण केवलज्ञान में॥33.32॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'म्' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

प्रा प्रामाणिक नय मान, जिन धुनि में जिनवर कहें।
निज निज भाषा जान, समकित को धारें सभी॥33.33॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'प्रा' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

प् भोग न लिप्त रहाय, जिनवाणी मन में रमी।
शुभ संयोग उपाय, भवसागर से मैं तिरूँ॥33.34॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'प्' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

य यति ऋषि गणधर आय, जिन के चरणों में झुकें।
निश दिन जिन गुण गाय, कभी नहीं थकते प्रभो॥33.35॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'य' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

ना नाशवान जो द्रव्य, उनसे आप विरक्त हैं।
शाश्वत आतमसत्य, मुनि स्वातम शरणा लहें॥33.36॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'ना' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

म महक रहे गुण नत, स्वातम कानन है खिला।
भ्रमर पिँ मकरंद, भविजिन चरणन सुमन में॥33.37॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'म' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

ल आतम बल प्रकटाय, कर्म हरे जिनराज ने।
शिव अधिपति जिनराय, मेरे हिरदय में बसें॥33.38॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'ल' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

भ

महिमा जिन भगवान, शब्दों में नहीं गा सकें।

गरिमा श्री वर्धमान, दिग् दिगन्त व्यापे प्रभो॥33.39॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'भ' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

ते

जीते अठरह दोष, वर्द्धमान महावीर जिन।

मोह मत्त नहीं होश, कैसे पाऊँ सिद्ध पद॥33.40॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'ते' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

वि

विषयकषाय नशाय, पाने चिन्मय देश को,

प्रभु आशीष वशाय, अष्ट कर्म नाशे गुरो॥33.41॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'वि' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

ट

टरते सर्व विभाव, जब सुभाव की धुन लगे।

है स्वभाव हि नाव, तिरे अथाह भव सिंधु में॥33.42॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'ट' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

पो

पोषण कर जड़ देह, भटक रहा संसार में।

अब त्यागें तन नेह, परम्परा शिवधाम हो॥33.43॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'पो' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

प्

वासना सुप्त कराय, चाह दाह भी नष्ट हो।

धारणा अटल बनाय, जाना है सब छोड़ के॥33.44॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'प्' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

य

सत्य हि धर्म धराय, सच्चा मार्ग बताएँ जिन।

भवदुखहार कहाय, जग जलधि तारक प्रभो॥33.45॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'य' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

शो

हो अशोक जिन वृक्ष, अन्य जनों की बात क्या?

जीतें जिन पन अक्ष, नहीं तुम सम संसार में॥33.46॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'शो' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

कः

गुणनायकः जिनाय, गुणसागर हो नियम से।

तुम गुणगण अपनाय, हमको भी शक्ति मिले॥33.47॥

ॐ ह्रीं अर्हं वर्तमानशासननायक 'कः' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...।

शो

शोक मुक्त हो जीव, जो जिनवर दर्शन करें।

तुम वाणी रस पीव, अजर अमर निजपद लहें॥33.48॥

ॐ ह्रीं अर्हं वर्तमानशासननायक 'शो' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...।

भां

शोभां धरति सुहाय, जिनभक्ति प्रतिदिन करे।

मंगल गीत सुनाय, मगन निजातम में रहे॥33.49॥

ॐ ह्रीं अर्हं वर्तमानशासननायक 'भां' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...।

न

येन केन मुनिराज, तुम दर तक तो आ गया।

हे प्रणम्य महाराज, ज्ञान उजाला दो मुझे॥33.50॥

ॐ ह्रीं अर्हं वर्तमानशासननायक 'न' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...।

रो

भवदुख रोग उपाय, जिन वचनमृत औषधि।

नाममंत्र जिन पाय, स्वस्थ निरामय हो सदा॥33.51॥

ॐ ह्रीं अर्हं वर्तमानशासननायक 'रो' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...।

पि

वचन सुधा पिलवाय, नाथ शरण हम आ गए।

मोह मद नाश कराय, नंत काल से होश ना॥33.52॥

ॐ ह्रीं अर्हं वर्तमानशासननायक 'पि' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...।

य

नियम अल्प भी जान, कारण होता मुक्ति का।

संयम रतन पिछान, साक्षात् शुद्धातम अहो॥33.53॥

ॐ ह्रीं अर्हं वर्तमानशासननायक 'य' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...।

दि

हृदय वेदि पधराय, पद पंकज वर्धमान के।

मन सब मुग्ध कराय, समवशरण जिन राजते॥33.54॥

ॐ ह्रीं अर्हं वर्तमानशासननायक 'दि' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...।

किं कर्तव्य विमूढ़, आया हूँ गुरुवर शरण।

ज्ञान सरल करें गूढ़, कृपा हुई गुरुदेव की॥33.55॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'किं' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

त

तज वैभव संसार, चिन्मय चेतन को लखो।

जब हो मुनि अविकार, निजानन्द रस लीन हो॥33.56॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'त' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

व

वसु विध कर्म नशाय, वसु गुण सिद्धों के नमूं।

सब ही भर्म मिटाय, केवलज्ञान प्रकाश हो॥33.57॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'व' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

भ

पतित भवोदधि माँहि, प्रभुपद ही आधार हैं।

तुम बिन समरथ नाहिं, जिनपद ही सुखकार हों॥33.58॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'भ' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

क्

भक्त इन्द्र हर्षाय, नमन करे जिन पाद में।

श्रावक भी गुण गाय, समकित गुणमणि धारते॥33.59॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'क्' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

ति

तिमिर विनाशक ज्योत,सूर्योदय कैवल्य हो।

हो मम जिय उद्योत, दया करो श्रीवीर जिन॥33.60॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'ति' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

तो

नमूं अनन्तो बार, श्री जिनपद वर्धमान।

जैन धर्म हितकार, नित जिन गुण चिंतन करूं॥33.61॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'तो' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

तः

भवतः मुक्ति उपाय, जिन सिद्धालय वास है।

सुरगण नमन कराय, निर्वाणोत्सव सब करें॥33.62॥

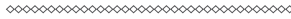
ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'तः' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

पूर्णार्घ्य

शोक - अरति को त्याग कर, तरु भी हुआ अशोक।

जिन समीपता से सभी, शोभित होता लोक ॥33॥

ॐ ह्रीं अशोक तरु प्रातिहार्य प्रतिपादकाय अर्हं महाबीजाक्षरसहिताय
श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।



आत्महत्या विनाशक स्तुति

यान्तिक्वभो! भविजनाभयभीतवश्यात्,
कुर्वन्ति किं निजहतिं च जुगुप्सया वा।
संप्राप्नुवन्त्वभयता - मभय - प्रसिद्-
पाद-द्वयं वदति वादितदुन्दुभिस्ते ॥34॥

(छन्द ज्ञानोदय)

या

याद नहीं इक भव की बातें, नंत भवों की क्या जानें?

हक की बातें याद रहें बस, कर्तव्य नहीं पहचानें॥34.1॥

ॐ ह्रीं अर्हं वर्तमानशासननायक 'या' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...।

न्

मन्द गति से चल कर भी हम, कभी तो मुक्ति पाएँगे!

चढ़ कर सम्यग्दर्शन सीढ़ी, आत्म भावना भाएँगे॥34.2॥

ॐ ह्रीं अर्हं वर्तमानशासननायक 'न्' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...।

ति

रति-अरति से विरहित स्वामी, दोष अठारह मुक्त हुए।

शुक्लध्यान में लीन आत्मा, गुण अनन्त संयुक्त हुए॥34.3॥

ॐ ह्रीं अर्हं वर्तमानशासननायक 'ति' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...।

क्

अमर भक्त जन हो जाते हैं, स्तोत्र पढ़ें जो सुखदायी।

उनके जीवन में भी आती, समरसता मंगलदायी॥34.4॥

ॐ ह्रीं अर्हं वर्तमानशासननायक 'क्' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...।

व

वक्त बदलता है सब का ही, रंक भी राजा बन जाता।

उदय पाप का आ जाए तो, देव - श्वान भी हो जाता॥34.5॥

ॐ ह्रीं अर्हं वर्तमानशासननायक 'व' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...।

भो

प्रभो! आप शिवपुर के बासी, भटक रहा हूँ मैं जग मे।

अब निज भूल समझ में आई, बँधा हुआ क्यों बंधन में॥34.6॥

ॐ ह्रीं अर्हं वर्तमानशासननायक 'भो' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...।

भ

भक्तवीर के अनुयायी है, जिन-आज्ञा पालन करते।

जियो और जीने दो सबको, जिन- सन्देश सुना देते॥34.7॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'भ' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

वि

विद्या विनय प्रदाता जानो, सबको योग्य बनाती है।

योग्यता से धन प्राप्ति हो, धन से समृद्धि आती है॥34.8॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'वि' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

ज

जननी - जन्मभूमि दोनों ही, हों महान स्वर्गों से भी।

हम कर्ज़ न इनका चुका सके, ये शान हैं अपने जीवन की॥34.9॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'ज' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

ना

नारी पूजा होय जहाँ, वहाँ देवों का वासा हो।

सुख सम्पत्ति रहे सदा ही, पूरी सबकी आशा हो॥34.10॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'ना' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

भ

भक्तों को भगवान मिले हैं, भगवन्तों की कृपा मिली।

हुए सभी वे पूर्ण सुखी तो, सबके दिल की कली खिली॥34.11॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'भ' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

य

यही भावना सब के मन की, भारत देश चमन होवे।

हो मतभेद सभी में चाहे, पर मनभेद नहीं होवे॥34.12॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'य' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

भी

नहिं भीड़ का धर्म कोई हो, जो बोले नेता हो जाए।

कहें मारना तो मारें सब, कहें बचाओ तो बच जाए॥34.13॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'भी' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

त

तप संयम के द्वारा स्वामी, अष्ट कर्म को नष्ट किया।

जिसने शरण नाथ की पाई, उसने स्वातम लाभ लिया॥34.14॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'त' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

व

वरण करें चाहें लक्ष्मी का, लक्ष्मी पास न आती है।

त्याग करें जो भी लक्ष्मी का, पीछे-पीछे आती है॥34.15॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'व' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

श

कश्चित् दुखी न होवे जग में, सुख शांति सबके घर हो।

साढ़े पांच क्रोड़ के लगभग, रोग किसी के तन नहिं हो॥34.16॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'श' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

या

यादें कितनी खट्टी-मीठी, पीछा नहीं छोड़ती हैं।

आने पर ससुराल में लड़की, पीहर याद में रोती है॥34.17॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'या' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

त्

त्वत् नाम कथा भी जीवों के, भवसन्तापों को हर लेती।

स्तुति करें जो नाथ आपकी, उनको तो सब सुख देती॥34.18॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'त्' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

कु

कुमति विनाशक ज्ञान ज्योति जो, भविजन जलज खिलाती है।

धर्म दिवाकर वीर की वाणी, ज्ञान की प्यास बुझाती है॥34.19॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'कु' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

र्व

सर्व पर्व में अष्टाह्निक ही, सबसे बड़े कहाते हैं।

नन्दीश्वर जिनदेव विराजें, थापना यहाँ कराते हैं॥34.20॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'र्व' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

न्

हिन्दी हमारी मातृ भाषा, उस पर गर्व न होता है।

पढ़ें चार अक्षर अंग्रेजी, भारतीय खुश होता है॥34.21॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'न्' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

ति

तिर्यक् लोक मध्य में रहते, हम सब भरत क्षेत्र में ही।

हम उत्पन्न हुए भारत में, है अपना पुण्योदय ही॥34.22॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'ति' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

किं

धर्म अकिंचन पालें सब ही, कर्म क्षीण हो जाते हैं।

स्वातम में रम कर ही अपने, स्वानुभूति कर पाते हैं॥34.23॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'किं' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

नि

हो निमग्न प्रभु कीर्तन में, मुझको परमानन्द हुआ।

भाव सहित जो करें क्रिया तो, उन्हें असीमानन्द हुआ॥34.24॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'नि' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

ज

जग तन भोग असार जान भवि, मन संवेग उमड़ता है।

घर - परिवार का मोह त्याग वह, दीक्षा धारण करता है॥34.25॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'ज' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

ह

हम सब का हो लक्ष्य एक ही, अब तो निज घर जाना है।

भव - भव भ्रमण करें कितना भी, शाश्वत मोक्ष ठिकाना है॥34.26॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'ह' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

तिं

कीरतिं पाकर के यदि कोई, अभिमानी हो जाता है।

तो उसका यह दोष ही केवल, नीचे उसे गिराता है॥34.27॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'तिं' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

च

चन्द्र इन्द्र सूरज प्रतीन्द्र है, ज्योतिषी देव कहे जाते।

मूल शरीर रहे विमान में, विक्रिया मे आते जाते॥34.28॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'च' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

जु

बँधे कर्म रज्जु से कस के, तन से चेतन निकले ना।

रहे तड़पता आतम तन में, आयु से पहले छूटे ना॥34.29॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'जु' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

गु

गुण गायन करने को प्रभु के, जो हर पल तैयार रहें।

वे मुनि आतम गुण प्रकटाते, तप तपते परीषह सहें॥34.30॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'गु' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

पू

गुप्त मार्ग है तालु रन्ध्र में, दशम द्वार कहलाता है।

साधक प्राण साधना बल से, इसी द्वार से जाता है॥34.31॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'पू' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

स

समवशरण में श्री जिनराजा, पदमासन में राज रहे।

भगवन एक मुखी होते हैं, चतुर्दिशा में दर्श रहे॥34.32॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'स' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

या

याद रहे यदि कष्ट गर्भका, अथवा जन्म समय पाता।

तो फिर ये जिय देह तपा कर, कर्म मलों को धो जाता॥34.33॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'या' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

वा

वायु समान निः संग हमारे, साधु-सन्त स्वाधीन सदा।

भाव घरे एकत्व का वे तो, आत्मलीन- च्युत नहीं कदा॥34.34॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'वा' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

स

समवशरण के बारह कोठे, मध्य वीर की सभा लगी।

दिव्यध्वनि सुनकर जिनवर की, भविजन मन चेतना जगी॥34.35॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'स' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

म्

बोध गम्य नहि हो जिनवाणी, ज्ञानावरणी कर्म रहे।

नशें घातिया कर्म चार तो, मुनिवर केवलज्ञान लहे॥34.36॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'म्' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

प्रा

प्राणों के आधार हमारे, पंच परम परमेष्ठि हैं।

देव-शास्त्र-गुरु रक्षा में तन, करे निछावर सृष्टि है॥34.37॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'प्रा' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

पू

है विपाप्मा नाम नाथ का, श्रद्धा से जिनपद पूजें।

भक्ति शक्ति से सहस नाम की, भव्यों के सब अघ धूजें॥34.38॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'पू' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

नु

अनुमोदन करते हैं हम भी, पात्र दान शुचि देने का।
होय निहार-विहार-अहारा, करपात्री हो लेने का॥34.39॥
ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'नु' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...

व

करें वन्दना कृत्रिमा कृत्रिम, चैत्य-चैत्यालय सदा।
हो उपयोग भजन-पूजन में, लोक में भटकें नहीं कदा॥34.40॥
ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'व' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...

न्

वन्दे भगवन वर्धमान को, तीन काल तिहुँ योग लगाए।
जिन गुण गायन में डूबें हम, तो जग सिंधु सहज तिर जाए॥34.41॥
ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'न्' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...

त्

त्वम् स्तवन से मन हर्षाता, गद्गद कण्ठ हो जाता है।
पूजन - भजन करें तो स्वामी! ज्ञानामृत बरसाता है॥34.42॥
ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'त्' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...

व

वन भवनों के वासी सब ही, ध्यान साधना करते हैं।
करें समर्पण सभी नाथ को, पल-पल नाम सुमरते हैं॥34.43॥
ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'व' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...

भ

भय मुक्त रहते भक्त सदा ही, जो जिन भक्ति करते हैं।
पूजा-पूज्य बना देती है, पूजक भव सुख भरते हैं॥34.44॥
ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'भ' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...

य

यश-ख्याति के पाने को जो, दे देते हैं दान यहाँ।
आतम हित नहीं होता उनका, पर भव में भी फल न वहाँ॥34.45॥
ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'य' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...

ता

ताला लगा न नव द्वारों पर, फिर भी चेतन कैद रहा।
सही दिशा पुरुषार्थ करे तो, समय एक- आज्ञाद हुआ॥34.46॥
ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'ता' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...

म

प्रथम आपने समकित लीना, ज्ञान-चरित भी अपनाया।

रत्नत्रय के महातेज का, दर्शन करने मैं आया॥34.47॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'म' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

भ

भद्र भाव हों जिन जीवों के, वे भी भगवन बन सकते।

करें दिखावा धर्म भाव जो, वे ही भव भव में रुलते॥34.48॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'भ' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

य

यतियों के भी नाथ तुम्हीं हो, वर्धमान मेरे स्वामी।

करें प्रार्थना आशिष दे दो, हम भी होवें शिवगामी॥34.49॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'य' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

प्र

है प्रमाण सम्यक् जिनवाणी, परम्परा मौखिक आई।

भूतबली अरु पुष्पदन्त ने, रचना आगम दरशाई॥34.50॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'प्र' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

सि

सिद्धि हो अब शुद्ध भाव की, नहीं विकारी हृदय कदा।

अब विश्राम लहूँ निज पद में, शुद्ध सिद्ध ही रहूँ सदा॥34.51॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'सि' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

द्ध

बुद्धया बिना जिन स्तुति करने, स्वामी मैं तैयार हुआ।

हास्य धाम हूँ विद्वानों को, भक्ती से लाचार हुआ॥34.52॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'द्ध' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

पा

पादपद्मों श्री जिनके, नित्य अर्चना करते हैं।

अन्त समय सल्लेखन धारें, यही भावना करते हैं॥34.53॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'पा' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

द

दमन करें जो इच्छाओं का, श्रेष्ठ गुणों को पा लेते।

चलें निराकुल चरित मार्ग जो, निज सुभाव में आ जाते॥34.54॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'द' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

द्व

द्वय कर जोड़ नमूँ जिनवर को, देव त्रिलोकीनाथ कहे।

उनके चरणों में ही झूमें, मेरा मन दिन रैन रहे॥34.55॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'द्व' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

यं

यं जिनवर को ध्याते निश दिन, बिगड़े काम सुधर जाते।

सरल होय मन वच तन उनके, मुक्ति राह पर आ जाते॥34.56॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'यं' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

व

वश में करके इन्द्रिय - मन को, कर्म महागिरी चूर हुए।

जो भी प्रभु की शरण में आया, उसके सब दुख दूर हुए॥34.57॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'व' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

द

मदन भी हारा प्रभु आपसे, दुर्बल के मन बैठ गया।

प्रभु प्रभाव सन्मुख मन्मथ भी, निर्बल अरु निस्तेज हुआ॥34.58॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'द' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

ति

तिरस्कार ही हुआ है मेरा, कारण मेरे पापों के।

भगवन अब तो सन्मति दे दो, बंध मिटें दुष्करमों के॥34.59॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'ति' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

वा

वात पित्त कफ़ देह प्रकृति, साधु से प्रकृति पूछें।

हित मित रित दें साधू अहारा, साधु स्वास्थ्य उत्तम सूझे॥34.60॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'वा' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

दि

दिग् दिगन्त में नाद गूँजता, दिव्यध्वनि का इस जग में।

मागध देव प्रसारित करते, चहुँ दिशि इक इक योजन में॥34.61॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'दि' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

त

तत्त्वों का हम करें चिंतवन, द्रव्यों का स्वरूप जानें।

मोह तजें फिर पर द्रव्यों का, आत्म तत्त्व को सरधानें॥34.62॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'त' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

दुष्कर्मों के परिहर्ता प्रभो, जिन शासन भवि तुष्ट रहें।

अमृत सम जिन धुनि आपकी, भक्त जनों को पुष्ट करे॥34.63॥

ॐ ह्रीं अर्हं वर्तमानशासननायक 'द' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...

नन्हा सा मैं भक्त आपका, ऋषि मुनियों सी भक्ति नहीं।

मन्द बुद्धि हूँ भगवन मैं तो, तव गुण गायन शक्ति नहीं॥34.64॥

ॐ ह्रीं अर्हं वर्तमानशासननायक 'न' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...

दुर्भग कर्म प्रकृति उदय में, सुभग नहीं आ पाती है।

भक्त करे गुणगान नाथ का, तो साता हो जाती है॥34.65॥

ॐ ह्रीं अर्हं वर्तमानशासननायक 'द' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...

भिन्न भिन्न हैं जड़ चेतन तो, क्षीर-नीर सम एक लगें।

जो सुभाव जानें दोनों का, तो अज्ञान भी तुरत भगे॥34.66॥

ॐ ह्रीं अर्हं वर्तमानशासननायक 'भि' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...

स्पर्शी हृदि ज्ञान नाथ का, जड़-चेतन सब जान रहे।

इसीलिए तो सभी आप को, केवलज्ञानी मान रहे॥34.67॥

ॐ ह्रीं अर्हं वर्तमानशासननायक 'स' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्यम्...

तेरा-मेरा करते करते, काल अनंत गँवाया है।

अपनापन लगता प्रभुवर में, भक्त शरण में आया है॥34.68॥

ॐ ह्रीं अर्हं वर्तमानशासननायक 'ते' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...

पूर्णार्ध्य

ग्लानि-भीत हो भव्यजन, क्यों करते अपघात।

देव दुन्दुभि दे अभय, शरण गहो जिन आप्त ॥34॥

ॐ ह्रीं दुन्दभि प्रतिहार्य प्रतिपादकाय अर्हं महाबीजाक्षरसहिताय
श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कामवेदना नाशक स्तुति

पुष्पाणि सन्ति सकलानि नपुंसकानि,
हर्षन्ति तानि वनिता-नर-संगयोगात्।
कामस्त्रिवेदसहितः पततीह कामं,
देवेन्द्रपुष्प - पतनाच्छलतोऽभिमन्ये ॥35॥

(छन्द दोहा)

पु

पुष्पदन्त औ भूतबलि, रचे ग्रंथ षट् खण्ड।
चक्री आर्य-म्लेच्छ भू, ज्यों जीतें षट् खण्ड॥35.1॥

ॐ ह्रीं अर्हं वर्तमानशासननायक 'पु' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...।

ष

अष्टम वसुधा पाएँ हम, अरज करें जिनराज।
अपना नेम निभाइये, आए निज हित काज॥35.2॥

ॐ ह्रीं अर्हं वर्तमानशासननायक 'ष' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...।

पा

पारसपद पारस कहे, जो भी झुकता आय।
उसकी बुद्धि शुद्धि हो, चारित से तिर जाय॥35.3॥

ॐ ह्रीं अर्हं वर्तमानशासननायक 'पा' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...।

णि

णिज्जर-संवर से हुआ, संचित कर्म विनाश।
यथा ख्यात चारित्र से, हो सिद्धालय वास॥35.4॥

ॐ ह्रीं अर्हं वर्तमानशासननायक 'णि' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...।

स

सत्ता अपनी जानकर, पाया सिद्ध स्वरूप।
निज स्वरूप पहचान से, हुए स्वयं शिव भूप॥35.5॥

ॐ ह्रीं अर्हं वर्तमानशासननायक 'स' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...।

न्

सन्मारग चलना मुझे, गुरुने दिया सिखाय।
नाम नाथ का ही जपूं, मन वच काय लगाय॥35.6॥

ॐ ह्रीं अर्हं वर्तमानशासननायक 'न्' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...।

ति

तिरे स्वयं तारे प्रभो, भवदधि पार अनेक।

तुम अनुयायी तिर गए, घारें हृदय विवेक॥35.7॥

ॐ ह्रीं अर्हं वर्तमानशासननायक 'ति' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...।

स

सत् पथ दर्शायक प्रभो! मम तम हरो अज्ञान।

मेरे अन्तर में प्रभो, ज्योती भरो सुज्ञान॥35.8॥

ॐ ह्रीं अर्हं वर्तमानशासननायक 'स' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...।

क

कर्म मलों से मुक्त हो, शिव सुन्दर पहचान।

पापों से मैं हूँ मलिन, करो मेरा कल्याण॥35.9॥

ॐ ह्रीं अर्हं वर्तमानशासननायक 'क' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...।

ला

कला बहत्तर पुरुष की, ता में दो सरदार।

एक जीव की जीविका, दूजा जीवोद्धार॥35.10॥

ॐ ह्रीं अर्हं वर्तमानशासननायक 'ला' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...।

नि

पुनि आएँ नहीं लोक में, सिद्ध शुद्ध अविरुद्ध।

सिद्ध शिला पर ही रहें, घृत सम नाथ विशुद्ध॥35.11॥

ॐ ह्रीं अर्हं वर्तमानशासननायक 'नि' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...।

न

आनन्द-अमृत रस पियो, गुरुजन दें आशीष।

मात पिता सेवा में सुत, गुरुपद में नत शीश॥35.12॥

ॐ ह्रीं अर्हं वर्तमानशासननायक 'न' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...।

पुं

होय नपुंसक जीव वे, जो कामी कुख्यात।

नर-नारी में ही रमें, हों कुकर्म भी साथ॥35.13॥

ॐ ह्रीं अर्हं वर्तमानशासननायक 'पुं' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...।

स

सच्ची श्रद्धा धार हृदय, भविजन हो भव पार।

कष्ट नष्ट होते सभी, जपें जाप अविकार॥35.14॥

ॐ ह्रीं अर्हं वर्तमानशासननायक 'स' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...।

का

कर्म कालिमा नाशकर, पावन होय स्वात्म।

गुणस्थान तेरह हुआ, हुए नाथ सकलात्म॥35.15॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'का' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...

नि

निर्मद होकर आचरें, ज्ञानी विनयी महान।

हो प्रसिद्ध जग में सदा, चर्चा स्वर्ग विमान॥35.16॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'नि' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...

ह

हर लेती छवि नाथ की, सबके मन के ताप।

मैं भी भव से त्रस्त हूँ, हरो मेरे सन्ताप॥35.17॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'ह' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...

र्ष

हर्ष भाव धारें सभी, हो अभ्युदय जिनराज।

हम पर भी कर दो कृपा, चरित धरें हितकाज॥35.18॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'र्ष' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...

न्

शिवकान्ता ब्याहने चले, अष्ट कर्म कर नाश।

इन्द्रादिक पूजें प्रभो, जब हो ज्ञान प्रकाश॥35.19॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'न्' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...

ति

कर्म घातिया क्षय किए, पाया केवलज्ञान।

जब अघातिया क्षय हुए, सिद्ध हुए भगवान॥35.20॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'ति' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...

ता

अद्यता क्षय करते सभी, मम जिनदेव अनूप।

भवसागर तट ले चलो, केवलज्ञानी भूप॥35.21॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'ता' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...

नि

निर्मद प्रभु से मोह तो, रमे निजातम माँहि।

भेद ज्ञान हम पा सके, फँसे लोक में नाहिं॥35.22॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'नि' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...

व वर्चस्व भारी नाथ का, त्रिभुवन के हितकार।
क्षेमंकर भी आप हो, अजर अमर अविकार॥35.23॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'व' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...

नि निरुपम हैं महावीर जिन, उपमाओं से दूर।
मेरे हिरदय आप हो, करो पाप चकचूर॥35.24॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'नि' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...

ता तारागण से युक्त ज्यों, शोभमान हो चन्द्र।
शिष्यों से आवृत्त यों, विद्या सिंधु मुनीन्द्र॥35.25॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'ता' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...

न नम्री भूत मम उर रहें, पाद प्रणम्य मुनीश।
तीन काल तिहुँ योग से, वन्दन नित नत शीश॥35.26॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'न' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...

र रथ चलता जब नाथ का, नगर भ्रमण सुखकार।
श्रावक-श्रमण चलें सभी, होवे जय-जयकार॥35.27॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'र' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...

सं संस्कार जिनको मिलें, वे सज्जन हितकार।
यथाशक्ति जो दान दें, करें लोक उपकार॥35.28॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'सं' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...

ग गरिमामय व्यक्तित्व हो, मुख पर तेज अपार।
दर्शन जिनका हो शगुन, पालें सद्-आचार॥35.29॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'ग' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...

यो योनि सचित्ताचित्त उष्ण, संवृत्त-विवृत्त शीत।
सचित्ताचित्त-शीतोष्ण, संवृत्तविवृत्त मीत॥35.30॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'यो' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...

गा

गाऊँ होकर मुदित मैं, वर्धमान गुणगान।

करूँ समर्पण आपको, तन मन धन सब जान॥35.31॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'गा' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...

त

साक्षात् श्री अरिहन्तजिन, राजें क्षेत्र विदेह।

विद्यमान विंशति प्रभु, पूजूँ धरूँ सनेह॥35.32॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'त' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...

का

काम भोग निस्सार जग, निज रस है, सुखकार।

जयवन्तो वर्धमान जिन, मम उर हो अविकार॥35.33॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'का' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...

म

महागुणी महावीर के, चरणों जोड़ूँ हाथ।

श्री महावीर जी मैं नमूँ, कर पर धर कर माथ॥35.34॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'म' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...

स्

उपास्य मेरे वीर हैं, मैं हूँ उनका दास।

पावापुर वर्धमान जिन, नमूँ - मुक्ति की आस॥35.35॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'स्' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...

त्रि

त्रिभुवन में परमात्मा, रहे चराचर जान।

प्रामाणिक जिनवर वचन, रहे जगत जन मान॥35.36॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'त्रि' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...

वे

वे जनजीवन में सफल, जो जिनेश के भक्त।

भेद ज्ञान जिनको हुआ, नहिं विषयन आसक्त॥35.37॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'वे' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...

द

दश प्राणों से रहित जो, सहित चेतना प्राण।

सुख अनन्त रस पी रहे, परम सिद्ध भगवान॥35.38॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'द' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...

स समयसार श्री कुन्द का, कुन्दन के हि समान।

पठन-श्रवण अरू मनन से, मुनि हों गुण की खान॥35.39॥
ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'स' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

हि हिरदय में मेरे बसें, विद्या सिंधु मुनीश।

जब चाहे दर्शन करूँ, बन्द नयन नत शीश॥35.40॥
ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'हि' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

तः अतः पूजते भाव से, जिन भक्ती अनुसार।

प्रभु भक्ति की नाव पर, चढ़ कर उतरूँ पार॥35.41॥
ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'तः' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

प रूप आपका शान्त है, शांति मिले प्रभु मोय।

केवलज्ञान उद्योत कर, जिनप्रभु अर्हत होय॥35.42॥
ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'प' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

त तत्त्व ज्ञान जिन दे दिया, करें नाथ गुणगान।

सन्मति ही आराध्य मम, करें वीर जिन ध्यान॥35.43॥
ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'त' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

ती तीर्थकर चौबीस हों, कल्पकाल में एक।

ऐसी चौबीसी यहाँ, अब तक हुई अनेक॥35.44॥
ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'ती' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

ह हर्षित जिन दर्शन करें, पाँ नज का ज्ञान।

कर्म मलों को धोय कर, भक्त बने भगवान॥35.45॥
ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'ह' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

का काया दहित है सिद्ध गण, ज्ञान शरीरी नाथ।

सिद्धों की करें अरचना, होंवें सकल सनाथ॥35.46॥
ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'का' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

मं

मंगलमय मंगल वचन, मंगल जिन युगपाद।

जो गुरु संगति नित करे,मिलता आतम स्वाद॥35.47॥

ॐ ह्रीं अर्हं वर्तमानशासननायक 'मं' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...।

दे

आएँ देश विदेश से, पाएँ जिनवर दर्श।

बाहुबली के दर्श से, यात्रीगण मन हर्ष॥35.48॥

ॐ ह्रीं अर्हं वर्तमानशासननायक 'दे' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...।

वे

वे ही बड़े कहाँ जे, करते दान अपार।

दान्या सो भोग्या कहा, बढ़ते पुण्य हज़ार॥35.49॥

ॐ ह्रीं अर्हं वर्तमानशासननायक 'वे' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...।

न

मन मन्दिर में आपको, पधराऊं भगवान।

भजन करूँ मैं रात दिन,करो मेरा कल्याण॥35.50॥

ॐ ह्रीं अर्हं वर्तमानशासननायक 'न' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...।

द्र

रौद्र ध्यान था रुद्र का, करता सबसे युद्ध।

पिता सात्यकि चरण में, हुआ साधु प्रतिबुद्ध॥35.51॥

ॐ ह्रीं अर्हं वर्तमानशासननायक 'द्र' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...।

पु

पुत्र गुणी-दुनिया कहे, मात-पिता है कौन?

मात-पिता से पूछते, हर्षित हों वे मौन॥35.52॥

ॐ ह्रीं अर्हं वर्तमानशासननायक 'पु' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...।

ष्

पुष्प सुबह खिलता मगर,मुरझाए हो शाम।

यों ही जीवन सन्त का, हो लघु - उत्तम काम॥35.53॥

ॐ ह्रीं अर्हं वर्तमानशासननायक 'ष्' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...।

प

परम पूत है नाथ का,चेतन अनुपम - लोक।

नहिं जिनवर सम कोई है,उपमा नहीं त्रिलोक॥35.54॥

ॐ ह्रीं अर्हं वर्तमानशासननायक 'प' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...।

प

भाव पवित्र हो भक्त के, होय स्वात्म स्पर्श।

करें भविकजन भक्ति से, नाथ आपका दर्श॥35.55॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'प' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

त

तप से होती निर्जरा, तप है संयम नाव।

तिरें भव्य भवसिंधु को, होय विशुद्ध सुभाव॥35.56॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'त' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

ना

नाभेय कहाए आप ही, नाभि राय सुत बुद्ध।

मात-पिता व्यवहार है, निश्चय चेतन शुद्ध॥35.57॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'ना' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

च्

उच्चासन दे साधु को, सादर करें सत्कार।

पूजा, त्रिशुद्धि बोलकर, विनती करें, अहार॥35.58॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'च्' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

छ

क्रोध लोभ छल मान में, हैं अति निम्न कषाय।

निन्दा करते साथ में, नीच गोत्र कुल पाय॥35.59॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'छ' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

ल

बल आतम से दूर की, सेना कर्म विशाल।

वीतराग भगवान को, नित्य नवाऊँ भाल॥35.60॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'ल' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

तो

तोय-क्षीर की दोस्ती, सबसे बड़ी मिसाल।

दूध उबले जल छींट दो, शान्त होय तत्काल॥35.61॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'तो' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

भि

बहुभि भक्त प्रभु पूजते, किन्तु प्रभु निजलीन।

मन वच तन के बल प्रभु, करें कर्म को क्षीण॥35.62॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'भि' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

ममता तज समता भजें, करें मोह का नाश।

राग द्वेष को त्याग दें, होवे ज्ञान प्रकाश॥35.63॥

नन्त दुखों को प्राप्त हो, पर द्रव्यों से राग।

दुख का कारण पाप है, तजें पाप-वैराग ॥35.64॥

ध्येय रहा शिवपुर मेरा, जाना है भव पार।

चौबिस जिन आदर्श मम,उनसे करूं पुकार॥35.65॥

ॐ ह्रीं अर्हं वर्तमानशासननायक 'ये' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...

पूर्णार्ध्य

तीन वेद नर - नारि अक, पुष्प सुदृष्टि होय।

पुष्प वृष्टि के *व्याज मनु, काम पतित ही होय ॥35॥

ॐ ह्रीं पुष्पवृष्टि प्रतिहार्य प्रतिपादकाय अर्ह महाबीजाक्षरसहिताय
श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

***व्याज - माने बहाने से**

भू सम्पदादायी स्तुति

तीर्थकर - प्रकृतिपुण्य - वशेनभूम-

दृष्टाऽतिकान्त-मणिकाभरणैक-कान्ता।

स्वच्छा च भावनसुरैर्विहितोपकारा,

धान्यादि-पुष्पविभवै-हंसतीव नारी॥36॥

(छन्द विष्णुपद)

ती

तीन लोक के आभूषण हैं, वर्धमान जिनराजा।

परम शान्त सुन्दर अणु निर्मित, देह महान विराजा॥36.1॥

ॐ ह्रीं अर्हं वर्तमानशासननायक 'ती' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...

र्थ

तीर्थकर ने सब जीवों को, शिवपथ था दरशाया।

इन्द्राज्ञा से सुरशिल्पी ने, समवशरण रचवाया॥36.2॥

ॐ ह्रीं अर्हं वर्तमानशासननायक 'र्थ' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...

क

कथा हमारी है दुखकारी, भव-भव दुख उठाएं।

आज आपका आश्रय पाकर, आतम मगन रहाएं॥36.3॥

ॐ ह्रीं अर्हं वर्तमानशासननायक 'क' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...

र

रति-अरति से मुक्त हुए प्रभु, भक्तों के मन राजें।

रत्नजडित सिंहासन पर चतु, अंगुल अधर विराजें॥36.4॥

ॐ ह्रीं अर्हं वर्तमानशासननायक 'र' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...

प्र

सुप्रभात की स्वर्ण किरण सम, वर्धमान का शरणा।

मुक्ति रमा की प्राप्ति हेतु ही, करें कर्म का क्षरणा॥36.5॥

ॐ ह्रीं अर्हं वर्तमानशासननायक 'प्र' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...

कृ

कृत्य हमारे हों मनभावन, जग में अशेषा।

इस जग से जाने के बाद भी, रहता नाम विशेषा॥36.6॥

ॐ ह्रीं अर्हं वर्तमानशासननायक 'कृ' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...

ति

जगत्पति परमेश्वर को मै, नित प्रति शीश झुकाऊं।

नारी भव में यही भावना, निज में रमण कराऊं॥36.7॥

ॐ ह्रीं अर्हं वर्तमानशासननायक 'ति' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...।

पु

पुरुष करें पुरुषार्थ सदा ही, आतम हित कर लेते।

नर भव पा कर के जीवन को, सफली भूत बनाते॥36.8॥

ॐ ह्रीं अर्हं वर्तमानशासननायक 'पु' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...।

ण्

दण्ड मिले अपने पापों का, जो पहले कर आए।

तो वे पाप करें ना ऐसे, अन्त में जो पछताएं॥36.9॥

ॐ ह्रीं अर्हं वर्तमानशासननायक 'ण्' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...।

य

यम-नियमों से व्रत पालें तो, होय आत्म कल्याणा।

धागा पिरा हो सुई ज्यों खोय, मिले स्वयं निष्कामा॥36.10॥

ॐ ह्रीं अर्हं वर्तमानशासननायक 'य' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...।

व

वक्र बुद्धि से इस जीवन में, करें न कोई काजा।

सफल होय सब काम हमारे, ध्याये जिनवर राजा॥36.11॥

ॐ ह्रीं अर्हं वर्तमानशासननायक 'व' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...।

शे

शेर अरु चीते शूकर कूकर, हिंसक पशु कहाते।

पहले मानुष भव में भी, वे निशिभोजन ही खाते॥36.12॥

ॐ ह्रीं अर्हं वर्तमानशासननायक 'शे' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...।

न

वरदान-शाप अपने भक्तों को, कभी न दें जिनदेवा।

ना ही करते राग-द्वेष वे, मिले सदा सुख मेवा॥36.13॥

ॐ ह्रीं अर्हं वर्तमानशासननायक 'न' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...।

भू

भूमण्डल में ज्ञान की ज्योति, प्रभु ने पुनः जगाई।

विद्यासागर गुरु-शिष्यों ने, धर्म ध्वजा फहराई॥36.14॥

ॐ ह्रीं अर्हं वर्तमानशासननायक 'भू' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...।

मि

मिलता है सत्संग संत तो, चेतना मन की जागे।

आत्म रमण का भाव रहे नित, प्रवृत्ति पाप की भागे॥36.15॥

ॐ ह्रीं अर्हं वर्तमानशासननायक 'मि' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

दृ

अतिदृष्टा है ये चेतन, जो स्वानुभूति करावे।

हम भी अपने मन को जीत कर, पंचेन्द्रियाँ हरावें॥36.16॥

ॐ ह्रीं अर्हं वर्तमानशासननायक 'दृ' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

ष

अष्ट द्रव्य का थाल लेकर, इन्द्र लाएँ परिवारा।

करते नित जिनवर की पूजा, भरें पुण्य भण्डारा॥36.17॥

ॐ ह्रीं अर्हं वर्तमानशासननायक 'ष' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

टा

टाल सकें तो टाल लें सब ही, मन से राग कषाएं।

अज्ञानी जन धंसे कीच में, विषयाशा न नशाएं॥36.18॥

ॐ ह्रीं अर्हं वर्तमानशासननायक 'टा' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

ति

तिमिर हरे सब मोह का गुरुवर, देते हैं उपदेशा।

"जियो और जीने दो सबको", जग को दें सन्देशा॥36.19॥

ॐ ह्रीं अर्हं वर्तमानशासननायक 'ति' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

का

काणा तो दर्पण में लखकर, राग से मूँछ मरोड़े।

वैरागी स्वाधीन होय कर, घर परिवार को छोड़े॥36.20॥

ॐ ह्रीं अर्हं वर्तमानशासननायक 'का' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

नू

बन्द करें अपने दो नयना, अन्तर भाव निहारें।

जीवित हैं अपने अन्दर जो, आतम देव निखारें॥36.21॥

ॐ ह्रीं अर्हं वर्तमानशासननायक 'नू' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

त

तनिक परिग्रह रखने से भी, नित्य विकल्प सताते।

एक लंगोटी से भी जग में, कितने घर बस जाते॥36.22॥

ॐ ह्रीं अर्हं वर्तमानशासननायक 'त' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

म

महावीर ने पुरुषारथ से, किया कर्म का नाश।

समता धरा हिरदय में होता, आतम ज्ञान प्रकाशा॥36.23॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'म' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

णि

गुण मणि धारें हृदय साधु जब, गुणसागर कहलाएं।

गुण सागर सामीप्य से मन के, सब कल्मष धुल जाएं॥36.24॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'णि' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

का

मिटे कालिमा कर्मों की तो, उज्ज्वल भाव रहाएं।

धीरे धीरे शुद्ध हो आतम, अन्त सौख्य शिव पाएं॥36.25॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'का' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

भ

भक्त बने भगवान स्वयं यह, दर्शन जिनवर पावे।

जिनवर भी दीक्षा ले पाते, शिवपुर वास करावे॥36.26॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'भ' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

र

रमते हैं जो आतम कानन, बाहर ना वे जाते।

वे ही केवलज्ञानी होकर, निज पद को ले पाते॥36.27॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'र' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

जै

वर्ण श्री चौबीस के सोलह, समान जिनेशा।

दो गोरे दो हरे सांवरे, दो हों लाल विशेषा॥36.28॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'जै' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

क

करनी जो सो ही भरे वो, कर्म सिद्धान्त कहावें।

जो जन समकित धारण करते, वे मोह ध्वान्त नशावें॥36.29॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'क' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

का

कारागृह में जीव हैं जितने, बंधन बद्ध प्रभानो।

मोहनाश कर करम विनाशें, तब ही मुक्त मानो॥36.30॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'का' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

नू

नन्त काल भटके सब जगमें, अब गुरु साँचे पालें।

गुरुवर ने उपदेश सुने तो, सोता भाग्य जगार्ये॥36.31॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'नू' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

ता

दाता गुरुवर ज्ञान के जानो, आत्म पिछान करावें।

स्वातम परिचय जान अज्ञानी, अपने मन हरषावें॥36.32॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'ता' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

स्

स्वर लहरी से नाम लेंय जिन, गाएँ सुन्दर गीत।

रोम रोम से अंग में गूजे, यह शाश्वत संगीत॥36.33॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'स्' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

व

वर्तमान चौबीस में अन्तिम, जिनवर श्री महावीरा।

निर्मल केवलज्ञान प्राप्त कर, हरी भ्रमण भव पीरा॥36.34॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'व' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

च्

आच्छादित हो कर्म से आतम, भूला अपना आपा।

मिटे आवरण कर्म घातिया, हो आतम निष्पापा॥36.35॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'च्' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

छा

छाया-माया कही एक सी, घटे बढ़ें दिन रैना।

दोनों से ही मोह तजें तो, तभी मिले सुख चैना॥36.36॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'छा' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

च

चव षष्ठी चमरों से सुरगण, चमर दुराते जावें।

वर्धमान जिनराय देह की, शोभा कही न जावे॥36.37॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'च' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

भा

लघुभाषा हो सात शतक तो, अष्टादश महा भाषा।

जिनवर समवशरण में जानें, सभी जीव निज भाषा॥36.38॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'भा' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

व

वसु विधि कर्मन नाश करा कर, जिनवर हुए सुसिद्धा।

अनन्त भवों के इसी चक्र को, तोड़ बनें अविरोद्धा॥36.39॥

ॐ ह्रीं अर्हं वर्तमानशासननायक 'व' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

न

नमःसिद्ध कह दीक्षा लेते, स्वयं श्री जिनराजा।

पंच मुष्टि से केश लौंच कर, रमते आतम काजा॥36.40॥

ॐ ह्रीं अर्हं वर्तमानशासननायक 'न' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

सु

सुन्दरतम है सर्व लोक में, अपना आतम देवा।

आतम ही अवलोकन करता, दृश्य जगत स्वमेवा॥36.41॥

ॐ ह्रीं अर्हं वर्तमानशासननायक 'सु' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

रै

रैवतक है गिरि गिरनार का, दूजा नाम कहाए।

ऊर्जयन्त भी ये ही है जहां, नेमि सिद्ध पद पाए॥36.42॥

ॐ ह्रीं अर्हं वर्तमानशासननायक 'रै' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

र्वि

निर्विकल्प जो ध्यान लगे, उत्कृष्ट समाधी जानो।

संकल्प-विकल्पों में तो केवल, आधि-उपाधी मानो॥36.43॥

ॐ ह्रीं अर्हं वर्तमानशासननायक 'र्वि' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

हि

हित मित प्रिय ही बोलें शिशु जिन, सबको आनंद आए।

बार-बार बुलवाते शिशु को, परमानन्द सुहाए॥36.44॥

ॐ ह्रीं अर्हं वर्तमानशासननायक 'हि' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

तो

तोषित कीना उनको प्रभुने, दीन दुखी जो जीवा।

"जियो और जीने दो से वे, होय सुखी सदीवा"॥36.45॥

ॐ ह्रीं अर्हं वर्तमानशासननायक 'तो' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

प

पाप-पुण्य परिणति विभाव से, दूरी सदा बनाओ।

शिवपथ पर ही चलना हो तो, कर्म चकचूर कराओ॥36.46॥

ॐ ह्रीं अर्हं वर्तमानशासननायक 'प' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

का

कारक पर का मान के ही, अभिमान कराएं।

जिनवाणी समझाती हमको, स्वाश्रित सदा रहाएं॥36.47॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'का' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

रा

निराहार रहते हैं भगवन, तो भी पुष्ट रहते।

स्वातम ज्ञान सुधारस में ही, 'जिन' सन्तुष्टी पाते॥36.48॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'रा' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

धा

कहें विधाता श्री जिनवर को, ऋषि मुनि सदा पुकारें।

गुण पाने को सहसनाम जिन, नित्य सदा उच्चारें॥36.49॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'धा' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

न्

इन्द्र नरेन्द्र साधु सब प्रभु के, चरणों शीश झुकाते।

भाग्यवान वे भक्त जिनार्चन, तन मन भक्ति कराते॥36.50॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'न्' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

या

ध्यानी करते श्री जिनवर का, ध्यान लगा कर योगा।

दोष अठारह रहित नाथ हैं, गुण अनन्त संयोगा॥36.51॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'या' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

दि

दिव्यध्वनि सुन कर जीवों का, तिमिर मोह मिट जाता।

तत्त्वों का वर्णन सुन सुन भवि, हृदय कमल खिल पाता॥36.52॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'दि' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

पु

पुनः नहीं आते जग में कभी, सिद्ध बुद्ध अविरुद्धा।

सिद्धालय में ही रहते हैं, काल अनन्त विशुद्धा॥36.53॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'पु' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

ष्

हृष्ट पुष्ट हो कर्मवीर हों, वे ही कर्म कराएं।

चोरी जारी व्यसनी रोगी, कैसे ध्यान लगाएं?॥36.54॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'ष्' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

प

परिणति वस्तु की जानो तुम, हों वे तीन प्रकारा।

पहले अशुभ तजे शुभ होवे, फिर हों शुद्ध विचारा॥36.55॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'प' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

वि

विलय करें मोहादि कर्म का, हों केवलि मुनिराजा।

शरण मिली है जिन चरणों की, होय सिद्ध सब काजा॥36.56॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'वि' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

भ

भला करो तो सबका होवे, लाभ तुम्हारा होगा।

बुरा करोगे फल भुगतोगे, हों शरीर में रोगा॥36.57॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'भ' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

वै

वैभव ज्ञान केवली जानो, लोकालोक विलोके।

जड़ चेतन आद्यन्त नंत सब, युगपत् ज्ञान में देखे॥36.58॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'वै' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

ह

अर्हम् योग प्रणेता मुनिवर, बाँट रहे सद्ज्ञाना।

गंगा ज्ञान प्रवाहित जग में, करो सभी स्नाना॥36.59॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'ह' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

स

सत् स्वरूप को जाना जिन ने, सिद्ध स्वरूप कहाए।

मिले वही चिद्रूप हमें भी, सन्मुख आत्म रहाए॥36.60॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'स' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

ती

तीस वर्ष में वर्द्धमान ने, पंच महाव्रत धारे।

इक वे ते चव मासिक षट् भी, तप करते स्वीकारे॥36.61॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'ती' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

व

वसुधा नारी जिन विहार लख, मानो हँसती जाती।

षट् ऋतु के फल फूल एक संग, अर्पण नाथ कराती॥36.62॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'व' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

नास्तिकता परिहार कर, नमूं नित्य नवदेवा।

तीन काल तिहुँ योग से, वन्दन करूँ स्वमेवा॥36.63॥

रीत यही संसार की जानें,आवागमन निवारें।

जितनी गिनती श्वाँस की होवे, उतना जीवन धारें॥36.64॥

ॐ ह्रीं अर्हं वर्तमानशासननायक 'री' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्यम्...

पूर्णार्ध्य

तीर्थंकर के पुण्य से, हो सुन्दर भू नार।

निष्कण्टक सुर कर रहे, षट्क्रतु फलें अपार ॥36॥

ॐ ह्रीं तीर्थंकर प्रकृति पुण्य प्रतिपादकाय अर्ह महाबीजाक्षरसहिताय
श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।



सुभिक्षकारी स्तुति

वायुः प्रभोः पथविहारदिशानुसारी,
वायुः सुगन्धघन-मिश्रित-सौख्यकारी।
वायुः सुगन्ध-जल-वर्षण-चित्तहारी,
वायुः सुरस्त्रिदशराज-निदेश-धारी ॥37॥

(छन्द पद्धरी)

वा

वायु चलती ज्यों तीव्र मंद,
ज्यों, योगत्रय से हो कर्म बंध।
प्रकृति प्रदेश - अनुभव - सुजान,
थिति बंध होय यों काल मान॥37.1॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'वा' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...

युः

हो आयुः बंध बस आठ बार,
हो बाद तिहाई दो त्रिबार।
हो अन्त समय निश्चय बंधयि,
पर भव जावे आयु नशाय॥37.2॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'युः' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...

प्र

हैं प्रचुर पदार्थ इस जग भराय,
सब जीवों में पर्याप्त थाय।
कोई संग्रह करके रखाय,
समझो हक दूजे का मरय॥37.3॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'प्र' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...

भोः

भोः भव्यों तुम सब कहाँ जाय,
पहचान न क्यों स्वातम कराय।
भाओ द्वादश अनुप्रेक्षा नित्य,
होवे रक्षां तब आत्म तत्त्व॥37.4॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'भोः' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...

प

हो पाप-पुण्य से जब विरक्त,
भोगों में होवे अनासक्त।
जड़-चेतन का हो भेद ज्ञान,
स्वातम का मन में होय भान॥37.5॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'प' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

थ

पथ शिव बिसराकर भटक जाय,
अज्ञानी बनकर अटक जाय।
अब जिनचरणों में गए आय,
आश्रय पाकर हिये सुख भराय॥37.6॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'थ' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

वि

नहिं विघ्न हमें विचलित कराय,
चूरें भवबंधन आत्म ध्याय।
आशीष हमें दीजें मुनीश,
हो स्याद्वाद धर्म विश्व शीश॥37.7॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'वि' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

हा

हाय! पर परिणति में भ्रमाय,
निज को भ्रम वश नहिं जान पाय।
मैं द्रव्य - भाव - नो कर्म मुक्त,
निज - आत्म शुद्ध दुर्गुण विमुक्त॥37.8॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'हा' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

र

रसना तृष्णा भावहि भराय,
नहिं हुआ स्वानुभव भव गंवाय।
जिन भक्ति भाव अद्भुत प्रभाव,
मन वांछित पूरे सुख सुभाव॥37.9॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'र' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

दि

दिक्षा शिक्षा में कुशल मान,
आचार्य हमारे पितु समान।
गुण छत्तिस इनके हैं सुजान,
पंचाचारी पावन महान॥ 37.10॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'दि' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

शा

हों शास्त्र पठन में ये प्रवीण,
सुज्ञान ध्यान में हों तल्लीन।
ये पढ़ें पढ़ावें आत्म ध्याय,
प्रतिदिन करते हैं स्वाध्याय॥ 37.11॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'शा' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

नु

धनु ध्यान धार कर कर्म क्षीण,
निज-आत्म ध्यान में होय लीन।
सुख शान्ति सम्पदा पूर्ण होय,
जब तक हम ध्याते रहें तोय॥ 37.12॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'नु' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

सा

सापेक्ष कथन है स्याद्वाद,
मिट जाते सब वाद हि विवाद।
भव-मुक्ति सेतु है अनेकान्त,
अनपेक्ष कथन मिथ्या एकान्त॥ 37.13॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'सा' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

री

जहाँ नारी का सम्मान होय,
वहाँ देवों का भी वास होय।
ममता, समता, लज्जा सुधार,
गुण हों नारी के संस्कार॥ 37.14॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'री' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

वा

सेवा गुरु माता पिता कराय,
इनकी सेवा मेवा दिलाय।
हो सबको ही कल्याण दास,
नहिं विपद् कोई भी कभी आय॥37.15॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'वा' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

युः

जहां वायुः सुगंधित मंद बहाय,
वहां समवशरण लगता जिनालय।
सुरगण आवे चारों निकाय,
जिनगुण गावें आनंद मनाय॥37.16॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'युः' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

सु

हो सुन्दर तम जीवन जिनाय,
पांचों इंद्रियां करते वशाय।
सुन्दर मन वच तन गुण महान,
शिवपथ पर ही चलते सुजान॥37.17॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'सु' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

ग

गर्हा कर लें निज दोष जान,
हम भी होंवें निर्दोष मान।
गर भूल नहिं स्वीकार पाय,
तो भव भव में जगमें भ्रमाय॥37.18॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'ग' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

न्

जब अन्तर्मन में हो उजास,
भावों में हो ज्ञान वास।
वसुधा सारी परिवार मान,
हो रोग कोरोना दूर जान॥37.19॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'न्' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

ध

हो धन्य मनुज जीवन महान,
घर घर में हो सम्यक सुज्ञान।
वैमानिक सुर सदृष्टि जान,
है कथन प्रमाणिक जिन महान॥37.20॥

ॐ ह्रीं अर्हं वर्तमानशासननायक 'ध' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...

घ

घण्टा घरनावल ध्वनि सुनाय,
सन्ध्या में भवि आरति सुगाय।
दिन बीते तो आभार मान,
दिन निकले तो प्रभु गुणन गान॥37.21॥

ॐ ह्रीं अर्हं वर्तमानशासननायक 'घ' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...

न

ननदी को भाभी बहन मान करे,
सास ससुर का बहुत मान।
देवर ज्येष्ठा भ्राता समान,
परिवार वही आदर्श जान॥37.22॥

ॐ ह्रीं अर्हं वर्तमानशासननायक 'न' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...

मि

मिलता है जब नर भव महान,
तब कर्म घाटिया चार हान।
कैवल्य दिवाकर प्राप्त होय,
भय जन्म मृत्यु का तब हि खोय॥37.23॥

ॐ ह्रीं अर्हं वर्तमानशासननायक 'मि' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...

श्रि

श्रिता शरण लेने सबहि हम आय,
दुर्लभ द्वारा प्रभु वर का पाय।
जो कुछ भी पाया सुहितकार,
उपकार हुआ प्रभु का अपार॥37.24॥

ॐ ह्रीं अर्हं वर्तमानशासननायक 'श्रि' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...

त

तप करके सब कर्म खपाय,
निज में निज का आनंद पाय।
भावो को अपने शुध कराय,
आतम को लें पावन बनाय॥37.25॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'त' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

सौ

सौभाग्य हमारा है महान,
किये दर्शन विद्या सिंधु आन।
चर्या करें काल चतुर्थ जान,
अपने करमों की करें हान॥37.26॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'सौ' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

ख

हैं ख्याति प्राप्त साधु महान,
पावन सुज्ञान के है निधान।
दर्शन करने को देव आय,
लख तेज आय जय जय कराय॥37.27॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'ख' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

य

यदि कृपा आपका कोई पाय,
तो बिगड़े कारज सुधर जाय।
नाता जब गुरुवर से जुड़ाय,
तो विघ्नों के आनंद आय॥37.28॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'य' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

का

निज काल भव्य धर्म हि लगाय,
सोते खाते मुख बिलाय।
भक्तों का धन शुभ समय जान,
प्रकटाते अपना आत्म ज्ञान॥37.29॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'का' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

री

है रीत वंश इक्ष्वाकु जान,
रही लाख चतुर्दश वर्ष मान।
प्रत्येक भूप दीक्षा लहाय,
तप करके सब शिवपुर सिधाय॥37.30॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'री' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

वा

वाणी तीर्थकर जिन खिराय,
जब जिनवर केवल ज्ञान पाय।
जिन धुनि सुनि करके भव्य आय,
जिन वचनों की बगिया सुहाय॥37.31॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'वा' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

युः

आयुः कर्म का बन्ध कराय,
दो तिहाय जब समय बिताय।
ऐसे अवसर हों वसु बार,
नहिं तो अन्त में भावानुसार॥37.32॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'युः' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

सु

सुख सुविधा मे मान्यता पाय,
णहिं आतम सुख पहचान आय।
खाने पीने में दें बिताय,
नर भव पाकर के भी गंवाय॥37.33॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'सु' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

ग

गगन गमन कर सुरगण आय,
शिशु जिनको मेरु ले जाय।
क्षीर नीर से न्हवन कराय,
पग अंगुष्ठ दायें चिह्न पाय॥37.34॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'ग' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

नू

न्याय नीति प्रभु राज कराय,
प्रजाजनों पर कृपा लुटाय।
सज्जन का रक्षण कर पाय,
दुर्जन के दिल को दहलाय॥37.35॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'नू' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

ध

धन गौ गज अश्वहि कहलाय,
अन्नादिक भण्डार भराय।
धन सन्तोष जबहि आजाय,
धन सारे तब व्यर्थ रहाय॥37.36॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'ध' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

ज

जग तन भोग विरक्ति आय,
स्वातम का सब ध्यान लगाय।
भव भव में भोगों को पाय,
अव निज में स्थिर हो जाय॥37.37॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'ज' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

ल

बल आतम प्रभु जी प्रकटाय,
स्वातम को परमात्म बनाय।
भक्तों को भव पार लगाय,
विरद प्रभु का जग में गाय॥37.38॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'ल' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

व

वरण किया है मुक्ति रमाय,
पद पाया है सिद्ध जिनाय।
भक्त आपकी शरण में आय,
तुम गुण गण गाकर हरषाय॥37.39॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'व' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

र्ष

हर्ष उल्लास में समय बिताय,
भोग विषय में यौवन जाय।
पुण्यार्जन जो वृद्ध कराय,
पर भव में होवे सुखदाय॥37.40॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'र्ष' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

ण

क्षण साधू का नहीं नशाय,
अन्न कणों को लेय बचाय।
उतना ही थाली में लाय,
व्यर्थ नही जाय नाली में॥37.41॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'ण' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

चि

चिदानन्द, चिन्मय कहलाय,
शिवपुर निज में मगन रहाय।
सिद्धि वधु संग रमण कराय,
नंत काल तक सुखी रहाय॥37.42॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'चि' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

त्त

चित्त मगन हो भक्ति कराय,
चरम शरीरी भव कहलाय।
व्यसनों में नहीं जीवन जाय,
व्यसन ज्ञान का ही मन भाय॥37.43॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'त्त' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

हा

हार-जीत नहीं निज पर होय,
स्वानुभूति ही होवे मोय।
अब मम कुमति विलय हो जाय,
सन्मति शिवपथ पर चलवाय॥37.44॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'हा' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

री

रीता घट नहीं कोई भराय,
अल्पाधिक सहयोग कराय।
निज सम जो परको कर लेय,
वे हैं जिन शिव मार्ग प्रणेय॥37.45॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'री' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

वा

वास करें प्रभु हृदय में आय,
भक्तों के तन-मन खिल जाय।
निज आतम उद्धार कराय,
भक्त ही फिर भगवान कहाय॥37.46॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'वा' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

युः

वायुःकायिक जीव अपार,
ध्वजा समान ही काया धार।
तीव्र गति में गमन कराय,
तो गरमी सें हो सुखदाय॥37.47॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'युः' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

सु

सुगम मार्ग शिवपुर बतलाय,
दुर्गम लगता हीन जनाय।
तुम चाहो निजपद मिल जाय,
जीवन अपना सफल कहाय॥37.48॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'सु' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

र

परम पवित्र चिदात्म जिनाय,
लोक शिखर पर वास कराय।
नहीं आपसा कोई कहाय,
भक्तों को भगवान बनाय॥37.49॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'र' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

स्

स्याद्वाद ही तत्त्व बताय,
सब मत भेद मिटाता जाय।
अनेकान्त शाला कहलाय,
वाद अपेक्षा सिद्ध कराय॥37.50॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'स्' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...

त्रि

त्रिगुप्तियाँ पन समिति पाल,
अष्ट मातृका से अघ टाल।
तेरह भेद चरित अपनाय,
संयम से भव तट को पाय॥37.51॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'त्रि' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...

द

दया धर्म का मूल बताय,
दया से करुणा भाव जगाय।
पहले दया गैर पर आय,
अब स्वात्म पर दया दिखाय॥37.52॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'द' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...

श

है आदीश जिनेश्वर जान,
अक्षय आत्म गुणों की खान।
श्रद्धा से पूजें दिन रैन,
जिनगुण गाने से हो चैन॥37.53॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'श' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...

रा

राग-द्वेष माया वश जाय,
जो अपना संसार घटाय।
भव मुक्ति का है यदि काज,
राग द्वेष तज सुगम इलाज॥37.54॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'रा' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...

ज

जन जन की जब पीर मिटाय,
जन जन के महावीर कहाय।
'सन्मति' संजय-विजय विचार,
'अतिवीर' उपसर्ग निवार॥ 37.55 ॥

ॐ ह्रीं अर्हं वर्तमानशासननायक 'ज' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...।

नि

निद्रा भूख पे जय को पाय,
श्रावक मुनि अभ्यास कराय।
समवशरण जागृत दरशाय,
शिवपुर तक नहीं भूख सताय॥ 37.56 ॥

ॐ ह्रीं अर्हं वर्तमानशासननायक 'नि' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...।

दे

दानव शक्तिशाली कहाय,
किन्तु देवता बुद्धिपाय।
होय समस्या झट सुलझाय,
दानव समाधान नहीं पाय॥ 37.57 ॥

ॐ ह्रीं अर्हं वर्तमानशासननायक 'दे' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...।

श

शत इन्द्रों से पूजित नाथ,
तीन भुवन में है विख्यात।
दिव्यध्वनि जब भी खिर जाय,
सारी दुनिया सुख ही पाय॥ 37.58 ॥

ॐ ह्रीं अर्हं वर्तमानशासननायक 'श' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...।

धा

धारणा पाँच प्रकार कहाय,
पार्थिवि अग्नि-वायु बतलाय।
वारुणी मूसल धार सुनाय,
तत्त्व रूपवती पंचम पाय॥ 37.59 ॥

ॐ ह्रीं अर्हं वर्तमानशासननायक 'धा' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...।

सारी दुनिया भ्रम में भ्रमाय,
भव भव अभाव साधु कराय।
बिरले ही रहस्य प्रकटाय,
स्वातम को ही अपना बनाय॥37.60॥

पूर्णार्ध्य

इन्द्राज्ञा से देवगण, हरते आतप पीर॥37॥

ॐ ह्रीं इन्द्राज्ञासुरपूरिताय अर्हं महाबीजाक्षरसहिताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः
पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

382

चित्त हरण करी स्तुति

न्यासो हि यत्र चरणस्य विनिर्मितानि,
पद्मानि सौरभमयानि सुवर्णकानि।
देवैर्नभांसि विहृतौ कुसुमार्पितानि,
ध्यानान् मनांसि यदि मेऽपि किमद्भुतानि ॥38॥

(छन्द विष्णुपद)

न

वसुन्धरा के दिव्य दिवाकर आदीश्वर आए।

षट् कर्मादिक की शिक्षा दे जन-मन हरषाए॥38.1॥

ॐ ह्रीं अर्हं वर्तमानशासननायक 'न' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...।

या

याद करें हम सब नित तुमको दृष्टि पथ आओ!

पुनः प्रेरणा मिले मोक्ष की हिरदय बस जाओ॥38.2॥

ॐ ह्रीं अर्हं वर्तमानशासननायक 'या' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...।

सो

सोते-सोते उमर बीत गई अब तो जग जाएँ।

मोह नींद को त्याग विरागी वृत्ति अपनाएँ॥38.3॥

ॐ ह्रीं अर्हं वर्तमानशासननायक 'सो' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...।

हि

हिरदय सिंहासन सजवाया प्रभु जी आन विराजों!

ज्यों तारागण युत-अम्बर में चन्द्र बिम्ब साजो॥38.4॥

ॐ ह्रीं अर्हं वर्तमानशासननायक 'हि' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...।

य

यत्किंचित भी मिला मुझे सुख नाथ आपसे ही।

रागी देवों से तो मिलता राग-द्वेष-दुख ही॥38.5॥

ॐ ह्रीं अर्हं वर्तमानशासननायक 'य' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...।

त्र

त्रय लोकों में नाथ तिहारी महिमा फैल रही

मानो पूर्ण चन्द्र की किरणें भूतल खेल रही॥38.6॥

ॐ ह्रीं अर्हं वर्तमानशासननायक 'त्र' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...।

च

चन्द्र चन्द्रिका श्वेत धवल हिम सी शीतल लागे।

ज्ञान ज्योति से अन्तर्मन का अँधियारा भागे॥38.7॥

ॐ ह्रीं अर्हं वर्तमानशासननायक 'च' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...।

र

रच-पच कर विषयों में सारे संसारी सोते।

ज्ञानी तत्त्वों का चिन्तन कर आनन्दित होते॥38.8॥

ॐ ह्रीं अर्हं वर्तमानशासननायक 'र' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...।

ण

मुनि प्रणम्य कितने बड़भागी 'अर्हम् योग' दिया।

ज्ञान-ध्यान की करें साधना आत्मोत्थान किया॥38.9॥

ॐ ह्रीं अर्हं वर्तमानशासननायक 'ण' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...।

स्

स्वर्गों के सुख नहीं चाहता सम्यग्दृष्टि जीव।

आवागमन से मुक्त होना ही उसका लक्ष्य सदीव॥38.10॥

ॐ ह्रीं अर्हं वर्तमानशासननायक 'स्' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...।

य

यही भावना यही कामना, हम भी करते हैं।

जिन वच औषधि का सेवन हम प्रतिदिन करते हैं॥38.11॥

ॐ ह्रीं अर्हं वर्तमानशासननायक 'य' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...।

वि

करें विवाह बनें श्रावक मुनि चौके नित्य लगाएँ।

ये गृहस्थ भी परम्परा से अजर-अमर पद पाएँ॥38.12॥

ॐ ह्रीं अर्हं वर्तमानशासननायक 'वि' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...।

नि

निर्णय करलें लक्ष्य बनालें स्वातम मुक्ती का।

साधू संगति में रह पावें जिनपथ युक्ती का॥38.13॥

ॐ ह्रीं अर्हं वर्तमानशासननायक 'नि' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...।

मि

निर्मित है ये देह हमारी मात-पिता रज-वीरज।

मल ही मूल देह मल पूरित धरें महाव्रति धीरज॥38.14॥

ॐ ह्रीं अर्हं वर्तमानशासननायक 'मि' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...।

ता ताला कर्मों का लगा पर खुले देह नव द्वार।
आयु कर्म क्षय होय जिय पर भव पुनः विचार॥38.15॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'ता' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

नि नियम लघु हों तो भी इक दिन बहुत बड़े हो जाते।
चलते - चलते घुटनों के बल पाँव खड़े हो जाते॥38.16॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'नि' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

प पश्चिम की कर नकल आज भारत भी डूब रहा।
भूल गया वह काल सुनहरा जग का गुरु रहा॥38.17॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'प' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

द् विद्या से विनयी बनते हो पात्रता विनय से।
करे पात्र ही धन का अर्जन सब सुख होते धन से॥38.18॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'द्' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

मा धरमात्मा का वैभव बढ़ता मन बढ़ता जाता।
पापी का धन घटता जाता मन भी कृपण कहाता॥38.19॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'मा' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

नि पर निन्दा कोई कभी ना करना दोष लगे भारी।
जिसकी निन्दा उसका पाप भी निन्दक को दुखकारी॥38.20॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'नि' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

सौ सौ - सौ नमन करूँ जिनवर को तीन लोक पूजे।
जिन की आज्ञा पालन करलें तो सब अघ धूजे॥38.21॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'सौ' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

र रमता है गुरुपद में मम मन मोद मना लेता।
गुरु संगति का रंग हमारे तन को रंग देता॥38.22॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'र' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

भ

भक्त बने भगवन ये महिमा गुरुवर की जानो।

गुरुवर के उपकार अनन्तों भविजन पर मानो॥38.23॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'भ' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

म

समता आ जाती है मन में वैर भी छुट जाता।

'पर' से हट कर स्वयं से ही जब जुड़ जाता नाता॥38.24॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'म' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

या

दया क्षमा धृति बहनें मुनि की माता जिनवाणी।

तप विवेक संयम हैं भाई तात केवलज्ञानी॥38.25॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'या' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

नि

होय निर्जरा तप - संवर से सवीपाक अनिपाक।

सविपाक तो सबके होती उद्यम से अविपाक॥38.26॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'नि' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

सु

सुयश फैलता है उनका ही जो सुकृत करते।

दुष्कर्मों की सन्तति हो तो कुख्याती बनते॥38.27॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'सु' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

व

वन को गए राम सिया लछमन संयम से रहते।

धन्य धन्य वे धीर-सहिष्णु दुख-संकट सहते॥38.28॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'व' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

र्ण

कर्णप्रिय रमणीक है वाचन वर्धमान स्तोत्र।

विघ्न उपद्रव हरने वाला झरता करुणा स्रोत॥38.29॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'र्ण' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

का

रचना काव्य करें केवल माँ सरस्वति पुजारी।

बिना भारति कृपा के कोई छन्द न एक विचारी॥38.30॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'का' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

नि

अनिवार्य है मुक्ति हेतु रत्नत्रय का पाना।

रत्नत्रय की एकता से हो शिवपुर का जाना॥38.31॥

ॐ ह्रीं अर्हं वर्तमानशासननायक 'नि' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

दे

देव मनुज संज्ञी पंचेन्द्रि समवशरण में आते।

भव्य जीव ही श्री मण्डप वसुधा में जाने पाते॥38.32॥

ॐ ह्रीं अर्हं वर्तमानशासननायक 'दे' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

वै

वैमानिक देवों में ही यह भेद कल्पना होती।

गुरु सम -पितृ सम, अंगरक्षक सम सेना सात कहाती॥38.33॥

ॐ ह्रीं अर्हं वर्तमानशासननायक 'वै' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

न

पुनर्नवा पौधे की जड़ रोगों को नष्ट कराती।

वैद्य इसे देते तो ये रोगी के मन भाती॥38.34॥

ॐ ह्रीं अर्हं वर्तमानशासननायक 'न' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

भां

चतुर्निकाय देव नभांसि जय जयकार कराते।

सौधर्मेन्द्र ऐरावत पर शिशु जिन मेरू ले जाते॥38.35॥

ॐ ह्रीं अर्हं वर्तमानशासननायक 'भां' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

सि

सिद्धों की श्रेणी में मुनि को अपना नाम लिखाना।

इसीलिए सब परीषह सहते निज वैभव को पाना॥38.36॥

ॐ ह्रीं अर्हं वर्तमानशासननायक 'सि' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

वि

विद्यमान हैं बीस जिनेश्वर आज भी क्षेत्र विदेह।

हो जाते हैं सभी विदेही रहते हुए भी देह॥38.37॥

ॐ ह्रीं अर्हं वर्तमानशासननायक 'वि' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

ह

हृदय हमारा भि यह भाए ऐसा अवसर आवे।

जैनेश्वरी दिक्षा लेकर के तन-मन में हर्षविं॥38.38॥

ॐ ह्रीं अर्हं वर्तमानशासननायक 'ह' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

तौ

तौ पादाम्बुज वीर प्रभु के जग जयवन्त विराजें।

मम उर पुष्कर सिंहासन पे त्रिभुवन वन्दित राजें॥38.39॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'तौ' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...

कु

सुरभित कुसुम चढ़ाता प्रभु को काम वेग - विनशांता।

स्थिर होकर स्वातम में भवि ध्यान लगा जाता॥38.40॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'कु' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...

सु

सुन्दर है ये आत्म तत्त्व जिससे जग उजियारा।

बिना आत्मा लोक शून्य है मानों जग अँधियारा॥38.41॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'सु' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...

मा

माला पहनी प्रभु नाम की कण्ठाभरण बनाया।

लगन लगी जिनवर से ऐसी भूला जग की माया॥38.42॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'मा' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...

पि

अर्पित करके तन मन अपना अक्षय वैभव पाऊँ।

ज्ञान दरश सुख वीर्य अनन्ता आनन्द में रम जाऊँ॥38.43॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'पि' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...

ता

ताना-बाना बुन विभाव का क्यों तू मौज मनाता?

निज सुभाव में आकर ही तो सच्चे सुख को पाता॥38.44॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'ता' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...

नि

निर्मम होकर ममता त्यागें समता मन में लाएँ।

श्री गुरुवर की पदरज लेकर शीश चढ़ा हरषाएँ॥38.45॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'नि' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...

ध्

ध्यान शुक्ल वितर्क द्वय पृथक्-एकत्व कहाए।

सूक्ष्म क्रिया प्रतिपाति-व्युपरत क्रिया निवृत्ति बताए॥38.46॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'ध्' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...

या

यानाराध्य तिरें भवसिंधु भविजन इस जग में।
मेरे प्रभु तो वर्धमान हैं गमन किया शिवभग में॥38.47॥
ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'या' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

ना

नाम - गाम तो बसते आए नहिं विशेषता कोय।
है अभीष्ट बस गुणाभिव्यक्ति जीवन पावन होय॥38.48॥
ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'ना' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

न

जिनान् नमन करें श्रद्धा से जिन-आज्ञा पालें।
रमण करें स्वातम में ही कर्म शुभाशुभ टालें॥38.49॥
ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'न' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

म

मन मन्दिर वेदी में राजें मेरे दीनानाथ।
गुण गाता हूँ वीर प्रभु के नित्य नवाऊँ माथ॥38.50॥
ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'म' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

नां

धुन लगी मनांसि प्रभु की दिवस रैन बीतें।
कैसे अपनी पाँच इन्द्रियाँ - चंचल मन जीतें॥38.51॥
ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'नां' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

सि

सिद्धों का दरबार लगा है अरजी रोज़ लगाऊँ।
मै भी आकर के सिद्धालय सिद्ध-विलय हो जाऊँ॥38.52॥
ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'सि' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

य

यही भावना है प्रणम्य गुरु जब तिर्थकर होंवे।
गणधर उनका बन जाएँ हम जिन धुनि हृदय संजोवें॥38.53॥
ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'य' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

दि

दिग्वृत लेकर दसों दिशाओं की सीमा बाँधें।
निरतिचार पालन होवे हम सीमा कभी न लाँघें॥38.54॥
ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'दि' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

मे

मेढ असाता-साता में परिवर्तित कर लेंवे।

प्रायश्चित निजनिंदा- गर्हा से अपकर्षण होवे॥38.55॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'मे' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

पि

पिला रहे जिनवाणी अमृत सब आनन्दित होते।

गुरुवर की महती किरपा से धन्य सभी होते॥38.56॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'पि' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

कि

किस किस को हम याद करें, किस किस को रोवें।

छूट जाए भव भ्रमण हमारा, तल्प समाधी सोवें॥38.57॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'कि' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

म

तीन मकार स्वयं ही छूटें जन्म जैन कुल हो।

आठवर्ष में पाँच उदम्बर-सप्त व्यसन गुल हों॥38.58॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'म' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

द्

विद्यालय में विद्या सीखें डिग्री ले भूलें।

गुरुवर से इक नियम भी ले लें तो स्वातम छू लें॥38.59॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'द्' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

भु

भुवन मोहिनी मुस्कानों से गुरुवर ने लूटा।

जिस पर नज़रें पड़ी गुरु की उसका दिल टूटा॥38.60॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'भु' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

ता

ताला करमों का चाबी है समकित समता हो।

प्रेम से ताला खोलो छूटे तन से ममता हो॥38.61॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'ता' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

नि

निर्जरा हुई अकाम कभी भवनान्निक सुर होता।

संवर-तप से करी निर्जरा अष्ट कर्म खोता॥38.62॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'नि' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

पूर्णार्ध्य

जिन पदतल सुरगण रचें, हेम कमल महकाय।

तो फिर प्रभु के ध्यान में, क्यों नहीं मन खिल जाय ? ॥38॥

ॐ ह्रीं कनक कमल रचिताय अर्हं महाबीजाक्षरसहिताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः
पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।



मित्र वर्धक स्तुति

दिव्यध्वनि-वहति यस्तु मुखारविन्दा-
दर्धं च तस्य खलु मागधजातिदेवाः।
दूरं तु वीर! सहजेन विसर्पयन्ति,
मैत्रीं मिथः सदसि भूरि विभावयन्ति ॥39॥

(छन्द सोरठा)

दि दिव्य ध्वनि सुखकार, सर्वांगों से जो खिरे।
भवदधि तारणहार, वैर विरोध मिटावती ॥39.1॥

ॐ ह्रीं अर्हं वर्तमानशासननायक 'दि' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...

व् व्यक्ति होय न खास, है व्यक्तित्व विशेषता।
उत्तम गुण का वास, भिन्न दिखाए लोक में ॥39.2॥

ॐ ह्रीं अर्हं वर्तमानशासननायक 'व्' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...

य यदि जिन भक्तिधार, होय विरक्ति हृदय में।
भाव शुद्धि - अनुसार, चरित विशुद्धि होत है ॥39.3॥

ॐ ह्रीं अर्हं वर्तमानशासननायक 'य' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...

ध् ध्यानानल प्रकटाय, कर्म क्षीण साधू करें।
केवलज्ञान उपाय, लोकालोक सु जानते ॥39.4॥

ॐ ह्रीं अर्हं वर्तमानशासननायक 'ध्' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...

व वस्तु सरूप अनेक, स्याद्वाद दरशा दिया।
धारे हृदय विवेक, झगड़े की जड़ नष्ट हो ॥39.5॥

ॐ ह्रीं अर्हं वर्तमानशासननायक 'व' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...

नि निकल - सकल जिन जान, सिद्ध-अर्ह गुणधाम हैं।
सवशुद्धात्म समान, अष्टम वसुधा राजते ॥39.6॥

ॐ ह्रीं अर्हं वर्तमानशासननायक 'नि' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...

व

सर्व सिद्धियाँ पाय, होते निस्पृह साधुजन।
नहिं स्वीकार कराय, मगन निजातम में रहें॥39.7॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'व' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

ह

अवसर हर्ष अपार, शिलान्यास शुभ होय जब।
कुण्डल गिरि सुखकार, पंचकल्याणक हो रहे॥39.8॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'ह' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

ति

हो भक्ति अतिरेक, प्रभु गुण गान करें सभी।
शक्ति मिलें अनेक, दूटें बन्धन कर्म के॥39.9॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'ति' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

य

यही पुण्य उपहार, द्वारा गुरुवर पा लिया।
शरण मिली सुखकार, जिन-गुर्वागम छाँव में॥39.10॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'य' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

स्

स्याद्वाद है तत्त्व, वाद विवाद मिटें सभी।
क्षीण कर्म का सत्त्व, स्वातम से नाता जुड़े॥39.11॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'स्' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

तु

तुलना करो न कोय, तुलना से जीवन दुखी।
हानि अन्य नहिं होय, स्वयं बढ़ो संसार में॥39.12॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'तु' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

मु

मुख्यता पूजा - दान, श्रावक धर्म बताय गुरु।
शील - उपवास महान, आवश्यक सबको कहा॥39.13॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'मु' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

खा

खातिरदारी होय, जाओ वहाँ आनन्द से।
पूछ न होवे कोय, अमृत दे तो भी नहीं॥39.14॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'खा' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

र

रज गुरुपद सिर धार, कुमति भी सन्मति होए।

तन मोह होवे क्षार, जामन-मरण मिटाइयो॥39.15॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'र' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

वि

विख्यात मुनि प्रणम्य, अहंम् योग सिखाय के।

रोगी हो कुशलात, अरज सुनें वर्धमान जिन॥39.16॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'वि' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

न्

नन्दन त्रिशला मात, सिद्धारथ के लाड़ले।

तजें स्वार्थ का साथ, मंगल करते लोक का॥39.17॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'न्' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

दा

दान चार परकार, औषध शास्त्राहार हो।

दान अभय सुखकार, चार संघ को दीजिए॥39.18॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'दा' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

द

दया बिना नहिं धर्म, दया धरम का मूल है।

दया जैन का कर्म, जीयो जीने दो सदा॥39.19॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'द' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

र्ध

अर्ध कर्म निर वार, केवली हों तीर्थेश जिन।

अर्धनारीश विचार, घातें घानी कर्म चव॥39.20॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'र्ध' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

च

चन्द्र किरण मनहार, स्पर्श जिन चरण को।

भवदधि तारण हार, हुए स्वयंभू वीर जिन॥39.21॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'च' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

त

तरणि साधुजन जान, रत्नत्रय मण्डित कही।

शोभित ज्यों जलयान, जगत सिंधु से तारती॥39.22॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'त' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

सू

स्पन्दन नहीं होय, नेत्र-रहित टिमकार हैं।

नासा दृष्टि होय, परम शांति विस्तीर्ण हो॥39.23॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'सू' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

य

हों परयाय अनन्त, आदि अन्त से रहित जो।

प्रभु ज्ञान हि झलकन्त, दर्पण सम नहिं दर्प हो॥39.24॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'य' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

ख

आतम सुख की खान, थुति कुदाल से खोद लें।

प्रभु पूरण धनवान, सब कषायी निर्धन कहे॥39.25॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'ख' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

लु

लुप्त हुए संस्कार, अदब-कायदा ना रहा।

झगड़े को तैयार, सुगुण विनय की हानि हो॥39.26॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'लु' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

मा

माला टूटे कोय, हर मोती संग्रह करो।

मित्र ना रूठा होय, प्रेम बड़े संसार में॥39.27॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'मा' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

ग

राग त्याग सुख होय, भाव विराग बढ़ाईये।

मुक्ति पाय सब कोय, शाश्वत निजपद प्राप्त हो॥39.28॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'ग' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

ध

धर्मध्यान चव भेद, आज्ञा-पाय-विपाक है।

भवि पालें बिन खेद, संस्थान विचय जानिए॥39.29॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'ध' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

जा

बिन जाने वा जान, दोष कोय मुझसे हुआ।

निज को दोषी मान, प्रतिक्रमण नित्य करें॥39.30॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'जा' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

ति

तिरस्कार हो जीव, हा ! मा ! धिक् ! से जान लो।

करता पाप सदीव, घोर दण्ड का पात्र हो॥39.31॥

ॐ ह्रीं अर्हं वर्तमानशासननायक 'ति' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

दे

देव ऋषीगण आय, तप कल्याण में नाथ के।

ब्रह्मर्षि कहलाय, एक हि भव अवतारी हों॥39.32॥

ॐ ह्रीं अर्हं वर्तमानशासननायक 'दे' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

वाः

देवाः सुरपति आय, शीश विनत जिनराज को।

भक्ति हृदय भराय, सहसनाम स्तवन करें॥39.33॥

ॐ ह्रीं अर्हं वर्तमानशासननायक 'वाः' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

दू

दूरदर्शि खुदवाय, शांति सिंधु ने ताम्र पत्र।

मम बुधि बिंदु समाय, श्रुत सागर निस्सीम है॥39.34॥

ॐ ह्रीं अर्हं वर्तमानशासननायक 'दू' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

रं

रंगत - संगत जान, सबको ही झलके यहाँ।

संगत सज्जन मान, दिशा-दशा बदले सभी॥39.35॥

ॐ ह्रीं अर्हं वर्तमानशासननायक 'रं' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

तु

तुम अनन्त गुणवान, मोक्ष मार्ग दर्शाय के।

परम सिद्ध भगवान, मगन रहें निज में सदा॥39.36॥

ॐ ह्रीं अर्हं वर्तमानशासननायक 'तु' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

वी

वीतराग हितकार, केवलज्ञानी जिन कहे।

दिव्यध्वनि सुखकार, तीर्थ प्रवर्तन कर गए॥39.37॥

ॐ ह्रीं अर्हं वर्तमानशासननायक 'वी' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

र

रग-रग रक्त जिनाय, शुभ्र दुग्ध सम श्वेत हो।

सरिता प्रीति बहाय, वन्दें जिनपद आत्महित॥39.38॥

ॐ ह्रीं अर्हं वर्तमानशासननायक 'र' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

स सम्यग्दर्शन ज्ञान, चरित्र की प्रधानता।
रत्नत्रयी प्रमाण, शिवमग ही साक्षात् हो॥39.39॥

ॐ ह्रीं अर्हं वर्तमानशासननायक 'स' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

ह हत्या होने जीव, लेकिन भाव सुरक्षा हों।
तो भी सुखी सदीव, पाप न हिंसा का लगे॥39.40॥

ॐ ह्रीं अर्हं वर्तमानशासननायक 'ह' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

जे दुष्कर्म कहाय, हेतू नरक-निगोद के।
शुभ सत्कर्म कराय, वासी हों शिवलोक में॥39.41॥

ॐ ह्रीं अर्हं वर्तमानशासननायक 'जे' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

न नदी बहे दो पाट, सदा रहे सुख शांति ही।
टूट जाए जब घाट, नगर-फसल का नाश हो॥39.42॥

ॐ ह्रीं अर्हं वर्तमानशासननायक 'न' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

वि विद्या-कृषि सिखाय, वाणिज असि मसि शिल्प भी।
या चर्या ऋषि कराय, नारा दें वृषभेष जिन॥39.43॥

ॐ ह्रीं अर्हं वर्तमानशासननायक 'वि' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

स सन सन हवा चलाय, हाड़ कंपे मुनि-शीत से।
तप से देह तपाय, आत्म विशुद्धि बढ़ावते॥39.44॥

ॐ ह्रीं अर्हं वर्तमानशासननायक 'स' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

प अर्पण है जिनराय, तन मन धन सब ही सदा।
मेरा क्या जो जाय, तेरा तुझको सौंपते॥39.45॥

ॐ ह्रीं अर्हं वर्तमानशासननायक 'प' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

य यत्र तत्र सर्वत्र बजे, डंका श्रीजिन धर्म का।
समवशरण अब हि सजे, क्षेत्र विदेह के माँहि॥39.46॥

ॐ ह्रीं अर्हं वर्तमानशासननायक 'य' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

नू

पूजा इन्द्र कराय, स्तवन करें जिननाथ का।

हम भी जिनगुण गाय, अपने भाव सुधारते॥39.47॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'नू' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

ति

भवसागर तिर जाय, श्रीजिन-आज्ञा मान के।

जो जिन शरणे आय, उसका भी कल्याण हो॥39.48॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'ति' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

मै

मै निजगुण प्रकटाय, दशा सुधारूँ आपनी।

मेरा मैं बच जाय, देह धर्म पर्याय है॥39.49॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'मै' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

त्री

मैत्रीं भाव जगाय, गैर भाव मिटता स्वयं।

गंगा प्रेम बहाय, अवगाहन भवि ही करें॥39.50॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'त्रीं' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

मि

निज वैभव मिल जाय, लोक सम्पदा चाह ना।

आतम ज्ञान उपाय, मैं निज में परिपूर्ण हूँ॥39.51॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'मि' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

थः

अथः उपाय कराय, छूटे स्वातम कैद से।

स्वस्थ देह भिदाय, चेतन भी स्वतन्त्र हो॥39.52॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'थः' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

स

सदा सत्य सुखदाय, झूठ न बोलो भव्यजन।

सत्य न कटु के कहाय, सत्यमेव जयवन्त हो॥39.53॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'स' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

द

दयालु दया कराय, स्वात्म दया अनमोल है।

दया ही होय सहाय, दया धर्म युग युग चले॥39.54॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'द' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

सि

सिद्ध अनन्तानन्त, अजर अमर तिष्ठे सदा।

तीन काल प्रणमन्त, हमको भी निजपद मिले॥39.55॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'सि' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

भू

सिरि भूवलय ग्रन्थ, स्वर्ण बनाने की विधि।

साधु सन्त निर्ग्रन्थ, स्वातम को कुन्दन करें॥39.56॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'भू' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

रि

चव कर्मरि दहाय, नंत चतुष्टय प्राप्त हों।

आतम वैभव पाय, स्थित जिय लोकाग्र में॥39.57॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'रि' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

वि

विलय होय सिद्धात्म, एकानेक सिध राजते।

आत्म होय शुद्धात्म, पर से नाता दूटता॥39.58॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'वि' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

भा

भारत देश महान, सोने की चिड़िया रहा।

पुर्तगालि जन आन, लूट लिया मम देश को॥39.59॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'भा' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

व

वन सम्पत्ति अपार, खूब घने जंगल भि थे।

धूप न होती पार ,पर्यावरण भी शुद्ध था॥39.60॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'व' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

य

अर्हम् मंत्र जपाय, देह मशक को पूर्ण भर।

भव समुद्र तिर जाय, चेतन शुद्ध विराजता॥39.61॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'य' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

न्

सन्त शिरोमणि जान, विद्यासागर गुरु परम।

भारत देश की शान, चर्या काल चतुर्थ सम॥39.62॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'न्' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

निर्मल हृदय करी स्तुति

नैर्मल्यभाव-मभितो धरतीशमाप्तं,
दिग् राजिका दश विभो! गगनं विधूल्यः।
सर्वर्तु - पुष्प - फल - पूरित - भूरुहाश्च,
व्याह्वान-मर्पित-सुरौघ इतः करोति ॥40॥

(छन्द दोहा)

नै

नैगम-संग्रह-सूत्र ऋजु, शब्द-समाभिरूढ।
एवंभूत- व्यवहार नय, जानें सातों गूढ़ ॥40.1॥

ॐ ह्रीं अर्हं वर्तमानशासननायक 'नै' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...

र्म

कर्मजाल में फँस गए, भटक रहे संसार।
मोह-माया का नाश ना, कैसे हो भव पार ॥40.2॥

ॐ ह्रीं अर्हं वर्तमानशासननायक 'र्म' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...

ल्

गुरु त्रय शल्य बताय, माया मिथ्या निदान।
इन युत व्रत न कहाय, तजें सभी दुखदान ॥40.3॥

ॐ ह्रीं अर्हं वर्तमानशासननायक 'ल्' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...

य

रहस्य कहा अन्तराय, रज है दर्शन ज्ञान।
कर्मारि मोहनीय है, घाति घात बलवान ॥40.4॥

ॐ ह्रीं अर्हं वर्तमानशासननायक 'य' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...

भा

भाग्याधीन जो भि रहें, नहीं करें पुरुषार्थ।
जो स्वाधीन प्रयास कर, पाएँ फल परमार्थ ॥40.5॥

ॐ ह्रीं अर्हं वर्तमानशासननायक 'भा' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...

व

वर दे कामरूपिणी, सदा करें सत्संग।
तेरी शरणे तिष्ठते, पावन हो अन्तरंग ॥40.6॥

ॐ ह्रीं अर्हं वर्तमानशासननायक 'व' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...

म

मन्मथ को मथ कर चलें, मोक्ष मार्ग सानन्द।

भक्ति भाव बढ़ते रहें, पाएँ परमानन्द॥40.7॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'म' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...

भि

भिन्न भिन्न जानें सभी, जड़चेतन इक साथ।

जागृत करके चेतना, जिनपद नमते माथ॥40.8॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'भि' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...

तो

ध्यातो जिनेन्द्र भवतः, भव भव ताप हारी।

पाएँ सु राज्य अपना, श्रीजिन भक्ति न्यारी॥40.9॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'तो' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...

ध

धर्म ध्यान करते रहें, धर्म बिसारें नाहिं।

तीन योग से पूजते, डूवें स्वातम माहिं॥40.10॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'ध' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...

र

रणभूमी में भी लड़ें, जैन लोग वर वीर।

धर्म अहिंसा 'वीर'का, पा जाँँ भव तीर॥40.11॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'र' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...

ती

तीर्थकर चौबीस हों, कल्पकाल में एक।

हुण्डावसर्पिणि में हुए, उपसर्गादिक अनेक॥40.12॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'ती' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...

श

शत्रु हमारे बाह्य ना, अन्तर में बलवान।

अपने को जीतें प्रथम, बनें क्षमा गुण खान॥40.13॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'श' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...

मा

क्षमा भावभण्डारि हैं, पारसनाथ विशाल।

उनके चरणों में झुके, नित्य हमारा भाल॥40.14॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'मा' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...

पं आप्तं केवलज्ञानि जिन, हम वन्दें बारम्बार।
जिनकी दिव्यध्वनि खिरी, जीवों को सुखकार॥40.15॥
ॐ ह्रीं अर्हं वर्तमानशासननायक 'पं' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...

दि दिवस रैन का काम क्या, समवशरण निरधार।
रवि शशि से भी अधिक, है भामण्डल उजियार॥40.16॥
ॐ ह्रीं अर्हं वर्तमानशासननायक 'दि' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...

ग् दसों दिशा दिग् भाग को, सीमित करते जैन।
कोई विकल्प न मन रहे, जीवन में सुख चैन॥40.17॥
ॐ ह्रीं अर्हं वर्तमानशासननायक 'ग्' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...

रा रागादिक दोष वर्जित, जे मुनिराज धीरा।
वे हैं तटस्थ सब में, हरें भव दुःख पीरा॥40.18॥
ॐ ह्रीं अर्हं वर्तमानशासननायक 'रा' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...

जि जिन जिनको है जानना, अपना सत्य सरूप।
वे निर्ग्रन्थ गुरु शरण में, पहचाने चिद् रूप॥40.19॥
ॐ ह्रीं अर्हं वर्तमानशासननायक 'जि' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...

का कातन्त्र व्याकरण सरल, बाल शिष्यों के हेत।
कृपा होय जिन पर गुरु, वे जाएँ शिवखेत॥40.20॥
ॐ ह्रीं अर्हं वर्तमानशासननायक 'का' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...

द दमन करें पंचेन्द्रिय, तजें विषय का राग।
शोध नहीं अब बोध हो, भोग राग का त्याग॥40.21॥
ॐ ह्रीं अर्हं वर्तमानशासननायक 'द' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...

श साधन है ये शरीर ही, तप - संयम का जान।
हो अस्वस्थ शरीर तो, सामायिक ना मान॥40.22॥
ॐ ह्रीं अर्हं वर्तमानशासननायक 'श' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...

वि

विधि-निषेध का ज्ञान ही, निर्णय तत्त्व कराये।

महिमा है स्याद्वाद की, वाद-विवाद मिटाय ॥40.23॥

ॐ ह्रीं अर्हं वर्तमानशासननायक 'वि' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...

भो

भोगुपभोग वीर्य, दान-लाभ अन्तराय।

डाला था हमने कभी, आज उदय में आय ॥40.24॥

ॐ ह्रीं अर्हं वर्तमानशासननायक 'भो' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...

ग

गरिमा है जिनधर्म की, जिनगुण में अनुराग।

भक्ति का अनुराग ही, ला मन में वैराग ॥40.25॥

ॐ ह्रीं अर्हं वर्तमानशासननायक 'ग' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...

ग

गगन गमन तन धातु ना, परमौदारिक काय।

पंच सहस्र धनु राजते, अधरे श्री जिनराय ॥40.26॥

ॐ ह्रीं अर्हं वर्तमानशासननायक 'ग' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...

नं

नंगानंग मुनि शिव गए, सोनागिरि के शीश।

तीन काल तिहुँ योग से, नमें नमें नत शीश ॥40.27॥

ॐ ह्रीं अर्हं वर्तमानशासननायक 'नं' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...

वि

नहिं विवाद साधर्मिजन, करें सुई का काम।

सबको जोड़ें साथ में, कैची का क्या काम ? ॥40.28॥

ॐ ह्रीं अर्हं वर्तमानशासननायक 'वि' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...

धू

धूल कभी गुरु चरण की, मस्तक पर लग जाय।

जीवन पावन होय मम, कर्म असाता जाय ॥40.29॥

ॐ ह्रीं अर्हं वर्तमानशासननायक 'धू' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...

ल्

माल्यार्पण हो मंच पर, या माइक हो हाथ।

तजें परिग्रह-प्रदर्शन, परिचय हो मुनिनाथ ॥40.30॥

ॐ ह्रीं अर्हं वर्तमानशासननायक 'ल्' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...

यः नित्यः जिनाभिषेक हो, पूजा-दान अपार।
षट् कर्मों को साधते, समय गृही सुखकार॥40.31॥

ॐ ह्रीं अर्हं वर्तमानशासननायक 'यः' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...

स करें सदा पुरुषार्थ हम, सिद्ध होय परमार्थ।
नर भव का फल मुक्ति है, जीवन यही यथार्थ॥40.32॥

ॐ ह्रीं अर्हं वर्तमानशासननायक 'स' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...

व पर्व चतुर्दशि अष्टमी, संयम हो हितकार।
जिनपद-गुरुपद -ध्यान हो, हृदय होय अविकार॥40.33॥

ॐ ह्रीं अर्हं वर्तमानशासननायक 'व' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...

तु सर्वर्तुक वन चन्द्रप्रभ, जाकर गए विराज।
वन्दन कर लौटे सभी, ध्याएँ सिद्ध-जिन राज॥40.34॥

ॐ ह्रीं अर्हं वर्तमानशासननायक 'तु' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...

पु पुरुष करे, पुरुषार्थ ही, साधे पन अख सार।
चंचल मन वश में करे, गमन होय भवपार॥40.35॥

ॐ ह्रीं अर्हं वर्तमानशासननायक 'पु' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...

ष ईर्ष्या - तृष्णा ना मरी, मर-मर गया शरीर।
अब तो गुरुवर हो कृपा, हरें भ्रमण भव पीर॥40.36॥

ॐ ह्रीं अर्हं वर्तमानशासननायक 'ष' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...

प वैभाविक पर्याय तरु, पत्र-पत्र जिय भान।
सही दिशा आगे बढ़ें, सबका हो कल्याण॥40.37॥

ॐ ह्रीं अर्हं वर्तमानशासननायक 'प' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...

फ फल की वाञ्छा ना करें, करें सदा सत्काम।
मन में हो नहिं कामना, तभी होय निष्काम॥40.38॥

ॐ ह्रीं अर्हं वर्तमानशासननायक 'फ' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...

ल

जल-फल से स्वागत करें, होय अतिथि सत्कार।

अतिथि ना भूखा जाए, करना प्रभु उपकार॥40.39॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'ल' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

पू

पूज्य श्री गुरुदेव मम,रख दो सिर पर हाथ।

जब तक मुक्ति ना मिले,भव भव देना साथ॥40.40॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'पू' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

रि

हरिये मम सन्ताप सब, जय जगबन्धु दयाल।

ऐसा वर दे दो प्रभो ! हो जाऊँ खुशहाल॥40.41॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'रि' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

त

देहपात्र तप से तपा, कर लूँ आतम शुद्ध।

तन-मन पावन हो बनूँ, शुद्ध बुद्ध अविरुद्ध॥40.42॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'त' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

भू

भूले निजको इन्द्रभूति, किया ज्ञान का मान।

वीर प्रभु के दर्श कर, परदा हटा अज्ञान॥40.43॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'भू' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

रु

रुदन करे राजुल वहाँ,गए नेमि सब त्याग।

हुई शांति जब हृदय में, धारा झट वैराग॥40.44॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'रु' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

हा

हाय-हाय पशु रो रहे, नयनों झरता नीर।

करुण पुकार सुन नेमि ने, हर ली पशुअन पीर॥40.45॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'हा' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

श

पुनश्च दीक्षा ले गए, नेमी गढ़ गिरनार।

स्वातम को ध्याने लगे, हरें भ्रमण का भार॥40.46॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'श' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

च

चन्दन तरू पर लिपटते, मानो काल भुजंग।

कर्कश ध्वनि सुन मोर जब, डरें नाग सर्वग॥40.47॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'च' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

व

कर्तव्य भूलें सभी, याद रहे अधिकार।

याद रहे कर्तव्य तो, सुखी रहे परिवार॥40.48॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'व' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

या

साधन यातायात थे, गाड़ी - घोड़ा - बैल।

अब चलते वायुयान से, फिर भी कटे न गैल॥40.49॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'या' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

ह

आह्वान हो जिननाथ का, पूजा करने काज।

स्थापना सन्निधीकरण, हेतु पुकारें आज॥40.50॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'ह' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

वा

दावानल जंगल लगे, फिरते पशु लाचार।

गज पग-कान खुजाए जब, ले खरगोश आधार॥40.51॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'वा' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

न

दिवस तीन हाथी खड़ा, गई देह अकड़ाय।

बारिश दावानल बुझे, गए सब जीव पलाय॥40.52॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'न' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

म

मन खुश पैर टिकाय गज, गिरा धरा तत्काल।

मरण तभी गज का हुआ, वैभव स्वर्ग विशाल॥40.53॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'म' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

पि

अर्पित हम भी कर रहे, श्रद्धांजली गजराज।

भाव सभी के शुद्ध हों, सिद्ध हों सब काज॥40.54॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'पि' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

त

तरणि त्रिवेणी रत्नत्रय, भवदधि पार लगाय।

पंच महाव्रत धार कर, देह विदेह बनाय॥40.55॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'त' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

सु

सुरगण आए स्वर्ग से, गाएँ मंगल गीत।

शिशु जिन के संग खेलते, बन कर उनके मीत॥40.56॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'सु' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

रौ

रौनक महलों में हुई, मात-पिता खुश होय।

बन्धु-बान्धव हरषते, सबको आनंद होय॥40.57॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'रौ' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

घ

घर-परिवार से राग न, नहीं देह से मोह।

व्रती को वास्तु लोभ न, माया-मद-नहिं कोह॥40.58॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'घ' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

इ

इधर आओ रे आओ, देव बुलावा करते।

सभी वृक्ष इक साथ, फल-फूलों से फलते॥40.59॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'इ' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

तः

परितः खेलें वृक्ष के, घूम घूम सब देव।

सुर संगम आया वहाँ, बन कर नाग स्वमेव॥40.60॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'तः' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

क

कनक - कनक से भिन्न हैं, एक अन्न एक स्वर्ण।

अधिक अन्न खाकर मरे, अधिक स्वर्ण डर हर्ण॥40.61॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'क' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

रो

रोक-टोक ज्यादा नहीं, भोले बच्चों बीच।

ज़रा डाँट से सिसकते, दोनों आँखें मीच॥40.62॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'रो' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

तिमिरान्ध फैला हुआ, माया-मोह-अज्ञान।

महापुरुष आवे कोय, जगे ज्योती सुज्ञान॥40.63॥

ॐ ह्रीं अर्हं वर्तमानशासननायक 'ति' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...

दसोंदिशाँनभविमल, भविमननिर्मलहोय।

षट् ऋतु फलती एक संग, देव बुलाते होंय ॥40॥

ॐ ह्रीं सर्वस्थाने निर्मलता- प्रतिपादकाय अर्हं महाबीजाक्षरसहिताय
श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

धर्म चक्र प्रवर्तनकरी स्तुति

नाशीर्वचः प्रहसनं प्रविलोकवार्ता,
तीर्थप्रवर्तनपरो जगतोऽधिनाथः।
पश्यन्तु तस्य ककुभन्तर-भासमानं,
तेजोऽधिकाग्र-गमनं पृथुधर्मचक्रम् ॥41॥

(छन्द अर्ध ज्ञानोदय)

ना

ज्ञानानन्दी ज्ञानशरीरी, वर्धमान को शत वन्दन।

असंख्यात आतम प्रदेश से, करुं भाव से अभिनन्दन ॥41.1॥

ॐ ह्रीं अर्हं वर्तमानशासननायक 'ना' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...।

शी

शील व्रतों को धारण करके, चारित का हो पालन।

स्वानुभूति से ही होता है, निज आतम अनुशासन ॥41.2॥

ॐ ह्रीं अर्हं वर्तमानशासननायक 'शी' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...।

र्व

सर्व सुखों के सागर जिनवर, सर्व विभावों के त्यागी।

लोकालोक विलोकी ज्ञाता, स्वातम में ही अनुरागी ॥41.3॥

ॐ ह्रीं अर्हं वर्तमानशासननायक 'र्व' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...।

चः

मनो वचः काया बलशाली, मन वच तन शत शत वंदन।

कायबली गोम्मटेश को, शान धर्म जग जन वंदन ॥41.4॥

ॐ ह्रीं अर्हं वर्तमानशासननायक 'चः' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...।

प्र

प्रवीचार दो स्वर्गों में, शेष स्वर्ग निर्बाध कहे,

शैया उत्पाद सुधर्मेशान, बाकी स्वर्ग विमान रहे ॥41.5॥

ॐ ह्रीं अर्हं वर्तमानशासननायक 'प्र' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...।

ह

हरें सदा निज वसु कर्मों को, लक्ष्य हृदय में यही धरें।

नर भव पाकर के अब हम भी, भवाभाव को शीघ्र करें ॥41.6॥

ॐ ह्रीं अर्हं वर्तमानशासननायक 'ह' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...।

स

सन्तों के जीवन को देखें, उन सम ही आचरण करें।

है शिवराह तो एक हि केवल, परम्परा से धर्म वरें॥41.7॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'स' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

नं

त्रिशला नंदन सिद्धारथ सुत, कुण्डलपुर के राज कुमार।

तीस वर्ष में दीक्षा लेकर, हुए वचन मन तन अविकार॥41.8॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'नं' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

प्र

तीर्थ प्रवर्तन चौबीसों, तीर्थकर ही करते हैं।

दिव्यध्वनि जब खिर जाती, गणधर उर में रखते हैं॥41.9॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'प्र' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

वि

है विख्यात अनादी जग में, श्रीगुरु महिमा अनुपमेय।

ज्ञानीजन कहते भव्यों से, तुमरा तन भी तुमको ज्ञेय॥41.10॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'वि' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

लो

नाथ त्रिलोचन तीन छत्र शुभ, तुम शिर पर शोभित होते।

ईशानेन्द्र के द्वारा नित्य, चौंसठ चंवर दुरा करते॥41.11॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'लो' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

क

कैसे कहूँ यशोगाथा मुनि, पंच परम पद संस्थित हैं।

जड़-चेतन का ताना बाना, सुलझाने में समर्पित हैं॥41.12॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'क' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

वा

वानप्रस्थ आश्रम हितकार, धर्म गृही का कहलाता।

साधु तो लेते सल्लेखना, गृही भी प्रीति चित्त लाता॥41.13॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'वा' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

तर्

हर्ता हैं जो कर्म कलुष के, वे ही हैं शिवमग नेता।

भेदक हैं वे कर्म गिरि के, विश्व तत्त्व के है ज्ञाता॥41.14॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'तर्' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

ती

तीर पालिया भव सागर का, अपने ही पुरुषारथ से।

कार्य हुआ निष्पन्न देह के, मन वच तन व्यापारों से॥41.15॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'ती' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

थ

अर्थ की महिमा गुरु बताते, शौचोपकरण कमंडल से।

होय दीर्घ मुख जल डालें तो, अल्प निकलता टोंटी से॥41.16॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'थ' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

प्र

नहिं प्रविष्ट तिर्यच मृगादि, स्वयं सुप्त सिंह मुख में।

नर सिंह पुरुषों की शोभा तो, पुरुषारथ हो जीवन में॥41.17॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'प्र' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

व

हैं चव भेद जु आरत ध्यान, प्रथम वेदना द्वितिय निदान।

तीजा इष्ट वियोग कहाए, योग अनिष्ट चतुर्थ बताए॥41.18॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'व' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

त

वर्तन करते साधु चरित का, महाव्रत गज असवार।

धर्म धुरंधर महा पराक्रम, हो पुरुषार्थ भव से पार॥41.19॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'त' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

न

नर - नारक - सुर - पशु पर्यायें, भावशुभाशुभ बतलाती।

सम्यग्दर्शन पा जाएँ तो, सही मार्ग पर ले जाती॥41.20॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'न' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

प

पश्चिमी रहन सहन को देखो, भारत ने अपनाया है।

छोटे-छोटे कपड़ों से तन, अर्धनग्न दिखलाया है॥41.21॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'प' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

रो

रो-रोकर राजुल यूँ बोली, मुझे छोड़ क्यों जाते हो।

नौभव की मम प्रीति सुपावन, आज ही क्यों ठुकराते हो? ॥41.22॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'रो' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

ज

जन्म मृत्यु दुख नाश करन को, हम मोह त्याग कराते हैं।

मोह कर्म को जीत लें हम तो, शेष स्वयं भग जाते हैं॥41.23॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'ज' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

ग

गमनागमन रहित श्री जिनवर, सिद्धालय में वास हुआ।

भक्तों ने साक्षात् दर्श को, निज में खोज प्रयास किया॥41.24॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'ग' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

तो

नाता तोड़ दिया है जग से, घर-परिवार से मुख मोड़ा

हे स्वामी ! शिवपुर जाने को, तुमने मोह कर्म छोड़ा॥41.25॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'तो' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

धि

अधिकारों को कर्तव्यों को, भूलें नहीं कभी भी हम।

दोनों का निर्वहन करें तो, जीवन में होवे सौख्यम॥41.26॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'धि' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

ना

नाथ बिना कुछ नहीं सुहाता, क्षण - क्षण नाम सुमरते हैं।

ऋषि-मुनि यति अनगारी सब ही, ध्यान आपका धरते हैं॥41.27॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'ना' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

थः

जिननाथः किया कर्मक्षय, हुए शान्ति सुख के आगार।

सुख अनन्त भोगें वे निशदिन, उनके सुख का है नहीं पार॥41.28॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'थः' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

प

शुभ परिणामों से जो भी जन, प्रभु का आराधन करते।

जिनपूजा से पूज्य बनें वे, पद वन्दन-बन्धन कटते॥41.29॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'प' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

श्

शाश्वत सुख दातार हैं भगवन, छवि आपकी है मनहार।

तिरिं स्वयं संसार सिंधु से, भविजन होते भव से पार॥41.30॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'श्' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

य

षडयन्त्र कर्म का नाशें, प्रभु ज्ञान गुफा में रहते।

जो भी श्रद्धा से पुकारता, निज दरश स्वप्न में देते॥41.31॥

ॐ ह्रीं अर्हं वर्तमानशासननायक 'य' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

नू

जन्म कल्याणक के अवसर पर, सुर सुमेरू प्रभु न्हवन करें।

क्षीर नीर की धारा देकर, जिन चरणों में नमन करें॥41.32॥

ॐ ह्रीं अर्हं वर्तमानशासननायक 'नू' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

तु

तुम भक्ति भावना से भक्तों के, बड़े बड़े संकट मिटते।

गिरि विशाल जो पापों के हैं, खण्ड खण्ड होकर गिरते॥41.33॥

ॐ ह्रीं अर्हं वर्तमानशासननायक 'तु' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

त

तल स्पर्शी ज्ञान आपका, लोकालोक निलोक रहे।

समवशरण में जो भी जाता, भूख प्यास नहीं शोक रहे॥41.34॥

ॐ ह्रीं अर्हं वर्तमानशासननायक 'त' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

स्

हे जिन स्वामी भवों-भवों से, रुग्ण चेतना दुख पाती।

शाश्वत सत्ता भिन्न देह पर, विषयाशा बढ़ती जाती॥41.35॥

ॐ ह्रीं अर्हं वर्तमानशासननायक 'स्' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

य

काय भोग जग सुभाव लख, भविमन में संवेग जगे।

तजे परिग्रह थित सुभाव, वैर विकार विभाव भगे॥41.36॥

ॐ ह्रीं अर्हं वर्तमानशासननायक 'य' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

क

कर कषाय मानव दुख पाए, जिनवाणी माँ समझाती।

निष्कषाय के ही बस केवल, जिन धुनि हिरदय बस जाती॥41.37॥

ॐ ह्रीं अर्हं वर्तमानशासननायक 'क' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

कु

कुमति विनाशक ज्ञान प्रकाशक, भव्य कुमुद विकसित करते।

धर्म दिवाकर नीर जिनेश्वर, जिनपद निज चित्त में धरते॥41.38॥

ॐ ह्रीं अर्हं वर्तमानशासननायक 'कु' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

भ

मानस्तम्भ बना पत्थर का, किंतु मूर्तिजिन राजत है।

प्रभु प्रभाव अभिमानी जन का, मान तुरन्त हि नाशत है॥41.39॥

ॐ ह्रीं अर्हं वर्तमानशासननायक 'भ' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

न्

जन्म अनेक गँवाए मैने, तेरा-मेरा ही कर के।

अपनापन है प्रभु आप में, आए भावों में भर के॥41.40॥

ॐ ह्रीं अर्हं वर्तमानशासननायक 'न्' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

त

जिन तन प्रभा परम-औदारिक, कोटि रवि-शशि से भी तेज।

जग के कान्तीमान पदारथ, तुम सन्मुख सब ही निस्तेज॥41.41॥

ॐ ह्रीं अर्हं वर्तमानशासननायक 'त' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

र

रथयात्रा जब भी निकालते, हो प्रभु महिमा का विस्तार।

ईशानेन्द्र तो चमर दुराते, सौधर्म गोद में जिन मनहार॥41.42॥

ॐ ह्रीं अर्हं वर्तमानशासननायक 'र' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

भा

मातृ भाषा अमर हमारी, कहते हैं जिसको हिन्दी।

रस - छन्द - अलंकार से शोभित, ज्यों मस्तक सोहे बिन्दी॥41.43॥

ॐ ह्रीं अर्हं वर्तमानशासननायक 'भा' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

स

सज्जन जिय पर मैत्री भाव हो, गुणी जनों को देख प्रयोद।

दुखी जनों पर करुणा धारें, नहीं किसी से रहे विरोध॥41.44॥

ॐ ह्रीं अर्हं वर्तमानशासननायक 'स' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

मा

परमात्म को प्रकटाऊँगा, सिद्ध साक्षी में दीक्षा ले।

अपलक निरखूँगा जिनवर को, मानों अमृत रस पीलें॥41.45॥

ॐ ह्रीं अर्हं वर्तमानशासननायक 'मा' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

नं

नंदनवन में पाण्डुक शिला पे, न्हवन होय शिशु तीर्थकर।

गंधोदक धारें सुर मस्तक, तीन लोक को क्षेमकर॥41.46॥

ॐ ह्रीं अर्हं वर्तमानशासननायक 'नं' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

ते

तेजोमय मुखमण्डल प्रभु का, सब को आकर्षित करता।

पापी पर भी पड़े दृष्टि तो, उसके भी संकट हरता॥41.47॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'ते' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...

जो

जो भी शिशु जिन लीला देखें, सफल होय जीवन उनका।

नहीं कोई भी कार्य निरर्थक, बुद्धि सहित होता उनका॥41.48॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'जो' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...

धि

मन्दाग्नि में अधिक रवाएँ, तो पाचन नहीं होता है।

किन्तु ज्ञान का वाचन हो तो, ज्ञान हितैषी होता है॥41.49॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'धि' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...

का

कायर देता दोष भाग्य को, उद्यम भी ना कराता है।

पुरुषार्थी नहीं होय प्रमादी, सोया भाग्य जगाता है॥41.50॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'का' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...

ग्र

जिन अग्र धरें शब्द सुमन, हृदय धरा पावन करके।

वपन करें शिवफल बीजों का, अतिउत्साह चित्त धरके॥41.51॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'ग्र' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...

ग

रूप दिगम्बर गुरु का प्यारा, सद्य जात बालक सम है।

बालक में तो हो कषाय पर, मेरे गुरुवर निर्मम हैं॥41.52॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'ग' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...

म

सर्व अमङ्गल नाश करे जो, जिन पूजा वह सुखकारी।

सभी देवियाँ मंगल गाती, गर्भोत्सव में हितकारी॥41.53॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'म' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...

नं

अभिनन्दन करते गुरुओं का, भावों से हम शत शत बार।

अरज यही करते हैं स्वामी ! करो हमारा भी उद्धार॥41.54॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'नं' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...

पृ

निस्पृह रहते गुरु सुख दुख में, समता भाव हृदय धारें।
राग द्वेष वर्जित है जीवन, उपसर्गों को स्वीकारें॥41.55॥
ॐ ह्रीं अर्हं वर्तमानशासननायक 'पृ' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...

थु

प्रथु जिनपद वंदन कर के, श्रद्धा सुमन समर्पित हैं।
सहस्र अठारह शील के धारी, मेरू समान अकम्पित हैं॥41.56॥
ॐ ह्रीं अर्हं वर्तमानशासननायक 'थु' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...

ध

धर्मचक्र के लिए नाथ ने, चक्र सुदर्शन तज डाला।
इसी भावना ने मुझको भी, किया ज्ञान में मतवाला॥41.57॥
ॐ ह्रीं अर्हं वर्तमानशासननायक 'ध' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...

र्म

कर्म करें हम ऐसे पावन, दिवस रैन सुख से बीतें।
भरे हुए हैं जो भव भव से, घट पापों के हों रीते॥41.58॥
ॐ ह्रीं अर्हं वर्तमानशासननायक 'र्म' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...

च

चन्द्र-सूर्य भी रूप आपका, लख कर मन में लज्जित हों।
समवशरण में दिव्य देह तुम, परम कान्ति से सज्जित हो॥41.59॥
ॐ ह्रीं अर्हं वर्तमानशासननायक 'च' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...

क्रम

क्रम से प्रभु बालेन्दु सम, बढ़ते अनुपम शोभा धार।
यौवन में भी पावन हिरदय, मन में आता नहीं विकार॥41.60॥
ॐ ह्रीं अर्हं वर्तमानशासननायक 'क्रम' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...

म्

परमात्म की शरणागत हूँ, सभी कर्म विनशाने को।
मम अव्यय पद प्रकट होय अब, सिद्धि सुपथ में जाने को॥41.61॥
ॐ ह्रीं अर्हं वर्तमानशासननायक 'म्' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...

पूर्णार्घ्य

हास्य-वार्ता-आशिवच, कहें नहीं जिन नाथ।

धर्म चक्र फिर भी चले, नमें जोड़ जुग हाथ॥41॥

ॐ ह्रीं तीर्थ प्रवर्तन प्रतिपाद अर्हं महाबीजाक्षरसहिताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः
पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सर्वसिद्धिदायक स्तुति

चित्तं मदीयमिह लीनमुत त्वयि स्यात्,
त्वद्रूपभा मयि मनः-परमाणु-देशे।
जानामि नो किमिति संघटते समेति,
किं वाम्रबीज-गणनेन रसं बुभुक्षोः॥42॥

(सखी छन्द)

चि

चिन्ता निजात्म की करके, मन में अति आनन्द भर के।

करूं दहन अष्ट कर्मों का, तो राज मिले शिवपुर का॥42.1॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'चि' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...

त्तं

'समणं सुत्तं' है प्यारा, इक ग्रंथ बना है न्यारा।

चव संघ के सूत्र -चुनिन्दा, संकलित किए सानन्दा॥42.2॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'त्तं' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...

म

मन में बस ये ही आवे, कब मुक्ति रमा मिल जावे।

प्रभु सप्त तत्त्व उपदेशी, स्वातम के सदा हितैषी॥42.3॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'म' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...

दी

दीपक बाहर के जलते, पर मोह तिमिर नहीं हरते।

ध्यानानल को प्रकटाया, शुचि ज्ञान केवली पाया॥42.4॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'दी' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...

य

निश्चय शुद्धात्म सुहाता, व्यवहार नयाश्रित नाता।

सिद्धान्त नाथ का न्यारा, ऋषि-मुनियों ने स्वीकारा॥42.5॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'य' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...

मि

पर्याय पूर्व मिट जाती, चव गतियों में भटकाती।

सन्मति मम कुमति सुधारो, भव सागर पार उतारो॥42.6॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'मि' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...

ह

हर श्लोक हितैषी मानो, वर्धमान स्तोत्र को जानो।

रचना है भवि उपकारी, सिंधु प्रणम्य की प्यारी॥42.7॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'ह' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

ली

लीना निज पद में विश्राम, हुए कर्म चूर निष्काम।

साम्राज्य भोक्ष का पाया, नहीं लौट जगत में आया॥42.8॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'लि' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

न

भव का नहीं दिखे किनारा, लाचार है भक्त तिहारा।

भवदधि का तीर दिखादो, परमातम पार लगादो॥42.9॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'न' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

मु

मुनियों ने शरणा पाकर, ऋषियों ने प्रभु को ध्या कर।

प्रभु सम निज रूप उपाया, शिव शुद्ध रूप प्रकटाया॥42.10॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'मु' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

त

मुनि कर निरस्त करमों को, धारें मन दस धरमों को।

संशय-विभ्रम विनशाया, निष्कर्म हुए शिव पाया॥42.11॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'त' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

त्

प्रभु ऋद्धि समत्त्व उपाई, निज शाश्वत सिद्धी पाई।

मुझको करमों ने घेरा, अब होवे ज्ञान उजेरा॥42.12॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'त्' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

व

वन्दन त्रिशला नन्दन को, अभिनन्दन तीर्थकर को।

भव वर्धन भाव नशाए, अन्तर प्रभुता प्रकटाए॥42.13॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'व' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

यि

अतिशायि नाथ जगजेता, प्रभु प्रमुख धर्म के नेता।

परिवर्तन पंच नशाए, भव-अन्तक आप कहाए॥42.14॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'यि' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

स

स्वाभाविक सहज अनन्ता, जय वर्धमान भगवन्ता।

जगदीश तुम्हीं कहलाते, जग जीव शरण में आते॥42.15॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'स' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

या

आया हूँ मैं भक्ती करने, निश्चित मुक्ती सुख भरने।

जगपूज्य वीर हमारे, भक्तों के भाग्य सम्हारे॥42.16॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'या' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

त

दुर्गत होती है उनकी, कुमति होती है जिनकी।

वे भव भव में भटकाते, सब शास्त्र यही बतलाते॥42.17॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'त' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

त

स्तुत्य हैं शिवपुर गामी, घट घट के अन्तर्यामी।

जिन भक्ति संगीत सुनाऊँ, प्रभु महिमा को प्रकटाऊँ॥42.18॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'त' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

व

जिन वर्धमान शिववासी, हुए त्रिविध कर्म मल नाशी।

जियो-जीने दो उपदेशा, दो सबको वीर-सन्देशा॥42.19॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'व' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

द्रु

चिन्मय चिद्रूप को जानूँ, जिन शान्त सरूप पिछानूँ।

शिवमग उद्योत कराऊँ, कैवल्य ज्योति प्रकटाऊँ॥42.20॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'द्रु' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

प

परिणामिक भाव सुभाया, अब स्वानुभव ही सुहाया।

मम मोह-राग-रति हरिए, सब पूर्ण मनोरथ करिए॥42.21॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'प' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

भा

जिनगुण वैभव मन भाया, जग वैभव को ठुकराया।

सब पाप नष्ट हो जाएँ, हिरदय में शान्ति समाए॥42.22॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'भा' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

म

मूरति मनोज हितकारी, भविजन को आनन्दकारी।
प्रभु देहातीत हमारे, हम प्रीत पदों में धारें॥42.23॥
ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'म' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...

यि

तुम कालजयि हो स्वामी, तीनों लोकों में नामी।
अब मुझ पर दया दिखाओ, मेरे भव दुःख मिटाओ॥42.24॥
ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'यि' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...

म

वह मङ्गलीक शुभ दिन था, जब जिनवर जन्म हुआ था।
तुम अजर-अमर-अविनाशी, मैं तुम दर्शन की प्यासी॥42.25॥
ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'म' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...

नः

नः भव्य बन्धु जिनवर हैं, परमेष्ठि परम गुरुवर हैं।
सुस्थित हैं परम पदों में, वन्दन हों पद पद्मों में॥42.26॥
ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'नः' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...

प

पहुँचा दो प्रभु जगतीरा, मिट जाए भव भव पीरा।
नहिं दिखता जगत किनारा, समरथ नहिं भक्त तिहारा॥42.27॥
ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'प' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...

र

रसना प्रभु नाम रटाए, श्री जिनगुण महिमा गाए।
नहीं करूँ किसी की निन्दा, काटूँ सारे जग फन्दा॥42.28॥
ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'र' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...

मा

सुनिए अरदास हमारी, मिल जाए निज निधि प्यारी।
पापों को दूर करावें, इसलिए नाथ गुण गावें॥42.29॥
ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'मा' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...

णु

व्रत अणु से भी हो छोटा, हो जाए समय पे मोटा।
क्योंकि जग जीव ये चाहें, मिल जाएँ शीघ्र शिव राहें॥42.30॥
ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'णु' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...

दे

सब देव देवियाँ आवें, प्रभु का गुणगान करावें।

जिन सहस्र नाम को जपते, निज पुण्य घटों को भरते॥42.31॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'दे' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

शे

शेषान्न बचे न थाली, नहीं व्यर्थ जाय वह नाली।

जितने पदार्थ हैं जग में, पर्याप्त जीव के हक में॥42.32॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'शे' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

जा

प्रभु ऐसी जागृति होवे, कभी चेतना सुप्त ना होवे॥

मैं था अनादि से सोया, प्रभु ने ही मुझे जगाया॥42.33॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'जा' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

ना

अचरज नाना दिखलानें, बाबा तिखाल कहलावें।

अहिक्षेत्र पार्श्व मनहारी, करें पार भव्य उपकारी॥42.34॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'ना' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

मि

संकलेश मिटें सब मन के, नहीं आस्रव मन वच तन के।

जीवन हो सरल सुहाना, सुख पाएँ हम मन माना॥42.35॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'मि' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

नो

नोकर्म - कर्म सब छूटें, भव भव के बन्धन टूटें।

स्वातम होवे शुद्धातम, पद पावें निज परमातम॥42.36॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'नो' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

कि

कितने भव धारे मैने, हुए दोष बहुत अन जाने।

अब कैसे हो छुटकारा, हमको प्रभु आप सहारा॥42.37॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'कि' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

मि

मिला गोत्र कुलोत्तम योगा, नहीं लगा स्वात्म उपयोगा।

हों निष्फल सब संयोगा, लिया पुण्य सभी खुद भोगा॥42.38॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'मि' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

ति

पन समिति अभ्यास कराएँ, तो पास प्रमाद न पाएँ।

चव हाथ भू लख कर जाएँ, हित मित बोलें मुस्काएँ॥42.39॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'ति' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

सं

होंय संत एक - आहारी, लें वस्तु शोध कर धारी।

प्रासुक थल मल मूत्र डारें, ये समिति पंच प्रकारें॥42.40॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'सं' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

घ

बदि माघ चतुरदशि आए, पद्मासन जिन शिव धाए।

आदीश परम उपकारी, षट् विद्या दी हितकारी॥42.41॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'घ' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

ट

नहिं लौट जगत में आते, क्षेमंकर नाथ कहाते।

वर्चस्व आपका भारी, हो तीन भुवन सुखकारी॥42.42॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'ट' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

ते

करते जग में उजियारा, जिन दर्शन भविजन प्यारा।

प्रभु केवलज्ञान धनी हैं, जिनपद मम भक्ति घनी है॥42.43॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'ते' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

स

सब कर्म कलुष है धोता, वर्धन सुख का ही होता।

चिन्तन जिन नाथ करावें, हम ज्ञान गुणातम पावें॥42.44॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'स' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

मे

मेरा अव्यय पद प्रकटे, कर्मों के संकट विधटे।

शरणागत हूँ परमातमा, हो जाए मम शुद्धात्मा॥42.45॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'मे' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

ति

चव गतियों में भ्रमता हूँ, मिटता बनता रहता हूँ।

आओ ! महावीर ! पधारो, भव दुख से मुझे उबारो॥42.46॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'ति' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

किं

यदि किं कर्तव्य विमूढा, तो शास्त्र पढ़ें सब गूढ़ा।

फिर गुरु चरणन में जावें, अपना अज्ञान मिटावें॥42.47॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'किं' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

वा

हे स्वामि ! कहाँ में जाऊँ, हर ओर स्वार्थ हि पाऊँ।

दुनिया में दंभ भरा है, कलियुग ने ज्ञान हरा है॥42.48॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'वा' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

प्र

हैं चक्षु अताप्र प्रभु के, भव फन्द कटे भव भव के।

तुम दोष अठारह नाशे, कैवल्य दिवाकर भासे॥42.49॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'प्र' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

बी

शिवफल बीजों को बोया, बहु कर्म कलंक को धोया।

तुष-माष तत्त्व को जाना, जड़-चेतन भिन्न पिछाना॥42.50॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'बी' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

ज

जन्मा भव भव बहु बारी, हुआ मरण यहाँ दुखकारी।

प्रभु अव्याबाध सुखी हैं, शाश्वत निज आत्म सुखी हैं॥42.51॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'ज' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

ग

हे वर्धमान जगनामी, प्रकटी अनन्त निधि स्वामी।

जय नन्त ज्ञेय के ज्ञाता, तुम सकल लोक के नेता॥42.52॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'ग' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

ण

आतम के गुण गण प्रकटें, भव्यों के दुर्गुण विधटें।

सब विश्व वीर गुण गाए, श्रद्धा से शीश झुकाए॥42.53॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'ण' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

ने

कुछ देने योग्य नहीं मैं, भक्ती से नाथ नमूं मैं।

शब्दों में नहीं लिख पाऊँ, बस पूजा पाठ रचाऊँ॥42.54॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'ने' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

मम नयना आज सफल हैं, जिन दर्श से पाप विफल है।

हो गया धन्य भव मेरा, मै हुआ नाथ पद चेरा॥42.55॥

ॐ ह्रीं अर्हं वर्तमानशासननायक 'न' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...

जिनवर आनन्द सरोवर, ध्याऊँ प्रभु महा मनोहर।

तुम पर शिवरमा रिझाई, सिद्धालय में ले आई॥42.56॥

ॐ ह्रीं अर्हं वर्तमानशासननायक 'र' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...

संसारी सिद्ध ना जाने, प्रभुनयन अगोचर माने।

शिवपुर में आप विराजे, वसु गुण मण्डित प्रभु साजे॥42.57॥

ॐ ह्रीं अर्हं वर्तमानशासननायक 'सं' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...

बुधजन तन की सुध खोते, निज आतम की सुध पाते।

सब भाव शुभाशुभ तजते, मुनि शुद्ध भाव मन रखते॥42.58॥

ॐ ह्रीं अर्हं वर्तमानशासननायक 'बु' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...

भुक्ती - मुक्ती को पावें, शरणा गुरुपद का पावें।

हो मुक्त चिदात्म तन से, शुद्धात्म हो तप बल से॥42.59॥

ॐ ह्रीं अर्हं वर्तमानशासननायक 'भु' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...

रक्षो: मन बच तन बल को, पा जाओ स्वातम बल को।

है यही युक्ती सिद्धि की, होवे प्रसिद्धि सिद्धों की॥42.60॥

ॐ ह्रीं अर्हं वर्तमानशासननायक 'क्षोः' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...

पूणाईर्य

तुम में मम मन लीन हो, या आकर्षण रूप।

अमरस लूँ गुठली नहीं, निज रस पिऊँ अनूप ॥42॥

ॐ ह्रीं आत्म शान्ति प्राप्ताय अर्हं महाबीजाक्षरसहिताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः

पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

आत्मगुणों की शक्तिवर्धक स्तुति

भक्तिश्च सा स्मर-रुषाग्नि-घनौघवर्षा,
मुक्तिश्च सा स्तवनतः स्वयमेति हर्षात्।
शक्तिश्च तृप्यतितरां गुणपूर्णतायां,
ज्ञप्तिश्च विंदति भृशं तव चेतनाभाम् ॥43॥

(छन्द चौपाई)

भ

नरभव सफल हुआ है उसका,
संयमधन अनमोल है जिसका।
मैं भी तो संयम धन चाहूँ,
इसीलिए प्रभु शरणे आऊँ॥43.1॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'भ' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...

क्

सम्यक्त्वादि गुणों को धारें,
रत्नत्रय निधि को स्वीकारें।
पहले कर्म कलंक नशाएँ,
लोक शीश पर वास कराएँ॥43.2॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'क्' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...

ति

दी तिलांजलि जग जड़ धन को,
प्राप्त किया चिन्मय चेतन को।
मुझ निर्धन को संयम धन दो,
अव्यय गुणमय सौख्य सुलभ हो॥43.3॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'ति' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...

श्

परम शुद्ध शाश्वत पद पाऊँ,
प्रतिदिन यही भावना भाऊँ।
जब अशरीरी सिद्ध बनेंगे,
अन्तिम तन से न्यून रहेंगे॥43.4॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'श्' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...

च

रोली चन्दन अबीर बरसे,
जब वसुधा जिनपद स्पर्शे।
एक बार लखें प्रभु विहारा,
दूर होंय सब हृदय विकारा॥43.5॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'च' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...

सा

सात सैन्य ले सौ धर्म आएँ,
नगरी की परिक्रमा लगाएँ।
शिशु जिनको मेरू ले जाएँ,
क्षीर नीर सेन्ह वन कराएँ॥43.6॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'सा' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...

स्

स्मर्यते प्रभु ऋषि मुनियों से,
मिटा मोहतम भी जिन धुनि से।
ऐसे वर्धमान जिन घ्याऊँ,
शुचि चरणों में शीश नवाऊँ॥43.7॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'स्' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...

म

नमन वीर को सहस हमारे,
हम भी संयम पथ स्वीकारें।
प्रभुवर की आभा है प्यारी,
दर्शन कर भवि हों अधिकारी॥43.8॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'म' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...

र

है रमणीय मुखाम्बुज जिनका,
सुमरूँ नाम उन्हीं जिनवर का।
मधुरिम अमृतमय जिनवाणी,
पिला रहे हैं अनुपम दानी॥43.9॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'र' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...

रु

रुचिर प्रभु की है जिनवाणी,
सब जीवों की है कल्याणी।
आतम की महिमा बतलाते,
पशुओं का उद्धार कराते॥43.10॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'रु' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

षा

पुरुषाकार सदैव रहेंगे,
जिय विदेह हो सिद्ध बनेंगे।
नर भव में उपयोग लगाएँ,
भव भव सदा अभाव कराएँ॥43.11॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'षा' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

गु

करने योग्य काम है जो भी,
मन वच तन से करलें सब ही।
शुभ भावों से कर लें पूजा,
जिन गुण गान भजन भी पूजा॥43.12॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'गु' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

नि

योग निरोध जु करते स्वामी,
बनें अयोगी हों शिवधामी।
सिद्ध अनन्त के संग जिनेशा,
काल अनंत तक रहें हमेशा॥43.13॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'नि' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

घ

मेघ गर्जना सम जिन वच हों,
सुनें दिव्यध्वनि तब मन वश हों।
हों हितकार सभी जीवों के,
मैत्री भाव भव भव वैरी के॥43.14॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'घ' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

नौ

जिन पद नौका लिया सहारा,
भव सागर का मिला किनारा।
आप तिरे औरों को तारें,
काष्ठ नाव सम पार उतारें॥43.15॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'नौ' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

घ

अघ नाशक है नाम प्रभु का,
जिन वच संबल शिव साधक का।
मंगल करन अमंगल हारी,
जिन पूजा सबको सुखकारी॥43.16॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'घ' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

व

भाव भासना बिन जिय भटके,
आतम जनम मरण में अटके।
अर्थ सहित भावों से जाना,
मन वांछित मुक्ती फल पाना॥43.17॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'व' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

र्षा

वर्षा होवे समय पे भारी,
हरी भरी हो धरती सारी।
जीवन में खुशहाली होवे,
जिन धुनि वर्षा सब दुख खोवे॥43.18॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'र्षा' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

मु

साधक मुक्ती के महाराजा,
लोक अग्र तिष्ठें जिनराजा।
जो भी जिन गुण मनन कराता,
उसको शिवपुर पथ दिख जाता॥43.19॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'मु' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

क

शक्ती तो हर आतम में है,
लेकिन प्रकट बहुत कम हो है।
जिसने आतम बल प्रकटाया,
उसने आतम वैभव पाया॥43.20॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'क' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

ति

तिरस्कार मत करो किसी का,
बदलो नजरिया सही सोच का।
प्रेम की गंगा सदा बहाओ,
अवगाहन भविजन करवाओ॥43.21॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'ति' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

श्

कश्चित दुखी नहीं हो जग में,
सुखी होय सबही जीवन में।
पूरा विश्व निरोगी होवे,
विलय कोरोना का हो जावे॥43.22॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'श्' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

च

चना अकेला भाड़ न फोड़े,
देश धर्म हित सबको जोड़े।
शक्ति संघ कलियुग बतलाई,
संस्कार भूलो नहीं भाई॥43.23॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'च' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

सा

सागर में ही लहरें उठती,
सागर में ही लय हो जाती।
यों ही जग में जीव जनमते,
मरते फिर पर्याय बदलते॥43.24॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'सा' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

सू

बचपन में संस्कार मिलें जो,
रहें साथ में जीवन भर वो।
प्रकृति भूख में भोजन लें,
संस्कृति अतिथि से पीछे लें॥43.25॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'सू' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...

त

पर्वत सम्मोदाचल प्यारा,
जले नींव में दीपक न्यारा।
स्वस्तिक बना हुआ मनहारी,
प्रलय काल दिखता साकारी॥43.26॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'त' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...

व

वन उपवन अरू ग्राम नगर में,
पद विहार करते मुनि जग में।
मुनि निश्चय व्यवहार के ज्ञाता,
धर्म तीर्थ निर्माण प्रदाता॥43.27॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'व' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...

न

नत शिर होकर नमन कराएँ,
श्री गुरुवर का आशिष् पाएँ।
गुर्वाशीष से हो कल्याणा,
सुगम होय निज पद का पाना॥43.28॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'न' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...

तः

प्रातः नमन करें जिनवर को,
फिर प्रणाम हो मात पिता को।
गुरुवर के चरणों में जाएँ,
जानें स्वातम गुण हर्षाएँ॥43.29॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'तः' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...

स्

स्वामी तीन लोक जगनामी ,
दोष रहित हैं सब गुण धामी।
भव्य जीव नित ज्ञान को पाते,
भक्ती से दुष्कर्म नशाते॥43.30॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'स्' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

व

जिन भक्ति कर देव हरषाते,
नभ से दिव्य सुमन बरसाते।
समवशरण जिन धुनि खिराते,
हृदय कमल सबके विकसाते॥43.31॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'व' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

य

कई जन्मों के पुण्योदय से,
भक्ति करें भवि ज्ञानोदय से।
चतुर्निकाई सुरगण आते,
अपना-अपना पुण्य बढ़ाते॥43.32॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'य' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

मे

मेधावी वे हो जाते हैं,
जो जिनवाणी सुन पाते हैं।
संशय विभ्रम बुद्धि नशाती,
दिल की कली कली खिल जाती॥43.33॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'मे' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

ति

मतिमान वंदन कर ध्याते,
नित प्रभु का गुण गान कराते॥
लक्ष्य बनाया शुद्धातम का,
आश्रय पाया निज-आतम का॥43.34॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'ति' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

ह

मनहर दिव्य रूप जिन प्यारा,
जगत जनों से है अति न्यारा।
जानें हम भी चिद्रूप अपना,
निज में रमकर निज पद वरना॥43.35॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'ह' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

र्षा

हर्षाता जग जिन दर्शन से,
मोह विनाशे स्वाध्याय से।
पंच सहस्र धनु पर जिन राजें,
सिंहासन पर अधर विराजे॥43.36॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'र्षा' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

त्

विद्वत् भविजन शीश झुकाते,
जिन पूजन श्रद्धा से कराते।
यदपि द्रव्य दिव्य नहीं लाए,
तो भी जिनवर उर पधराए॥43.37॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'त्' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

श

जिन चरणों में शीश नवाया,
तुम सा ही बनने मैं आया।
सुरगण भी तो नाचें गाएँ ,
अपना मोह तिमिर विनशाएँ॥43.38॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'श' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

क्

जो भी यान भक्ति जिन पावे,
वो ही भवसागर तिर जावे।
मैं भी परद्रव्यों को छोड़ूँ,
करमों की जंजीरें तोड़ूँ॥43.39॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'क्' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

ति

गत्यागति से मुक्त हो स्वामी,
निज में ही थिर हुए सुनामी।
वर्धमान ने शिवसुख पाया,
मैं भी लगन लगाने आया॥43.40॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'ति' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

शू

शाश्वत निज वैभव को पाया,
व्रत संयम में तनहि गलाया।
धर्मध्यान जीवन में धारूँ,
अपने संचित कर्म निवारूँ॥43.41॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'शू' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

च

रंगमंच संसार बताया,
कर्मों ने जीवों को नचाया।
भटक रहा चारों गतियों में,
कौन हूँ? जान नहीं पाया मैं॥43.42॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'च' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

तृ

तृप्ति मिली है जिन चरणों में,
शान्ति हुई है, दुष्कर्मों में।
मोक्षपुरी का हुआ दिवाना,
मुझको भी अपने घर जाना॥43.43॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'तृ' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

पू

प्राप्त हुए उत्तम संयोगा,
फिर भी भोगों को ही भोगा।
निज में नहीं उपयोग लगाया,
कंचन नरभव व्यर्थ गंवाया॥43.44॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'पू' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

य

एक मात्र सानिध्य नाथ का,
पाप मिटा देता भव भव का।
सो भवि समवशरण में जाँँ,
प्रभु दर्शन करके हर्षाँँ॥43.45॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'य' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...

ति

पंचम गति का मार्ग बताया,
शरणागत को पार लगाया।
ज्ञान आपका है रखवाला,
सदा सुखी हो जानने वाला॥43.46॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'ति' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...

त

भीतर है शांति अति भारी,
खोजें बाहर बने भिखारी।
अन्तर सर में डूबो भाई,
शांति स्वयं तेरे मन आई॥43.47॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'त' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...

रां

सुतरां बात ये तुम भी जानो,
जड़ चेतन को भिन्न हि मानो।
जब पाषाण अशुद्धि खोता,
खरा स्वर्ण वह तब ही होता॥43.48॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'रां' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...

गु

ज्ञान ध्यान श्रंगार गुरु का,
क्षमा कोष भंडार मुनि का।
साधना से निजगुण प्रकटाँँ,
निकट मोक्ष के स्वयं हि जाँँ॥43.49॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'गु' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...

ण

प्राण जाँँ पर वचन न जाँँ,
दृढ़ता से हम नियम निभाँँ।
लघु नियम भी दीर्घ कहाता,
नियम हेत भविप्राण गवाँँता॥43.50॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'ण' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

पू

पूजा पाठ कर्तव्य हमारा,
होय गृहस्थी का विस्तारा।
भाव सहित हो पूजा हमारी,
तो भव भव में हो सुखकारी॥43.51॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'पू' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

र्ण

पूर्ण समर्पित जीवन मेरा,
जैसा भी हूँ भक्त मैं तेरा।
तुम अशरण को देते शरणा,
तुम वाणी से भव दुख हरना॥43.52॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'र्ण' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

ता

जो पापों से डरता प्राणी,
वो ही पुण्यातम है ज्ञानी।
हर्ष-विषाद नहीं करता है,
संयम समता को धरता है॥43.53॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'ता' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

यां

गत्यां गत्यां जीव भटकता,
कभी स्वर्ग कभी नर्क में धँसता।
कभी पशु-मानव भी बनता,
निज सुधि आए पार उतरता॥43.54॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'यां' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

ज्ञ

यज्ञ ज्ञान का जो कर पाते,
स्वातम का कल्याण कराते।
मैं भी ज्ञानाभिलाषी स्वामी,
पार लगा दो अन्तरयामी॥43.55॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'ज्ञ' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

प्ति

प्राप्ति हुई सम्यग्दर्शन की,
खिली कली जन जन के मन की।
जो भी समकित सावन पावे,
हरियाली उसके घर छावे॥43.56॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'प्ति' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

श्

निश्चित है सोपान ये पहला,
शिवपथ बढ़ता जीव - अकेला।
दीन पंगु अल्पायु न होवे,
स्त्री भव से भी बच जावे॥43.57॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'श्' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

च

चन्द्रोदय तीरथ पर आओ,
एक बार सब दर्शन पाओ।
पंचकल्याणक अवसर आए,
भर भर हाथों द्रव्य लुटाएँ॥43.58॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'च' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

विं

युग पादारविंद गुरुवर के,
रहें पास मम उर पुष्कर के।
लीन हुए हैं कीलित सम हैं,
मन मन्दिर स्थिर अनुपम हैं॥43.59॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'विं' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

द

सहता रहा **दर्द** तन मन का,
बिना ज्ञान संसार में भटका।
अब आया है समझ में मेरे,
व्यर्थ लगाए भव भव फेरे॥43.60॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'द' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

ति

तिरते भवदधि तट प्रभु पहुँचे,
ऊर्ध्व लोक में सबसे ऊँचे।
नहीं यहाँ से दिखते स्वामी,
फिर भी पावन जिन अनुगामी॥43.61॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'ति' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

भृ

विश्व **भृत्** नाम जपें जिनवर का,
ध्यान धरें हम निज आतम का।
बलिहारी प्रभु के चरणों की,
साता हो मम दुष्करमों की॥43.62॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'भृ' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

शं

शंकर शंवद तुम्ही कहे हो,
त्रिभुवन भास्कर तुम्हीं रहे हो।
केवलज्ञान रवि प्रकटाया,
हमने दीपक ज्ञान जलाया॥43.63॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'शं' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

त

प्रभुजी अद्भुत **भक्ति** करूँ मैं,
अष्ट कर्म को नष्ट करूँ मैं।
जो भी ध्यान तिहारा धरता,
निश्चय भवसागर से तिरता॥43.64॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'त' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

व

मैं भी यही भावना भाऊँ,
अपने शुद्ध स्वरूप को पाऊँ।
प्रभुवर की आभा मनहारी,
जिन दर्शन से हों अविकारी॥43.65॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'व' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

चे

सच्चे मन से हो उपासना,
भाव विकारी रहें पास ना।
तीन योग से पूजा करता,
अतिशय पुण्य फलों से भरता॥43.66॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'चे' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

त

सार तत्त्व प्रभु ने बतलाया,
जीवाजीव का ज्ञान कराया।
शिवपथ पर चलना सिखलाया,
भक्त को भी भगवान बनाया॥43.67॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'त' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

ना

नाम निशान नहीं करमों का,
दहन किया सब दुष्करमों का।
जले बीज से वृक्ष उगे ना,
शुद्ध जीव फिर जन्म धरे ना॥43.68॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'ना' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

भा

भावलिङ्गी मुनि पद पाना है,
अगले भव मैने ठाना है।
पथिक बनूँ मुक्ति मारग का,
सही भाव है आप भक्त का॥43.69॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'भा' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

अहम् भाव जिसका छुट जाता,
महामंत्र से जुड़ता नाता।
वर्धमान शुभ नाम सुहाया,
प्रभु गुण चिंतन कर सुख पाया॥43.70॥

पूणाईय

अगनिकषायों की बुझे, पियें भक्तिरस नीर।

जानें शक्ति पूर्ण गुण, मिले मुक्ति सुख सीर ॥43॥

ॐ ह्रीं आत्मगुण शक्ति प्रतिपादकाय अर्हं महाबीजाक्षरसहिताय
श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

निश्चिन्त करने वाली स्तुति

भृत्योऽपि भूपतिमरं तु सदाश्रयामि,
प्रोत्थाय मस्तक - मतीव - मदेन याति।
त्रैलोक्यनाथ-पद-पंकज-भक्ति-भक्तो,
निश्चिन्तितां यदि दधाति तु विस्मयः किम् ॥44॥

(छन्द पदरी)

भृ
भृत्य तिहारे हम हैं नाथ,
पार करो हमको शिवनाथ।
दीन-हीन शरणागत जान,
भक्ति भक्त की नाथ पिछान ॥44.1॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'भृ' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...

तृ
सत्य से मिटते सारे दोष,
बढ़ता आत्मगुणों का कोष।
भक्त आपकी शरण में आए,
प्रभु गुण गण का गान कराए ॥44.2॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'तृ' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...

यो
नित्योदित जिनवर मुख होय,
ज्यों नभ में चन्द्रोदय होय।
पूर्ण कलामय सोहे चन्द्र,
भामण्डल युत श्री जिनचन्द्र ॥44.3॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'यो' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...

पि
संकल्पित होवे मम मन,
करूँ कषायें सभी शमन।
जिनदर्शन से आनन्द आए,
ज्यों निर्धन धन पा हर्षाए ॥44.4॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'पि' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...

भू

भूल हुई है हमसे भगवन,
फँसे हुए है पाप की दल दल।
अब तो ऐसी कृपा कराएँ,
रोग शोक सब ही मिट जाएँ॥44.5॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'भू' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

प

सबके मन में हों सन्ताप,
सो पुरुषारथ करते आप।
भक्तों में भी आस जगाय,
जिन भक्ती की लगन लगाय॥44.6॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'प' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

ति

जिन चरणन की भक्ति कराय,
सद्बुद्धि हम को मिल जाए।
व्रत तप संयम कर स्वीकार,
मुनि दिक्षा लें भाव अपार॥44.7॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'ति' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

म

विषय भोग में मद से चूर,
रहा सदा अपने से दूर।
अब तो प्रभु बुला लो पास,
हो जाए सिद्धालय वास॥44.8॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'म' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

रं

रंच मात्र नहीं सुख है भोग,
सम्यग् दृष्टि अन्तर योग।
मेरे मन प्रभु करो प्रवेश,
अनुभव होने स्वात्म प्रदेश॥44.9॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'रं' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

तु

तुम हो मात-पिता सम नाथ,
शिवपथ पर देना मम साथ।
जिनभक्ति से मन पुलकाय,
ज्यों मयूर घन लख हर्षाय॥44.10॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'तु' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

स

श्वास श्वास में अनहद नाद,
जिन चरणों में हो आल्हाद।
दिव्यध्वनि सुन हो निज ज्ञान,
जय जय वर्धमान भगवान॥44.11॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'स' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

दा

दाता द्वादशांग के नाथ,
त्रिभुवन तिलक कहे जिननाथ।
चारों अनुयोगों को जान,
सातों ही नय से पहचान॥44.12॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'दा' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

श्र

श्रमण करें श्रम निजहित काज,
पाने को शिवपुर साम्राज।
हम को भी दो गुरु निर्देश,
हम भी पहुँचे अपने देश॥44.13॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'श्र' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

या

माया मिथ्या और निदान,
तीनों शल्य कहें भगवान।
होय निशल्य व्रती कहाय,
निर्मल मन तुमसा बन जाय॥44.14॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'या' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

मि

मिल जाए आगम का ज्ञान,
स्वातम की भी हो पहचान।
हो जाएँ सब शान्त विकल्प,
मुक्ती का जब हो संकल्प॥44.15॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'मि' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

प्रो

प्रोक्तमर्हद जिन भगवन्त,
नवपद सप्त तत्त्व जिय नन्त।
लेश्या द्रव्य जीव षट्काय,
मोक्ष मूल पंचास्तिकाय॥44.16॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'प्रो' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

त्

वत्स खड़ा है शीश झुकाय,
भक्त वत्सल को अरज सुनाय।
कर्मों से सन्तप्त हूँ नाथ,
आज पकड़ लो मेरा हाथ॥44.17॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'त्' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

था

यथाजात मुनि का जिनरूप,
रत्नत्रय निधि धरें अनूप।
हो व्यक्तित्व विराट महान,
गुरुवर जैन धर्म की शान॥44.18॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'था' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

य

यति-मुनि-ऋषि भी करें प्रणाम,
ध्यान करें नित प्रातः-शाम।
पतित जनों को नाथ उठाय,
डुब रहे जो उन्हें तिराय॥44.19॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'य' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

म

जननी से भी अधिक महान,
प्रभु अनन्त उपकारी जान।
मात करे तन का निर्माण,
अजर-अमर पद दें भगवान॥44.20॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'म' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...

स्

वस्तु स्वरूप जानते आप,
समता से मेटे भव ताप।
धन्य हुआ जिन पूजन आय,
तुम पूजा सम कुछ नाहिं भाय॥44.21॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'स्' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...

त

दौलत को जड़ नश्वर जान,
शाश्वत स्वातम को पहचान।
भेदज्ञान विज्ञान महान,
पाया प्रभु ने केवलज्ञान॥44.22॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'त' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...

क

कर न सकूँ मैं भाव हि व्यक्त,
हूँ अज्ञानी पर तुम भक्त।
तुम प्रभु त्रिभुवन श्रेष्ठ कहाय,
स्वातम गुणवैभव प्रकटाय॥44.23॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'क' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...

म

अपना मन रखता जो साफ़,
उसकी गलती होती माफ़।
दर्श उसे प्रभु का मिल जाए,
संकट उसका झट कट जाए॥44.24॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'म' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...

ती

तीर दिखाया भवदधि आय,
पता बताया है शिव राह।
जुट जाँ हँ मन वच काय,
छुट जाँ मद मोह नशाय॥44.25॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'ती' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

व

वन्दन करते बारम्बार,
हरो नाथ दुर्गुण दुखकार।
प्रतिदिन प्रभु गुणगान कराय,
अपना जीवन सफल बनाय॥44.26॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'व' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

म

नमन करूँ मैं नाथ त्रिकाल,
निरख नाथ को होऊँ निहाल।
जो पाता प्रभु शरण महान,
निर्धन भी होता धनवान॥44.27॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'म' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

दे

पहुँच गए प्रभु चिन्मय देश,
कर जड़ चेतन ज्ञान विशेष।
पर पदार्थ क्षण भंगुर जान,
अविनाशी स्वातम पहचान॥44.28॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'दे' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

न

नयन अगोचर हैं जिनराज,
फिर भी मोहित जीव समाज।
पाप सभी के जाँ पलाय,
मनो कामना पूर्ण कराय॥44.29॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'न' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

या

किया न पापोदय शुभ काम,
आर्त रौद्र ही धारा ध्यान।
अब पापों का हो अवसान,
वसुविध कर्म की होवे हान॥44.30॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'या' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

ति

लौकान्तिक सुरगण सब आय,
प्रभु का तप कल्याण - मनाय।
अनुप्रेक्षा द्वादश सुखकार,
जिनवर वंदन बारम्बार॥44.31॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'ति' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

त्रै

त्रैकालिक पूजें व्रति जीव,
मन में धारें भक्ति अतीव।
ज्ञान सुधा बहती रसधार,
पीकर भवि होते अविकार॥44.32॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'त्रै' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

लो

लोकालोक विलोकन हार,
हैं सम्पूर्ण विश्व ज्ञातार।
जिनगुणगान में बीते काल,
नमन करूँ जिनराज त्रिकाल॥44.33॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'लो' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

क्

मुक्ती तक देना प्रभु साथ,
शीश झुका जोड़ूँ द्वय हाथ।
भक्त आपका है नादान,
विघ्नों में रखना प्रभु ध्यान॥44.34॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'क्' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

य

कृतकृत्य हो जिनवर आप,
भव भव के मेटे सन्ताप।
गणधर देवों के तुम ईश,
ऋषि मुनि राज नमें नत शीश॥44.35॥

ॐ ह्रीं अर्हं वर्तमानशासननायक 'य' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...

ना

इन्द्र जपें सहसाधिक नाम,
तुम तो हो जिनवर निष्काम।
मुख छवि नाथ की अद्भुत शान्त,
भटके पथिक होय निर्भान्त॥44.36॥

ॐ ह्रीं अर्हं वर्तमानशासननायक 'ना' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...

थ

नाथ ज्ञान गुण मणि मय दीप,
सहसनाम गाऊँ गुण गीत।
तेल बत्ती बिन दिया निर्धूम,
मची नाथ गुण गरिमा धूम॥44.37॥

ॐ ह्रीं अर्हं वर्तमानशासननायक 'थ' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...

प

पूज्य प्रभु के पद की आस,
त्रस होकर भी मिटा न त्रास।
संकट सब हो जाएँ दूर,
तो पाऊँ निज सुख भरपूर॥44.38॥

ॐ ह्रीं अर्हं वर्तमानशासननायक 'प' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...

द

जिन दर्शन पाने दिन रैन,
भक्त गँवाते अपना चैन।
रो-रोकर यों करें पुकार,
कब होंगे दर्शन हितकार॥44.39॥

ॐ ह्रीं अर्हं वर्तमानशासननायक 'द' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...

पं

पंचमगति दायक जिन नाथ,
मुझ अनाथ को करो सनाथ।
जो प्रभु पद की करता सेव,
मेंढक भी हो दिवि में देव॥44.40॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'पं' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

क

निकट नाथ रहने की चाह,
मिलती रहे मुक्ति की राह।
जग में रहकर मन घबराय,
कैसे आतम गुण प्रकटाय॥44.41॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'क' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

ज

जग में हैं आदर्श जिनाय,
जिन दर्शन से मन हर्षाय।
मेरे उर पुष्कर में आप,
विकसित रहो मिटे भव ताप॥44.42॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'ज' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

भ

भविजन प्रभु का ध्यान धराय,
हैं अदृश्य यदपि जिनराय।
तो भी श्रद्धा से दूँ जाप,
मुक्ति रमापति हो प्रभु आप॥44.43॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'भ' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

क्

भक्ति करूँ विद्या मुनिराय,
गुरु चरणों में शीश नवाय।
आया हूँ अब तुम द्वारे पर,
शरणा मुझको दे दो मुनिवर॥44.44॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'क्' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

ति

तिरने की अब कला सिखाय,
तीर जगत का दो दर्शाय।
मैं भी धरूँ दिगम्बर वेश,
आना मुझको भी तुम देश॥44.45॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'ति' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

भ

भक्त आपका ही गुण गाय,
पी पराग मनु भ्रमर गुंजाय।
ज्यों शिशु पाकर माँ की गोद,
खुश होता मन आनंद मोद॥44.46॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'भ' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

क्

भक्त खड़ा दर दया निधान,
ज्ञान सुधा करने को पान।
वचनामृत दे दो सुखकार,
नाथ! आप हो परम उदार॥44.47॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'क्' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

तो

जयवन्तो परमेष्ठि पाँच,
तुम पथ ही है जग में साँच।
जो भी इनकी शरण में आय,
वह भी निज स्वरूप पा जाय॥44.48॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'तो' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

नि

सन्निधि श्रीगुरुवर की पाय,
सोए भविक स्वयं जग जाय।
भोले जीव भी पुण्य कमाय,
शिव पथ पर दें कदम बढ़ाय॥44.49॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'नि' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

श

विश्ववन्द्य अर्हंत जिनेश,
श्रद्धा से मिटते भव क्लेश।
मिल जाए मुझ को वरदान,
मुक्तिपुरी को होय प्रयाण॥44.50॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'श' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

चि

चिन्मयी चेतन गुण का कोष,
जीव मिटा दे यदि सब दोष।
प्राप्त होय शिवपुर का द्वार,
हो जाता जग का उद्धार॥44.51॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'चि' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

न्

जिसका जन्म-मरण नश जाय,
छ्यालिस गुण मंडित हो जाय।
करें भव्य जिनवर गुणगान,
क्षय वसु कर्म हुए भगवान॥44.52॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'न्' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

ति

यति मुनि नित्य नवाते शीश,
चरणों में जिनवर-जगदीश।
तीन लोक से वंद्य जिनाय,
शत इन्द्रों से पूज्य कहाय॥44.53॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'ति' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

तां

तांडव नृत्य करें सुरपति तब,
जन्म कल्याणक उत्सव हो जब।
सहस नयन से निरखें शिशु जिन,
जन्म जयन्ती हो पावन दिन॥44.54॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'तां' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

य

वीतराग बन्दुं जिनराय,
रागद्वेष से रहित जिनाय।
हैं सर्वज्ञ ज्ञान शुचि पाय,
भविजन हित जिन ध्वनि खिराय॥44.55॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'य' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

दि

मन मन्दिर में हो प्रभु वास,
या फिर प्रभु बुलालें पास।
बिन प्रभु के मैं हूँ लाचार,
प्रभु ही भव से तारें पार॥44.56॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'दि' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

द

यदि हो प्रभु का आशिर्वाद,
मिल जाए मुझको निज स्वाद।
जिन पर पूरा है विश्वास,
वे निश्चय पूरे मम आस॥44.57॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'द' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

धा

धारें भवि मन हर्ष अपार,
सुने गुरु प्रवचन रस धार।
गुरुवर सन्त शिरोमणि जान,
अक्षय आत्मगुणों की खान॥44.58॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'धा' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

ति

ख्याति होय तो बढ़े न मान,
ख्याति बिना नहिं गुण अवसान।
जो भी सिद्ध होंय शुद्धात्म,
वे ही जग में हों परमात्म॥44.59॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'ति' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

तु

पांडव तुम्ही कृष्ण दिलाय,
गंगा में गोते लगवाय।
सबने खूब स्नान कराय,
फिर भी उसको कड़वा पाय॥44.60॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'तु' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

वि

हुए विरक्त जगत से स्वामी,
ध्यान धरें निज अन्तर्यामी।
सुख अनन्त से युक्त हो गए,
आवागमन विमुक्त हो गए॥44.61॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'वि' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

स्

रहें तटस्थ सदा मुनिराज,
भव दधि तट पहुँचे ऋषिराज।
अतः करें जिन धर्म प्रचार,
सदा साधु की हो जयकार॥44.62॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'स्' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

म

महा मंत्र नवकार विचित्र,
पढ़ कर भविमन होय पवित्र।
अर्हत सिद्ध दोनों भगवान,
शेष तीन पद गुरु गुणवान॥44.63॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'म' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

यः

यः सुमरे महामंत्र नवकार,
छूट जाए उसका संसार।
दोष सभी उसके मिट जाय,
निकल भंवर से भवतट पाय॥44.64॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'यः' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

सुर **किन्नर** प्रभु के गुण गाय,
नाच नाच कर धूम मचाय।
शिशु जिन पर जाँँ बलिहार,
सुर संगीत होय मनहार॥ 44.65॥

जीवानाम् शरण हैं गुरुवर,
भक्तों के सब संकट हर कर।
पावन कर देते हैं भविमन,
भक्त समर्पित करते तन मन॥44.66॥

ॐ ह्रीं अर्हं वर्तमानशासननायक 'म्' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्यम्...

**आश्रय भूपतिपाय के, सेवक भी इतराय
भक्त त्रिलोकीनाथ का, क्यों नहीं भव तिर जाय? ॥४४॥**

ॐ ह्रीं भक्त निश्चिन्तिता प्रतिपादकाय अर्हं महाबीजाक्षरसहिताय
श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।



हिंसा नाशक स्तुति

सत्यं त्वया सुविहिताऽत्र मुनेरहिंसा,
बाह्यान्तरङ्ग-यम-माप्य समाचरत् ताम्।
अन्तः प्रभाव इति केवलबोध-सूति-
र्यज्ञार्थ-हिंसन-निवृत्ति-बहि-र्विभूतिः ॥45॥

(छन्द दोहा)

स

आश्चर्य इसमें नहीं, प्रभु निर्दोष स्वभाव।
दोष कोष - का मैं बना, है विचित्र ये भाव॥45.1॥

ॐ ह्रीं अर्हं वर्तमानशासननायक 'स' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...

त

त्वं पावन परमेश हो, प्रतिदिन पूजें भव्य।
जो निर्मल स्वातम करे, गति पंचम है नन्य॥45.2॥

ॐ ह्रीं अर्हं वर्तमानशासननायक 'त' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...

यं

नित्यं नाथ नमन करूँ, पूजूं अष्ट प्रकार।
निजानन्द मुझको मिले, होवे मम उपकार॥45.3॥

ॐ ह्रीं अर्हं वर्तमानशासननायक 'यं' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...

त्

वर्षा होती रत्न की, पन्द्रह माह अपार।
जब जिनवर का जन्म हो, नमते सुर शत बार॥45.4॥

ॐ ह्रीं अर्हं वर्तमानशासननायक 'त्' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...

व

यह वह करते बीतता, जीवन काल अनन्त।
अब चेतन की सुन कथा, करूँ कर्म का अन्त॥45.5॥

ॐ ह्रीं अर्हं वर्तमानशासननायक 'व' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...

या

अरे जीव क्या कर रहा, गुरुवर रहे पुकार।
पर परिणति को त्याग कर, अपनी कुमति सुधार॥45.6॥

ॐ ह्रीं अर्हं वर्तमानशासननायक 'या' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...

सु

सुखी नहीं कोई यहाँ, है दुखमय संसार।

धर्म बिना सुख है नहीं, जिन वच जग हितकार॥45.7॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'सु' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

वि

भूख-प्यास-विस्मय सभी, अठरह दोष निवार।

दिव्यध्वनि सुन भव्य को, हो सुख शांति अपार॥45.8॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'वि' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

हि

रहित रहे कामादिक से, पूज्य दिगम्बर सन्त।

सब जीवों के हैं हितू, होय पाप का अन्त॥45.9॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'हि' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

ता

है विशेषता दान की, श्रेष्ठ पात्र-दातार।

दे अहार आदीश को, हो श्रेयांस भव पार॥45.10॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'ता' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

त्र

यत्र - तत्र सर्वज्ञ ना, फैला भ्रष्टाचार।

सुसंस्कार भूले सभी, रहा ना शिष्टाचार॥45.11॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'त्र' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

मु

मुकुलित कमल खिलें तभी, जब रवि रश्मि प्रसार।

ज्ञान नेत्र मेरे खुले, होवें दूर विकार॥45.12॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'मु' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

ने

पाने को भव त्राण मैं, भाव विशुद्धि विचार।

जिन वचनों से कर्म मल, धुले-होंय भव पार॥45.13॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'ने' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

र

ज्ञान सुधा भर भर पिऊँ, पिला रहे गुरुदेव।

गुरुपद की महिमा अगम, करूँ सदा गुरु सेव॥45.14॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'र' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

हिं

हिंसा चोरी झूठ ना, परिग्रह नहीं कुशील।

पुण्य कमाएँ तज गृही, धारें सातों शील॥45.15॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'हिं' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

सा

सात्त्विक रखते भाव हम, पाने को स्वभाव।

तामस राजस भाव तज, धरें भद्रता भाव॥45.16॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'सा' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

बा

बालक हूँ कुछ बोध ना,कीनी अब तक भूल।

चलूँ नाथ चारित सुपथ, पा जाऊँ भव-कूल॥45.17॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'बा' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

ह्या

बाह्यान्तर परिग्रह तजें, मुनिवर चौबिस भेद।

आजीवन ही त्यागते, नहीं हो किंचित् खेद॥45.18॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'ह्या' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

न्

नन्त्र रही महिमा प्रभू,कोई न पावे पार।

अनन्त चतुष्टय के धनी, नमन हो बारम्बार॥45.19॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'न्' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

त

तन्मय हो प्रभु पूजते, ले कर में वसु द्रव्य।

कुछ ही भव में मुक्त हों, पुण्यात्मा वे भव्य॥45.20॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'त' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

र

पर की बातें सब करें, चर्चा करें न आत्म।

आत्मध्यान से ही सुलभ,जीव होय शुद्धात्म॥45.21॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'र' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

ङ्ग

झरती है सर्वाङ्ग से,दिव्य ध्वनि सुखकार।

कम्पन नहीं तालु - अधर, अनहद नाद विचार॥45.22॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'ङ्ग' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

य

पूजन कर जिनराय की, शिवपथ सुलभ कराय।

जिन पूजा भक्ती बिना, कोई न सौख्य उपाय॥45.23॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'य' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...

म

स्वात्म दृष्टि सुखकार, पर ममता दुख जान।

स्वात्म में ही हो रमण, इच्छा है भगवान॥45.24॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'म' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...

मा

महिमाशाली वीर जिन, चौबिसवें तीर्थेश।

जीयो जीने दो सदा, दिया दिव्य सन्देश॥45.25॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'मा' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...

प

प्राप्त हुई मुक्ति जिन्हें, उनका सुयश अपार।

गुणगरिमा गौरव विशद, जीवों को हितकार॥45.26॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'प' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...

य

पाया गुरु सान्निध्य तो, त्याग भाव साकार।

सम्यग्दर्शन ग्रहण कर, हुआ आत्म - उद्धार॥45.27॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'य' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...

स

सब देवों के देव जिन, त्रिभुवन तिलक महान।

सुर-नर-पशु भी पूजते, देते सब को ज्ञान॥45.28॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'स' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...

मा

कर्म डसे तब मानिए, जिनवाणी न सुहाय।

सर्प डसे तब जानिए, रुचिकर नीम चबाय॥45.29॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'मा' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...

च

वचनों में नवकार हो, मन में प्रभु का ध्यान।

तन में जिन भक्ति परम, निश्चित हो निर्वाण॥45.30॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'च' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...

र

भक्ति नीर से ही धुले, पाप पंक युत आत्म।

निर्मल आत्म होय कर, बन जाय परमात्म॥45.31॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'र' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

तृ

सुहृत् सौम्य सुखदः सुमुख, है सुधोष जिन नाम।

सहस नाम ले भक्ति से , करें सुधर्म प्रणाम॥45.32॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'तृ' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

ता

निज ताकत मैं खो रहा, भोग विषय में चूर।

हे स्वामी! शक्ति मिले, होऊं न तुम से दूर॥45.33॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'ता' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

म्

नित्यं नाथ नमाम्यहम् पूजूं ले वसु द्रव्य।

अजर-अमर सुख प्राप्त हो, शिवपुर है गन्तव्य॥45.34॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'म्' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

अ

परम शुद्ध अविकार जिन, त्यागे सभी विकार।

चव गतियों में जन्म ले, जिय भटके संसार॥45.35॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'अ' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

न्

धन्य हुए वे जन सभी, जो नर भव को पाय।

मिथ्या माया मोह तज, करते मोक्ष - उपाय॥45.36॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'न्' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

तः

अतः नारि भव का हमें, करना है उपयोग।

श्रमणी हो उपचार से, साधें शिवमग योग॥45.37॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'तः' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

प्र

प्रणमूं बारम्बार मैं, वर्द्धमान भगवान।

है असार संसार ये, सार धर्म जिन जान॥45.38॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'प्र' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

भा

भावभक्ति से युक्त हो, पापों को दें छोड़।

सहज सरल जीवन बने, पर से लूँ मुख मोड़॥45.39॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'भा' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

व

भव भव में अज्ञान से, पाया जग में त्रास।

किए कर्म क्षय नाथ ने, सो मैं उनका दास॥45.40॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'व' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

इ

इत्थं सुन जिन दिव्यध्वनि, जिय करते कल्याण।

यथाख्यात चारित्र से, पा जाते निर्वाण॥45.41॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'इ' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

ति

परिणति तो सुधरी नहीं, जिय घूमे संसार।

जागृति होवे स्वात्म में, तो हो जीवोद्धार॥45.42॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'ति' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

के

भव्य जनों के भाव ही, मुक्त कराते भक्त।

गमन करें शिव मार्ग पर, जग में नहीं आसक्त॥45.43॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'के' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

व

स्व सन्मुख होऊँ स्वयं, स्वानुभूति हो नाथ।

सुनो अरज मेरी यही, नमन करूँ नत माथ॥45.44॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'व' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

ल

लक्ष्य बनाएँ मुक्ति का, अनुभव करते आत्म।

जिन चर्या को पालते, हो जाते शुद्धात्म॥45.45॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'ल' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

बो

बोए बीज बबूल के तो, आम कहाँ से पाय।

यों जिय फल दुष्कर्म के, भोगे दुर्गति जाय॥45.46॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'बो' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

ध

धर्माश्रय से जीव की, हो अच्छी भवितव्य।

तन-मन को साधे वही, करे पूर्ण कर्तव्य॥45.47॥

ॐ ह्रीं अर्हं वर्तमानशासननायक 'ध' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...

सू

सूर्योदय ज्यों पूर्व में, जन्मे श्री महावीर।

तीन लोक आनन्द हो, मिटी भ्रमण की पीर॥45.48॥

ॐ ह्रीं अर्हं वर्तमानशासननायक 'सू' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...

ति

करें पतित-पावन प्रभो, हो जिय का उपकार।

जिन वचनामृत श्रवण कर, उपजे सौख्य अपार॥45.49॥

ॐ ह्रीं अर्हं वर्तमानशासननायक 'ति' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...

य

घूमा तिर्यक् लोक में, छुआ न स्वातम लोक।

दे दो प्रभु आशीष ये, रमण हो अन्तर्लोक॥45.50॥

ॐ ह्रीं अर्हं वर्तमानशासननायक 'य' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...

ज्ञा

ज्ञान दर्श से युक्त हो, रस - गंधादि विहीन।

पुद्गल से दृष्टि हटा, जिय हो स्वातम लीन॥45.51॥

ॐ ह्रीं अर्हं वर्तमानशासननायक 'ज्ञा' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...

थ

पाने को सर्वार्थ मै, पूजूँ जिन सद्भाव।

पर-ममता में भटकते, दुखमय देह लगाव॥45.52॥

ॐ ह्रीं अर्हं वर्तमानशासननायक 'थ' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...

हिं

हिंसादिक पन पाप अरू, कसैं कषायें आत्म।

बिन सुधरे परिणाम तो, सुलभ नहीं शुद्धात्म॥45.53॥

ॐ ह्रीं अर्हं वर्तमानशासननायक 'हिं' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...

स

सहज सरल हो भावना, तो जीवन निष्काम।

सुख से हो परिपूर्ण जिय, निज में ले विश्राम॥45.54॥

ॐ ह्रीं अर्हं वर्तमानशासननायक 'स' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...

न

मिथ्याचरण न हो कभी, कहते हैं जिनराज।

रत्नत्रय आचरण ही, अनुपम एक जहाज॥45.55॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'न' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

नि

निराबाध सुख ही मिले, ऐसी किरिया होय।

मिले नाथ सौभाग्य से, नर भव व्यर्थ न होय॥45.56॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'नि' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

वृ

वृथा बिताया समय को, रहा भोग में लीन।

अन्त समय जाना प्रभो ! अब तुम पद तल्लीन॥45.57॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'वृ' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

त्ति

शुभाशुभा सब वृत्तियाँ, सब में दर्शन ज्ञान।

शमन कषाय-इन्द्रि दमन, स्थिरता निज में मान॥45.58॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'त्ति' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

ब

बन्ध-छेद प्रभु ने किया, मुक्ति रमा को प्राप्त।

नन्त काल पश्चात हों, आठों कर्म समाप्त॥45.59॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'ब' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

हि

आभूषण हिरदय तुम्हीं, जीवन के श्रंगार।

जिन धुनि सुन कर यों लगे, बहे कान रसधार॥45.60॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'हि' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

र्वि

बहिर्विभूति समवशरण, होती अपरम्पार।

रचना स्वयं कुबेर की, शोभा का नहिं पार॥45.61॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'र्वि' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

भू

भूत - भावि - वर्तमान जिन, जाने सर्व हि लोक।

शाश्वत जीवित सिद्ध हैं, लोकालोक विलोक॥45.62॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'भू' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

नियम नीति: बतला दिए, युगादि में आदीश।

चलें नियम से जो सदा, दया मिले जिन-ईश॥45.63॥

ॐ ह्रीं अर्हं वर्तमानशासननायक 'तिः' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...

धर्म अहिंसा साधु का, तन मन वचन विचार।

अन्तर केवलज्ञान हो, पशुबलि बहिर निवार ॥45॥

ॐ ह्रीं अहिंसा धर्म प्रसाराय अर्हं महाबीजाक्षरसहिताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः
पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मनोरथ सफलकरी स्तुति

ज्ञानस्य वा सुखगुणस्य च कस्यचिच्च,
पर्यायमात्र कलिकामह-माप्नुकामः।
अन्तस्त्वयि स्वगुण-पर्याय-भासमाने-
प्यस्मादृशः कथमहो नु भवेत् सतृष्णः ॥46॥

(छन्द विष्णुपद)

ज्ञा

ज्ञान चक्षु नहिं खुले हैं मेरे मैं हूँ अज्ञानी।
कर्म मलो से लिप्त हुआ हूँ फिर भी हूँ मानी॥46.1॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'ज्ञा' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...

न

नहिं जानूँ मैं रीति भक्ति की नहीं मुझे है बोध।
तुम चरणों में रह कर भगवन जागा अन्तर्बोध॥46.2॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'न' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...

स्

स्वामी तुम हो परम हितैषी बिन कारण जग बन्धु।
जो भी तुम शरणागत होता तिर जाता भव सिन्धु॥46.3॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'स्' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...

य

नायक धर्म तीर्थ के जिनवर अन्तिम तीर्थकर।
दिव्यध्वनि हुई वर्धमान की जग को क्षेमंकर॥46.4॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'य' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...

वा

वाद विवाद मिटाए सारे केवलज्ञान हुआ।
मिथ्या तिमिर विनाशा प्रभु ने ज्ञान प्रकाश किया॥46.5॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'वा' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...

सु

सुरगण स्वर्ण कमल की रचना जिनपद तल करते।
लेकिन जिनवर अधर चार अंगुल उन पर चलते॥46.6॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'सु' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...

ख

शिवसुख सुलभ है भव्य जनों को जब जिनपूजा से।
वे स्वर्गों की करें क्यों इच्छा हो सकते प्रभु से॥46.7॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'ख' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...

गु

गुणियों में प्रमुदित होवे मन यही भावना है।
ईर्ष्या मद मात्सर्य नशें सब यही चाहना है॥46.8॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'गु' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...

ण

तारण तरण जहाज हैं जिनवर आप तिरे-तारे।
जैसे तुमने किया कर्म क्षय भवि यों कर्म निवारें॥46.9॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'ण' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...

स्

स्याद्वाद है तत्त्व निराला भेद सभी मिटते।
सप्तभंग वाणी जिन सुखकर हिरदय पट खुलते॥46.10॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'स्' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...

य

यहाँ कोई भी नित्य नहीं है सब जग है नश्वर।
पर्यायों में रूप बदलते पर-जिय अविनश्वर॥46.11॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'य' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...

च

भारत में सब चरण ही छूते हो आचरण इन्हीं से।
हैं आदर्श हमें ये गुरुजन करें श्रद्धा मन से॥46.12॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'च' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...

क

कहना सुनना सब छोड़ें करें आकलन निज का।
निज में ही केन्द्रित हो जावें आनन्द स्वातम का॥46.13॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'क' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...

स्

आत्म स्वाद लेते हैं वे ही जो घर-वैरागी।
तन धन की ममता को त्यागें आत्मज्ञान रागी॥46.14॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'स्' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...

य

स्वाश्रित होंय प्रभु हम सब ही मुक्ति पाना है।

पराधीन को तो यह सपना दुःख निधाना है॥46.15॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'य' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...

चि

भोगा है चिरकाल से हमने इन ही भोगों को।

अब भी नहीं रोकते हैं हम तीनों योगों को॥46.16॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'चि' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...

च्व

उच्च आचरण होता तब जब शुद्धोच्चारण हो।

उच्चारण ही हो अशुद्ध तो अर्थ बोध कब हो ?॥46.17॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'च्व' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...

प

परम अहिंसक वीर ने किया कर्म संहार।

धर्म अहिंसा का लिया जग अनुपम उपहार॥46.18॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'प' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...

र्या

मर्त्या होकर जो निरोग तन सुन्दर पाते हैं।

वे श्रद्धा से पदरज प्रभु की शीश चढ़ाते हैं॥46.19॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'र्या' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...

य

यम शम दम की युक्ति से प्रभु ने मुक्ति पाई।

प्रभु गुणगण की स्तुति करके भवि हों शिवराई॥46.20॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'य' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...

मा

मार्ग सच्चा है जिनवर का दया धर्म धारी।

सब सुख दायक हैं केवलि जिन भवदुख के हारी॥46.21॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'मा' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...

त्र

रत्नत्रय निधि को पाकर के स्वातम ज्ञान लिया।

पर पदार्थ की ममता तज निज में विश्राम किया॥46.22॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'त्र' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...

क

क्षायिक नव लब्धि पाएँ प्रभु स्वयं प्रयास किया।

काल अनादि से अशुद्ध था अब शुद्धात्म हुआ॥46.23॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'क' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...

लि

मलिन हुआ है मेरा आत्म दुष्कर्मों द्वारा।

संयम तप जल से धोऊँ तो होवे निस्तारा॥46.24॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'लि' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...

का

तन कारागृह के बंधन से नाथ मुक्ति पाऊँ।

ज्ञान शरीरी होने को जिन गुण गण को ध्याऊँ॥46.25॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'का' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...

म

सकल वाङ्मय प्रकट हुआ केवलि जिनवर द्वारा।

दिव्यध्वनि से नाथ आपने अनगिन को तारा॥46.26॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'म' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...

ह

हर्ष भाव से जिनवर का जो करते आराधन।

अजर-अमर हो जाते हैं वे पाकर शाश्वत धन॥46.27॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'ह' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...

मा

अन्तरात्मा होकर पहुँचे भगवन मोक्ष महल।

परमात्म पद पाया प्रभु ने हो निर्मल निश्चल॥46.28॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'मा' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...

प्

प्राप्नुम् पूरण ज्ञान नाथ ने आत्म प्रकाश किया।

केवलज्ञान सूर्य प्रकटाया पूर्ण विकास हुआ॥46.29॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'प्' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...

का

काम नहीं करती है बुद्धि समवशरण को देख।

मणि रत्नों से जड़ी हुई यह धर्म सभा है एक॥46.30॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'का' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...

मः

भाव शुद्धि हित गन्तुकामः पूजें वीर जिनेश।

द्रव्य शुद्धि को हेम थाल भर ध्याएँ भाव चिदेश॥46.31॥

ॐ ह्रीं अर्हं वर्तमानशासननायक 'मः' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

अ

हुआ अन्त में सफल जन्मनर पहुँच गए शिवथान।

भक्ति की शक्ति से बसाया जिनवर को निज मान॥46.32॥

ॐ ह्रीं अर्हं वर्तमानशासननायक 'अ' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

न्

मन्त्र जाप करने वालों के मन में नाथ बसे।

मिथ्यातम का होय निवारण भव सन्ताप नशे॥46.33॥

ॐ ह्रीं अर्हं वर्तमानशासननायक 'न्' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

त

मुद्रा शान्त लखें जिनवर की भवि विकार तजते।

समरस करते पान सदा वे करमों को हरते॥46.34॥

ॐ ह्रीं अर्हं वर्तमानशासननायक 'त' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

स्

वस्तु स्वरूप विचार साधुजन परिषह सहन करें।

तप शक्ति से आत्म बली हो निज गुण प्रकट करें॥46.35॥

ॐ ह्रीं अर्हं वर्तमानशासननायक 'स्' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

त्

खुद अचिन्त्य हो जाते मुनिजन चिंतन स्वात्म करें।

इसीलिए तो निर्जन वन में नाम नाथ सुमरें॥46.36॥

ॐ ह्रीं अर्हं वर्तमानशासननायक 'त्' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

व

वस्त्र-शस्त्र तज हुए दिगम्बर नाथ गए वन में।

ध्यान लीन तप तपें निरन्तर मुनि मौनी निज में॥46.37॥

ॐ ह्रीं अर्हं वर्तमानशासननायक 'व' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

यि

पूजयित्वा श्री जिनवर को मस्तक स्वयं ही झुकते।

विनयी जन ही नत मस्तक हो विद्या फल लभते॥46.38॥

ॐ ह्रीं अर्हं वर्तमानशासननायक 'यि' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

स

हो उपास्य प्रभु आप मैं तो लघु उपासक हूँ।
हुए हो धर्म के नायक जिनवर मैं आराधक हूँ॥46.39॥
ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'स' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...

व

स्वर्ग सुखों की नहीं कामना आतम वैभव हो।
निज में निज की करूँ भावना अजर-अमर पद हो॥46.40॥
ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'व' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...

गु

गुण अनन्त हैं आतम में परमातम प्रकटाएँ।
सभी पदारथ जो भी जग में जिनवर ठुकराएँ॥46.41॥
ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'गु' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...

ण

चरण - शरण में आया भगवन तुम सा ही बनने।
आवागमन मिटे अब मेरा करमों को हरने॥46.42॥
ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'ण' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...

प

परमेश्वर हो तीन लोक के शत-शत बार प्रणाम।
भव दधि शोषणहार नाथ मैं हो जाऊँ निष्काम॥46.43॥
ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'प' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...

र्य

हे गुरुवर्य! पाप पिशाच को तुमने दूर किया।
स्वातम को दुख देने वाले कर्म को चूर किया॥46.44॥
ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'र्य' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...

य

रसनेन्द्रिय वशीभूत हुए हम बाँचे कर्म घने।
पंचेन्द्रि विजयी जिनवर ने आठों कर्म हने॥46.45॥
ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'य' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...

भा

भाए मन को वीतराग मुनि पार करें जग से।
बहती है रसधार ज्ञान की जिनकी रग-रग से॥46.46॥
ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'भा' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...

स

जिन सर्वज्ञ की कैसे होवे रागी से तुलना ?

अम्बर- अवनी सा अन्तर प्रभु गुण की नहीं गणना॥46.47॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'स' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

मा

तीन लोक की उपमाओं को जिसने जीत लिया।

उनके गुण अपनाने को जिन चरणन चित्त दिया॥46.48॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'मा' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

ने

द्वादश सभा सुने श्रद्धा से प्रभु के दिव्य वचन।

आनन्दित होकर करते जिन चरणों में वन्दन॥46.49॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'ने' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

प

तीन गुप्तियाँ पालें साधु उत्तम सन्त दशा।

हुए सिद्ध परमेष्ठि मुनि तो हम भव कर्म वशा॥46.50॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'प' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

य

हम व्यथा सुनाते हैं प्रभू तुम शिवपथ नेता हो।

दुष्कर्म सताते हैं हमको तुम परिषह जेता हो॥46.51॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'य' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

स्

तुम तो शुद्ध हुए स्वामी निर्दोष दशा पाकर।

हमको भी शक्ति दो ऐसी चलें मोक्ष मग पर॥46.52॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'स्' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

मा

महिमा नहीं लिख पाए कोई प्रभु गुण पावन की।

कलम वृक्ष हो कागज पृथ्वी स्याही सागर की॥46.53॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'मा' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

दृ

दृष्टि रहे गुरु के चरणों में ऐसी शक्ति मिले।

सुप्त हृदय की सारी कलियाँ एक हि साथ खिलें॥46.54॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'दृ' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

शः

शतशः नमन करूँ श्रद्धा से वीर जिनेश्वर को।

अपने हिरदय में ही बसा लूँ प्रभु परमेश्वर को॥46.55॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'शः' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

क

कण्ठ नहीं कुण्ठित हो मेरा पर भव गमन करूँ।

णमोकार ही जपूँ निरन्तर जय-जय कार करूँ॥46.56॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'क' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

थ

माला फेरें हाथ किंतु मन बाहर फिरता है।

ऐसी धर्म क्रिया करके भी लाभ न मिलता है॥46.57॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'थ' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

म

तन्मय होकर करे धर्म का अनुपालन जो भी।

कालान्तर में धर्मरूप में परिणत हो वह भी॥46.58॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'म' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

हो

हो विलम्ब क्यों मेरी बारी असंख्यात तारे।

अब मुझको भी तारो भगवन चरण पड़ा थारे॥46.59॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'हो' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

नु

अनुष्ठान जो करें धर्म का लीन रहें स्वातम।

रमण करें वे सदा ही निज में होते परमात्म॥46.60॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'नु' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

भ

भव से मुक्त हुए प्रभु तुम तो नैनन नहीं दिखते।

इसीलिए हम शब्दों से ही आराधन करते॥46.61॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'भ' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

वे

बड़भागी वे भक्त अर्चना मन से करते हैं।

यों तो इन्द्र नरेन्द्र सभी चरणों में नमते हैं॥46.62॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'वे' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

तृ

त्वमेव माता पिता भ्रात सम हो सर्वस्व तुम्हीं।

मुझे बढ़ाते हो शिवपथ पर हे गुरुदेव तुम्हीं॥46.63॥

ॐ ह्रीं अर्हं वर्तमानशासननायक 'तृ' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

स

होय समाधि मेरी भगवन यही भावना है।

मन मन्दिर प्रभु चरण विराजें यही कामना है॥46.64॥

ॐ ह्रीं अर्हं वर्तमानशासननायक 'स' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

वृ

वृषा न शान्त हुई मेरी जल सागर सब पीकर।

नहिं कषाएँ क्षीण हुई तन कारा में रह कर॥46.65॥

ॐ ह्रीं अर्हं वर्तमानशासननायक 'वृ' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

ष

होंय सहिष्णु सभी साधुजन बहु उपसर्ग सहें।

हर्ष विषाद न करें तनिक भी समता भाव रहे॥46.66॥

ॐ ह्रीं अर्हं वर्तमानशासननायक 'ष' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

णः

सतृणः नयनों से भविजन जिनवर को लखते।

मेघ गर्जना सुन चातक ज्यों ऊपर मुख करते॥46.67॥

ॐ ह्रीं अर्हं वर्तमानशासननायक 'णः' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

पूर्णार्घ्य

आलोकित हो आप तो, अन्तर गुण-परयाय।

मैं कैसे त्रासित रहूँ, तव कण मुझमें आय॥46॥

ॐ ह्रीं किंचित सुख मात्र प्राप्ताय अर्हं महाबीजाक्षरसहिताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय
नमः पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

xxxxxxxxxxxxxxxxxxxxxxxxxxxxxxxxxxxxxxxx

मुख नेत्रादि पीड़ा विनाशक स्तुति

अत्यंत - पूत - चरणं तव सर्व - वन्द्यं,
चित्ते निधाय यदहं स्वमुखं विपश्यन्।
उल्लासयामि मुखदर्पण - दर्शनात्ते,
सीदामि साम्यविकलात् स्वमुखेऽतिवीर! ॥47॥

(छन्द शेर चाल)

अनजान था कर्तव्य से अब भान हो गया।

अ

हे नाथ ! आपकी कृपा से ज्ञान हो गया॥

जिन वर्धमान की करूँ भावों से अर्चना।

हो जाए भक्त भगवन है ये ही भावना॥47.1॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'अ' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...

त

प्रत्यक्ष दर्श हो प्रभु है कामना यही।

उम्मीद मे ही भक्त को तुम पास ला रही॥जिन...॥47.2॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'त' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...

य

यह अर्ज है तुमसे प्रभो उद्धार कीजिए।

भव सिन्धु में हम डूब रहे तार दीजिए॥जिन...॥47.3॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'य' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...

न

प्रभु दीनबन्धु साक्षी में लें नियम तो पले।

रत्नत्रय के आचरण से मोक्ष मग चले॥जिन...॥47.4॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'न' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...

त

शुभ लक्षणों से युक्त देह नाथ की कही।

त्रिभुवन में आपके समान कोई भी नहीं॥जिन...॥47.5॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'त' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...

पूनम के चाँद सम प्रभु चरणों में आ गया।

पू

अब भूल कर संसार को स्वभाव पा गया॥

जिन वर्धमान की करूँ भावों से अर्चना।

हो जाए भक्त भगवन है ये ही भावना॥47.6॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'पू' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

त

तन काला मन उजला तो भी मुक्ति को पाते।

कोयल की मीठी वाणी सुन सब ही हर्षति॥जिन...॥47.7॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'त' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

च

चरणों में नाथ के मुझे विश्राम मिल गया।

भव-भवभटकतेजीवकादिलकमलखिलगया॥जिन...॥47.8॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'च' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

र

रग-रग में वर्धमान की भक्ति का जल भरा।

"जियो और जीने दो" का सिद्धान्त है खरा॥जिन...॥47.9॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'र' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

णं

अरिहंता**णं** नमन कर अन्तराय हर लिए।

प्रभु की शरण में आन कर भावों में भर गए॥जिन...॥47.10॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'णं' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

त

तप से तपा के देह को कंचन सा कर लिया।

गुणगान कर गुरुदेव का पावन हृदय हुआ॥जिन...॥47.11॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'त' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

व

वन में भवन में एक सम साधु सदा रहें।

समता का भाव धार कर परिषह कठिन सहें॥जिन...॥47.12॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'व' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

सम्यक् हो दृष्टि जीव की सन्मार्ग पर चले।

स

पातक व्यथाएँ आदि सब क्षण मात्र में टलें॥

जिन वर्धमान की करूँ भावों से अर्चना।

हो जाए भक्त भगवन है ये ही भावना॥47.13॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'स' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...

व

हैं पर्व अष्टमि चौदस संयम स्वीकार लें।

अनशन - एकाशन आदिक श्रद्धा से धार लें॥ जिन...॥47.14॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'व' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...

व

है नाव तो मँझधार में प्रभु पार कीजिए।

सुन कर हमारी प्रार्थना उद्धार कीजिए॥ जिन...॥47.15॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'व' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...

न्

ये मन्त्र तंत्र जीव को मरते न बचावें।

अतएव भक्त आपकी ही शर्ण में आवें॥ जिन...॥47.16॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'न्' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...

द्यं

वन्द्यं श्री जिन लोक के सर्वज्ञ-हितैषी।

करते हैं निज में खोज निज की आत्म-गवेषी॥ जिन...॥47.17॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'द्यं' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...

चि

चिरकाल से जन्मे-मरे भव व्यर्थ गँवाए।

स्वाध्याय से अब स्वात्म की पहचान को पाए॥ जिन...॥47.18॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'चि' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...

त्ते

चवाराधना फलं पत्ते सिद्ध सदा जयवन्त।

स्वयं जिन्हें वन्दन करें ऋषि मुनि यति सब सन्त॥ जिन...॥47.19॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'त्ते' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...

निर्माण हो चारित्र का संस्कार बाल मन।

नि

कोरी सलेट पर लिखें पहले जो जिन वचन॥

जिन वर्धमान की करूँ भावों से अर्चना।

हो जाए भक्त भगवन है ये ही भावना॥47.20॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'नि' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

धा

धारण करें हम धर्म को नहीं दुःख हो कदा।

भवदुख जलधि से उबार सुख ही दें सदा॥जिन...॥47.21॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'धा' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

य

ज्ञायक बनाया नाथ ने भक्तों को ज्ञान दे।

पर से छुड़ाया आपने स्वातम को मान दे॥जिन...॥47.22॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'य' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

य

गुरु ने सुज्ञान सौख्य का अमृत पिला दिया।

संसार विषम खार से हमको बचा लिया॥जिन...॥47.23॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'य' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

द

तेरे दर को छोड़ कर मैं किस दर जाऊँ ?

सुनता मेरी कौन मैं किसको व्यथा सुनाऊँ॥जिन...॥47.24॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'द' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

हं

अहंकार का भाव मिटे तो मनुज नम्र होता।

मुर्दे की पहचान अकड़ना जीवित झुक जाता॥जिन...॥47.25॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'हं' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

स्

स्वाद नहीं आया स्वातम जिय बाहर भटक रहा।

जिस दिन आतम ध्यान लगेगा तब ही विरत हुआ॥जिन...॥47.26॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'स्' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

पर के **व**श में होकर चेतन पराधीन होता।

व

है स्वाधीन मगर भ्रम में ही जीवन भर रोता॥

जिन वर्धमान की करूँ भावों से अर्चना।

हो जाए भक्त भगवन है ये ही भावना॥47.27॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक '**व**' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

मु

दोनों **मु**द्रा वीतराग खड़गासन - पद्मासन।

किसी एक से ही मुक्ति हो कहता जिनशासन॥ जिन...॥47.28॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक '**मु**' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

खं

सर्व **सुखं** पा कर कुछ जन तो धन्य कहें खुद को।

कुछ भविजन जयकार करावें लख कर प्रभुवर को॥जिन..॥47.29॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक '**खं**' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

वि

विकसित सभी क्रियाएँ परितः होती प्राणी की।

किंतु न खिलतीं रवि रश्मि बिन कलियाँ कमलों की॥जिन..॥47.30॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक '**वि**' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

प

श्री मण्ड**प** भूमि में स्वामी अधर विराज रहे।

दिव्यध्वनि सुनने को भविजन प्रभू निहार रहे॥ जिन...॥47.31॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक '**प**' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

श

कहते हैं, परमेश्वर प्रभु मुनिराज आप को।

ले लीजिए शरण में अपने भक्त दास को॥जिन...॥47.32॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक '**श**' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

य

जो भव्यजीव प्रभु को निज हिरदय में बसाते।

फिर नाथ की कृपा से वे सब कर्म नशाते॥ जिन...॥47.33॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक '**य**' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

नू

स्फुरन् देह में होता जब जिनवर भक्ती हो।

रोमांच निकल आते हैं जब भवि आनन्दित हो॥

जिन वर्धमान की करूँ भावों से अर्चना।

हो जाए भक्त भगवन है ये ही भावना॥47.34॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'नू' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

उ

प्रभु की वाणी उर में मैने तो धारण कर ली।

दीपक ज्योती सम मानो अपने आगे कर ली॥जिन...॥47.35॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'उ' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

ल्ला

चहुँ दिश में मच गया हल्ला अर्हम् के योग का।

अवसर पाया है सब ने स्वास्थ्य संयोग का॥जिन...॥47.36॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'ल्ला' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

स

सकल गुणी परमात्मा देव अरिहन्त जिनेश।

जिनके चरणों में नमैं सुर-नर-पशु-खगेश॥जिन...॥47.37॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'स' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

या

मिला दिया मुझको मुझसे ही सिंधु प्रणम्य ने।

जगा दिया मेरी क्षमता को छन्दोबन्ध करने॥जिन...॥47.38॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'या' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

मि

हे मोह तिमिर हर गुरुवर, हम आपको नमैं।

अरिहन्त सिद्ध साहू हर श्वास में जपें॥जिन...॥47.39॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'मि' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

मु

मुनिराज सब कुछ त्याग कर शिवराह पर चलें।

दृढ़ता से धारें मूलगुण महाव्रत निर्दोष पलें॥जिन...॥47.40॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'मु' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

जिनदेव चतुर्मुख समवशरण लख हर्षित हो प्राणी।

ख

फिर दिव्यध्वनि सुनते हैं जो जग की कल्याणी॥

जिन वर्धमान की करूँ भावों से अर्चना।

हो जाए भक्त भगवन है ये ही भावना॥47.41॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'ख' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

द

गुरुचरणाम्बुज वन्दना सौभाग्य से मिले।

गुरुदेव शरणागत के संकट सभी टलें॥जिन...॥47.42॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'द' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

प

सर्वस्व समर्पण करते है हम गुरुदेव आप को।

हमको शरण में लीजिए तज देगें पाप को॥जिन...॥47.43॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'प' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

ण

गणधर प्रभु को छोड़ कर जाते नहीं कहीं।

चर्या के लिए भी कभी जाते गुरु नहीं॥जिन...॥47.44॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'ण' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

द

पर की दया तो हम भी करते रहे सदा।

स्वातम पे दया करना भूलें ना अब कदा॥जिन...॥47.45॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'द' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

र्श

दर्श ज्ञान सुख बल अनन्त के धारी हैं जिनवर।

हर्ष भाव से करें परिक्रमा प्रभु त्रिभुवन भास्कर॥जिन...॥47.46॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'र्श' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

ना

नाम मात्र प्रभु का लेने से संकट कट जाते।

विधि विधान से करें अर्चना भाग्य उदय आते॥जिन...॥47.47॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'ना' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

ते

मधुमक्खी छत्ते को जो भी तोड़ शहद खाते।

सातों गाँव जलाने का वे पाप कमा जाते॥

जिन वर्धमान की करूँ भावों से अर्चना।

हो जाए भक्त भगवन है ये ही भावना॥47.48॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'ते' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

सी

शक्ति दो ऐसी प्रभु क्षय करें कर्म सारे।

अब तक तो हम रहे भटकते भव- भव में हारे॥ जिन...॥47.49॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'सी' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

दा

वरदान श्राप तो प्रभु देते नहीं कभी।

हैं वीतराग राग द्वेष हो नहीं कभी॥ जिन...॥47.50॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'दा' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

मि

गुरुदेव आप हैं मिले ये शुभ घड़ी आई।

छाई जो घटा मोह की तुमने ही नशाई॥ जिन...॥47.51॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'मि' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

सा

कर्म असाता मिट गया हम गुरुशरण में आए।

गुरुदेव की कृपा से सभी स्वास्थ्य को पाए॥ जिन...॥47.52॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'सा' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

म्

प्रभु ज्ञानगम्य होते नेत्रों से लख ना पाते।

उनलोकालोकविलोकीको हमबार-बार ध्याते॥ जिन...॥47.53॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'म्' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

य

प्रिय वीर प्रभु मेरे हैं प्राणों के आधार।

उनको निहारूँ, अपलक मानो हों नयन हज़ार॥ जिन...॥47.54॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'य' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

वि

सब विघ्न दूर होते वाणी प्रभु की सुनके।

हों कर्म चूर सारे जो अनुगामी जिनवर के॥

जिन वर्धमान की करूँ भावों से अर्चना।

हो जाए भक्त भगवन है ये ही भावना॥47.55॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'वि' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

क

विस्तृत त्रिलोक में है यश कीर्ति नाथ की।

मैने भी शरण गही है पावन जिननाथ की॥जिन...॥47.56॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'क' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

ला

दिखला दो पंथ पुनीत प्रभु मुक्ति धाम का।

हमको तो मोक्ष इष्ट है बस और चाह ना॥जिन...॥47.57॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'ला' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

त्

स्वात्मतत्त्व का ज्ञान जिनवाणी से हि मिले।

इस ही सुज्ञान से जिय आवागमन मिटे॥जिन...॥47.58॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'त्' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

स्

भाव हों प्रशस्त तो स्वभाव ही प्रकटे।

प्रभु की शरण में आएँ तो दुर्भाव सब विघटे॥जिन...॥47.59॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'स्' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

व

वमन किया मिथ्यात्व तो स्वभाव रत हुए।

जिन चरण नाव से भवि भवसिंधु तिर गए॥जिन...॥47.60॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'व' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

मु

जिनधर्म ही मुझको मिले पर भव में भी स्वामी।

गुणगान नित करूँ मैं जिनराज जगनामी॥जिन...॥47.61॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'मु' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

ॐ ह्रीं अर्हं वर्तमानशासननायक 'खे' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...

ॐ ह्रीं अर्हं वर्तमानशासननायक 'ति' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...

ॐ ह्रीं अर्हं वर्तमानशासननायक 'वी' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...

ॐ ह्रीं अर्हं वर्तमानशासननायक 'र' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...

पूर्णार्घ्य

चित्त विराजे पद कमल, मन निर्मलता आय।

तव मुख दर्पण दर्श से, नहिं समानता पाय ॥47॥

ॐ ह्रीं साम्यभाव प्रतिपादकाय अर्हं महाबीजाक्षरसहिताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय
नमः पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।



सौभाग्यवर्धक स्तुति

सद् - द्रव्यसंयम - पथे प्रथमं प्रयुज्य,
स्वं भावसंयमनिधौ तदनुव्यथायि।
नोल्लंघयन् क्रमविधिं क्रमविद् विधिज्ञो,
मार्तण्डवच्चरति वै महतां स्वभावः ॥48॥

(छन्द स्रग्विणी)

आ के **स**मोशरण में भव्य प्राणी प्रभो !

स

सुन के जिनवाणी होते वे धन्य विभो॥

मुक्ति का धाम पावापुरी वीर का।

आके विश्राम पाता है मन भक्त का॥48.1॥

ॐ ह्रीं अर्हं वर्तमानशासननायक 'स' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...

द

सद्-धर्म -उपदेश जो भी दिया नाथ ने।

भव दुःख से उबारे धरे सौरव्य में॥मुक्ति...॥48.2॥

ॐ ह्रीं अर्हं वर्तमानशासननायक 'द' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...

द्र

अष्ट द्रव्यों से करता रहूँ अर्चना।

गुरु प्रणम्य को होवे मेरी वन्दना॥मुक्ति...॥48.3॥

ॐ ह्रीं अर्हं वर्तमानशासननायक 'द्र' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...

व

भव्य मुक्त हो गए नाथ का नाम ले।

जागे बल स्वात्म का आप के नाम से॥मुक्ति...॥48.4॥

ॐ ह्रीं अर्हं वर्तमानशासननायक 'व' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...

य

तारती आप की दिव्य वाणी प्रभो!

आपकी ही छवि दिल में धारें विभो॥मुक्ति...॥48.5॥

ॐ ह्रीं अर्हं वर्तमानशासननायक 'य' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...

सं

चाहूँ संयम मैं भी भावना भा रहा।
आप से भक्ति का पाठ सीखें यहाँ॥
मुक्ति का धाम पावापुरी वीर का।
आके विश्राम पाता है मन भक्त का॥48.6॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'सं' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...

य

आत्म ज्ञायक तुम्हीं ज्ञान दातार हो।
साधु करते नहीं विघ्न प्रतिकार हो॥मुक्ति...॥48.7॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'य' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...

म

चर्ण पदम आपके प्रभु जहाँ भी पड़े।
देख के आपको भक्त शिवभग बढें॥मुक्ति...॥48.8॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'म' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...

प

आप ही विश्व में एक दाता महा।
इसलिए आप की ही शरण आ गया॥मुक्ति...॥48.9॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'प' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...

थे

थे सुखी तुम स्वयं ही स्वयं में प्रभु !
तज के सारे पदारथ गए वन विभु॥मुक्ति...॥48.10॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'थे' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...

प्र

प्रभु भावों से शुद्धोपयोगी हुए।
कर्म सारे हने तो अयोगी हुए॥मुक्ति...॥48.11॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'प्र' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...

थ

नाथ किस से कहूँ अपने दुख की कथा।
हँसते सुन कर सभी मेरे मन की व्यथा॥मुक्ति...॥48.12॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'थ' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...

करें **मंगला**चरण वीर का नाम ले।

मं

सर्व कल्याण हो विघ्न संकट टले॥

मुक्ति का धाम पावापुरी वीर का।

आके विश्राम पाता है मन भक्त का॥48.13॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'मं' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

प्र

प्रतिकार करते नहीं कभी पर का श्रमण।

ऐसे सन्त शिरोमणि को शत-शत नमन॥मुक्ति..॥48.14॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'प्र' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

यु

यु मृत्यु पर तो विजय नाथ को ही मिली।

मैने समकित लिया प्रकृति मिथ्या टली॥मुक्ति..॥48.15॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'यु' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

ज

ज राज्य शिवपुर का पाया प्रभो आप ने।

आ गया हूँ शरण मुक्ति को पाने मैं॥मुक्ति..॥48.16॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'ज' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

य

य विनयवान भविजन ही भव से मुक्त हों।

ज्यों वृक्ष बेंत झुक कर भी उन्नत अहो!॥मुक्ति..॥48.17॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'य' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

स्

स् प्रभु निस्वार्थ उपकार सब पर करें।

भक्त तुम आसरा ले करम निज हरेँ॥मुक्ति..॥48.18॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'स्' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

वं

हूँ **वंशज** तिहारा ही भगवान मैं।

दे दो मुझको भी शिवसुख का वरदान ये॥मुक्ति..॥48.19॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'वं' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

भा

जीव भावों से ही सुख-दुख पावते।

भाव हम भी सुधारे यही चाहते॥

मुक्ति का धाम पावापुरी वीर का।

आके विश्राम पाता है मन भक्त का॥48.20॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'भा' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...

व

पूजें जग जीव सारे मन-वच-काया प्रभु।

हम भी चरणों में श्रद्धा से झुकते विभु॥मुक्ति..॥48.21॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'व' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...

सं

संयम धारा है जिसने सफल भव हुआ।

शरणागत को भी संयम स्वहित में हुआ॥मुक्ति..॥48.22॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'सं' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...

य

पुण्योदय से ही प्रभु स्तवन कर रहा।

तेरे गुणगान से पावन दिल हो रहा॥मुक्ति..॥48.23॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'य' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...

म

रमना निज में ही है नाथ तुम राह पे।

ये ही है प्रार्थना शान्ति निज में मिले॥मुक्ति..॥48.24॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'म' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...

नि

निर्जरा पूर्ण चौदहवें गुणथान में।

सिद्ध हो नाथ रमते सदा स्वात्म में॥मुक्ति..॥48.25॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'नि' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...

धौ

नाम सुधौत तप्त स्वर्ण छवि सम प्रभो।

कर्म त्रिविधि नाश तब ज्ञानमय हो विभो॥मुक्ति..॥48.26॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'धौ' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...

त

वैरी भी मीत हों नम्रता से ही तो।
मानी के मित्र भी शत्रु होते अहो॥
मुक्ति का धाम पावापुरी वीर का।
आके विश्राम पाता है मन भक्त का॥48.27॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'त' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...

द

वेद तीनों को अरिहन्त प्रभु नाशते।
हो अवेदी मिलें सर्व सुख शोभते॥मुक्ति..॥48.28॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'द' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...

नु

रूप अनुपम समवशरण में नाथ का।
आसरा हो मुझे बस प्रभु-साथ का॥मुक्ति..॥48.29॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'नु' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...

व्

दिव्य वाणी प्रभू को हितैषी महा।
सुन के इक बार ही भव्य तिरते यहाँ॥मुक्ति..॥48.30॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'व्' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...

य

तथ्य कुछ भी नहीं झूठे संसार में।
आए वर्धमान हमको जगत - तारने॥मुक्ति..॥48.31॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'य' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...

धा

धाम सिद्धों का सम्मेद शिखर जी कहा।
है ये शाश्वत अनादी गिरिवर महा॥मुक्ति..॥48.32॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'धा' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...

यि

पुण्य अतिशायि हो तब ही चारित पले।
त्रिवेणी रत्नत्रय सर्व पातक धुलें॥मुक्ति..॥48.33॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'यि' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...

नोकर्म हो सहाई करम पीड़ा देवें।

नो

असाता करम जीव सुख-चैन खोवें॥

मुक्ति का धाम पावापुरी वीर का।

आके विश्राम पाता है मन भक्त का॥48.34॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'नो' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

ल्लं

गुर्वाज्ञा का मुझसे उल्लंघन न हो।

गुरु पदरज मेरे शीश पर ही रहो॥मुक्ति..॥48.35॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'ल्लं' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

घ

घटा मोह की मुझपे छाई थी जो।

नाथ के ही दरश से थी हट पाई वो॥मुक्ति..॥48.36॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'घ' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

य

है यही भावना मुझको निज पद मिले।

जिन दर्शन से हिरदय कमल मम खिले॥मुक्ति..॥48.37॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'य' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

न्

जिनान् विंशति नमूँ विद्यमान चरण।

समवशर्ण विराजे प्रभु वर्ण स्वर्ण॥मुक्ति..॥48.38॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'न्' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

क्र

बढ़ते क्रम से शिशु जिन सदा चन्द्र सम।

खेलते देव भी प्रभु संग बालक ही बन॥मुक्ति..॥48.39॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'क्र' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

म

द्रव्य स्वात्म को मैने न जाना कभी।

संचय करता रहा जड़ द्रव्यों का ही॥मुक्ति..॥48.40॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'म' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

वि

दिग विजयी शान्ति जिन जब दिगम्बर हुए।

नाथ निर्ग्रन्थ ने परिग्रह तज दिए॥

मुक्ति का धाम पावापुरी वीर का।

आके विश्राम पाता है मन भक्त का॥48.41॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'वि' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

धिं

ज्ञान सर्वावधिं आपने प्रभु लिया।

रवि कैवल्य का फिर उदय हो गया॥मुक्ति..॥48.42॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'धिं' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

क्रम

क्रम से हो जाता पूजक भी पूज्य यहाँ।

पुण्य बढ़ता रहे उसका निश दिन महा॥मुक्ति..॥48.43॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'क्रम' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

म

साधु मन हो विमल स्फटिक सम रखें।

आत्म निर्मल करें स्वात्मरस नित चखें॥मुक्ति..॥48.44॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'म' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

वि

विश्व में शान्ति जिन-चक्रि-मन्मथ हुए।

तीन पदवियों के धारी तीर्थकर हुए॥मुक्ति..॥48.45॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'वि' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

द्व

वरद्व हस्त शीश पे जिसके गुरु का रहे।

मोक्ष मग पर वो आगे ही बढ़ता रहे॥मुक्ति..॥48.46॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'द्व' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

वि

नाथ विमलेश हैं तेरहवे जिन प्रभो।

शिवसम्पद मिली गए शिवपुर विभो॥मुक्ति..॥48.47॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'वि' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

नेता धर्म तीर्थ व्याधि जगत की हरे।

धि

दूरी भव सिंधु की सहज हि पूरी करें॥

मुक्ति का धाम पावापुरी वीर का।

आके विश्राम पाता है मन भक्त का॥48.48॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'धि' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

ज्ञो

प्राज्ञो जिनदेव सबके दुखों को हरे।

हम तो नाम मात्र ही प्रभु सुमरण करें॥मुक्ति..॥48.49॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'ज्ञो' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

मा

आती परमात्म दर्शन से सुधि स्वात्मा।

इसलिए पूजते सब ही परमात्मा॥मुक्ति..॥48.50॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'मा' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

र्त

ध्यान आर्त में ही हम समय काटते।

पुण्यशाली वही जो करम घातते॥मुक्ति..॥48.51॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'र्त' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

ण्

हो चुके नाथ मण्डित गुणों से सभी।

लेश अवगुण ना उनमें रहा एक भी॥मुक्ति..॥48.52॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'ण्' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

ड

मुण्डन केशों का करके विरागी हुए।

स्वानुभूति से मुनि निरासक्त हो गए॥मुक्ति..॥48.53॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'ड' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

व

होना दुर्लभ है मोक्षार्थी जिनवर कहे।

सिद्ध होने को साधू परीषह सहें॥मुक्ति..॥48.54॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'व' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

च

उच्च तट से सुरक्षित बहे गंग जल।
दुरते चौंसठ चमर शीश जिनवर धवल॥
मुक्ति का धाम पावापुरी वीर का।
आके विश्राम पाता है मन भक्त का॥48.55॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'च' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...

र

साधु संवर करें तप का ताला लगा।
हो अन्तर निर्जरा पाप डर कर भगा॥मुक्ति..॥48.56॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'र' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...

ति

तिरें भक्त जिनवर, का गुणगान करते।
नहीं तिर सकें तो वे पछता के मरते॥मुक्ति..॥48.57॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'ति' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...

वै

वैभव आतम का अनमोल शाश्वत कहा।
गर मिले जैन शासन जिनागम महा॥मुक्ति..॥48.58॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'वै' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...

म

परम पूज्य वीरा हैं अन्तिम तीर्थकर।
नमन करते सौ-सौ हो सब को क्षेमकर॥मुक्ति..॥48.59॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'म' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...

ह

राह शिव पाई भक्तों ने जिनराज से।
चलते शिवपथ पे साधु बड़े चाव से॥मुक्ति..॥48.60॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'ह' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...

तां

हो हर्षित नितांत प्रभु दर्शन करें।
प्रभु भक्ति से ही कर्म भविजन हरे। मुक्ति..॥48.61॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'तां' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...

स्

मुक्ति का धाम पावापुरी वीर का।

आके विश्राम पाता है मन भक्त का॥ 48.62॥

ॐ ह्रीं अर्हं वर्तमानशासननायक 'स' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...

व

वन्दना हो प्रभो सोया भाग्य जगे।

दर्शन करके विभो बल स्वातम बड़े॥ मुक्ति..॥48.63॥

ॐ ह्रीं अर्हं वर्तमानशासननायक 'व' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...

भा

जय बोलें प्रभु हो विभावों का क्षय।

होने सिद्धों मे मेरी ये देह विलय॥ मुक्ति..॥48.64॥

ॐ ह्रीं अर्हं वर्तमानशासननायक 'भा' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...

वः

‘प्रभवः पांतु नो नित्यं’ मैं अर्जी करूं।

नाथ की ही कृपा से भवार्णव तिरुं॥ मुक्ति..॥48.65॥

ॐ ह्रीं अर्हं वर्तमानशासननायक 'वः' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...

पूणाईय

साधा संयम द्रव्य तो, संयम भाव घराय।

विधिक्रमकोजोजानते, रविसममार्गबनाय ॥४८॥

ॐ ही द्रव्य-भाव संयम प्रति पादकाय अर्ह महाबीजाक्षरसहिताय
श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अकास्मिक फल प्रदायी स्तुति

सापेक्षतोऽपि निरपेक्षगतोऽसि नूनं,
बद्धोपि मुक्त इव मुक्तिरतोऽसि बद्धः।
एकोऽप्यनन्त इति भासि न ते विरोधः,
स्वात्मानुशासनयुते जिनशासनेऽपि ॥49॥

(सखी छन्द)

सा

जिय हंसा कब उड़ जाए, सो जिन दर्शन को आए।
धन दौलत कुछ ना चाहूँ, बस मुक्ति मार्ग पर जाऊँ॥49.1॥

ॐ ह्रीं अर्हं वर्तमानशासननायक 'सा' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...

पे

है वाद अपेक्षा ये ही, अनेकान्त बाद भी ये ही।
स्याद्वाद यही कहलाए, सब झगडे तुरत मिटाय॥49.2॥

ॐ ह्रीं अर्हं वर्तमानशासननायक 'पे' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...

क्ष

क्षय किए कर्म-वसु सारे, हम भी जजे चरण तिहारे।
जीने की कला सिखाते, अतएव भक्त दर आते॥49.3॥

ॐ ह्रीं अर्हं वर्तमानशासननायक 'क्ष' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...

तो

'वयं तोष्टुमः' कह पाते, मन वांछा रोध कराते।
कीर्तन नित नाथ कराते, गुण प्रभु के प्रतिदिन गाते॥49.4॥

ॐ ह्रीं अर्हं वर्तमानशासननायक 'तो' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...

पि

पिया स्वानुभूति का प्याला, हो जाए मन मतवाला।
भवि वीर शरण में आया, सिद्धालय ही मन भाया॥49.5॥

ॐ ह्रीं अर्हं वर्तमानशासननायक 'पि' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...

नि

निर्मूल मोह मद कीना, शिवरमणी को वर लीना।
प्रभु सिद्ध लोक में राजें, भवि नमते आतम काजें ॥49.6॥

ॐ ह्रीं अर्हं वर्तमानशासननायक 'नि' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...

र

हम बार बार ये चाहें, चल पड़े मोक्ष की राहें।

प्रभु सत्य धर्म उपदेशी, जग बंधू आत्म हितैषी॥49.7॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'र' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

पे

सापेक्ष सप्त नय हों जो, कार्यकारी भी वे हों।

नय-प्रमाण के जाने, नहीं तत्त्वों को पहचानें॥49.8॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'पे' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

क्ष

क्षय करें घाति जिन चारों, तब नन्त चतुष्टय धारो।

सुख दर्श ज्ञान बल नन्ता, पाएँ श्री जिन भगवन्ता॥49.9॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'क्ष' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

ग

वह मंगलमय शुभदिन था, जब जिनवर दरश हुआ था।

तब से ही प्रीत जगी जो, अब भी मन लगन लगी वो॥49.10॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'ग' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

तो

नहिं तोष ज्ञान मिलपाता, कब चारित हो सुखदाता।

सब पाप ताप मिट जाएँ, मानुष भव सफल बनाएँ॥49.11॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'तो' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

सि

जिनवर प्रसिद्ध जगनामी, धारें रत्नत्रय स्वामी।

हैं ज्ञेय नन्त के ज्ञाता, जय सकल विश्व के नेता॥49.12॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'सि' बीजाक्षर संयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

नू

प्रभुवर हैं दिव्य अनूपा, होंगे भविष्य शिवभूपा।

शाश्वत अविनाशी जीवें, सन्तोष सुखामृत पीवें॥49.13॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'नू' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

नं

कृत्स्नं कर्म विनशार्थ, प्रभु शरण लहें परमार्थ।

छाया अज्ञान अँधेरा, चेतन में होय सवेरा॥49.14॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'नं' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

ब

बन्धन टूटें करमों के, हम छूटें दुष्करमों से।

तैयार हैं जिन भक्ती को, निश्चित पाएँ मुक्ती को॥49.15॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'ब' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...

झ

सिद्धो का ध्यान निराला, भवि पियें नित्य सुख प्याला।

समकिती का लक्ष्य यही हो, भव्यों के कृत्य सही हों॥49.16॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'झ' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...

पि

पिया स्वात्म रस जब से, सब राग मिटाया पर से।

निज में ही आनन्द आता, परमानन्द सौख्य प्रदाता॥49.17॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'पि' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...

मु

शिवपंथ मुझे दिखलाओ, जिन धर्म मर्म समझाओ।

प्रभु सब तत्वों के ज्ञाता, जिनभक्ती से हो साता॥49.18॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'मु' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...

क

कर्मारि से मुक्त हुए हैं, शस्त्रास्त्र न पास रहे हैं।

जिनवर ने दोष निवारे, सो आए शरण तिहारे॥49.19॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'क' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...

त

पूजित तीनों लोकों से, मनवचन काय योगों से।

प्रभुको वसुद्रव्य चढ़ाऊँ, श्रद्धा से शीश नवाऊँ॥49.20॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'त' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...

इ

इस भाँति विधान रचावें, गद्गद् स्वर जिनगुण गावें।

झूमें नाचें सुख पाएँ, श्रद्धा से बीन बजाएँ॥49.21॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'इ' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...

व

जिनवर से जग उजियारा, जिनशासन हमको प्यारा।

सिद्धि प्रिया नाथ वरी है, झर झर सुख शांति झरी है॥49.22॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'व' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...

मु

मुक्ती रमणी को वर के, अरि रज रहस्य क्षय करके।

मुक्त्यात्मा का अर्चन हो, अर्पण मेरा तन-मन हो॥49.23॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'मु' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...

क

हूँ शक्ति रहित बल हीना, मुश्किल है जग में जीना।

लेकिन गुरु शान्ति प्रदाता, गुरु चरण नवाऊँ माथा॥49.24॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'क' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...

ति

अति पुण्य उदय आया है, जिन भक्ति योग पाया है।

हैं गुरु प्रणम्य उपकारी, आदेश दिया हितकारी॥49.25॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'ति' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...

र

रमना अब निज में ही है, अतएव शरण प्रभु ली है।

सुख शान्तिधर्म से मिलती, अनुभूति ये सब की कहती॥49.26॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'र' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...

तो

समकिती निज नियम न तोड़ें, जिनवर से नाता जोड़े।

अतिचार रहित व्रत पाले, चाहे निज प्राण गँवा ले॥49.27॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'तो' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...

सि

मैं सिद्ध सुपद को पाऊँ, चंचल मन पर जय पाऊँ।

यथाख्यात चरित हो मेरा, तुझको अर्पण सब तेरा॥49.28॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'सि' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...

ब

भूचर खेचर सब आते, जिन धुनि सुन कर सुखपाते।

वे समवशरण में आएँ, भावों में शुचिता लाएँ॥49.29॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'ब' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...

द्धः

जिय शुद्धः विकार नशाए, अजरामर निज पद पाए।

स्वाधीन सदा सुख पावे, नहीं लौट जगत में आवे॥49.30॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'द्धः' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...

ए

नेत्रों में नाथ समाए, जिन वच मेरे मन भए।

जब भी जिन दर्शन पाते, उर कमल स्वयं खिल जातें॥49.31॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'ए' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

को

जिन समकित गुण को धारे, शिवपुर में आप पधारे।

भव भव के पुण्योदय से, प्रभु नाम सुमरते मन से॥49.32॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'को' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

प्

शिवपुर में दीप्त रहाएँ, स्वाधीन उजाला पाएँ।

चिन्मय चेतन रस पीते, चिद्रूप दशा में जीते॥49.33॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'प्' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

य

ये नयन कहीं नहीं जाएँ, जब भी जिन दर्शन पाएँ।

हम जिन चरणों में आते, मन में जिननाथ बसाते॥49.34॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'य' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

न

रंजायमान हैं पर से, उर भार बढ़े भव दुख से।

दुख का कारण भी जानें, पर कर्म करें मनमाने॥49.35॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'न' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

न्

निज में जब शान्ति समाए, अभिभूत साधु हो जाए।

जिसने भी आस्रव टाला, वह हुआ धर्म मतवाला॥49.36॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'न्' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

त

हुआ रिक्त कोष कर्मों का, नहीं पार प्रभु वैभव का।

तुम परम धनी हो स्वामी, हम ही मूरख अज्ञानी॥49.37॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'त' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

इ

इस भव - पर भव सुख पाए, जो भी विधान करवाए।

मोह तम सत्वरं विघटाय, दुख - संकट सब - मिट जाए॥49.38॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'इ' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

ति

ख्यातिहित दान कराया, मरकर गज जन्म उपाया।

गज शुण्डा धरती लटके, चेतन पशु गति में भटके॥49.39॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'ति' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

भा

भाव विरोधी से अविरुद्ध, आगम विधि से नमू विशुद्ध।

नहिं हीनाधिक भाव विशेष, स्वात्मीक आनन्द हमेश॥49.40॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'भा' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

सि

सब सिद्धों के शीश समाना, गुण अगुरु लघु निज माना।

घाते पाँचों अन्तराया, हो वीर्य नन्त जिनराया॥49.41॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'सि' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

न

निज में ही ध्यान लगायें, विघ्नों को दूर भगायें।

समता का भाव धराया, प्रभु निजानन्द उपजाया॥49.42॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'न' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

ते

तुम स्वात्म सिद्धि नहिं पाते, हम कैसे ध्यान लगाते।

ना भेद है तुम में हम में, ना खेद है कोई मन में॥49.43॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'ते' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

वि

वसु प्रातिहार्य विरहित हो, निज गुण से ही मंडित हो।

कर्माष्टक नाश कराया, शिवपुर का राज्य उपाया॥49.44॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'वि' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

रो

मुनि आस्रव रोध करावें, स्वात्म का बंध छुड़ावें।

तप-संयम क्षमता साधें, सब सिद्धों को आराधें॥49.45॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'रो' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

धः

बोधः स्वयं जिन पाया, निज आत्मबल प्रकटाया।

ह्रस्वाक्षर काल बिताया, गए मुक्तिमहल जिनराया॥49.46॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'धः' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

सू

शास्त्रों के रहस्य बताएँ, शिष्यों संग संघ बनाएँ।

जन जीवन उन्नतिकर्ता, आचार्य संघ के नेता॥49.47॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'सू' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

वा

स्वातम सुख स्वाद अराधू, इन्द्रिय सुख त्यागी साधू।

चिद्रूप चिदातम ध्यावें, गुणसागर संत कहावें॥49.48॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'वा' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

तू

स्वातम उत्थान करावें, मुख छवि अनुपम बतलावें।

अतिशय कलियुग बतलाया, है साधु दरश सुखदाया॥49.49॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'तू' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

मा

जो लीन हों परमात्मा में, या मगन हों निज-आत्मा में।

वे तत्त्वारथ स्वीकारें, शिव चिंतन हृदय विचारें॥49.50॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'मा' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

नु

अनुराग बढ़े नितनिज में, संवेग भोग जग तन में॥

गुरु ज्ञान गुणों के धारी, हो निश्छल मन अविकारी॥49.51॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'नु' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

शा

मुद्रा जिन शान्त विरागी, हो आत्म तत्व अनुरागी।

जो भी जिनशरण में आता, वह ज्ञान सम्पदा पाता॥49.52॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'शा' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

स

रस स्वानुभूति का पाए, अनुभव निजबोध कराए।

नित ज्ञान सुधा तुम पीते, आनन्दित जीवन जीते॥49.53॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'स' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

न

निज ज्ञान ध्यान तपलीना, परिग्रह चौबीस विहीना।

कृष की हैं सभी कषाएँ, निर्मल आतम मुनि ध्याएँ॥49.54॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'न' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

यु

जानें युगपत भगवन्ता, तिहूँ लोक काल त्रय नन्ता।

प्रभु लोक शिखर के वासी, हुए अजरामर अविनाशी॥49.55॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'यु' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

ते

घाते वसु कर्म महाना, सो हुआ आत्म पद पाना।

हुए रूपातीत हैं स्वामी, गुण सूक्ष्म अनंत सुधामी॥49.56॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'ते' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

जि

जिनमुख तो एकहि कहावे, दर्शन चारों दिशि पावे।

समवशरण में महाविभूती, वाणी-श्री साथ ही रहती॥49.57॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'जि' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

न

छाया न पड़े जिन तन की, न वृद्धि हो केश नखों की।

टिमकार रहित हों नैना, हितकारी हों जिन बैना॥49.58॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'न' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

शा

तुम मोहपिशाच हराया, ज्ञानावर्णी को नशाया।

दर्शनावर्णी को विनाशा, स्वातम ज्योति को प्रकाशा॥49.59॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'शा' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

स

हे प्रभु बस ये ही चाहूँ, नवकार अंत में ध्याऊँ।

इक-इक सीढ़ी चढ़ जाऊँ, अनुक्रम से निजपद पाऊँ॥49.60॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'स' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

ने

तुमने नहीं विघ्न करीना, सो तुम अंतराय विहीना।

दीक्षा ले संग निवारा, पाया सुभाव अविकारा॥49.61॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'ने' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

पि

वचनामृत भव्य पिलाया, तत्वों का ज्ञान कराया।

जिनवाणी को अपनाया, भव्यों को आनन्द आया॥49.62॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'पि' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

पूर्णार्घ्यं

हो सापेक्ष-निरपेक्ष तुम, बद्ध-मुक्त पहचान।

जिनशासन-अनुशासना, एक-अनंतसुजान ॥49॥

ॐ ह्रीं स्यादवाद प्रति पादकाय अर्हं महाबीजाक्षरसहिताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय
नमः पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।



धर्मानुराग वर्धक स्तुति

दृष्टोऽपि नो श्रुतिगतो न कदापि पूर्व,
स्पृष्टो मया न महिमानमहं न वेद्मि।
देवेश! भक्तिरसनिर्भर-मानसेऽस्मिन्,
प्रत्यक्षतोऽप्यधिकरागमतिः परोक्षे ॥50॥

(छन्द विष्णुपद)

दृ

सम्यग् दृष्टि होवे तो भव्यों को मुक्ति मिले।
रत्नत्रय की साधना भी तब ही निर्दोष पले॥50.1॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'दृ' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...

ष

इष्टनिष्ट सभी तज मुनिवर स्वानुभूति में रमते।
दन्त धवन-स्नान करें ना शयन अल्प निशि करते॥50.2॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'ष' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...

टो

इष्टोपदेश ने प्रभु के भवि जीवों को तारा।
आने वाले विघ्नों को भव्यों ने प्रथम निवारा॥50.3॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'टो' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...

पि

पिला दिया है समवशरण में जिनवचनमृत प्याला।
बारह गुणा प्रभु से ऊँचा वृक्ष अशोक विशाला॥50.4॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'पि' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...

नो

नो कर्मों के निमित्त से घेरा कर्मों ने मुझको।
मुझे बचा लो स्वामी ! मैं तो पुकारता तुमको॥50.5॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'नो' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...

श्रु

श्रुत एकन्ध की छाँव में आत्म शान्ति मिलती।
समवशरण में जिनवाणी से ज्ञान कली खिलती॥50.6॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'श्रु' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...

ति

प्रभु भक्ति ही एक सहारा संसारी जन को।

हाथ जोड़ कर शीश झुकाएँ वर्धमान जिन को॥50.7॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'ति' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

ग

जिसने जग जीता वह मोह भी हार गया तुम से।

मां की ममता रोक ना पाई विमुख हुए-सब से॥50.8॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'ग' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

तो

वर्धमान स्तोत्र पढ़े जो तीनों योग लगाय।

वो श्रद्धा से श्रवण करे तो सुख स्वर्गों के पाय॥50.9॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'तो' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

न

ज्यों वनपशु डर जाते सिंह भयंकर गर्जन से।

रोग भयानक भी मिटते यों प्रभु के अर्चन से॥50.10॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'न' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

क

जब तक उदित न होत दिवाकर प्रभापुंज संपन्न।

तब तक निद्रा भार धार नहीं खिलते पंकज वन॥50.11॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'क' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

दा

दान औषधि दें नहीं वे ही रोगी होंय।

संत ज्ञान- अभयदान दें सदा निरोगी होंय॥50.12॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'दा' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

पि

भवान्तरेऽपि नाथ का कभी न छूटे साथ।

डूब जाऊँ यदि भवोदधि प्रभु थामना हाथ॥50.13॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'पि' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

पू

प्रभु पूजन से धर्म ध्यान कर चेतन सुखी हुआ।

नर भव में जो तप करता वह सुखी अनंत हुआ॥50.14॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'पू' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

व

सर्व शान्ति होय जगत में यही भावना है।

रोग कोरोना मिटे शीघ्र ही यही कामना है॥50.15॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'व' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...

स्

लक्ष्मी-सरस्वति दोनों ही प्रभु समीप रहती।

अन्तर्लक्ष्मी नंत चतुष्टय समवस्रत बाह्य विभूती॥50.16॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'स्' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...

पृ

निस्पृह होते हैं साधुजन इच्छाएँ रोके।

आत्म साधना में दृढ़ता से परमात्म खोजें॥50.17॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'पृ' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...

ष

दृष्टि हो सम्यक् मेरी, मुझको आशीष मिले।

मोक्ष प्राप्ति तक शरणागत हूँ, दिल का कमल खिले॥50.18॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'ष' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...

टो

मैं नयन कटोरे लाया जिनदर्शन भिक्षा पाने।

प्रभु चरण शरण में आया निज आठों कर्म खपाने॥50.19॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'टो' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...

म

है नहीं नाथ सम कोय, सो श्रद्धा से की पूजा।

मेरे आराध्य हैं जिनवर नहीं कोई दूजा॥50.20॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'म' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...

या

जिन शासन का ध्वज लहराया योग अर्ह अनुशासन।

जन-जन का मन आत्म तीर्थ में नित करता अवगाहन॥50.21॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'या' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...

न

ज्ञान दान देकर जिनवर ने किया महा उपकार।

सुर नर तिर्यचों का भी तो हुआ आत्म-उद्धार॥50.22॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'न' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...

म

सन्मति देकर नाथ हमारा आवागमन विनाशो।

छाया है अज्ञान अँधेरा ज्ञान ज्योति परकाशो॥50.23॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'म' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

हि

शीघ्र हि कर्म कटें सारे कर चौबिस जिनका ध्यान।

कृपा होय जिनवर की हम पर पाएँ स्वातम ज्ञान॥50.24॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'हि' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

मा

मात सति पितु नृप श्रेयान्स सुत सीमन्धर स्वामी।

विद्यमान विंशति तीर्थकर में पहले जिन नामी॥50.25॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'मा' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

न

कुछ कारण पाकर जिनवर के मन वैराग्य समाया।

जामन मरण मिटाने को प्रभु ने सत्पथ अपनाया॥50.26॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'न' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

म

सुमरण करता नाम तिहारा नाथ रात-दिन मैं।

तुम गुण से आकर्षित होकर भक्त होय वश मैं॥50.27॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'म' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

हं

हंता है प्रभु कर्म के करते ज्ञान प्रकाश।

हमको भी शक्ति मिले करें कर्म का नाश॥50.28॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'हं' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

न

इतना रुदन किया मैंने कई सागर भर जाँएँ।

अब भी संभल नहीं पाया मैं दुख ही दुःख पाए॥50.29॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'न' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

वे

वेद पुराण सभी में आदीश्वर का नाम लिखा।

लेकिन जीवन उसका सार्थक जिसका नाम रहा॥50.30॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'वे' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

दू

उद्बोधन देकर जीवों पर करें वीर उपकार।

इसीलिए तो वर्धमान के गुण गाए संसार॥50.31॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'दू' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

मि

उत्तम योग मिला भक्ति का प्रभु तेरे दर पर।

स्वाध्याय से जाना मैंने कर्मों का संवर॥50.32॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'मि' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

दे

समवशरण में देव देवियाँ सब प्रभु को नमते।

किन्तु वीतरागी जिनवर कभी आशिष नहीं देते॥50.33॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'दे' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

वे

कर्म वेदनी दो विधि जानो साता और असाता।

अशुभ भाव से होय असाता शुभ भावों से साता॥50.34॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'वे' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

श

रवि-शशि की आभा भामण्डल से फीकी लगती।

जो भी प्रभु की शरण में आते उन्हें शान्ति मिलती॥50.35॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'श' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

भ

भक्त मानते हैं जिनवर को प्राणों का आधार।

तुम सम बनने को कर्मों का करते हैं संहार॥50.36॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'भ' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

कू

भक्त ढूँढ़ते आ जाएगा करने जिन भक्ती।

ऊँचे ऊँचे शिखरों पर या रहें कहीं पर भी॥50.37॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'कू' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

ति

जिन भक्ति से संचित कर्म भी तुरंत हि कट जाते।

तप से ही संवर निर्जरा हो आस्रव रुक जाते॥50.38॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'ति' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

र

रसना उनकी सार्थक जो अनुवीचि भाषा करते।

हित मित प्रिय होते वच प्रभु के आनन्दित करते॥50.39॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'र' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...

स

सकल ज्ञेय के ज्ञाता स्वामी हैं निज आतम लीन।

भक्त तिहारी पूजा करते होते पातक क्षीण॥50.40॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'स' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...

नि

ज्यों मेघों के निकट तेजमय सूर्य सुशोभित हो।

भामण्डल मण्डित प्रभु लखकर सुर नर मोहित हों॥50.41॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'नि' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...

र्भ

गर्भ शोधना शची कराती जब शिशु जिन गरभाते।

रहे सीप में मोती जैसे ऐसी शोभा पाते॥50.42॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'र्भ' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...

र

रमणी पर आकर्षित हो जिय नरभव व्यर्थ गवाएँ।

निज स्वरूप को जान के ही भवि निज पद को पाए॥50.43॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'र' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...

मा

दोष करें अभिमान स्वयं पर आश्रय ले धनवान।

सपने में भी नहीं देखें प्रभु जो अद्भुत गुणवान॥50.44॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'मा' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...

न

शशि समान शीतल गुण वाले गुणसागर भगवान।

कर न सके गुणगान आपका बृहस्पति से विद्वान॥50.45॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'न' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...

से

भुजबल से गहरे सागर में कौन तिरे प्राणी।

जिनगुण गायन में अक्षम मैं मौन हुई वाणी॥50.46॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'से' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...

सू

वीर स्तुति को बिना बुद्धि भी मैं तैयार हुआ।

गहन भक्ति के कारण निर्लज्ज मैं लाचार हुआ॥50.47॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'सू' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...

मि

मिला नहीं है अब तक मुझको भेद ज्ञान वरदान।

छाया है अज्ञान अँधेरा मोह कर्म बलवान॥50.48॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'मि' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...

नू

अवधिज्ञान सम्पन्न जिनान् सब ही नमते हैं।

हम भी प्रभु सम गुण पाने को युगपद झुकते हैं॥50.49॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'नू' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...

प्र

प्रभु पद नमन करें नर-सुर भी भक्ति हृदय महान।

समकित आदि गुण मणियों को धारें उर धीमान॥50.50॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'प्र' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...

तू

संपत्त वालों से भी संस्तुत वर्धमान भगवान।

द्वादशांग ज्ञाता सुरेन्द्र ने किया वीर गुणगान॥50.51॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'तू' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...

य

सकल वाङ्मय प्रकट हुआ जिनराज आप द्वारा।

नाथ आपने दिव्यध्वनि से अनगिन को तारा॥50.52॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'य' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...

क्ष

क्षय कर देते कर्म भक्त जन भक्ति के बल से।

लक्ष्य यही है भवदधि तिरना तुम पथ पर चल के॥50.53॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'क्ष' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...

तो

स्तोत्र आपका कर्णप्रिय रमणीक मनोहारी।

अर्थ सहित पढ़ लें श्रद्धा से टलें कष्ट भारी॥50.54॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'तो' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...

पू

अपक्यादिक पन थावर त्रस जीवों को जानें।
इनकी रक्षा सदा कराएँ दया धर्म मानें॥50.55॥
ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'पू' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

य

अतिशय चौंतीस थे हुए सन्मति वीर जिनेश।
दिव्य ध्वनि से हो गए उपकृत देश - विदेश॥50.56॥
ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'य' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

धि

काल लब्धि आई है मेरी अब ऐसा लगता।
द्वार मिला है भगवन तेरा आई मन समता॥50.57॥
ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'धि' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

क

कर्मारि-रज-रहस्य विहीना जिनवर को बन्दें।
लगे हुए जो नंत काल से कर्मों को खण्डें॥50.58॥
ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'क' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

रा

वीर विराजें समवशरण में पंच सहस धनु पर।
चार अंगुल पर अधर सोहते सिंहासन ऊपर॥50.59॥
ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'रा' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

ग

गन्धोदक मस्तक लगे होंय कष्ट सब नष्ट।
होवे निर्मल आत्मा कर्म नशें मम अष्ट॥50.60॥
ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'ग' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

म

नाम मंत्र श्री वर्धमान का जपू नित्य दिन रैन।
मेरे तो आराध्य जिनेश्वर मिले सदा सुख-चैन॥50.61॥
ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'म' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

ति:

परम शान्ति: हो लक्ष्य एक ही ॐ अर्ह द्वारा।
अर्ह योग से गूँजे जग में मुनि प्रणम्य जयकारा॥50.62॥
ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'ति:' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

शिवगामी जिनवर युग **पद** में जो भी जन झुकते।

संचित कर्म उन्हीं के सारे अल्पकाल नशते॥50.63॥

ॐ ह्रीं अर्हं वर्तमानशासननायक 'प' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...

ऋषि बनो या कृषि करो ये आदीश्वर नारा।

असि मसि कृषि विद्या वाणिज अरु शिल्प ज्ञान द्वारा॥50.64॥

ॐ ह्रीं अर्हं वर्तमानशासननायक 'रो' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...

क्षेमंकर है वीर विधान महा अतिशयकारी।

पढ़ें पढ़ावे जो भावों से होवे हितकारी॥50.65॥

ॐ ह्रीं अर्हं वर्तमानशासननायक 'क्षे' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...

पूणाईर्य

देखा-सुना न छुआभी, महिमा जिन अनजान।

फिर भी राग परोक्ष में, अधि प्रत्यक्ष से मान ॥50॥

ॐ ह्रीं धर्मानुराग वर्धकाय अर्हं महाबीजाक्षरसहिताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः
पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।



विमुक्त व्यक्ति मेलापक स्तुति

अद्यापि ते प्रवचनाम्बु मनः पिपासा,
पीत्वाऽपि तृष्यति विलोक्य पुन-र्दिदृक्षा।
एतन्मनोरथयुगस्य यदा हि पूर्तिः,
साक्षाद् भवेन्मम विमुक्तिकथा तदाऽलम् ॥51॥

(छन्द पदरी लध्वन्त)

अ

मन से धारे हर्ष अतीव,
पूजें जिनवर को भविजीव।
प्रभु सब जीवों को हितकार,
वन्दन करते बारम्बार ॥ 51.1 ॥

ॐ ह्रीं अर्हं वर्तमानशासननायक 'अ' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

द्या

अद्यापि मैं जग भटकाय,
नाहिं शिवपथ पर चल पाय।
अब प्रभु से ली लगन लगाय,
चेतनता निज सुप्त जगाय ॥ 51.2 ॥

ॐ ह्रीं अर्हं वर्तमानशासननायक 'द्या' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

पि

कंपित कभी न मेरू होय,
प्रलय पवन भी चलती होय।
यों ही प्रभुमन अचल रहाय,
चाहे अप्सराएँ भी आय ॥ 51.3 ॥

ॐ ह्रीं अर्हं वर्तमानशासननायक 'पि' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

ते

अनुभवते प्रभु स्वात्म सुभाव,
जिनके परिणामिक हैं भाव।
धन्य धन्य पुरुषार्थ कराय,
जिनपद में हम शीश नवाय ॥ 51.4 ॥

ॐ ह्रीं अर्हं वर्तमानशासननायक 'ते' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

प्र

प्रत्यय पाँच बंध के जान,
क्षय कर हुए सिद्ध भगवान।
अतिशय महिमा युक्त जिनेश,
मन वच तन पूजें परमेश॥51.5॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'प्र' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

व

श्री जिनवर का शान्त सरूप,
नमन करें हम शिवपुर भूप।
केवलज्ञान की ज्योति जगाय,
शिवपथ को जिनवर दर्शाय॥51.6॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'व' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

च

जिन वच सुन होवे कल्याण,
होवे केवली का निर्वाण।
मेघ गर्जना सम गंभीर,
हरती जिन धुनि जिय भव पीर॥51.7॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'च' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

ना

शुद्धातम में कोई ना ताप,
स्वानुभूति के रसिया आप।
सुनिए अरज जिनेश्वर आज,
हम आए तुम दर्शन काज॥51.8॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'ना' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

म्

पूजारम्भ करूं जब नाथ,
तुम चरणों में जोड़ूं हाथ।
वर्धमान स्तोत्र है रम्य,
होवे भक्तों को बोध गम्य॥51.9॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'म्' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

बु

चरणाम्बुज में करुं प्रणाम,
गुरु प्रणम्य तो हैं निष्काम॥
मन वच तन से गुरु को ध्याय,
चारित पथ पर बढ़ते जाय॥ 51.10 ॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'बु' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

म

प्रभु की मूरत है मनहार,
वीतराग छवि है अविकार।
राग द्वेष से रहित जिनाय,
वीतराग वन्दें जिनराय॥ 51.11 ॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'म' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

नः

मनः कमल लोचन जिन वीर,
हाने कर्म घाति महावीर।
शुक्लध्यान की अगनि जलाय,
कर्माटवी को दग्ध कराय॥ 51.12 ॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'नः' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

पि

ज्ञानामृत मुझको पिलवाय,
नींव मिथ्या महल हिलाय।
गुरुचरणों में ही हो वास,
और नहीं इच्छा कुछ खास॥ 51.13 ॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'पि' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

पा

पापी को नहीं पूजा भाए,
प्रभु भक्ति भी नाहिं सुहाए।
पुण्यात्मा जिन दर्शन पाय,
जिन पूजन करता हरषाय॥ 51.14 ॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'पा' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

सा

संसारी भोगों रति लाय,
काया में भव रोग लगाय।
सन्मारग मुझको दरशाय,
सन्मति देकर अग्र बढ़ाय॥ 51.15॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'सा' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...

पी

पीते ज्ञान सुधारस नाथ,
भक्तों का देते हैं साथ।
जानें सर्व तत्व संदोह,
गर्व खर्व मानी का होय॥ 51.16॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'पी' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...

त्

रत्नाकर गुण अपरम्पार,
प्रकटाँ गुण पूरण सार।
नंत गुणों के जिन आगार,
हम भी जाँ मोक्षागार॥ 51.17॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'त्' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...

वा

भगवान अवश्य हि कहलाय,
शाश्वत सुख प्राप्त कराय।
जो आशीष प्रभु का पाय,
शिवपुर का साम्राज्य लहाय॥ 51.18॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'वा' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...

पि

कर पिच्छी कमंडल लाय,
जमीं चार हाथ लख जाय।
हों अविकारी मुनि शिशु-सम,
वंदन शत शत बार करें हम॥ 51.19॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'पि' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...

तृ

तृष्णा जो भी भोग बढ़ाय,
काया रोगों से घिर जाय।
त्यागें सभी विषय कषाय,
व्रत-संयम ले सुखदाय॥ 51.20 ॥

ॐ ह्रीं अर्हं वर्तमानशासननायक 'तृ' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...।

ष

सृष्टि में साधु सब महान,
करें सर्व कर्म की नित्य हान।
षट् रस में भी नहीं स्वाद पाय,
चंचल मन-इन्द्रियाँ वश कराय॥ 51.21 ॥

ॐ ह्रीं अर्हं वर्तमानशासननायक 'ष' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...।

य

यहाँ सुधर्म स्वर्ग से आए,
परिवार भी संग में लाए।
शिशु जिन सुमेरू ले जाए,
वहाँ जलाभिषेक कराए॥ 51.22 ॥

ॐ ह्रीं अर्हं वर्तमानशासननायक 'य' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...।

ति

वर्द्धमान से सम्मति पाए,
ध्यान चित्त एकाग्र लगाए।
अपने में ही लीन रहाय,
मंज़िल भी तुरत हि मिल जाएं॥ 51.23 ॥

ॐ ह्रीं अर्हं वर्तमानशासननायक 'ति' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...।

वि

विपरीत मार्ग नहीं चुनाय,
जिन वचनों को ही सुनें सुनाय।
तन्मय जब हो जाय निजातम,
हो जावे तब खुद परमातम॥ 51.24 ॥

ॐ ह्रीं अर्हं वर्तमानशासननायक 'वि' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...।

लो

लोकालोक विलोकी जान,
चेतना भोगी है सद् ज्ञान।
गुण अनंत स्वातम प्रकटाय,
शाश्वत परमानंद रहाय॥51.25॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'लो' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

क्

प्रभु भक्तों को पार लगाय,
मुक्ती के मारग चलवाय।
जिन महिमा जग को दरशाय,
प्रभु शरणागत मन हरषाय॥51.26॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'क्' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

य

भुवनत्रय में शान्ति रहाय,
जब जिनवर उद्भव हो जाय।
प्रभु निश्चयस सुख को पाय,
अविचल अविकारी हो जाय॥51.27॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'य' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

पु

पुनि सहस अठारह शील धार,
प्रभु हुए स्वयं हि निर्विकार।
फिर पाँ निज पद में विश्राम,
हो गए नाथ मुक्ति के धाम॥51.28॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'पु' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

न

जिनवर सिद्ध दशा में आय,
हम भी प्रभुको शीश-नवाय।
सब कर्मों का करके नाश,
हुआ आपका शिवपुर वास॥51.29॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'न' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

दि

पुनर्दिदृक्षा इन्द्र कराय,
अपलक देखे शिशु जिनराय।
सहस नेत्र निर्मित कर लेय,
फिर भी मन संतुष्ट न होय॥51.30॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'दि' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

दृ

दृष्टि सम्यक् जब हो जाय,
स्वातम भी निज में रम जाय।
शिवपुरपथ पर बढ़ते जाय,
अन्त में मोक्ष परम पद पाय॥51.31॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'दृ' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

क्षा

कक्षाओं का अन्त कराय,
अलख निरंजन निज सुख पाय।
स्वानुभूति हो शान्त हृदय,
होवें दोष विकार विलय॥51.32॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'क्षा' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

ए

दिए त्याग सारे जंजाल,
जान जगत को माया जाल।
संवर तप से पाएँ मोक्ष,
अविनाशी अक्षय निज सौख्य॥51.33॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'ए' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

त

मूरत वीरा हृदय समाय,
तन मन भी गद्गद् हो जाय।
श्रद्धा से पूजें वसु याम,
हाथ जोड़ कर करें प्रणाम॥51.34॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'त' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

न

वन्दन करते बारम्बार,
प्रभु हमारे प्राणाधार।
जिन गुण में जागी ममप्रीत,
यदपि नाथ हैं देहातीत॥51.35॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'न' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

म

सहज करें मुनि आतम शोध,
भविजन को भी देते बोध।
घाति आधाति कर्म नशाय,
मोक्षपुरी पहुँचे जिनराय॥51.36॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'म' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

नो

मनोमालिन्य रहे न लेश,
मिट जाएँ सबके मन क्लेश।
निर्मल मन में भाव जगाय,
तो मन भी मन्दिर हो जाय॥51.37॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'नो' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

र

पदरज गुरु की शीशचढ़ाय,
जीवन अपना धन्य बनाय।
काल भविष्यत के भगवान,
प्रभु पूजा से हो उत्थान॥51.38॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'र' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

थ

थमा हुआ है ये आकाश,
जब तक जग में ज्ञानप्रकाश।
अगर सन्त ना हों संसार,
तो नभ से बरसें अंगार॥51.49॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'थ' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

यु

युगादि में तरू कल्प अवसान,
आदिनाथ दें सबको ज्ञान।
षट् विद्याएँ प्रजा सिखाय,
कर्म भूमि आरम्भ बताय ॥ 51.40 ॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'यु' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

ग

गमनागमन होय संसार,
सिद्ध हुए सब भव से पार।
जग में उनका जीवन सार,
करें कर्म का जो संहार ॥ 51.41 ॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'ग' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

स्

स्याद्वाद अनमोल कहाय,
वाद विवाद सभी मिट जाय।
पक्ष सभी होवें सापेक्ष,
नहीं कार्यकारी निरपेक्ष ॥ 51.42 ॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'स्' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

य

यदा-यदा हो धर्म की हान,
महापुरुष करते कल्याण।
पंचम काल के अन्त प्रमाण,
चार संघ होंगे गतिमान ॥ 51.43 ॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'य' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

य

सर्वकषाय अभाव कराय,
क्षपक श्रेणि मुनि गमन कराय।
दवन्द फन्द का त्रास हरेँ,
नन्त चतुष्टय प्राप्त करें ॥ 51.44 ॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'य' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

दा

मिले नाथ ऐसा वरदान,
सिद्धालय को होय प्रयाण।
कर्माटवी को दग्ध कराय,
मोक्ष महल प्रभु तिष्ठे जाय॥51.45॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'दा' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

हि

शीघ्र हि कर्मबंध नर तोड़,
परमात्म से नाता जोड़।
स्वात्म में ही रमण कराय,
अजर अमरपद को जिय पाय॥51.46॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'हि' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

पू

पूजें प्रभु को तीनों लोक,
स्वात्म में हो ज्ञानालोक।
बहे ज्ञान गंगा सुखकार,
प्रकटे मम गुण भी साकार॥51.47॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'पू' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

ति

मूर्तिः सौम्य आप जिनराज,
धारा तप निज हित के काज।
हरण करो प्रभु सब सन्ताप,
मैं भी हो जाऊँ निष्पाप॥51.48॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'ति' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

सा

साथ रहें सब सिद्ध अनेक,
जिय-सत्ता वहाँ एकानेक।
शीश सभी के होंय समान,
खड़गासन-पद्मासन मान॥51.49॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'सा' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

क्षा

करें सुरक्षा आत्म अमोल,
समता जल उठतीं कल्लोल।
व्रत-संयम की बाड़ लगाय,
विघ्न चोर घुसने नहीं पाय॥51.50॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'क्षा' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

दु

सदृष्टि सब को सुखदाय,
जो भी पाय आनन्द आय।
पहला मटका सीधा होय,
ऊपर भी सब सीधे होय॥51.51॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'दु' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

भ

भवनाशिनी भावना भाय,
अन्त समय भी सुख को पाय।
विमल भावना अटल रहाय,
तो जीवन भी सफल कहाय॥51.52॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'भ' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

वे

वे पाते शिवपुर साम्राज,
जो रमते निज में मुनिराज।
सदा धर्म का करें प्रचार,
जग में उनकी जय जय - कार॥51.53॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'वे' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

न्

त्रिभुवन के सब जीव अनन्त,
सुख चाहें दुख से भयवन्त।
हम भी प्रभु चरणों में आय,
अपना जीवन सुखी बनाय॥51.54॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'न्' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

म

समता अपने उर में धार,
 होता लाखों का उद्धार।
 इसीलिए सब तजें विभाव,
 तन्मय रहते आत्म सुभाव॥51.55॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'म' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

म

ममता पर से कर परिहार,
 बनें आत्म गुण का भंडार।
 चेतन निज गृह करे प्रवेश,
 जो है अपना शाश्वत देश॥51.56॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'म' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

वि

व्याप्त विश्व में प्रभु का ज्ञान,
 दूर करे जग से अज्ञान।
 देवदुन्दुभि का हो नाद,
 जय-जयकार से मन आह्लाद॥51.57॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'वि' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

मु

दीक्षा लेकर के मुनिराय,
 पंच महाव्रत लें सुखदाय।
 पालें अट्टाईस गुण मूल,
 रत्नत्रय से हो भव-कूल॥51.58॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'मु' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

क्

जिय संयुक्त स्वात्म संवेदन,
 पर परिणति का होय न वेदन।
 आनन्दित रहते नित साधु,
 निज उपयोग में प्रभु आराधु॥51.59॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'क्' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

ति

घात घातियां हों अरिहंत,
नमें नित्य हम मुक्तीकंत।
निज-पर का करते कल्याण,
होता अन्त समय निर्वाण॥51.60॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'ति' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

क

स्वानुभूति करते भविलोग,
लगतानिज में ही उपयोग।
त्रिविध ताप का रहे न लेश,
मिटता उभय जगत संक्लेश॥51.61॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'क' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

था

हो जिनका चारित यथाख्यात,
वे मुनिवर हों जग विख्यात।
पुद्गल कर्म फलों से हीन,
जिनवर ज्ञान चेतना लीन॥51.62॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'था' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

त

तन्मयता से कर लें ध्यान,
हो जाए आतम कल्याण।
विधिका अन्त करें जो नाथ,
जग से पूजित हों शिवनाथ॥51.63॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'त' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

दा

दान तीर्थ के नेता आप,
सोम - श्रेयांस द्वय भ्राता साथ।
पात्रदान दे - आदिनाथ,
अहो दान! कहते सुरनाथ॥51.64॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'दा' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

गुर्वाशीष लहे जो जीव,
उसको मिलता सौख्य सदीव।
सहिष्णुता मन में आ जाए,
मोक्ष मार्ग पर बढ़ता जाए॥ 51.65॥

निज वैभव ही इष्टम् मोय,
जगत वास ही नेष्टम् होय।
सो दृष्टी स्व सन्मुख होय,
परपदार्थ से उन्मुख होय॥ 51.66॥

जिन वच जल जिम दर्श से, मिटे न तन-मन प्यास।

ॐ ह्रीं मनवांछित फलप्रदाय अर्ह महाबीजाक्षरसहिताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः
पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।



परलोक सुख करी स्तुति

पुण्यं त्वयोदित-तपोयम-पालनेन,
भक्त्योर्जितेन भविनां शिवसाधनं ते।
पुण्यं निदानसहितं सुरसौख्यकामं,
बन्धप्रदं न हि नयं समवैति जैनः॥52॥

(छन्द दोहा)

पु

पुण्य योग से आ गया, आज वीर के द्वारा।
वरना निकल निगोद से, भटक रहा संसार॥52.1॥

ॐ ह्रीं अर्हं वर्तमानशासननायक 'पु' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...।

ण

पुण्यार्जन शुभ भाव से, कहते श्री जिनराज।
अशुभ भाव को त्याग के, रखो धर्म की लाज॥52.2॥

ॐ ह्रीं अर्हं वर्तमानशासननायक 'ण' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...।

यं

हृदयंगम जिनवाणि को, जो करता गुणवान।
रत्नत्रय निधि हित करे, निज पुरुषार्थ महान॥52.3॥

ॐ ह्रीं अर्हं वर्तमानशासननायक 'यं' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...।

त्

स्वात्मा में जो भी रमे, पर की तज कर आश।
सुस्थित हो परमात्म में, करे कर्म का नाश॥52.4॥

ॐ ह्रीं अर्हं वर्तमानशासननायक 'त्' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...।

व

द्रव्य-भाव-नोकर्म बिन, सिद्ध हुए जिनदेव।
इच्छाओं को नष्ट कर, मुक्त हों हम स्वमेव॥52.5॥

ॐ ह्रीं अर्हं वर्तमानशासननायक 'व' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...।

यो

वन्दन करने योग्य हैं, तीन लोक के नाथ।
मतिश्रुत अवधि युत जनम, मन पर्यय मुनि साथ॥52.6॥

ॐ ह्रीं अर्हं वर्तमानशासननायक 'यो' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...।

दि

दिखला दो हमको प्रभु, अपना शाश्वत देश।

कष्ट निवारो भक्त के, मिटें जगत के क्लेश॥52.7॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'दि' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

त

तनिक परिग्रह जो रखे, वही दुखी हो जाय।

रूई लपेटी आग से, सभी भस्म हो जाय॥52.8॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'त' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

त

जग-तन-भोग विरक्त जो, सहें सहज दुख शोक।

रहें भिन्न संसार में, ज्यों जल कमल विलोक॥52.9॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'त' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

पो

पोषण करते देह का, नहिं स्वात्म का ध्यान।

आत्मज्ञान मिल जाए तो, भक्त बने भगवान॥52.10॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'पो' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

य

आसक्ति पर द्रव्य में, अज्ञानी दुख पाय।

अपनी सुधि जिसको हुई, मन ही मन मुस्काय॥52.11॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'य' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

म

महिमा अगम है नाथ की, तजे भोग-उपभोग।

ज्ञान शरीरी हों प्रभु, तज कर तन संयोग॥52.12॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'म' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

पा

पाप घटे नहिं रंच भी, ना ही घटी कषाय।

कैसे भव्य कल्याण हो, निज सुख तो नहिं पाय॥52.13॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'पा' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

ल

पल पल कल्मष भाव ही, दिन दिन बढ़ता जाए।

कल-कल पर ही टालता, व्यर्थ हि आज गँवाय॥52.14॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'ल' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

ने

कर्म शत्रू जिननाथ ने, किए स्वयं निःशेष।

समवशरण में शोभते, सूर्य समान जिनेश॥52.15॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'ने' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

न

नन्त गुणों की खान जिन, वन्दन शीश नवाय।

हम संसारी राई सम, मेरू सम जिन राय॥52.16॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'न' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

भ

भक्त शरण में है खड़ा, विनती करता नाथ।

सुख करता भी आप हैं, दुख हरता भी आप॥52.17॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'भ' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

क

मुक्त हुए संसार से, पाया शिवपुर राज।

भीतर तक उतरे प्रभो, आतम हित के काज॥52.18॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'क' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

त

नित्य उदित हैं वीर जिन, अजर अमर अविकार।

कामदेव से भी अधिक, मुख मण्डल मनहार॥52.19॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'त' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

यो

ज्ञान ज्योति दिनकर कहे, वर्धमान जिनराज।

हम शरणागत आपके, सफल होंय सब काज॥52.20॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'यो' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

जि

अर्जित कर लें पुण्य तो, वृद्धा पन भी सार।

विषय भोग में रत रहें, यौवन भी निस्सार॥52.21॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'जि' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

ते

तेजस्वी हैं सूर्य सम, गरिमा अपरम्पार।

हर लेते भव पीर प्रभु, अनासक्त संसार॥52.22॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'ते' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

न

महावीर बन नाथ ने, किया मोह पर वार।

ज्ञान-ध्यान बल से हुई, वसु कर्मों की हार॥52.23॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'न' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...

भ

भगवन बनता भक्त वो, जपे जाप जिन नाम।

दया धर्म को पालता, अनुगामी वर्धमान॥52.24॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'भ' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...

वि

हो विरक्त संसार से, पाया सौख्य अनन्त।

निरतिचार चर्या करें, विद्या शिरोमणि सन्त॥52.25॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'वि' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...

नां

साधूनां दर्शन मिले, श्रावक शरणा पाय।

गुरु जैसा बनना चहे, निजगुण ले प्रकटाय॥52.26॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'नां' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...

शि

शिवनारी भरतार हैं, चित्-स्वरूप चिरकाल।

प्रभु मंगल करतार हैं, ऊर्ध्व मध्य पाताल॥52.27॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'शि' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...

व

भव सागर तट पा लिया, पहुँच गए शिव लोक।

आश्रय दो निज पद मुझे, हरो सर्व मम शोक॥52.28॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'व' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...

सा

है संसार असार ये, नहीं यहाँ कुछ सार।

शान्ति मिले तुम शरण में, करो मेरा उद्धार॥52.29॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'सा' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...

ध

धन्य आपकी शान प्रभु, कर्म कलंक विहीन।

यदपि मलिन दुष्कर्म से, तदपि भक्ती जिन लीन॥52.30॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'ध' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...

नं

अभि^{नं}दन के योग्य प्रभु, कैसे जिन गुण गाय।

हम भी तुम सम बन सकें, चरण शरण सुखदाय॥52.31॥

ॐ ह्रीं अर्हं वर्तमानशासननायक 'नं' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...

ते

वापिस जग नहीं लौटते, जिनवर शाश्वत शुद्ध।

सिद्धालय में ही रहें, सिद्ध बुद्ध अविरुद्ध॥52.32॥

ॐ ह्रीं अर्हं वर्तमानशासननायक 'ते' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...

पु

पुण्योदय है मम प्रबल, मिला है गुवदिश।

पद्यानुवाद स्तोत्र का, आशिष मिला जिनेश॥52.33॥

ॐ ह्रीं अर्हं वर्तमानशासननायक 'पु' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...

ण्

हैं अगण्यगुण साधु के, सिंधु समान अपार।

इसीलिए गुरु नाम के, सागर अग्र विचार॥52.34॥

ॐ ह्रीं अर्हं वर्तमानशासननायक 'ण्' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...

यं

व्यं^{यं}तर ज्योतिष भवन सुर, वैमानिक भी देव।

समवशरण प्रभु राजते, करते जिन पद सेव॥52.35॥

ॐ ह्रीं अर्हं वर्तमानशासननायक 'यं' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...

नि

निर्मम होकर ही तर्जें, देह नेह जिनराज।

इसको भी ये शक्ति दो, तारण तरण जहाज॥52.36॥

ॐ ह्रीं अर्हं वर्तमानशासननायक 'नि' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...

दा

दान चतुर्विध दे सदा, पूजा करे जिनेश।

पालें अनशन शील को, श्रावक जैन हमेश॥52.37॥

ॐ ह्रीं अर्हं वर्तमानशासननायक 'दा' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...

न

आत्मज्ञान जिन भक्ति से, भक्त बने भगवान।

अपना आपा जान के, बेगाना जग जान॥52.38॥

ॐ ह्रीं अर्हं वर्तमानशासननायक 'न' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...

स

सबहि सिद्ध शिवभूष हैं, सिद्धालय साम्राज्य।

पुरुषारथ से कर्म क्षय, सब का निज पर राज॥52.39॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'स' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

हि

हिरदय में अवगुण भरे, दूर करें दुरभाव।

जो जिन वचन न टालते, गुरुपद भवसर नाव॥52.40॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'हि' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

तं

तं वीरं वन्दन करूँ, हाथ जोड़ शिर नाय।

निज आतम में रमण कर, केवल रवि विकसाय॥52.41॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'तं' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

सु

शत्रु सुमित्र हि होत है, क्षमा हृदय में होय।

गाँठ वैर की भी खुले, प्रीति परस्पर होय॥52.42॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'सु' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

र

नाथ रसिक हैं स्वात्मा, पर से नहीं सम्बन्ध।

चेतन कानन में रमें,टूटें करमन बन्ध॥52.43॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'र' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

सौ

सौम्य मूर्ति तुम दर्श से, हों विकार सब चूर।

सब विभाव तज कर प्रभु, परम शांति से पूर॥52.44॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'सौ' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

ख्

ख्याति की नहीं कामना, नहीं नाम का लोभ।

प्रभु भक्ति से नष्ट हो, मेरे मन का क्षोभ॥52.45॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'ख्' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

य

यति मुनि ऋषि के ईश हो, सर्वश्रेष्ठ परमेश।

मेरे तो सर्वस्व हो, बसो हृदय सर्वेश॥52.46॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'य' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

का

जीवन में सुखकार है, चिंतक तत्त्व विचार।

पर की परिणति त्याग भवि, अपनी कुमति सुधार॥52.47॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'का' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

मं

मंद कषाएँ तो हुई, किन्तु हुई ना क्षीण।

गुणस्थान दश-क्षय करें, विज्ञ पुरुष परवीण॥52.48॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'मं' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

ब

बन्धन नहीं सुभाव मम, ज्ञात हुई जब बात।

बंध मुक्त हो गए स्वयं, वर्धमान जिननाथ॥52.49॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'ब' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

न्

नन्दन भूप सिद्धार्थ के, माँ त्रिशला के लाल।

न्हवन सुमेरु पर हुआ, जय-जय-गूँज विशाल॥52.50॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'न्' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

ध

मुनि तपोधन के दर्श से, खुलें भीतरी नेत्र।

पाप-कषाय-कुमती के, साधू ही हों जेत्र॥52.51॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'ध' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

प्र

हे प्रभु! चंचल चित्त है, थिर नहीं हो उपयोग।

जिन पूजा अभिषेक का, आगे हो संयोग॥52.52॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'प्र' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

दं

इदं स्तोत्रं वीर जिन, रचना मुनि प्रणम्य।

पढ़-सुन कर आनन्द हो, कृपा होय जिन गम्य॥52.53॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'दं' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

न

दाता मन में हर्ष धर, देता पात्र हि दान।

दे श्रेयान्स आदीश को, इक्षु रस का दान॥52.54॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'न' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

हि

नहि माँगू मैं स्वर्ण को, नहीं स्वर्ग के भोग।

मैं ऐसा संहनन लहूँ, क्षीण करूँ भव रोग॥52.55॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'हि' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

न

तीन योग से ध्यावते, ध्यानी प्रभु का ध्यान।

तुम निर्दोषी वीर जिन, गुण अनंत की खान॥52.56॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'न' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

यं

नाथ अगम्यं सिद्ध हो, जान सके नहि कोय।

ज्ञात उसे प्रत्यक्ष जो, केवलज्ञानी होय॥52.57॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'यं' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

स

दुखी सभी अज्ञान से, वीर ज्ञान भरपूर।

मैं आया तुम द्वार पर, करूँ मोह मद चूर॥52.58॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'स' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

म

जन्म मरण से मुक्त हो, पाया सिद्ध सरूप।

निर्मल मन से प्राप्त हो, सुख अनंत का कूप॥52.59॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'म' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

वै

गिरि वैभार पे वीर का, समवशरण जब आय।

राजगृही पावन नगर, बन्दें शीश नवाय॥52.60॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'वै' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

ति

तिरे आप भवदधि प्रभु, तारे भव्य अनेक।

हृदय हुआ गद्-गद् स्वयं, वीतराग छवि देख॥52.61॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'ति' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

जै

जैन धर्मोस्तु मंगलम्, गूँजे नित जय घोष।

रत्नत्रय अनमोल निधि, पहुँचा देती मोक्ष॥52.62॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'जै' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

प्रवचन जलधि स्थायिनः, भवि जन लें अवगाह।

भूले-भटके पथिक भी, पा जाते शिवराह॥52.63॥

पूणाईय

भक्ति भाव तप व्रत धरे, बड़े पुण्य कलिहान।

वो ही शिव साधन वरन, कारण बंध निदान ॥52॥

ॐ ह्रीं परलोके सौख्य प्रदाय अर्ह महाबीजाक्षरसहिताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः
पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

रत्नत्रय प्रदायी स्तुति

सम्यक्त्वमेव जिनदेव ! तवैव भक्ति-
ज्ञानं तदेव चरितं व्यवहारमित्थम्।
तावत् करोतु भविकस्त्वदभेदबुद्धय,
मुक्त्यंगना-रमणतात्म-सुखं न यावत् ॥53॥

(छन्द पद्धती)

स

जिनवर सब के पाप मिटाय, फिर भी दिखते नही जिनाय।

जयवन्तो जिनं धर्मप्रकाश, हम भी करें कर्म का नाश॥53.1॥

ॐ ह्रीं अर्हं वर्तमानशासननायक 'स' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...

म्

सम्यग्दर्शन-ज्ञान लहाय, चारित के सोपान चढ़ाय।

शिवपथ पर बढ़ते ही जाय, अन्त में अपना ही पद पाय॥53.2॥

ॐ ह्रीं अर्हं वर्तमानशासननायक 'म्' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...

य

नित्यनाथ को शीश नवाय, एक बार प्रभु आशिष पाय।

जनम मरण छुटकारा पाय, स्वातम के गुण गण दरशाय॥53.3॥

ॐ ह्रीं अर्हं वर्तमानशासननायक 'य' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...

क्

त्यक्त्वा सारे भाव विकार, सुनकर जिनवचनन सुखकार।

निज स्वरूप की कर पहचान, कर लें हम भी आतम ध्यान॥53.4॥

ॐ ह्रीं अर्हं वर्तमानशासननायक 'क्' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...

त्

त्वत् प्रभाव से निज सुखपाय, कर्म असाता लेय मिटाय।

बिगड़े काम सभी बन जाय, कर्मों को भी शीघ्र खपाय॥53.5॥

ॐ ह्रीं अर्हं वर्तमानशासननायक 'त्' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...

व

प्रभु सब त्याग गए वनवास, आत्म ज्योति का किया विकास।

सन्मति से सन्मति को पाय, सन्मारग पर बढ़ते जाय॥53.6॥

ॐ ह्रीं अर्हं वर्तमानशासननायक 'व' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...

मे

बरसें मेघ धरा पर आय, जिनधुनि अष्टम भू खिर जाए।

हम भी दिव्यध्वनि सुन पाय, वसु कर्मों का नाश कराय॥53.7॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'मे' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

व

भव व्याधि है अति दुखदाय, सब जीवों को जग भटकाय।

कैसे हम स्वातम गुण पाय, निज भावों को विमल बनाय॥53.8॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'व' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

जि

गुण जिनदेव न चिन्ते जाय, इसीलिए जिन चरणन आय।

घाति-अधाति करमन नाश, हुआ प्रभु का मोक्ष निवास॥53.9॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'जि' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

न

स्वातम में भविलीन रहाय, भागें करम सभी डर जाय।

टंकोत्कीर्ण हुआ जिन रूप, तभी कहाते हैं शिवभूप॥53.10॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'न' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

दे

देव दुन्दुभि नाद कराय, जय हो जय हो जय जिनराय।

गगनांगन में भी हो शोर, जिन धुनि सुन नाचें भवि भोर॥53.11॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'दे' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

व

जो भी जीव तिरे भवसिंधु, हो जाते वे जगजिय बंधु।

कटे कर्म बंधन का जाल, शरणागत हम हैं नत भाल॥53.12॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'व' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

त

नित गावें जिन गुण के गीत, प्रभु ही मेरे सच्चे मीत।

तुम पथ पर चलकर ही नाथ, मुक्तिरमा का पावें साथ॥53.13॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'त' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

वै

वैयावृत्ति करें सदैव, पंच साधु जो कहे तथैव।

गुरु सेवा से मेवा पाय, हम भी अपने गुण प्रकटाय॥53.14॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'वै' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

व

वन्दे तुम सम गुणगण पाय, वसुविध कर्मन शीघ्र खपाय।

कर्म बधं दूटें तत्काल, परमौदारिक देह विशाल॥53.15॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'व' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

भ

भविजन का मेटो अज्ञान, विश्वव्यापि प्रभु तुमरा ज्ञान।

निज पर का करते कल्याण, आप हि हो उत्तम गुणवान॥53.16॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'भ' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

क्

भक्ति भाव मन रहे हमेश, छूटें मन से सारे क्लेश।

रंच मात्र नहिं प्रभु को खेद, भावों से नित रहें अवेद॥53.17॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'क्' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

ति

स्वानुभूति के स्वामी आप, शुद्धातम को हो नहिं ताप।

बुलबालो हमको निज धाम, हम भी लें निज में विश्राम॥53.18॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'ति' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

र्ज्ञा

भक्तिर्ज्ञान ध्यान मन लाय, जो भी अपना समय बिताय।

वे नर संयम व्रतहि धराय, अन्त चिदानन्द प्राप्त कराय॥53.19॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'र्ज्ञा' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

नं

नंत काल स्वातम सुखपाय, रमते हैं जो आत्म हिताय।

वे ही निज में निज को जान, रोग शोक की होती हान॥53.20॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'नं' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

त

तन से मुक्त शुधातम होय, सिद्ध लोक में वासा होय।

एक बार ही जाना होय, नहीं वहाँ से आना होय॥53.21॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'त' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

दे

देवों के भी देव अर्हन्त, अतिशय धारी महा महन्त।

सर्व कर्म मल वर्जित होय, सब ही दोष विवर्जित होय॥53.22॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'दे' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

व

वसन विकार मिटा कर आप, हुए शुद्ध तन मन निष्पाप।

जिन गुण लिख नहीं पावे कोय, चाहे सागर स्याही होय॥53.23॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'व' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

च

वचन प्रभु के हैं हितकार, भविजन करते तत्त्व विचार।

स्वात्म ज्ञान का पा उपदेश, हर लेते सारे भव क्लेश॥53.24॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'च' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

रि

हरियाली छाई चहुँ ओर, जिन विहार नाचे भवि मोर

भक्ति का हो जोश अपार, भक्त करें सब जय-जय कार॥53.25॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'रि' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

तं

तं वीरं को सहस प्रणाम, करते जीवों का कल्याण।

आते हैं दिवि से गिरवान, पाने आय हम भी निर्वाण॥53.26॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'तं' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

व्

व्याप्त विश्व में जिनवर ज्ञान, मिटे हमारा भी अज्ञान।

हम भी ज्ञान निजातम पाय, अविचल होकर ध्यान लगाय॥53.27॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'व्' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

य

सर्व कषाय का कर नाश, करें नाथ मुक्ती में वास।

सिद्ध दशा प्रकटी भगवान, वर्धमान बन्दें धर ध्यान॥53.28॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'य' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

व

जिनवर जग पूजित महावीर, भव्य जनों की हरते पीर।

भक्ति भाव पूजें दिन-रैन, आजाए भव दुख में चैन॥53.29॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'व' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

हा

महागुणी स्वामी वर्धमान, हैं अनंत अक्षय गुणखान।

जिनगुण में जागी ममप्रीत, बिन कारण प्रभु ही जगमीत॥53.30॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'हा' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

र

जिनपद में बन्दूं शिरटेक, हो देवाधिदेव तुम नेक।

आवागमन से मुक्ती पाय, गुण छ्यालीस कहे अधिकाय॥53.31॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'र' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

मि

मिलता गुरु से ज्ञान अपार, सेवा करें शिष्य उर धार।

हम को भी दो प्रभु वरदान, पाजाएँ हम केवलज्ञान॥53.32॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'मि' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

त्

नित्य रचावें पूजा पाठ, घर में होंगे सारे ठाठ।

एक मात्र जिन भक्ति प्रमान, पापों का होता अवसान॥53.33॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'त्' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

थ

नाथ पूजते तुम पद सार, हो जाएँ हम भी अविकार।

जिन भक्ती कर मन हरषाय, जिन पूजन में तन लग जाय॥53.34॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'थ' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

म्

उदधिभुजाभ्याम् तिरता कौन, फिरता लहरों सागर मौन।

हुए कोटि भट नृप श्रीपाल, पार हुए झट सिंधु विशाल॥53.35॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'म्' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

ता

निर्धन भी होता धनवान, जो पाए प्रभु शरण महान।

जिनवर महिमा अपरम्पार, पतितों का भी हो उद्धार॥53.36॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'ता' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

व

तिरने को हैं जिनपद नाव, इसीलिए जिन पूजन चाव।

कब धारूं मैं निर्ग्रन्थ वेष, जाना है अब चिन्मय देश॥53.37॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'व' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

त्

दीक्षा लूँ मैं अगर कदाचित् पालूँ यथाख्यात मुनि चारित।

संयम-शील की बाड़ लगाय, रत्नत्रय निधि प्राप्त कराय॥53.38॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'त्' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

क

नमन करूँ मैं नाथ त्रिकाल, दर्शन से भवि होंय निहाल।

मनवांछित हो जाते पूर, पाप सभी हो जाते चूर॥53.39॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'क' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

रो

पूर्ण करोगे कब मम आस, प्रभु तुम पर पूरा विश्वास।

मेरा आवागमन मिटाय, जय जय जय जय श्री जिनराय॥53.40॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'रो' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

तु

तुलना कभी न करना भाय, सबकी सत्ता भिन्न बताय।

आतम का भी बल घट जाय, मंज़िल भी नहीं मिलने पाय॥53.41॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'तु' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

भ

भक्त आपका हूँ भगवान, दे दो किंचित दान सुज्ञान।

नहीं जगत अब मुझे सुहाय, जग में मेरा मन घबराय॥53.42॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'भ' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

वि

अविनाशी है आतम ज्ञान, कर लें निज में निज का ध्यान।

जनम मरण से होवें मुक्त, मुक्ति रमा से हो संयुक्त॥53.43॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'वि' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

क

कर्मनाश के कारण आप, हरो नाथ मेरे सन्ताप।

नेत्रों से प्रभु अन्तर्धान, फिर भी होय कर्म की हान॥53.44॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'क' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

स्

वस्तु सुभाव जानते आप, स्वातम को कीना निष्पाप।

धन्य भाग्य जिनपद उर धार, बन्दूँ मैं प्रभु को शत बार॥53.45॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'स्' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

त्

मैं हूँ वत्स तुम मात समान, निश दिन करूँ प्रभु गुणगान।

मुझ पर भी तो दया दिखाय, मेरा भी कल्याण कराय॥53.46॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'त्' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

व

जयवन्तो हे वीर जिनेश! राग द्वेष कीने निःशेष।

मेरे तुम आराध्य शिवेश, मेरे भी मेटो भव क्लेश॥53.47॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'व' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

द

दर्श आपका पाकर नाथ, चरणों में रख देते माथ।

तभी कुमति का होता अन्त, पतझड़ में भी झरे बसंत॥53.48॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'द' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

भे

भेद ज्ञान जब भी हो जाय, भव्य जीव मन में हरषाय।

दिखें मूरती में भगवान, तीन योग से करता ध्यान॥53.49॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'भे' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

द

पापोदय में धर्म न होय, कर्म बन्ध तो हरपल होय।

अब मैं हो जाऊँ अविकार, भाव शुद्ध हो तत्त्व विचार॥53.50॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'द' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

बु

बुद्धि सफल हुई है आज, जो सानिध्य मिला मुनिराज॥

गुरुभक्ति से हर्ष यो होय, मिली अनमोल सम्पदा कोय॥53.51॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'बु' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

द्ध

स्वयं बुद्ध जिनदेव कहाय, निज-आतम की शरण में आय।

धन्य धन्य पुरुषार्थ कराय, जीवन में चरितार्थ उपाय॥53.52॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'द्ध' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

य

कोयल मीठी बोली सुनाय, आम्र वृक्ष पर बौर सुहाय।

शिक्षा लो इससे मतिमान, अपनी वाणी हो सुखदान॥53.53॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'य' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

मु

जिनमुख से जिन ध्वनि खिराय, ज्यों गिरि से झरना झर जाय।

गणी गूँथते द्वादश अंग, देव शास्त्र गुरु का हो संग॥53.54॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'मु' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

क

मुक्ती में है शान्ति अपार, मुक्तीके हित युक्ती प्रसार।

सार यही है नर भव पाय, परमारथ हित भाव बनाय॥53.55॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'क' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

त

जो त्वत् नित यशगान कराय, बह दिवि में अनुपम सुख पाय।

आयु पूर्ण कर मानुष होय, तप कर करमन का क्षय होय॥53.56॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'त' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

यं

यंत्र मंत्र कुछ काम न आय, आयु कर्म जब क्षय हो जाय।

नाम मंत्र जिनदेव रटाय, रोग शोक सब ही नश जाय॥53.57॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'यं' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

ग

स्व सन्मुख उपयोग अतीव, आनंदित मुनि रहें सदीव।

स्वातम संवेदन को पाय, पर परिणति से मुक्त रहाय॥53.58॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'ग' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

ना

रंचमात्र ना मुनि को खेद, आतम चिंतन करें अवेद।

धर्म-मरम जानें सुखदाय, सहजहि आठों कर्म खपाय॥53.59॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'ना' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

र

आतम गुणगण का भंडार, जिनगुण का नहिं पायें पार।

निजगुण में ही लीन रहाय, शिवसुख में विश्राम कराय॥53.60॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'र' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

म

है मनोज्ञ मूरत हितकार, बड़े बाबा छवि भवि सुखकार।

मनुज सुरासुर भी गुण गाय, अपना जीवन धन्य बनाय॥53.61॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'म' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

ण

णमोकार है मंत्र पुनीत, परमेष्ठि भविजन मनमीत।

प्रथम एक दो पद जिन नाम, शेष तीन पद गुरु गुणवान॥53.62॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'ण' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

ता

जिन गुणगीतारम्भ कराय, प्रभु चरणों में शीश झुकाय।

गुरु रचना हम पढ़ें-सुनाय, निश्चित भवसागर तट पाय॥53.63॥

ॐ ह्रीं अर्हं वर्तमानशासननायक 'ता' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...।

त्व

त्वत् पदरज निजशीश चढ़ाय, भविजन मन पावन हो जाय।

राग द्वेष से रहित जिनाय, वीतराग बन्दें शिर नाय॥53.64॥

ॐ ह्रीं अर्हं वर्तमानशासननायक 'त्व' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...।

म

नमन करूँ मैं सिद्ध जिनाय, वसु कर्मों का नाश कराय।

मैं भी होऊँ निज में लीन, सर्व विकार विभाव विहीन॥53.65॥

ॐ ह्रीं अर्हं वर्तमानशासननायक 'म' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...।

सु

जिन वच सुन होवे कल्याण, अन्त समय पावे निर्वाण।

ज्ञान चेतना युक्त जिनाय, कर्म फलों से मुक्त रहाय॥53.66॥

ॐ ह्रीं अर्हं वर्तमानशासननायक 'सु' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...।

खं

शाखं शाखं फूल खिलाय, बागों में बहारे छाया।

नटी प्रकृति नृत्य दिखाय, सरस्वति की पूजा रचाय॥53.67॥

ॐ ह्रीं अर्हं वर्तमानशासननायक 'खं' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...।

न

ऋषि मुनियति अनगार महान, ये सब हैं जिन धर्म की शान।

जो चारों में मुख्य कहाय, वे ही हों अर्हत जिनाय॥53.68॥

ॐ ह्रीं अर्हं वर्तमानशासननायक 'न' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...।

या

जिन शरणागत का कल्याण, कुछ ही भव में हो निर्वाण।

जिनवर मुझको करो सनाथ, कभी न छूटे मेरा हाथ॥53.69॥

ॐ ह्रीं अर्हं वर्तमानशासननायक 'या' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...।

व

मनोभाव से प्रभुवर ध्याय, मेरा मन मंदिर बन जाय।

मनोरंजन का कोई न काम, मुनि जन तो होते निष्काम॥53.70॥

ॐ ह्रीं अर्हं वर्तमानशासननायक 'व' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...।

स्वात्म तत्त्व का ज्ञान सुपाय, नर भव में भविजन हरषाय।

निज में रमें तो आनन्ददाय-सिद्ध होय परमानन्द पाय॥53.71॥

ॐ ह्रीं अर्हं वर्तमानशासननायक 'तु' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...

पूणाईर्य

भक्ति आपकी दर्शन, ज्ञान चरित व्यवहार।

जब तक मुक्ति न होय तो, भक्ति अभेद उर धार ॥53॥

ॐ ह्रीं रत्नत्रयं प्राप्ताय अर्हं महाबीजाक्षरसहिताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः
पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रशंसा वर्धक स्तुति

रूपेण मुह्यसि जनं त्वममोह इष्टो,
लोभं विवर्धयसि भूरि निशाम्य वाचम्।
तत्राप्युशान्तिं सृजनं सृजना भवन्तं,
दोषा गुणाय ननु चन्द्रकरैर्निदाधे ॥54॥

(छन्द चौपाई)

रू

परिणति तीन रूप में जानो,
होय अशुभ-शुभ शुद्ध पिछानो।
शुभ से शुद्ध दशा को पाएँ,
शिवपुर जाकर अमर रहाएँ ॥54.1॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'रू' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...

पे

करें उपेक्षा जग-जन-तन की,
चाह रहे बस आतम धन की।
जग में रहें कमल-जल जैसे,
बन जाएँ हम भी प्रभु जैसे ॥54.2॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'पे' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...

ण

णमो जिणाणं 'जिन गुण गाएँ,
जिन चरणों में ध्यान लगाएँ।
गणधर भी प्रभु के गुणगाते,
समवशरण जिन संग रहते ॥54.3॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'ण' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...

मु

मुनिजन प्रभु का ध्यान लगाते,
निजानन्द रस पान कराते।
हम भी गुरु शरण को पाएँ,
स्वातम का कल्याण कराएँ ॥54.4॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'मु' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...

ह्य

बाह्य परिग्रह दस परिहारें,
अन्तरंग चौदह को टारें।
सर्व संग से दूर रहाएँ,
कर्म सभी चकचूर कराएँ॥54.5॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'ह्य' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

सि

सिद्धिरमा से मिलन करा दो,
मुझको सिद्धालय पहुँचा दो।
प्रभु चरणों में मिलती साता,
सब जीवों को शरण प्रदाता॥54.6॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'सि' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

ज

निज में निज का दर्शन पाऊँ,
तेरा दर तज कर नहीं जाऊँ।
पहुँचा दो भव सिंधु किनारे,
वीतराग हों भाव हमारे॥54.7॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'ज' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

नं

नंत काल से खिन्न नाथ थे,
अब जड़-चेतन भिन्न किए थे।
कर्मों का संहार कराया,
निज शाश्वत पदवी को पाया॥54.8॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'नं' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

त्

सबको सत्यथ दिखलाते हो,
करुणा सागर कहलाते हो।
मैं कब शिवपथ पर चल पाऊँ,
स्वातम को भी शुद्ध बनाऊँ॥54.9॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'त्' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

व

सुर-नर **व**न्दित जिन चरणों में
धारें समकित जिन वचनों में।
किन्तु मैं निज को जान सका ना,
कैसे होगा शिवपुर जाना॥54.10॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'व' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

म

कामभोग निस्सार कहाया,
निज रस में ही आनन्द आया।
कर्मशत्रु को दूर भगाएँ,
शिवपथ पर ही बढ़ते जाएँ॥54.11॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'म' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

मो

मोह करमों का भूप कहाया,
प्रजा शेष कर्मों को गाया।
योगीजन ही इन्हें हराएँ,
कर्मों के बन्धन कट जाएँ॥54.12॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'मो' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

ह

कहता मन गुरु लगन लगाऊँ,
गुरुपद में नित मगन रहाऊँ।
पूजा-पाठ -विधान रचाएँ,
गुरु मेधा पर बलि बलि जाएँ॥54.13॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'ह' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

इ

इस स्तोत्र का पाठ निराला,
भक्त होय सुनके मतवाला।
निज-आत्म का होय दिवाना,
तन भी लगता है बेगाना॥54.14॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'इ' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

ष

शिष्य हमेशा गुरु को घ्याएँ,
गुरु दर्शन कर मन हरषाएँ।
आत्म ज्ञान का हो अभिलाषी,
गुर्वाशीष से हो अविनाशी॥ 54.15॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'ष' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

टो

ग्रंथ इष्टोपदेश है न्यारा,
पूज्यपाद गुरु का उपहारा।
राग द्वेष का हनन करावे,
मंगलमय शिवपथ दशावे॥ 54.16॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'टो' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

लो

अपना लो प्रभुभक्त तिहारा,
तुम्हें समर्पित जीवन मेरा।
मुझ अनाथ को दे दो शरणा,
सब दुखियों का भव दुख हरना॥ 54.17॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'लो' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

भं

सप्त भंग अस्ति नास्ति है;
गुम्फित गणधर देव किए हैं।
द्वादशांग का सार बताया,
चार अनुयोगों में दर्शाया॥ 54.18॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'भं' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

वि

अविकार है जीवन सारा,
जहाँ गुरु चरण होय उजियारा।
कीलित सम पद हृदय विराजें,
सर्व विकार तुरत ही भाजें॥ 54.19॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'वि' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

व

प्रामाणिक वक्ता जिन स्वामी,
भविजन सुनते इनकी वाणी।
मैं भी पढ़ूँ सुनूँ जिनवाणी,
जननी सम वाणी कल्याणी॥54.20॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'व' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...

ध

नाम अर्धनारीश तिहारा,
अर्ध कर्म का नाशनहारा।
समवशरण में जिनवर सो हैं,
सुर-नर-पशु सबका मन मोहें॥54.21॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'ध' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...

य

एक मात्र सानिध्य आपका,
पाप मिटा देता भव-भव का।
मैं तो दीन-हीन-बेचारा,
मिले शक्ति सहलूँ दुख सारा॥54.22॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'य' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...

सि

सिद्धालय है लक्ष्य हमारा,
कैसे हो जग से छुटकारा।
प्रभु तुम मोक्ष मार्ग के नेता,
मुनिजन जीवित तीर्थ प्रणेता॥54.23॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'सि' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...

भू

भूतल पर क्षेमंकर प्रभु सा,
जग में नहीं हितंकर जिनसा।
इसीलिए तुम शरण में आते,
आत्म शांति को तुमसे पाते॥54.24॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'भू' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...

रि

दुरितान् सब क्षय हो जाते,
जब जिनदेव हृदय में आते।
वर्धमान पूजा सुखकारी,
भावों में निर्मलता भारी॥54.25॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'रि' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

नि

निज मन में आनन्दित हम हों,
तब हमसे जिनपद वन्दित हो।
हे प्रभु! तुम प्राणों से प्यारे,
जीवन में संचार हमारे॥54.26॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'नि' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

शा

जिनशासन की शान वीर हैं,
जैन धर्म का मान वीर हैं।
जिनवाणी है अतिशयकारी,
जीव मात्र को है हितकारी॥54.27॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'शा' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

म्

ध्यान गम्य जिनराज बताए,
तीन लोक के नाथ कहाए।
मुनिजन भी पुरुषार्थ कराएँ,
पुण्योदय से तुम पद पाएँ॥54.28॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'म्' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

य

मंगलमय मम जीवन कर दो,
निजपद पाऊँ ऐसा वर दो।
नंत काल से भटक रहा हूँ,
अब प्रभु को पहचान रहा हूँ॥54.29॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'य' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

वा

कोटि दिवाकर सम जिन आभा,
समवशरण में अद्भुत शोभा।
धनु पन सहस विराजे स्वामी,
अतुलनीय मंगल अभिरामी॥54.30॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'वा' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...

च

चयन किया है मोक्ष मार्ग का,
किया संकलन गुणमणियों का।
सर्वोत्तम जीवन में पाया,
नरभव अपना सफल बनाया॥54.31॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'च' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...

म्

केवल योगी गम्य तुम्हीं हो,
साधना से ही साध्य तुम्हीं हो।
तुमको कोई और न जाने,
ज्यों जन्मांध नहीं पहचाने॥54.32॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'म्' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...

त

देह विवर्जित हो तुम स्वामी,
चक्षु अदृश्य हुए शिवगामी।
मैं भी तुम सम सुख को चाहूँ,
कैसे प्रभुवर ध्यान लगाऊँ॥54.33॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'त' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...

त्रा

त्राता हो तुम भव्य अनेको,
अनुगामी हैं तुमरे लाखों।
वर्धमान जिन चन्द्र समाना,
शीतलता तुम से है पाना॥54.34॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'त्रा' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...

प्

प्राप्य न कोई वस्तु जगत में,
रम जाँँ अनमोल स्वात्म में।
अब तक तो नश्वर ही जाना,
अब अविनश्वर निज को माना॥54.35॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'प्' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

यु

युक्ति मुक्ति की मुनिवर करते,
ध्यान हेतु मन को थिर रखते।
इसीलिए हम प्रभु पद पूजें,
पाप हमारे सारे धूजें॥54.36॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'यु' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

श

नहीं शक्य प्रभु स्तुति करना,
इसीलिए लें प्रभु का शरणा।
कृपा आपकी यदि हो जाए,
हम भी भक्ति गीत सुनाएँ॥54.37॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'श' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

न्

नन्त सुखी हो वह जगवासी,
जो जाने स्वातम अविनाशी।
वह दृढ़ता से व्रत अपनाता,
प्राण जाए पर नियम निभाता॥54.38॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'न्' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

ति

प्रभु भक्ति में शक्ति अपारा,
भक्त को भवदधि पार उतारा।
जीवन नौका जब भी डोले,
भक्त आपकी ही जय बोले॥54.39॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'ति' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

सु

सुरनभ में जयकार कराते,
हर्षभाव से चित्त उमगाते।
जब विहार श्री जिनवर का हो,
भू से चतुरंगुल ऊपर हो॥54.40॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'सु' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...

ज

जय जय वर्धमान जिन स्वामी,
तीन काल तिहुँ जग में नामी।
एक हि मात्र आधार हमारे,
दरशाते भव सिंधु किनारे॥54.41॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'ज' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...

नं

नंदनवन जैसी सुख शांती,
जिनचरणों में लें विश्रान्ती।
समकित भाव की कलियाँ खिलती,
हर्ष भाव से सभी महकती॥54.42॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'नं' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...

सु

जिनवाणी सुन जनम सुधारे,
जिन - आज्ञा हिरदय में धारें।
यथाख्यात चारित अपनाएँ,
सामायिक तिहुँ काल कराएँ॥54.43॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'सु' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...

ज

जग जीवों की है कल्याणी,
वीतराग प्रभु की जिनवाणी।
जिनवर हैं सर्वज्ञ हमारे,
भवि जीवों को पार उतारें॥54.44॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'ज' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...

ना

सिद्ध कभी जग में ना आते,
सिद्ध वही जो कर्म खपाते।
मुक्ति रमापति मुक्ति प्रदाता,
शरणागत को हैं सुखदाता॥54.45॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'ना' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

भ

प्रभु भक्ति से मुक्ती मिलती,
ज्ञान कला हिरदय में खिलती।
इसीलिए जिनपूजन करते,
आत्मशक्ति से करमन हरते॥54.46॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'भ' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

व

जिन वन्दन कर बन्धन काटें,
जग में सबको सुख ही बाँटें।
"जियो और जीने दो" गाएँ,
धर्म अहिंसा जग फैलाएँ॥54.47॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'व' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

न्

सन्मति! सन्मति देना हम को,
चरण शरण में लेना हम को।
सच्ची श्रद्धा मन में धारें,
हम प्रभुको दिन रैन पुकारे॥54.48॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'न्' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

तं

तं महावीरं नित प्रति वन्दे,
जिन पूजन से पाप हि खण्डें।
आठों कर्म विनाशक स्वामी,
मण्डित अष्ट गुणों से नामी॥54.49॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'तं' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

दो

दोष रहित हो आप जिनेशा,
शत इन्द्रों से पूज्य हमेशा।
जिनवाणी सुन भविजन हरषें,
ज्यों लख मोर मेघ भी बरसें॥54.50॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'दो' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

षा

शुद्धातम की है अभिलाषा,
हो जाए शिवपुर में वासा।
हैं प्रभु तीन लोक के स्वामी,
अव्याबाध नंत गुण धामी॥54.51॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'षा' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

गु

चिंतन करता जो जिन गुण का,
दिख जाता है पथ शिवपुर का।
मोक्ष महल के जिनवर वासी,
देहातीत दिव्य-अविनाशी॥54.52॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'गु' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

णा

शरणा जो जिन-आतम लेते,
तीर्थ प्रवर्तक वे ही होते।
पहले प्रभु की करें वन्दना,
फिर कर्मों की करें खण्डना॥54.53॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'णा' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

य

नयन दर्श को हैं अकुलाए,
अश्रु मनु स्वागत को आए।
प्रभुजी मुझको भी दर्शन दो,
अपने सम ही मुझको कर लो॥54.54॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'य' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

न

जिनवर जब भी गर्भ में आते,
पन्द्रह मास रतन बरसाते।
भारत वसुधा धन्य हो गई,
खुशियाँ तीनों लोक छा गई॥ 54.55॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'न' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

नु

जिन धर्मानुराग सुखदाता,
विषय राग को शीघ्र मिटाता।
सुबह की लाली हमें जगाए,
शाम की लाली हमें सुलाए॥ 54.56॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'नु' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

च

चन्दन शीतल चन्द्र किरण से,
मन हो शीतल जिन वचनों से।
वचनामृत पी कर सुखदाई,
भव भव तपन मिटे दुखदाई॥ 54.57॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'च' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

न्

आत्म शान्ति को मैंने पाया,
जब मैं प्रभु पूजन को आया।
सूर्य समान जगत के स्वामी,
भूतल पर नहीं तुमसा नामी॥ 54.58॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'न्' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

द्र

ऋषि-मुनीन्द्र स्वातम को ध्याते,
जिन गुण चिंतन मनन कराते।
भव सागर का मिले किनारा,
पतितों को भी पार उतारा॥ 54.59॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'द्र' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

क

एक मात्र जिन भक्ति सहारा,
कल्पवृक्ष सम जीवन सारा।
मुनि प्रणम्य गुरुवर बड़भागी,
तजा परिग्रह हुए विरागी॥ 54.60॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'क' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

रै

रैन-दिवस गुणगान कराएँ,
प्रभुचरणों में मगन रहाएँ।
जब भी चेतनता उर जागे,
प्रवचन दीप चलें भवि आगे॥ 54.61॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'रै' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

नि

जिन गुणैर्निबद्धां भक्ति से,
हार सजाएँ शब्द पुष्प से।
जिनगुण हारकण्ठ जो धारे,
अपने सारे पाप निवारे॥ 54.62॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'नि' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

दा

दानी हैं प्रभु जिनवाणी के,
हितकारी हैं हर प्राणी के।
श्रद्धा से गुण गान कराएँ,
वर्धमान को शीश झुकाएँ॥ 54.63॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'दा' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

घे

घेवर-फेनी प्रासुक लाएँ,
श्रीफल प्रभु के अग्र चढ़ाएँ।
जल-फलादि का अर्घ्य बनाएँ
अर्घ्य से पद अनर्घ्य पा जाएँ॥ 54.64॥

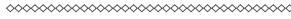
ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'घे' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

पूर्णार्घ्य

मोह-लोभ नहिं आप में, मुग्ध-लुब्ध हों लोग।

बनें दोष - गुण आप में, ज्यों शशि निशि विलोक ॥54॥

ॐ ह्रीं प्रशंसा वर्धकाय-अर्ह महाबीजाक्षरसहिताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः
पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।



गुप्त सम्पदा दायक स्तुति

तुभ्यं ददामि कथयन् प्रददाति कश्चिन्,
मौनेन दित्सति भवानति-गुप्तरूपात्।
सार्वाय वा रविरिहैव निरीह-बन्धु-
र्भव्याय तेन भुवने परमोऽसि दाता ॥55॥

(छन्द ज्ञानोदय)

तु

तुम बिन मैं व्याकुल रहता हूँ, जैसे जल बिन मीन रहे।

जिनको मिलती शरण आपकी, वे ही पाप विहीन रहे ॥55.1॥

ॐ ह्रीं अर्हं वर्तमानशासननायक 'तु' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...

भू

सभ्य कहते हैं जो भी जन, नहीं विवेक रहा उनमें।

जंगली जैसा हुआ आचरण, संस्कार भी नहीं संग में ॥55.2॥

ॐ ह्रीं अर्हं वर्तमानशासननायक 'भू' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...

यं

यं सर्वोत्तम धर्म दया का, मूल जैन कहलाता है।

श्री जिनवर ने बतलाया वो, जैन धर्म सुखदाता है? ॥55.3॥

ॐ ह्रीं अर्हं वर्तमानशासननायक 'यं' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...

द

दर्शन करके जिनदेवों के, नाश पाप का हो जाता

दर्शन ही सोपान स्वर्ग का, मोक्ष परम पद भी पाता ॥55.4॥

ॐ ह्रीं अर्हं वर्तमानशासननायक 'द' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...

दा

अनशन - दान धर्म श्रावक का, मुख्य कहा है जीवन में।

तीन योग से पालन करलें, सुख शान्ति होवे मन में ॥55.5॥

ॐ ह्रीं अर्हं वर्तमानशासननायक 'दा' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...

मि

मिली राह उसको मुक्ति की, जिसने जिनवर शरण गही।

जिन-आज्ञा का पालन करके, पांया आतम ज्ञान सही ॥55.6॥

ॐ ह्रीं अर्हं वर्तमानशासननायक 'मि' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...

क करते पूजा इन्द्र प्रभु की, पंच कल्याणक में आएँ।

करें पूर्ण सारे नियोग वे, मन वच तन से हरषाएँ॥55.7॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'क' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

थ नाथ आपने ही जीवन के, मुनि-श्रावक दो धर्म कहे।

"रत्नत्रय नौका में बैठो, भवसागर से पार हुए"॥55.8॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'थ' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

य ऐसी ज्योति नयन में भर दो, साक्षात् प्रभुदर्शन हो।

मेरे कदम नाहिं चल पाते, यात्रा में तो सक्षम हो॥55.9॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'य' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

न् जिनान् बन्दू मन वच तन से, जिनगुण कीर्तन करता मैं।

लहर लहर लहराता सागर, ज्ञान गुणों का अन्तर में॥55.10॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'न्' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

प्र श्री चरणों में रख लो प्रभुजी, मुझको अपनी सेवा में।

रात दिवस मैं करूँ चाकरी, मेवा मिले मजूरी में॥55.11॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'प्र' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

द जिनवाणी, सुन हृदय धरे जो, वह भवसागर पार करे।

जिह्वा तालु ओष्ठ नहीं हिलते, जिन मुख से जब ध्वनि खिरे॥55.12॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'द' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

दा जिनगुण पूजा सुख की दाता, सर्व विघ्न का नाश करे।

समवशरण में हर्षित होकर, सुर-सुरियाँ गुणगान करें॥55.13॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'दा' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

ति मोह तिमिर नश जाए मेरा, ऐसा ज्ञानालोक मिले।

प्रभुचरणाम्बुज उर अंकित हो, ज्ञान किरण से नित्य खिलें॥55.14॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'ति' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

क

मिली निकटता जब गुरुवर की, सुप्त चेतना स्वयं जगी।

अब जिन दर्शन करने से ही, चारित चातक-प्यास लगी॥55.15॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'क' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

श

प्राणेश्वर हो आप हमारे, जीवन के आधार हो।

कमल खिले ज्यों सूर्योदय से, हृदय खिले जिन दर्शन हो॥55.16॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'श' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

चि

दृष्टि शुचि हुई है मेरी, जब ज्ञाता का ज्ञान हुआ।

आत्म तत्त्व में रूचि हुई तो, स्वात्म का भी ध्यान हुआ॥55.17॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'चि' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

न्

अर्हन् भक्ति से दीन जनों के, बड़े-बड़े संकट मिटतें।

दुष्करमों के गिरिवर सारे, खंड-खंड होकर गिरते॥55.18॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'न्' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

मौ

मौन सहित रहते हैं साधू, अतः मुनी कहलाते हैं।

श्रम करते तप ज्ञान ध्यान में, अतः श्रमण पद पाते हैं॥55.19॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'मौ' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

ने

कर्म नष्ट हो जाने से ही, सब कष्टों का अन्त हुआ।

आराधन करके आराधक, स्वयं हि मन में शांत हुआ॥55.20॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'ने' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

न

नमन करें हम वर्धमान को, पूर्ण ज्ञान गुण सागर हैं।

रत्नों में भी श्रेष्ठ रत्नधर, रत्नत्रयी जिनेश्वर हैं॥55.21॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'न' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

दि

आदिनाथ ने गुण चिंतन कर, स्वस्थ किया निज-आत्म को।

षट् विधाएँ सिखा के सबको, कीना शांत प्रजाजन को॥55.22॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'दि' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

तृ

हत्यारा भी समवशरण में, आके अहिंसक बन जाता।

मिले नाथ सानिध्य आपका, पतित भि पावन बन जाता॥55.23॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'तृ' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

स

समकित धारण कर लेता जो, उसके सब दुख-द्वन्द हरे।

पुरुषार्थी जो पूर्व जन्म के, तीर्थ प्रवर्तन आज करे॥55.24॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'स' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

ति

देख विभूति समवशरण की, मन विस्मित हो जाता है

लक्ष्मी-सरस्वती संग रहती, पार न वैभव पाता है॥55.25॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'ति' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

भ

भगवन मेरी दुखद कहानी, हो सर्वज्ञ तुम्हीं जानो।

मेरे तो सर्वस्व तुम्ही हो, अन्तर्मन को पहचानो॥55.26॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'भ' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

वा

भवाताप हर लेते स्वामी, जो भी प्रभु का नाम जपे।

देहातम कुन्दन सम दिपते, तप से जिसकी देह तपे॥55.27॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'वा' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

न

सम मन निशदिन जिन गुण गाता, सहस नाम का पाठ करें।

हिरदय आनन्दित हो जाता, लाभ शकुन शुभ-अशुभ हरे॥55.28॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'न' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

ति

तृप्ति स्वयं मिलती भव्यों को, जिन पूजन अर्चन करके।

सभी विकारों, को प्रभु आगे, जिन पद में अर्पण करके॥55.29॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'ति' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

गु

गुण सामान्य सभी में होते, अस्तित्वादिक हैं जो भी।

सम्यक्त्वादि गुण विशिष्ट जो, वसु गुण मण्डित हैं प्रभु ही॥55.30॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'गु' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

पू

प्राप्त हुआ है पुण्यों से ही, अवसर ये जिन पूजा का।

तीन योग से करूँ प्रार्थना, हो संयोग शुभ भावों का॥55.31॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'पू' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

त

शाश्वत अक्षय आतम पाकर, "सिद्ध स्वयंभू कहलाए"।

ज्ञान शरीरी अलख निरंजन, लोक-शिखर पर पधराए॥55.32॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'त' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

रु

रुपातीत हुए हैं स्वामी, मुक्त देह हो जाने से।

सदा काल तक सुखी रहेंगे, करमों के नश जाने से॥55.33॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'रु' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

पा

पानी भी अमृत बन जाता, जो जिनवर को ध्याता है।

रंक भी राजा हो जाता जो, शरणा प्रभु का लेता है॥55.34॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'पा' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

तृ

कृत्संकल्पित हूँ मैं स्वामी, नहीं बनूँगा अब भवगामी।

इक दो भव में ही हो जाऊँ, श्री जिनवर का अनुगामी॥55.35॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'तृ' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

सा

हो सामीप्य यदि गुरुवर का, अन्तर आलोकित होता।

मणि रत्नों में हो प्रकाश पर, अन्तर्तम नहीं मिट पाता॥55.36॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'सा' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

वर्

ज्ञान पाएँ सर्वावधि मुनिवर, एक किरण हम भी पाएँ।

आत्मज्ञान भी मिले सभी को, विश्व निरोगी हो जाए॥55.37॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'वर्' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

य

ताण्डव नृत्य करें सुधर्म जब, शिशु जिन जन्मोत्सव होता।

जो भी हर्ष भाव से झूमें, पाप कर्म मल वह धोता॥55.38॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'य' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

वा

भवनवासि सब देव देवियाँ, ध्यान आपका धरते हैं।

नाथ बिना कुछ भी न सुहाए, पल-पल नाम सुमरते हैं॥55.39॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'वा' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

र

जगत चराचर जान रहे हैं, केवलज्ञानी वीर प्रभो।

इसीलिए तो यति मुनि ऋषि सब, चरणों में हैं विनत विभो!॥55.40॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'र' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

वि

महा मनोहर छवि आपकी, सबका मन हर लेती है।

स्वयं तिरे प्रभु भव सागर से, शक्ति भक्त को मिलती है॥55.41॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'वि' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

रि

महा मोह गिरिचूर किया है, इन्द्रिय-मन को वश करके।

जो भी नाथ शरण में आए, दुख-संकट उसके हरते॥55.42॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'रि' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

है

जिनगुण गाता है मन मेरा, चित्त रहे गुण चिन्तन में।

ज्ञानचक्षु धारक महावीरा, जान रहे सब इस जग में॥55.43॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'है' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

व

वर्धन होता सुख का जग में, दुख कल्मष धुल जाता है।

लीन रहे जिय निज सुभाव में, आतमधन पा जाता है॥55.44॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'व' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

नि

क्षय करके निर्मूल मोह को, मुक्ति रमा का वरण किया।

सिद्धालय में नाथ विराजे, सुधी यहाँ से नमन किया॥55.45॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'नि' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

री

अक्षत शिवसुख दातारी है, नाथ आपकी जिन वाणी।

जो भवि सुन कर हिरदय धारे, वही ज्ञानि होता प्राणी॥55.46॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'री' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

ह

मोह श्रंखला जिसने तोड़ी, उसको प्रभु का दर्श मिले।

घर में भी हो निरासक्त वह, कमल ज्यों जल से भिन्न खिले॥55.47॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'ह' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

ब

बढ़ते चलें नाम ले प्रभु का, वीतराग हो जाने को।

नमन सहस्रों बार वीर को, संचित पाप मिटाने को॥55.48॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'ब' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

न्

जन्म गँवाए अनगिन मैने, खाते-पीते-सोते ही।

आज गुरु के दर पर आए, अपनेपन को पाने ही॥55.49॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'न्' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

धु

बन्धु दुखी हैं जो भी जगमें, करुणा उन पर रहे सदा।

सज्जन मैत्री गुणी प्रमोदता, वैर विरोध न होय कदा॥55.50॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'धु' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

भ

गर्भ कल्याणक पूर्व मास छह, रत्न बरसते हैं नभ से।

साढ़े दस करोड़ नित बरसें, भूमि रहित हो दीनों से॥55.51॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'भ' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

व्

भव्य कमल विकसित करते जो, ज्ञान सूर्य सम परकाशी।

कोटि-कोटि वन्दन करते हैं, केवलज्ञानी अविनाशी॥55.52॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'व्' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

या

देख लिया सारा जग नश्वर, पाऊँ अष्टम मोक्ष मही।

चरणों में मिल जाए शरणा, चाह और कुछ रही नहीं॥55.53॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'या' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

य

यही है महिमा नाथ आपकी, नाम तिहारा जो जपता।

हो जाता नीरोग वो रोगी, निर्धन भी धन को लभता॥55.54॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'य' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

ते

आते हैं नित समवशरण में, भवि संज्ञी पन इन्द्रि सभी।
बारह योजन वसुधा होती, विस्मित हों सुर-नर-पशु भी॥55.55॥
ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'ते' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

न

जिन आज्ञा को पालें जो भी, जग में उनका नाम रहे।
जब तक रविशशि तारे नभ में, जिन वर्धमान स्तोत्र रहे॥55.56॥
ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'न' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

भु

सकल पदारथ जो त्रिभुवन के, झलकें सन्मति ज्ञान में।
पठन-श्रवण जो करें एक चित्त, वृद्धि हो सम्मान में॥55.57॥
ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'भु' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

व

वन्दन करता भावों से जो, वन्दनीय होता जग में।
जिन पूजन करता भक्ती से, पूजनीय हो जीवन में॥55.58॥
ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'व' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

ने

भक्तिमाल गूँथी मुनिवर ने, शब्द वर्ण मय पुष्पों से।
वर्धमान के श्रीचरणों में, करें समर्पण श्रद्धा से॥55.59॥
ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'ने' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

प

पर द्रव्यों से हो विरक्त जो, स्व सन्मुख हो सुख पाएँ।
है प्रयोजनीय एक तत्त्व ही, हम शुद्धातम हो जाएँ॥55.60॥
ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'प' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

र

नर भव में चारित्र पाल के, तद्भव से हो सकते मुक्त।
ज्ञान चेतना के बन स्वामी, होते आवागमन विमुक्त॥55.61॥
ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'र' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

मो

मोह क्षीण करके मुनिराजा, घाति कर्म का नाश करें।
शेष कर्म को क्षय कर क्षण में, मुक्ति रमा को शीघ्र वरें॥55.62॥
ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'मो' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

हम भी सिद्धों के वंशज हैं, पर तन ममता में अटक रहे।

नहीं भान है निज वैभव का, बने भिखारी भटक रहे॥55.63॥

ॐ ह्रीं अर्हं वर्तमानशासननायक 'सि' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...

दुख दाता भव-भव मिथ्यातम, समकित में ही स्वयं रमें।

विष से तो इक जन्म नष्ट हो, मिथ्या काल अनादि भ्रमे॥55.64॥

ॐ ह्रीं अर्हं वर्तमानशासननायक 'दा' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...

ममता में वे ही जन फँसते, जो जन मोह करें सब से।

अतः सभी जिय समता धारें, तो छूटे भव बंधन से॥55.65॥

ॐ ह्रीं अर्हं वर्तमानशासननायक 'ता' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...

पूर्णार्घ्य

"देता हूँ मैं आप को", कह कर देता कोय।

प्रभु तूम ऐसे बंधु हो, रवि सम दो भवि लोय ॥55॥

ॐ ह्रीं गुप्त सम्पदा प्रकटी कराय अर्हं महाबीजाक्षरसहिताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय
नमः पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।



याचक संतुष्टि करी स्तुति

दित्सा प्रभो! त्वयि यदि प्रविदातुमस्ति,
दातव्य एव मम वै मनसि स्थितार्थः।
दाता समो न तव मत्सम-याचको न,
कांक्षाम्यहं किमपि नो भवतो भवन्तम् ॥56॥

(छन्द चौपाई)

दि

युग आदि में जिन तीर्थेशा,
षट् विद्या बतलाई विशेषा।
असि-मसि-कृषि-विद्या सिखलाई,
वाणिज-शिल्प कला प्रकटाई ॥56.1॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'दि' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

त

मत्सर भाव न मन में लाएँ,
गुणीजनों को लख हरषाएँ।
हैं विभाव सब ही दुखदाई,
इक सुभाव ही है सुखदाई ॥56.2॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'त' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

सा

सार्थक वे ही क्षण हो पातें,
जिनमें हम प्रभु ध्यान लगाते।
स्वानुभूति होती ध्यानी को,
निजानन्द आता ज्ञानी को ॥56.3॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'सा' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

प्र

प्रभु ने जो शिवपथ दर्शाया,
बिरला ही उस पर चल पाया।
है तलवार की धार समाना
चल पाएं तो सुख मनमाना ॥56.4॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'प्र' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

भो

भोर में ज्यों तारे छिप जाते,
दिखें मनुज कल नाहिं दिखाते।
निशदिन व्ययोत्पाद है होता,
धौव्य सदा सत्ता में रहता॥56.5॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'भो' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

त

तत्पर भक्ति में जिन पूजें,
शान्त भाव से पाप हि छीजें।
नाम निरन्तर जपें नाथ का,
अन्तर मिटे भगवान-भक्त का॥56.6॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'त' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

व

वर्धमान त्रिभुवनपति जानो,
हैं उपास्य मेरे सरधानों।
बनें आपके हम अनुगामी,
अब नहिं होना है भवगामी॥56.7॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'व' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

यि

क्षायिक सम्यग्दर्शन पाएँ,
उपशम - क्षयोपशम प्रकटाएँ।
पहले पंचलब्धि उपजाएँ,
दुर्गतियों से भी बच जाएँ॥56.8॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'यि' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

य

विजय पताका जग लहराई,
मुक्त हुए जब श्री जिनराई।
जड़-चेतन को भिन्न कर दिया,
शुद्धांतम को सिद्ध कर दिया॥56.9॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'य' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

दि

ज्ञान, दिवाकर जब प्रकटाए,
केवलज्ञानी प्रभु कहलाए।
अन्तरिक्ष में अधर विराजें,
पंच सहस्रधनु ऊपर राजें॥56.10॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'दि' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

प्र

प्रथम बन्दना, कर सिद्धों की,
पूजा करते श्री जिनवर की।
फिर जिनवाणी पढ़ें सुनाएं,
निज आतम का ध्यान लगाएँ॥56.11॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'प्र' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

वि

विनय भाव जो भी मन धारे,
मोक्ष महल में वही सिधारे।
अहंभाव तज सहज रहावें,
सिद्ध समान शुद्ध हो जावें॥56.12॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'वि' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

दा

दान चार विध देय अपारा,
औषधि - शास्त्र - अभय आहारा।
हम भी चारों दान कराएं,
यह भव - परभव सुखी बनाएँ॥56.13॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'दा' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

तु

तुमको इन्द्रादिक भी नमते,
तुम सम जग में कोई न दिखते।
मुखमण्डल तुमरा मनहारी,
शोभा अपरम्पार तिहारी॥56.14॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'तु' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

म

रवि सम तव आनन अति दिपता,
शशि सम वचनों में शीतलता।
भविजन अपलक तुम्हें निहारे,
इन्द्र तो सहस नयन विस्तारें॥56.15॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'म' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

स्

आकस्मिक गुरु वैद्य तुम्हीं हो,
सब जीवों के हितू तुम्हीं हो।
हम सबको भव रोग सताए,
इसी लिए गुरु शरणे आए॥56.16॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'स्' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

ति

जो भक्ति से जिनगुण गावें,
अपने सारे पाप नशावे।
हम भी निज गुणगण, प्रकटाएँ,
शिवराहों पर चलें - चलाएँ॥56.17॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'ति' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

दा

दाता सात गुणों को धारे,
मन सन्तोष - लोभ परिहारे।
सदुप्रयोग सम्पति का करता,
निज - पर के सब संकट हरता॥56.18॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'दा' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

त

गणधर भी तव शरणा पाते,
समवशरण से बिहरेरन जाते।
हम तो हैं प्रभु भक्त तिहारे,
चरणों के मिल जाएँ सहारे॥56.19॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'त' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

व्

द्रव्य तत्त्व सब जिनवर जाने,
स्वातम को भी प्रभु पहचाने।
गुरुवर हम तो हैं अज्ञानी,
मुक्ति की कोई रीत न जानी॥56.20॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'व्' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

य

क्षणभर में अघ क्षय कर लेते,
जो प्रभु की भक्ति कर लेते।
मेरा भी तो लक्ष्य यही है,
भव सागर तिर जाय - सही है॥56.21॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'य' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

ए

त्याग तपस्या कर्म जलाए,
घाति कर्म का नाश कराए।
वर्धमान स्वामी की वाणी,
खिरती दुख हरने कल्याणी॥56.22॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'ए' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

व

भवदधि डूबी नाव तिरा दो,
हस्तावलम्बन मुझे दिला दो।
भगवन सुन करके तुम वाणी,
आनन्दित हो जाते प्राणी॥56.23॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'व' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

म

भक्ति से जो तुम को पूजे,
भव भव भ्रमण उसीका छूटे।
जन सामान्य न प्रभु को जाने,
योगी अनुभव से पहचाने॥56.24॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'म' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

म

महिमा प्रभुकी त्रिभुवन छाई,
नाम मात्र ही सब सुख दाई।
संकट में जिसने भी पुकारा,
प्रभु ने संकट तभी निवारा॥56.25॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'म' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

वै

वैयावृत्ति हो साधूजन की,
व्याधि मिटे अपने तन मन की।
गुर्वाशीष रहस्य प्रकटावे,
मुक्ति की युक्ति भवि पावे॥56.26॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'वै' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

म

शुद्धातम प्रभु करें निवासा,
राग द्वेष दोनों को नाशा।
तुम सम साहसी और न कोई,
अतः तुम्हीं पर श्रद्धा होई॥56.27॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'म' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

न

नमन किया नहिं तुम्हें भाव से,
ना ही पूजा है श्रद्धा से।
इसीलिए दुख पात्र बना हूँ,
हास्यधाम विद्वानों से हूँ॥56.28॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'न' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

सि

सिद्धों को हम नमन कराते,
अर्हन्तों को उर पधराते।
लोक शिखर पर है प्रभु वासा,
हम चाहें तुम पास निवासा॥56.29॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'सि' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

स्

नाथ यशस्वी तुम्हीं जगत में,
प्रभु भक्ती भक्तों के मन में।
सब जीवों को शरण प्रदाता,
करमों में आ जाती साता॥56.30॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'स्' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

थि

थिर होकर उपयोग लगाएँ,
जो निज वैभव पाना चाहें।
पहले मोह तजे जड़ तन से,
प्रीति कराएँ फिर शिवतिय से॥56.31॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'थि' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

ता

जो धर लेता ध्यान प्रभु का,
पात्र बने वह पूर्ण ज्ञान का।
भक्त भ्रमर भी गुंजन करते,
मानों अपने भव दुख हरते॥56.32॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'ता' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

र्थः

परमार्थः जो भी तप करते,
वे निश्चय करमों को हरते।
मंगलमय है दर्श प्रभु का,
दर्शन से दुख विनशे भव का॥56.33॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'र्थः' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

दा

परमौदारिक देह तिहारी,
आभामण्डल है सुखकारी।
सप्तधातु से हुए विहीना,
पारदर्शी तन दिव्य नवीना॥56.34॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'दा' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

ता

लघुता से ही प्रभुता आवे,
लेकिन अहंकार आ जावे।
तो दुर्गतियों में जिय रुलता,
जिन भक्ती का भाव न रुचता॥56.35॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'ता' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

स

सद्भक्ति का भाव बना हो,
मोक्ष प्राप्ति का चाव घना हो।
एक-एक सीढ़ी चढ़ जाएँ,
अन्त में आत्म परम पद पाए॥56.36॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'स' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

मो

मोह शत्रु है प्रबल हमारा,
राग जु द्वेष बढ़ावनहारा।
भेदज्ञान जिन वचन सिखायें,
शिवपथ पर हम कदम बढ़ायें॥56.37॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'मो' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

न

बिन बोले प्रभु मम दुख जानो,
मेरे अन्तर को पहचानो।
अब तो, प्रभु उपकार करा दो,
आतम का उद्धार करा दो॥56.38॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'न' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

त

तव गुण स्वामी कैसे गाएँ,
सच्चे ज्ञान की ज्योति जलाएँ।
घटे तिमिर मिथ्यात घनेरा,
केवलज्ञान का होय सवेरा॥56.39॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'त' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

व

वही भक्त निज वैभव पाता,
जो जिनवर के गुण अपनाता।
ध्यान प्रभु का धर लेता है,
आत्मज्ञान गुण पा लेता है॥56.40॥

ॐ ह्रीं अर्हं वर्तमानशासननायक 'व' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...।

म

नाम तिहारा जिह्वा गाती,
नासा दृष्टि ध्यान लगाती।
हे प्रभु! मुझ पर कृपा कराओ
अन्तर में दृढता दिलवाओ॥56.41॥

ॐ ह्रीं अर्हं वर्तमानशासननायक 'म' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...।

त

हम सब स्वात्म रुचि प्रकटावें,
सो श्री जिन मन्दिर जी जावें।
बढ़े आत्म बल जिन पूजा से,
चलें मोक्ष मग निज श्रद्धा से॥56.42॥

ॐ ह्रीं अर्हं वर्तमानशासननायक 'त' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...।

स

राई सम मैं भक्त तिहारा,
पर्वत सम गुरुवर का द्वारा।
नियम शिष्य से गुरु पलवाएँ,
शिष्य भी आगे बढ़ते जाएँ॥56.43॥

ॐ ह्रीं अर्हं वर्तमानशासननायक 'स' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...।

म

छ्यालिस गुण मण्डित अरिहन्ता,
अठारह दोष रहित भगवन्ता।
मुनि रत्नत्रय ध्वज लहराते,
जैन धर्म जयघोष कराते॥56.44॥

ॐ ह्रीं अर्हं वर्तमानशासननायक 'म' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...।

या

अनुयायी हैं हम प्रभुवर के,
पद चिह्नों पर चलते इनके।
हर आतम में गुण अनन्त हैं,
बन सकते भगवन्त सभी हैं॥56.45॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'या' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

च

जिन वचनों को गणधर गूँथें,
द्वादशांग को भविजन पूजें।
जिन वच औषधि रोग भगाए,
अन्तर-बाहर स्वस्थ बनाए॥56.46॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'च' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

को

शिवपथ को जिन धुनि दरशाए,
भूले-भटके पार लगाए।
यथाख्यात चारित को पालें,
जीवन को हम सुखी बनालें॥56.47॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'को' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

न

मनमानी अब कभी न करना,
जिन वचनों को उर में रखना।
नित होवे स्वाध्याय शास्त्र का,
पता जान लें मोक्षमार्ग का॥56.48॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'न' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

कां

आकांक्षा शुभ पाप निवारें,
हिरदय में समकित को धारें।
गुरु चरणों का मिले सहारा,
बेडा होवे पार हमारा॥56.49॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'कां' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

क्षा

डामर क्षाम सभी विनशावें,
पूजा शान्तिनाथ रचावें।
ज्ञानांजन नयनों में लगा दो,
मोह अंधेरा दूर भगा दो॥56.50॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'क्षा' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

म्

मुनि सिंधु प्रणम्य हितकारी,
सब भविजन पर करुणाधारी।
शिवपुर का लक्ष्य बनाया है,
जिनवाणी को फैलाया है॥56.51॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'म्' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

य

स्वाध्याय सब मिलें कराएँ,
शास्त्रों से अज्ञान मिटाएँ।
प्रज्ञा छैनी से भिन्न कराके,
आत्मज्ञान पाएँ हरषाके॥56.52॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'य' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

हं

हंता हैं हिंसक भावों के,
कर्त्ता - भोक्ता शुभ भावों के।
निश्चय अरु व्यवहार को जानें,
संशय-विभ्रम सब ही हानें॥56.53॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'हं' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

कि

सुर किन्नर-किंपुरुष पिछानो,
वसु विध व्यंतर देव प्रमानो।
महोरग - गंधर्व - यक्ष - पिशाचा,
राक्षस-भूत भेद है साँचा॥56.54॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'कि' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

म

आतम ज्ञान कराने वाले,
चित् सरूप को जानने वाले।
वर्धमान तीर्थकर स्वामी,
हम भी आपके ही अनुगामी॥56.55॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'म' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...

पि

पिलाया स्वातम रसका प्याला,
पीकर लोक हुआ मतवाला।
तन की सुध सबकी खो जाती,
चेतन की ही सुध आ जाती॥56.56॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'पि' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...

नो

दोनो चरण नाथ - उर थापे,
टंकोत्कीर्ण सदा आराधें।
रहें प्रकाशित दीप जले ज्यों,
आज्ञा जिन भाषित पालें यो॥56.57॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'नो' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...

भ

भविजन सुनते प्रभु की वाणी,
सुन कर सुखी होंय सब प्राणी।
कुछ महाव्रत ले दीक्षा पाएँ,
कुछ अणुव्रत लेकर हरषाएँ॥56.58॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'भ' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...

व

वपु षोडश जिनवर स्वर्णाभा,
समवशरण में अतिशय शोभा।
दिवस-निशा का भेद नहीं हो
भूख-प्यास का खेद नहीं हो॥56.59॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'व' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...

तो

श्री वर्धमान स्तोत्र रचाया,
वर्णन कर्णप्रिय मन भाया।
जो प्रतिदिन भक्ती से पढ़ता,
निज में ही उपयोग बदलता॥56.60॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'तो' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

भ

इक ही भव शिव होय बसेरा,
कटे जाल करमों का घेरा।
शाश्वत सिद्धालय हो वासा,
नन्त काल तक रहे निवासा॥56.61॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'भ' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

व

मनभावन है रूप प्रभु का,
अद्भुत सुन्दरतम प्रिय विभु का।
रमण करें अपने आतम में,
पहुँचें अजर-अमर शिवपुर में॥56.62॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'व' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

न्

भव सिन्धू के तट को पावें,
संयम नौका से तिर जावें।
अमिट-अनाकुल जिय हो जाता,
आतम वैभव को पा जाता॥56.63॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'न्' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

त

भवरोगी हैं भक्त जगत में,
नाथ स्वस्थ हैं निज आतम में।
आरोही जो संयम नौका,
नहीं चूकते ऐसा मौका॥56.64॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'त' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

माम् बचाओ प्रभु पापों से,
छूट जाऊँ भव सन्तापों से।
शरणागत हूँ तुम चरणों में,
शान्ति रहे अब दुष्कर्मों में॥ 56.65 ॥

पूणाईर्य

देना चाहो आप यदि, मुझको किंचित् दान।

मिलो नाथ मुझसे स्वयं, या करो आप समान ॥56॥

ॐ ह्रीं अयाचक वृत्ति प्रतिपादकाय अर्हं महाबीजाक्षरसहिताय
श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

यात्रा विघ्न निवारक स्तुति

एवं चतुर्दशतिथा-वपहृत्य योगान्,
ध्यानात् तुरीयशुभशुक्ल-वशात् प्रमुक्तः।
पावापुर - प्रमद - पद्म - सरोवरस्थो,
निर्वाण-माप्य भुवनस्य शिरः प्रतस्थे ॥57॥

(छन्द दोहा)

ए एक बार पुरुषार्थ कर, जाएँ अपने धाम।
सब सिद्धों के साथ में, पाएँ निज विश्राम ॥57.1॥

ॐ ह्रीं अर्हं वर्तमानशासननायक 'ए' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...

व पुरुदेवं नित मैं नमूँ, अद्भुत आभावान।
पुरुषार्थ अप्रतिम कर, हुए नन्त गुणवान ॥57.2॥

ॐ ह्रीं अर्हं वर्तमानशासननायक 'व' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...

च चरण कमल श्री वीर के, हैं मेरे उर माँहि।
प्रतिदिन पूजा वन्दना, करूँ-भुलाऊँ नाहिं ॥57.3॥

ॐ ह्रीं अर्हं वर्तमानशासननायक 'च' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...

तु भ्रात मात पितु आप मम, वर्धमान भगवान।
सोते, जगते आप का, नाम जपें विद्वान ॥57.4॥

ॐ ह्रीं अर्हं वर्तमानशासननायक 'तु' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...

द दर्द सहें भव रोग सब, चाहें निज कल्याण।
इसीलिए पालें चरित, हो अन्तिम निर्वाण ॥57.5॥

ॐ ह्रीं अर्हं वर्तमानशासननायक 'द' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...

श शरणगति में नाथ की, आओ भव्यो नित्य।
सिद्ध समान ही शुद्ध भी, हो सकते तुम सत्य ॥57.6॥

ॐ ह्रीं अर्हं वर्तमानशासननायक 'श' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...

ति तिरना चाहो तुम अगर, भवसागर के पार।

निज गुण अभिव्यक्ति करो, हो स्वातम उद्धार॥57.7॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'ति' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

था थाम लीजिए हाथ मम, डूबी नाव निकार।

पावन होवे पतित भी, जीवों पर उपकार॥57.8॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'था' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

व वश कर लें मन - इन्द्रियाँ, शिवपथ चलें निहार।

"हम चलते-तुम भी चलो", कहते भव्य पुकार॥57.9॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'व' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

प पढ़ना-लिखना श्रेष्ठ है, चलें ज्ञान - अनुसार।

ध्यान लगाएँ ज्ञान से, उतरे भव से पार॥57.10॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'प' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

ह हृदय वेदि पर वीर जिन, पधराऊँ सुखकार।

पाप पंक का नाश हो, होवे मन अविकार॥57.11॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'ह' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

त् नित्य उदित हैं नाथ ही, रवि सम तेज अपार।

केवलरवि उद्योत से, जगमग हो संसार॥57.12॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'त्' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

य किंचित - परिग्रह पाय जु, चिन्ता सदा सताए।

रुई लपेटी आग से, सभी भस्म हो जाए॥57.13॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'य' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

यो नमन योग्य अतिवीर को, करता सहस प्रणाम।

भजन करूँ तिहुँ योग से, जपूँ वीर का नाम॥57.14॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'यो' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

गा

करते हैं गुणगान सुर, समवशरण में आन।

सहस नाम ले इन्द्र भी, बैठें आनन्द मान॥57.15॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'गा' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

न्

धारे परम पुमान् ही, जिनवाणी का सार।

दोष मुक्त मुनिराज हों, तीन योग अविकार॥57.16॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'न्' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

ध्

ध्यान चार परकार हैं, आर्त-रौद्र-धर्म ध्यान।

शुक्ल शुद्ध उपयोग में, धारें, साधु महान॥57.17॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'ध्' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

या

कल्याणक जिनदेव के, होते द्वय-त्रय-पाँच।

भरतैरावत पाँच हों, शेष विदेहे साँच॥57.18॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'या' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

ना

तुलना जिन किससे करें, अतुलनीय भगवान।

आप अनोखे विश्व में, हुए सिद्ध शिवथान॥57.19॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'ना' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

त्

सुगत् कहाते आप जिन, हुए सिद्ध परमेश।

अर्पण मन वच तन करें, इष्ट हैं वीर जिनेश॥57.20॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'त्' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

तु

तुम्हें छोड़ कर नाथ मैं, किसको जोड़ूँ हाथ।

मेरे तो सर्वस्व हो, चरण झुकाऊँ माथ॥57.21॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'तु' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

री

ज्ञान शरीरी हो गए, काया रहित जिनाय।

वर्धमान जिन भक्ति से, पाप दूर हो जाय॥57.22॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'री' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

य

होती जय-जयकार जब, दीक्षित हों भगवान।

बढ़े विशुद्धि भाव की, मनःपर्यय हो ज्ञान॥57.23॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'य' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...

शु

शुक्ल ध्यान के भेद चव, पृथक-एकत्व वीचार।

सूक्ष्म क्रिया प्रतिपाति, व्युपरत निवृत्ति सारः॥57.24॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'शु' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...

भ

हर लेते भव पीर प्रभु, जग से होय विरक्त।

नहिं आसक्त संसार में, रहें स्वात्म अनुरक्त॥57.25॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'भ' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...

शु

शुभस्य शीघ्र सोच मन, कर ले प्रभु का ध्यान।

पुण्यों की तो वृद्धि हो, होय पाप अवसान॥57.26॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'शु' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...

क

भक्त आए गुरु शरण में, पाने निज सुख काज,

जिन-गुरुकृपा अनंत है, मिले मुक्ति का राज॥57.27॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'क' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...

ल

विफल रहा मैं आज तक, मिला न आतम तोष।

साधु परिग्रह तज गए, हुए पूर्ण गुण कोष॥57.28॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'ल' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...

व

वस्त्र रहित गुरुदेव हैं, नगन दिगम्बर वेश।

अस्त्र-शस्त्र बिन ही करें, कर्म शत्रु निःशेष॥57.29॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'व' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...

शा

सिद्ध दशा अब हो प्रभु, ऐसा दो आशीष।

पड़े आपके चरण में, अरज करें नतशीश॥57.30॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'शा' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...

तू

जगत्पति वर्धमान को, वन्दन बारम्बार।

दर्पण सम प्रभु ज्ञान में, झलके सब संसार॥57.31॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'तू' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

प्र

दिव्य देशना से प्रभु, करते जग उद्धार।

उपादान निर्बल हुआ, तो निमित्त निस्सार॥57.32॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'प्र' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

मु

आवागमन विमुक्त हैं, सभी सिद्ध गुणवान।

अजर अमर शाश्वत सदा, करें आत्मरस पान॥57.33॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'मु' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

कू

भक्ती में शक्ती बड़ी, भक्त बने भगवान।

इसीलिए जिनराज का, करें सदा गुणगान॥57.34॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'कू' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

तः

विगतः सर्व विकार जिन, अचल-अमल अविकार।

निजानन्द में झूमते, जिय विराग सुखकार॥57.35॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'तः' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

पा

पाय निकटता नाथ की, तरुवर होय अशोक।

समवशरण में जीव को, नहीं रोग-भय-शोक॥57.36॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'पा' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

वा

स्वात्म ध्यान करते गुरु, पावन भाव जु धार।

रमण करें शुद्धात्म में, हो दुरभाव-सुधार॥57.37॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'वा' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

पु

पुत्र स्वयं भगवान जिन, मात पिता बड़भाग।

आतम हित में त्यागते, वीर सभी से राग॥57.38॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'पु' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

र

डर नहीं लगता मौत से, निश्चय सब ही जाय।

पल-पल रटता नाम जिन, णमोकार सुखदाय॥57.39॥

ॐ ह्रीं अर्हं वर्तमानशासननायक 'र' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

प्र

हुआ शान्त उपयोग प्रभु, मिटा कर्म संयोग।

हम भी चाहें ध्यान थिर, मनवचतन तिहूँ योग॥57.40॥

ॐ ह्रीं अर्हं वर्तमानशासननायक 'प्र' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

म

गल जाए मम मान सब, सारे मिटें विभाव।

होवें निर्मल भाव अब, पावें निजी सुभाव॥57.41॥

ॐ ह्रीं अर्हं वर्तमानशासननायक 'म' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

द

मद के कारण ही प्रभो, नाशा रावण वंश।

उजड़ गए तीनों यहाँ, रावण-कौरव-कंस॥57.42॥

ॐ ह्रीं अर्हं वर्तमानशासननायक 'द' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

प

करे पाप का नाश ही, अर्ह योग हितकार।

गुरु प्रणम्य ने ही किया, भव्यों पर उपकार॥57.43॥

ॐ ह्रीं अर्हं वर्तमानशासननायक 'प' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

द्

द्वार खुला शिवधाम का, जाते सन्त अपार।

जिनपथ पर चल कर सभी, पाएँ निज पद सार॥57.44॥

ॐ ह्रीं अर्हं वर्तमानशासननायक 'द्' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

म

रमता है शुद्धात्म जो, हो जाता सिद्धेश।

पंच महाव्रत पाल कर, शिवपुर करे प्रवेश॥57.45॥

ॐ ह्रीं अर्हं वर्तमानशासननायक 'म' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

स

सहे दुःख चिरकाल से, मिले न जिनवर नाम।

वीतराग पाएँ सुपद, वर्धमान अब साथ॥57.46॥

ॐ ह्रीं अर्हं वर्तमानशासननायक 'स' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

रो

करो मोह चकचूर मम, आया प्रभुवर द्वार।

अज्ञानी हैं जीव सब, आप ज्ञान भण्डार॥57.47॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'रो' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

व

स्व सन्मुख उपयोग मुनि, हुए विमुख भव भोग।

वीतराग जिन भक्ति का, मिला आज संयोग॥57.48॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'व' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

र

विरहित कर्म कलंक से, हुए सिद्ध भगवान।

सिद्ध भक्ति हम भी करें, पावें आतम ज्ञान॥57.49॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'र' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

स्

स्वयं किया पुरुषार्थ जिन, हुए आप शिवभूप।

जयवन्तो परमेष्ठि सिद्ध, निज पद मिला अनूप॥57.50॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'स्' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

थो

होय रथोत्सव जब कहीं, भविजन मन हरषाय।

ऐसी होय प्रभावना, जन-जन मंगल गाय॥57.51॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'थो' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

नि

निखिल चराचर जानते, केवलज्ञानी नाथ।

हम स्वातम निर्मल करें, मुक्ति हमारे हाथ॥57.52॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'नि' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

वर्

सर्वा दिशि - विदिशाओं में, तारे दिखें अनेक।

किन्तु दिशा पूरब में ही, निकले सूरज एक॥57.53॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'वर्' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

ण

प्रभु वशीकरण करते नहीं, फिर भी जग वश होय।

एक बार दर्शन करें, वो अनुयायी होय॥57.54॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'ण' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

मा

माला फेरे हाथ से, मन भटके संसार।

होय न स्थिर ध्यान भी, कैसे भवदधि पार॥57.55॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'मा' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

पू

स्वप्न हुए साकार सब, पाया गुरुवर द्वार।

गुरुचरणों की छाँव में, छूटे सभी विकार॥57.56॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'पू' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

य

रत्नत्रय पालन करें, भवसागर तिर जाय।

मिथ्याचरण पाषाण वत्, भवजल देय -डुबाय॥57.57॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'य' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

भु

ज्ञानवान प्रभुजी हुए, तप से कर्म खपाय।

आवागमन निवारते, ध्यानलीन - जिनराय॥57.58॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'भु' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

व

भव भव में जिय भोगता, जिय घूमे संसार।

अब तो दुख मेटो प्रभु, करता नित्य पुकार॥57.59॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'व' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

न

ज्ञान नेत्र मेरे खुले, किए दर्श जब वीर।

महिमा नाथ विशाल है, दूर होय भव पीर॥57.60॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'न' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

सू

स्व सन्मुख दृष्टि करे, निजानुभव हो जाय।

दिव्य छवि लख नाथ की, अनुपम आनन्द आय॥57.61॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'सू' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

य

नित्य नमन वर्धमान को, भाव शुद्ध हो जाय

जीव दया झरना बहे, न कोय दुखी दिखाय॥57.62॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'य' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

शि

वरण करी शिवनार जब, पाया सुख अविनाश।

निज में निज का भाव हो, अन्तर दिव्य प्रकाश॥57.63॥

ॐ ह्रीं अर्हं वर्तमानशासननायक 'शि' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...

रः

वीर: दाता शान्ति के, सबको देत जिनाय,

हम भी जिनगुण पा सकें, शक्ति हमें दिलाय॥57.64॥

ॐ ह्रीं अर्हं वर्तमानशासननायक 'रः' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...

प्र

प्रणमं बारम्बार जिन, महावीर हितकार।

सार रूप जिनधर्म है, सारा जगत असार॥57.65॥

ॐ ह्रीं अर्हं वर्तमानशासननायक 'प्र' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...

त

मुक्ती **तक** दो साथ जिन, शरण आपकी आय।

मोक्ष मार्ग नेता तुम्हीं, हम अनुशरण कराय ॥57.66॥

ॐ ह्रीं अर्हं वर्तमानशासननायक 'त' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...

स

जिन स्तुति से प्राप्त हो, भविजन को शिवपंथ।

रमण होय शङ्खात्म में, बनें साधु निर्ग्रन्थ॥57.67॥

ॐ ह्रीं अर्हं वर्तमानशासननायक 'स' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...

थे

मन्मथ मथे जू जीव को, व्याकुल तन मन होय।

केवलज्ञानी नाथ लख, मन्मथ लज्जित होय॥57.68॥

ॐ ह्रीं अर्हं वर्तमानशासननायक 'थे' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...

पूणाईर्घ्य

किए संकुचित योग तो, ध्यान शृङ्खल चव धार।

पावापुर के पद्म सर, हुए भवोदधि पार ॥57॥

ॐ ह्रीं यात्रा विघ्न निवारकाय अर्हं महाबीजाक्षरसहिताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः
पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अन्तराय निवारक स्तुति

नष्टाष्टकर्मरिपुबाधक! ते नमोस्तु,
स्वर्गापवर्ग-सुखदायक! ते नमोस्तु।
विश्वैक-कीर्ति-गुण नायक! ते नमोस्तु,
विघ्नान्तराय-विधि-वारक! ते नमोस्तु ॥58॥

(छन्द सोरठा)

न

नमन करें सुखकार, वर्धमान महावीर जिन।
वचन सुनें हितकार, स्वाध्याय प्रतिदिन करें ॥58.1॥

ॐ ह्रीं अर्हं वर्तमानशासननायक 'न' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...

ष

अष्ट कर्म दुखदाय, रक्षा कीजे नाथ मम।
तुम चरणों में आय, शांति मिली मुझको परम ॥58.2॥

ॐ ह्रीं अर्हं वर्तमानशासननायक 'ष' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...

टा

इष्टानिष्ट विचार, साम्यभाव रखें सदा।
ज्ञायक आनन्दकार, हर्ष विषाद न हो कभी ॥58.3॥

ॐ ह्रीं अर्हं वर्तमानशासननायक 'टा' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...

ष्

करमन कष्ट अपार, मोहनीय को सह रहा।
आया हूँ प्रभुद्वार, आवागमन निवारिए ॥58.4॥

ॐ ह्रीं अर्हं वर्तमानशासननायक 'ष्' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...

ट

घट घट अन्तर जोत, सम्यग्ज्ञान जगाइए।
केवलज्ञान उद्योत, आठ कर्म नाशें, सदा ॥58.5॥

ॐ ह्रीं अर्हं वर्तमानशासननायक 'ट' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...

क

घाति कर्म संहार, स्वानुभूति का लाभ हो।
भाव अज्ञान निवार, शिवपुर में ही वासकर ॥58.6॥

ॐ ह्रीं अर्हं वर्तमानशासननायक 'क' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...

म

धर्म वही सुखकार, जो दुख से बाहर करे।

धर्म मर्म उर धार, वीतराग विज्ञान है॥58.7॥

ॐ ह्रीं अर्हं वर्तमानशासननायक 'म' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

रि

करिए न्याय तुरन्त, कर्म महा दुख दे रहे।

होय दुखों का अन्त, साता होवे कर्म में॥58.8॥

ॐ ह्रीं अर्हं वर्तमानशासननायक 'रि' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

पु

करम रिपु बलवान, जिन दर्शन अब हों नहीं।

वर्णी मनोहर-ज्ञान, बचपन में पाया सुखद॥58.9॥

ॐ ह्रीं अर्हं वर्तमानशासननायक 'पु' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

बा

लीला बाल कराय, कुण्डलपुर में आज ही।

दिवि से सुरगण आय, क्रीड़ा करते नाथ संग॥58.10॥

ॐ ह्रीं अर्हं वर्तमानशासननायक 'बा' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

ध

निर्धन-धनी समान, वीर प्रभु के द्वार पर।

देते सब सम्मान, सुर-नर-पशु-पंचेन्द्रिय॥58.11॥

ॐ ह्रीं अर्हं वर्तमानशासननायक 'ध' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

क

भव अनेक का पुण्य, विद्या सिंधु दर्शन मिले।

महा महोत्सव भव्य, समवशरण गुरु का लगा॥58.12॥

ॐ ह्रीं अर्हं वर्तमानशासननायक 'क' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

ते

तेजोमय तन नाथ, दर्शन से तृप्ति नहीं।

सुर-नर जोड़े हाथ, गुरुवर निज सुख के धनी॥58.13॥

ॐ ह्रीं अर्हं वर्तमानशासननायक 'ते' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

न

दिया ज्ञान का दान, दाता आचार्य श्री।

गुण मणियाँ धनवान, स्व संवेदन नित करें॥58.14॥

ॐ ह्रीं अर्हं वर्तमानशासननायक 'न' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

मो

शत्रु भयंकर मोह, आत्म साधना हो नहीं।

मोह नशे सुख होय, आगम भी कहते यही॥58.15॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'मो' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

स

दुर्लभ स्वातम ज्ञान, भाव अशुभ सब हैं सुलभ।

पाएँ सम्यग्ज्ञान, संशय विभ्रम से रहित॥58.16॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'स' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

तु

तुरत हि संयम धार, कर्मों का आस्रव रुके।

भविजन पर उपकार, गुरुवर सार्धें नित्य ही॥58.17॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'तु' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

स्

स्वातम कथा सुनाय, सन्त विरल हों लोक में।

चेतन सुप्त जगाय, लगन निजातम में लगे॥58.18॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'स्' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

व

सब देवों के देव, केवल ज्ञानी ही कहे।

पूजें बस नव देव, जिन-आगम में पूज्य हैं॥58.19॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'व' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

र्ग

सुर स्वर्गात् हि आय, समवशरण जिन धुनि सुने।

अनुपम भक्ति दिखाय, निर्मल भाव-करावते॥58.20॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'र्ग' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

प

देख विरागी रूप, चरणों में झुकते सभी।

पाया शुद्ध स्वरूप, सर्व विभावाभाव कर॥58.21॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'प' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

व

अनुभव करते आप, स्वसंवेदन के धनी।

शिवपुर नगरी नाथ, तारण तरण जिनेश हो॥58.22॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'व' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

र्ग

स्वर्ग वही जन जाय, जान वतन पर जो तजे।

जिन गुणगान कराय, धरती को महकावते॥58.23॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'र्ग' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

सु

शिव पथ सुगम बनाय, मोक्ष गए श्री वीर जिन।

सुख का न अन्य उपाय, देव - शास्त्र - गुरु पूजिए॥58.24॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'सु' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

ख

भोगों में सुख मान, विषयों में फूला रहा।

आतम महिमा जान, स्व सन्मुख दृष्टि करी॥58.25॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'ख' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

दा

दान ज्ञान का देय, पधराए लोकाग्र पर।

पर वस्तु सब हेय, आत्म साधना में लगे॥58.26॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'दा' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

य

यही चाह जिनराय, निजानन्द पाएँ सदा।

समता सदा रहाय, ममता पर की दुःख दे॥58.27॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'य' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

क

तीर्थकर जिनराय, वर्धमान स्वामी प्रभु।

जिनपद नाव-तिराय, स्वयं तिरे पुरुषार्थ से॥58.28॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'क' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

ते

जीते अठरह दोष, वीतराग महावीर जिन।

हम दोषों का कोष, कैसे, निज कल्याण हो॥58.29॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'ते' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

न

झुक झुक नम्र प्रणाम, हो प्रणम्य तिहुँ लोक से।

पहुँचा दो शिवधाम, नाथ चरण में अर्ज है॥58.30॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'न' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

मो

जन्तू मोह अपार, तिरना है. संसार जल।

करिए प्रभु उद्धार, आतम गुण प्रकटें सहज॥58.31॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'मो' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

स

पाएँ सब स्वभाव, अतः शरण जिनराज की।

सबहि करें शुभ भाव, जिनवर तो निष्काम है॥58.32॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'स' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

तु

तुम से पाने ज्ञान, आया शरणे मैं प्रभु।

मिटे सभी दुर्ध्यान, यही भावना मैं करूँ॥58.33॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'तु' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

वि

भविजन सर्व तिराय, बिना स्वार्थ जिननाथ जी।

मेरी नाव बचाय, डूब रही मंझधार में॥58.34॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'वि' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

श

निश्चय नाम जपाय, रोग शोक से मुक्त हों।

मम उर वास कराय, जिनवर से ये आस है॥58.35॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'श' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

वै

वैभव निज गुण पाय, जीवन में सुख हो घना।

घाति करम विनशाय, केवल ज्ञानी हों प्रभु॥58.36॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'वै' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

क

कर्मन दण्ड दिलाय, काल अनादि से प्रभो।

बन्दन मन वच काय, अब वसु कर्मन नाश हो॥58.37॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'क' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

की

कीना है उपकार, मोक्ष मार्ग दर्शाय के।

नमें अनन्तों बार, जिनगुण चिंतन नित करें॥58.38॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'की' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

ति

यशः कीर्ति जिनराय, तीन लोक विस्तार हो।

त्रिभुवनपति कहलाय, तीन छत्र शिर पे दुरें॥58.39॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'ति' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

गु

जिन गुण हम अपनाय, तीन योग से नित्य ही।

जय जयकार कराय, वीर ज्ञान गुण अगम है॥58.40॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'गु' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

ण

गुण अनन्त महकाय, आतम कानन में महा।

भ्रमर भवि नित आय, गुण पराग पीते सदा॥58.41॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'ण' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

ना

नाटक जीव कराय, रंगमंच संसार में।

राग-द्वेष दुखदाय, बिन संवर के भटकता॥58.42॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'ना' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

य

वसु विध कर्म नशाय, शुद्धातम जिय हो गया।

वन्दन वीर जिनाय, सब पापों का नाश हो॥58.43॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'य' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

क

श्रद्धा ज्ञान विवेक, श्रावकजन पाले सदा।

शास्त्रों में उल्लेख, कहा सभी तीर्थेश ने॥58.44॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'क' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

ते

रमते निज शुद्धात्म, पर परिणति से मुक्तजिन।

प्रकटे अब अध्यात्म, यही भावना भक्तकी॥58.45॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'ते' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

न

नयनो से न दिखाय, दृष्टि अगोचर सिद्ध है।

फिर भी यश फैलाय, महिमा सिद्ध अपार है॥58.46॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'न' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

मो

करते मोक्ष उपाय, मोही जन नहीं साधते।
कहते हैं जिनराय, तजो मोह प्रमाद को॥58.47॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'मो' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

स्

दर्द स्वयं हि देय, देते पर को दोष सब,
पर ममत्व है हेय, भाव संभालें हम सभी॥58.48॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'स्' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

तु

तुलना नाहिं कराय, चमकें कंचन-काँच द्वय।
पूनम चन्द्र लजाय, मुख छवि लख जिनचंद की॥58.49॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'तु' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

वि

धन्य नाथ अविकार, नष्ट विकारों को किया।
चउ गति में तनधार, मैं भटका भव भव प्रभु॥58.50॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'वि' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

घ

विघ्नो को कर चूर, किया प्रयास सदीव ही।
निजपद से नहीं दूर, होना है जिननाथ जी॥58.51॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'घ' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

ना

जगत किनारा पाय, भव सागर को तैर कर।
सम्यक् चरित उपाय, पहुँचे झट शिवधाम में॥58.52॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'ना' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

न्

मन मन्दिर में आय, वेदि उर पधराएँ जिन।
मेरी भ्राँति मिटाय, सम्यग्ज्ञान प्रकाशिए॥58.53॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'न्' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

त

तत्त्व बोध करतार, ज्ञान दान जग को दिया।
शिवरमणी भरतार, ज्ञान किरण मुझको मिले॥58.54॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'त' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

रा

नारा मात्र लगाय, मंज़िल नहीं पाएँ कदा।

मन निज में भरमाय, धर्म श्रवण बिन जीव का॥58.55॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'रा' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

य

पाप हि पंक धुलाय, भक्ति नीर से हे प्रभु!

हम भी निज पद पाय, सब करमों का नाश कर॥58.56॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'य' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

वि

होंय विदेही नाथ, तज कंचन सी देह को।

दोष अठारह नाश, छ्यालिस गुण संयुक्त हो॥58.57॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'वि' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

धि

अधिपति तीनों लोक, वर्धमान भगवान हैं।

जिनपद में दें धोक, धन्य करें अपना जनम॥58.58॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'धि' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

वा

स्वानुभूति का गीत, योगीजन सुनते सदा।

जिनवर हैं मनमीत, दुख नाशें सबके प्रभु॥58.59॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'वा' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

र

नामजाप कर भक्त, निश्चय, पापों को हरे।

नहिं हो भोगासक्त, भाव संवेग सु मन धरे॥58.60॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'र' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

क

सुमरन करें जिनाय, हैं स्वभाव में जिन अचल।

प्रभुको अरज सुनाय, मुक्ती की आशा हमें॥58.61॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'क' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

ते

दुरते चामर दिव्य, झरना झरता नीर ज्यों।

चौसठ चामर भव्य, इन्द्र दुराते आन कर॥58.62॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'ते' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

सुरगण **नमन** कराय, भावभक्ति से भर हृदय।

हाथ जोड़ शिर नाय, समवशरण जिनधुनि सुनें॥58.63॥

ॐ ह्रीं अर्हं वर्तमानशासननायक 'न' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...

माणिक **मोती** लाय, दिव्य द्रव्य अर्पण करें।

चरणन शीश झुकाय, शरण लहें जिनराज की॥58.64॥

ॐ ह्रीं अर्हं वर्तमानशासननायक 'मो' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...

संस्कार का नाद, अदभुत देते हैं प्रभो।

जिन धुनि सुनि आल्हाद, पूजित जिनशत इन्द्र से॥58.65॥

ॐ ह्रीं अर्हं वर्तमानशासननायक 'सु' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...

नपा **तुला** संस्थान, समचतुरस्त्र शरीर है।

शिवपुर में प्रस्थान, करें नाथ जिन सिद्ध बन॥58.66॥

ॐ ह्रीं अर्हं वर्तमानशासननायक 'तु' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...

पूणाध्य

नाशक हो रिपु कर्म वसू, दाता दिवि शिवधाम।

नायक गुण कीरति तुम्हीं, शत-शत करें प्रणाम ॥58॥

ॐ ह्रीं अन्तराम निवारकाय अर्हं महाबीजाक्षरसहिताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः
पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।



विजेता कारक स्तुति

जेता त्वमेव समनः सकलेन्द्रियाणां,
नेता त्वमेव गुणकांक्षि-तपोधनानाम्।
भेत्ता त्वमेव घनकर्ममहीधराणां,
ज्ञाता त्वमेव भगवन्! सचराचराणाम् ॥59॥

(छन्द अर्ध ज्ञानोदय)

जे

जेते जीव हैं त्रिभुवन में सब, सुख की वांछा करते हैं।

जो भी जिनपथ पर चल पाते, सब दुख संकट हरते हैं॥59.1॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'जे' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...

ता

ताण्डव नृत्य करें सुरपति जब, शिशु जिनवर का जन्म हुआ।

हर्ष ज्वार नेत्रों में उमड़े, प्रभुचरणों में विनत हुआ॥59.2॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'ता' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...

त्व

त्वया निर्दिष्ट शिवपथ पर जो, चल पाते वे धन्य हुए।

रटते हैं जिन नाम मंत्र को, वे ही शिव सुख पात्र हुए॥59.3॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'त्व' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...

व

बोधि लाभ को वही पा सके, जो प्रभु शरण को पा जाते,

वे ही भव भव भ्रमण मिटाकर, शिवरमणी को परणाते॥59.4॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'व' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...

मे

मेधावी भी प्रभु को पूजें, जिनवाणी को सुनते हैं।

मोहतिमिर मिट जाता उनका, ज्ञानज्योति उर धरते हैं॥59.5॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'मे' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...

व

क्रीड़ा करें वही भवि निज में, जो विपदाएँ सहते हैं।

स्वानुभूति का रस पीते वे, साम्य भाव से रहते हैं॥59.6॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'व' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...

स

सदुपयोग कर पाएँ बुद्धि का, हों अधिकारी मुक्ती के।

पाप मलों को धो लेता वह, सार्थक फल हों युक्ती के॥59.7॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'स' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...

म

अन्तिम समय हो पीड़ा भारी, सहते रहते, संसारी।

किन्तु साधु की शरण मिले तो, हो जाते हैं अविकारी॥59.8॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'म' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...

नः

मनःपर्यय हो ज्ञान तत्क्षण, जब तीर्थकर दीक्षा लें।

भाव शुद्धि प्रतिपल बढ़ जाती, एकाकी शिवराह चलें॥59.9॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'नः' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...

स

धन्य धन्य साधू सन्तों को, समता से भरपूर हुए।

स्वाध्याय से ज्ञान प्राप्त कर, पापों से अति दूर हुए॥59.10॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'स' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...

क

चिंतन करते परमात्म का, मुनिजन ध्यान लगाने को।

बाईस परिषह सहन करें नित, कर्म कालिमा धोने को॥59.11॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'क' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...

ले

ले कर फल चउ आराधन का, कर्म घातिया नष्ट किए।

हुए सकल परमात्म फिर तो, जीवों को उपदेश दिए॥59.12॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'ले' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...

न्

चिन्मय चेतन रूप जान प्रभु, जड़ वैभव सब त्याग दिया।

पर द्रव्यों से तज ममत्व को, निज से नाता जोड़ लिया॥59.13॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'न्' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...

द्रि

जितेन्द्रिय जिनवर को वन्दन, तीन लोक के राजा हैं।

कर्म विजेता के चरणों में, मिलती अनुपम साता है॥59.14॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'द्रि' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...

या

दयामूर्ति श्री वर्धमान जिन, ऋद्धि सिद्धि के दाता हैं।

भूले भटके भवि जीवों को, शिवपथ आप प्रदाता हैं॥59.15॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'या' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

णां

गुरुणांगुरु श्री ज्ञान सिंधु ने, महाकाव्य रचना दीनी।

विश्वस्तर के ग्रंथ हैं सारे, दुनिया ने श्रद्धा कीनी॥59.16॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'णां' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

ने

अतुलबली, जिनराज आपने, मोहारि को जीत लिया।

दिव्यध्वनि से मोही जन को, सुप्त दशा से जगा दिया॥59.17॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'ने' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

ता

आगम कहता पार नहीं है, जिनवर की गुण गरिमा का।

ऋषि मुनि भी गुण गायन करते, वर्धमान की महिमा का॥59.18॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'ता' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

त्

त्याग किया जब राजपाट का, वर्धमान तीर्थकर ने।

पुरुषारथ तब किया आत्म का, कर्म कालिमा को हरने॥59.19॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'त्' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

व

दिव्य वचन को सुना सुनाकर, निद्रा जग जन की तोड़ी।

निज गुण वैभव पाने को ही, नश्वरधन सम्पत्ति छोड़ी॥59.20॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'व' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

मे

वास करें जिन हिरदय मेरे, सभी भक्त जन कहते हैं।

यह व्यवहार नयाश्रित मानो, निश्चय निज में रहते हैं॥59.21॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'मे' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

व

वीर जिनेश्वर के चरणों में, निजानन्द पाने आया।

कर्म लेप से निर्लेपी हो, परमानंद वांछा लाया॥59.22॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'व' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

गु

आतम गुण पाने को स्वामी, आलम्बन लेते तुमरा।
पापी भी पावन हो जाते, गुण गायन करके तुमरा॥59.23॥
ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'गु' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...

ण

वरण किया है मुक्तिरमा का, निज वैभव पा जाने को।
भक्त शरण में आया भगवन, गंगा भजन बहाने को॥59.24॥
ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'ण' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...

कां

आकांक्षा है कर पात्री हो, पद यात्री बन कर विचरूँ।
सब को प्रेरणा दे तिरने की, खुद भी भवदधि पार करूँ॥59.25॥
ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'कां' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...

क्षि

शुभाकांक्षि हैं गुरु हमारे, मोह नींद खुलवाते हैं।
तत्त्व ज्ञान देकर के हमको, शिवपथ पर चलवाते हैं॥59.26॥
ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'क्षि' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...

त

जगत पूर्णतः जान रहे हो, गहन ज्ञान गुण धार रहे।
इसीलिए तो साधु सन्त सब, केवलज्ञानी मान रहे॥59.27॥
ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'त' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...

पो

महा तपोधन ध्यान लगाते, प्रभु जैसा ही बनने को।
भक्त अनुशरण करें आपका, मोक्ष मार्ग पर चलने को॥59.28॥
ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'पो' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...

ध

धन दौलत मैं कुछ नहीं चाहूँ, रत्नत्रय निधि दिलवा दो।
आत्म पंछी कब उड़ जाए, मुझसे मुझको मिलवा दो॥59.29॥
ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'ध' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...

ना

पाप विनाशक शासन जिनका, वर्धमान जयवन्त रहें।
यथाख्यात चारित्र पालते, साधु-सन्त जीवन्त रहें॥59.30॥
ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'ना' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...

ना

गमनागमन विवर्जित सिद्ध जो, मोक्ष पुरी में राज रहे।

भक्त नाथ की भक्ती लीन हो, आज मगन हो नाच रहे॥59.31॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'ना' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

म्

बोध गम्य होवे जिनवाणी, निज सत्ता का अनुभव हो।

चलूँ आपके निर्देशित पथ, स्व सन्मुख सुख पाना हो॥59.32॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'म्' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

भे

भेदक हैं जो जड़ चेतन के, शिवपुर पथ दर्शायक हैं।

गूँज रहा जयकारा प्रभु का, भविजन को सुखदायक है॥59.33॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'भे' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

त्ता

कर्म शैल के भेत्ता हैं जो, मोक्ष मार्ग के नेता है।

विश्व तत्त्व के ज्ञाता प्रभुको, वन्दन, कर्म विजेता हैं?॥59.34॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'त्ता' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

त्

जन्मोत्सव जब होय शिशुजिन, सुरपति ऐरावत पर आए।

सात प्रकार की सेना लेके, न्हवन हेतु मेरू ले जाए॥59.35॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'त्' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

व

भाव शुद्ध पाने को प्रभुजी, शुभ भावों से भजन करा।

जिन भजनों से मन पावन हो, उर में निर्मल भाव धरा॥59.36॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'व' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

मे

समवशरण मे नाथ विराजे, बारह सभा थी मनहारी।

दिव्य ध्वनि, जब खिरती पावन, सुनें भव्य सब सुखकारी॥59.37॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'मे' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

व

प्रभु प्रभाव से खण्डित होता, मान महा मानीजन का।

मानस्तम्भ समीप आए जो, मद गल जाता झट उसका॥59.38॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'व' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

घ

घन्टे बजते जब मन्दिर में, ऊर्जा की लहरें फैलें।

ऋद्धि सिद्धियाँ प्रभु चरणों में, आनन्दित होकर खेलें॥59.39॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'घ' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

न

जीवन प्रभु का महिमा शाली, कैसे हम महिमा गाएँ।

मन्दमति हैं नाथ! ज्ञान को, कैसे गुरुवर से पाएँ॥59.40॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'न' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

क

याचक बनकर आया हूँ प्रभु, उर में ज्ञान कला भर दो।

पूर्व जन्म में किए पाप जो, पाप ताप अब प्रभु हर लो॥59.41॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'क' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

र्म

कर्म नाश से अब भव्यों को, लेश मात्र नहीं कष्ट रहा।

पापों से हो गए विरत जो, मुक्ती का ही लक्ष्य रहा॥59.42॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'र्म' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

म

हृदय कमल खिल जाता स्वामी, वर्धमान की भक्ती से।

प्रतिदिन पूजा पाठ रचाएँ, भविजन आतम शक्ती से॥59.43॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'म' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

ही

द्रव्यों से ही पूजा करते, भावों से हो कभी कभी।

लेकिन दिव्यध्वनि सुनने से, आनन्द पाते जीव सभी॥59.44॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'ही' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

ध

धर्म करें केवल काया से, निज को धर्मी मान रहे।

मन वच तन से करें धर्म तो, मुक्ति मार्ग सोपान रहे॥59.45॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'ध' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

रा

विद्याधर जिस धरा पे जन्मे, धन्य सदलगा ग्राम हुआ।

ज्ञानसिंधु की कृपा हुई तो, विद्यासागर नाम हुआ॥59.46॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'रा' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

पां

धरापां आभूषण हैं प्रभु, दुःख दूर करते जग के।

तीन लोक के परमेश्वर हैं, भवदधि शोषक भव्यों के॥59.47॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'पां' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

ज्ञा

रहे ज्ञान गुण सब जीवों में, कहते हैं केवलज्ञानी।

पंचेन्द्रि भवि संज्ञी पशु भी, सुनते हैं प्रभु की वाणी॥59.48॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'ज्ञा' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

ता

जो साधु करता है साधना, लीन स्वयं में हो कर के।

कीर्ति फैले तीन लोक में, मुक्ति रमा वरती आ के॥59.49॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'ता' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

त्

आत्म प्रदेशों में स्थित मैं, करता अभिनंदन वीरा॥

ज्ञानानन्दी सिद्ध प्रभु को, शत शत वन्दन हो मेरा॥59.50॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'त्' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

व

समवशरण की रचना होती, नीलमणी की गोल शिला,

अब तो जनम-मरण से बचना, अवसर जिनधुनि श्रवण मिला॥59.51॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'व' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

मे

मेरा आतम फँसा हुआ है, भाव विकारी दलदल में।

होते नष्ट विकार सभी, निर्विकार प्रभु चरणों में॥59.52॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'मे' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

व

जिन पूजा के भाव न हो तो, मानो लेश्या कृष्ण रही।

हर्षित प्रभु भावों से पूजे, तो वह लेश्या पीत कही॥59.53॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'व' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

भ

भक्त पढ़े स्तोत्र नाथ का, प्रतिदिन पूरी श्रद्धा से।

ज्ञान चरित वृद्धि हो उसकी, पार होय भवसागर से॥59.54॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'भ' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

ग

दिग् दिगन्त तक विजय पताका, लहराती प्रभु त्रिभुवन में।

सहसनाम पढ़ संकट टालें, सुख शान्ति भवि जीवन में॥59.55॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'ग' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

व

इसी वसुन्धरा पर भारत की, चौबीसों तीर्थेश हुए।

कुन्दकुन्द से विद्या सिंधु तक, साधू सर्व हितेश हुए॥59.56॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'व' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

न्

पार नहीं पाता मैं भगवन्, नंत आपके गुणगण का।

अतः कर रहे मात्र अर्चना, लक्ष्य बना है शिवपुर का॥59.57॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'न्' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

स

समता की पावन धारा से, ममता का सब पंक धुला।

केवलनिज में रमने से ही, भव्यों को शिवद्वार खुला॥59.58॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'स' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

च

जिन चरणाम्बुज ध्यानधरे जो, पलभर में ही पाप नशें।

मोक्ष वृक्ष का वपन करे वो, जिसके हिरदय वीर बसैं॥59.59॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'च' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

रा

नशा मोह मदिरा का छाया, नंत काल से होश नहीं।

वचनामृत पिलवा दो स्वामी, आप सिवा कोई शरण नहीं॥59.60॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'रा' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

च

शुक्ल ध्यान का चक्र चलाया, पर परिणति परिहार किया।

एकत्व भाव में ध्यान लगाया, शिवपुर को प्रस्थान किया॥59.61॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'च' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

रा

वीतराग गुण मण्डित मंडप, दश धरमों से सजा हुआ।

मुक्ति वधू वरमाला लाई, आनन्द पूरित हृदय हुआ॥59.62॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'रा' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

णा

कुछ छीटे करुणा के दे दो, वर्धमान जिन हितकारी।

आनन्दामृत पान करा दो, दया धर्म के उपकारी॥59.63॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'णा' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...

म्

विषय लम्पटी को नहीं मिलता, सुख शान्ति का झरना भी।

भोगों में ही लिप्त रहे वह, मन में रहें विकार सभी॥59.64॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'म्' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...

पूर्णार्घ्य

जेता हो मन-इन्दि के, नेता-मुनि मणि जान।

भेत्ता पर्वत कर्म हो, ज्ञाता ज्ञेय प्रमाण॥59॥

ॐ ह्रीं मन इन्द्रिय विजितः कराय अर्ह महाबीजाक्षरसहिताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय
नमः पूर्णार्घ्य निर्वपामीति स्वाहा।

xxxxxxxxxxxxxxxxxxxxxxxxxxxxxxxx

अन्य मन्त्र तंत्र प्रभाव रोधक स्तुति

हे वीर! सिद्ध-गतिभूषण! वीतकाम!
तुभ्यं नमोऽन्त्य-जिन-तीर्थकर! प्रमाण!
सर्वज्ञदेव! सकलार्तविनाशकाय,
तुभ्यं नमो नतमुनीन्द्र-गणेशिताय ॥60॥

(छन्द चौपाई)

हे

हे वीर हो अन्तिम हितकारी, तुम सब जीवों के उपकारी।
हो तीन लोक के जिन स्वामी, सर्वज्ञ हितैषी गुण धामी ॥60.1॥

ॐ ह्रीं अर्हं वर्तमानशासननायक 'हे' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...

वी

प्रभु वीतराग विज्ञान दिया, भव्यों ने उर में धार लिया।
जब प्रभु का दर्शन पाते हैं, तब हृदय कमल खिलजाते हैं ॥60.2॥

ॐ ह्रीं अर्हं वर्तमानशासननायक 'वी' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...

र

मनहर दिव्य रूप प्रभुप्यारा, जगत जनों से है अतिन्यारा।
जिन रवि दर्श मोह तम नाशे, भेद ज्ञान की ज्योति प्रकाशे ॥60.3॥

ॐ ह्रीं अर्हं वर्तमानशासननायक 'र' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...

सि

सिद्ध लोक के हो तुम वासी, हुए कर्म क्षय कर अविनाशी,
समवशरण में जिनधुनि सुन के, दिल खिल जाते हरषा के ॥60.4॥

ॐ ह्रीं अर्हं वर्तमानशासननायक 'सि' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...

द्ध

हुए सिद्ध सब ही शिवगामी, नयन अगोचर प्रभु अभिरामी।
कैसे हम प्रभु ध्यान लगाएँ, कैसे निज अज्ञान मिटाएँ ॥60.5॥

ॐ ह्रीं अर्हं वर्तमानशासननायक 'द्ध' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...

ग

गुणधर द्वादशांग को गूँथे, जिनवाणी को भविजन पूछें।
जिन वच औषधि स्वस्थ बनाए, भव सागर भी पार कराए ॥60.6॥

ॐ ह्रीं अर्हं वर्तमानशासननायक 'ग' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...

ति

चारों गतियों में हम भटके, इस संसार भ्रमण में अटके।

वर्धमान पंचम गति राजें, सदा सुखी शिवधाम विराजें॥60.7॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'ति' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...

भू

भूत भविष्यत वर्तमान को, पहचानें हम मोह वितान को।

अब तो यही निवेदन स्वामी, बनें आपके ही अनुगामी॥60.8॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'भू' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...

ष

एक यही अभिलाष हमारी, होवें मन वच तन अविकारी।

जिन वचनों को हिरदय धारें, अपना जीवन आप सँवारें॥60.9॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'ष' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...

ण

पर परिणति में दुःख बताएँ, परमारथ हम समझ न पाएँ।

यों ही भवभव भ्रमण कराए, सच जाना तो अब पछताए॥60.10॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'ण' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...

वी

वीतराग को वन्दन करते, पापों के क्रन्दन को हरते।

वर्तमान शासन नायक हैं, पतितों के उद्धारक प्रभुहैं॥60.11॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'वी' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...

त

स्वातम में अब ज्योति जगाएँ, ज्ञानावरणी कर्म नशाएँ।

घाति कर्म रिपु हनन कराएँ, पूर्ण ज्ञान गुण धनी कहाएँ॥60.12॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'त' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...

का

गुण ग्रहण का भाव धराएँ, संचित पाप सभी विनशाएँ।

जब से प्रभु के दर्शन पाए, मन में कोमल भाव समाए॥60.13॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'का' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...

म

सुदृढ़ मन से वे सुख पाते, जो सत्ता के कर्म खपाते।

द्रव्य-भाव-नोकर्म नशाए, शाश्वत शर्म प्रभु ने पाए॥60.14॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'म' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...

तु

तुम पद पूज्य जगत में स्वामी, राग द्वेष दुख मेटे नामी।

हम भी ऐसी. समता पाएँ, सर्व विभाव अभाव कराएँ॥60.15॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'तु' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

भू

अभ्यंतर तप किया नाथ ने, कर्मन्धन किया भस्म आपने।

जिसने भी तुम ध्यान लगाया, बेड़ा उसका पार कराया॥60.16॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'भू' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

यं

बाह्याभ्यंतर परिग्रह तजते, यथाख्यात चारित को धरते।

ज्ञान नेत्र को खोला प्रभुने, प्राप्त किया शिवपद को अपने॥60.17॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'यं' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

न

आप जगत के पालन हारे, संकट काटो नाथ हमारे।

बिन कारण प्रभु जगत बंधु हो, दीन दुखी को सौरव्य सिंधु हो॥60.18॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'न' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

मो

मोक्ष महल के जो रखवाले, खोले प्रभु ने कर्मन ताले।

जिन चरणों में शीश झुकाते, करबद्ध होकर नमन कराते॥60.19॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'मो' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

न्

शान्त भाव धारें हम मन में, ध्यान करें प्रभु अन्तर्मन में।

हाथ जोड़ तुम दर पर आएँ, तीन योग से शीश नवाएँ॥60.20॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'न्' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

त्

नियम सत्य मूर्ति पद धारें, झूठ नहीं मुख से उच्चारें।

भक्ति नाथ दिन-रैन कराएँ, भव बन्धन से मुक्ति पाएँ॥60.21॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'त्' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

य

यह मानव भव सफल बनाएँ, सम्यक् मरण समाधी पाएँ।

जब भी श्वाँस आखिरी आएँ, मंत्र सभी नवकार सुनाएँ॥60.22॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'य' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

जि

जिन भक्ती में चित्त रम जाए, और नहीं कुछ मन को भाए।

सदाचरण प्रिय वाणी में ही, आनन्दित होते सज्जन ही॥60.23॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'जि' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

न

गणधर जिनगुण गान कराते, किन्तु नहीं पूरण कह पाते।

गुरुवर त्रेसठ ऋद्धी धारी, गुरुपद में नित धोक हमारी॥60.24॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'न' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

ती

जिह्वा रटती नाम तिहारा, संकट में प्रभु चरण सहारा।

अशरण जग में शरण न कोई, नाथ बिना कोई मीत न होई॥60.25॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'ती' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

र्थ

सब पदार्थ जाने जिनवर ने, केवलज्ञानी बोधि प्रवर ने।

मिथ्या माया मोह भगाया, तन तज चेतन भाव जगाया॥60.26॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'र्थ' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

क

इस भव वन में कभी न आएँ, आएँ तो प्रभु दर्शन पाएँ।

जिन दर्शन से मंगल होता, कर्म मलों को सहजहि धोता॥60.27॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'क' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

र

मुक्ति रमा के वरने वाले, शान्ति सुधा बरसाने वाले।

जीव मात्र के प्रभु हितकारी, ज्ञान दान दें जिन सुखकारी॥60.28॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'र' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

प्र

प्रभु रत्नत्रय ध्वज लहराते, स्वातम बल जग को दरशाते।

कर्म बैरी अवसान कराया, शाश्वत सिद्ध परम पद पाया॥60.29॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'प्र' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

मा

मार्दव भाव मान को नाशे, भव्य जीव में विनय प्रकाशे।

मानस्तम्भ लख मान गलाया, गौतम वीर शरण में आया॥60.30॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'मा' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

ण

गणनायक कहलाते स्वामी, भव्य हितैषी हैं जगनामी।

वीतराग जिन शासन जय हो, दुष्कर्मों का मेरे क्षय हो॥60.31॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'ण' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

स

पन्द्रह मास रतन बरसाएँ, क्रोड़ सार्द्ध दश नित्य गिराएँ।

कुण्डलपुर वसुधा बड़भागी, वीर अल्पवय हुए विरागी॥60.32॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'स' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

व

गर्व नीच गति में ले जाता, मानी का जीवन दुखदाता।

रावण कौरव-कंस ये तीनों, वंश में अपने ताला दीनो॥60.33॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'व' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

ज्ञ

अज्ञ जीव की दुखद कहानी, विषय भोग में लिप्त हैं प्राणी।

किन्तु पुण्य का उदय हमारा, विद्या गुरु को दिया अहारा॥60.34॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'ज्ञ' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

दे

देव देवियाँ समवशरण में, जय-जयकार कराते नभ में।

जब विहार श्री जिनवर करते, सुरगण स्वर्ण कमल रच देते॥60.35॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'दे' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

व

वचनों से प्रभु को नहीं जानें, अनुभव से योगी पहचानें।

हम तो नाम जाप जिन करते, प्रभु चरणों में शिर को धरते॥60.36॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'व' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

स

मोक्ष मार्ग सबको बतलाते, प्रभु करुणासागर कहलाते।

शिवपथ पर हम भी चल पाएँ, स्वातम को शुद्धात्म बनाएँ॥60.37॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'स' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

क

देहातम को भिन्न कराएँ, सिद्धालय जाकर पधराएँ।

उनकी परिणति उनमें ही हो, व्ययोत्पाद-ध्रौव्य भी हो॥60.38॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'क' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

ला

कला बहत्तर, पुरुष कहाँ, चौंसठ नारी की बतलाएँ।

कला दोय सरदार रही हैं, जीविका-जीणोद्धार कही है॥60.39॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'ला' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

त

आर्त-रौद्र दोनों दुखदाई, धर्म ध्यान ही है सुखदाई।

शुक्ल ध्यान तो हो नहीं सकता, पंचम काल में नहीं पात्रता॥60.40॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'त' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

वि

नहीं प्रभावित पर पदार्थ से, बाधित भी नहीं होय किसी से।

करें सदा चारों आराधना, मुनि जीवन की यही साधना॥60.41॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'वि' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

ना

सदा काल यहाँ रहा ना कोई, सिद्ध दशा अविनाशी होई।

हम प्रमाद वश भटक रहे हैं, मोह-ममता में अटक रहे हैं॥60.42॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'ना' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

श

शरण लहें गुरु जिन-आगम की, जिऐं जिन्दगी सहजानन्द की।

करें अर्चना भक्ति भाव से, सरल रहें अपने स्वभाव से॥60.43॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'श' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

का

धन का अर्जन नहीं तोष दे, त्याग पाप का ही सन्तोष दे।

प्रभु भक्ति बिन मुक्ति नहीं है, निर्मलता बिन तृप्ति नहीं है॥60.44॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'का' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

य

भय-विस्मय ये दोष कहाँ, निर्भयता गुण आत्म बताएँ।

प्रभु पूजा से मिलती साता, जिन भक्ती ही मुक्ति प्रदाता॥60.45॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'य' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

तु

तुम बिन प्रभु व्याकुलता पावें, जैसे जल बिन मीन रहावें।

जो जन शरण नाथ की पाते, वे जग में निर्भय हो जाते॥60.46॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'तु' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

भू

लभ्यं नहीं दुर्लभ शिवराहें, लेकिन पाना सब ही चाहें।

जो प्रभु का अनुगमन कराते, वे ही उत्तम निजपद-पाते॥60.47॥

ॐ ह्रीं अर्हं वर्तमानशासननायक 'भू' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

यं

यं शिव ध्याते शैव कहाते, वेदान्ती ब्रह्मा को ध्याते!

जो अर्हत् की भक्ति करावें, जिनशासन रत जैन कहावें॥60.48॥

ॐ ह्रीं अर्हं वर्तमानशासननायक 'यं' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

न

भूत भावि वर्तमान कहाए, काल भेद तीनों बतलाए।

लेकिन सिद्ध सदाजीवित हों, नहीं काल से भी बाधित हों॥60.49॥

ॐ ह्रीं अर्हं वर्तमानशासननायक 'न' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

मो

अपना मुख संसार से मोड़ें, भवि जिनवर से नाता जोड़ें।

राग द्वेष मोह-माया त्यागें, त्याग-तपस्या में अनुरागें॥60.50॥

ॐ ह्रीं अर्हं वर्तमानशासननायक 'मो' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

न

जिन भक्ति में चित्त लगावे, तो फिर मन को कुछ नहीं भावे।

देखे रागी देव अनेका, वीतराग लख हुआ विवेका॥60.51॥

ॐ ह्रीं अर्हं वर्तमानशासननायक 'न' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

त

भक्त करे मन अर्पण प्रभुको, करे समर्पण सब कुछ विभुको।

कल्पतरु फल सुरगण लाते, मानव प्रासुक द्रव्य चढ़ाते॥60.52॥

ॐ ह्रीं अर्हं वर्तमानशासननायक 'त' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

मु

मुझ पर स्वामी कृपा करा दो, भक्ति भाव हिरदय में भरा दो।

भोगों में आसक्ति बनी है, लेकिन आतम लगन घनी है॥60.53॥

ॐ ह्रीं अर्हं वर्तमानशासननायक 'मु' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

नी

निर्मल नीर-क्षीर संग लाएँ, राजहंस को उसे पिलाएँ।

परम विवेकी हंस कहाता, नीर छोड़ कर क्षीर लहाता॥60.54॥

ॐ ह्रीं अर्हं वर्तमानशासननायक 'नी' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

न

लौकान्तिक सुरगण हैं आते, अनुमोदन वैराग्य कराते।

तपकल्याणक में ही आएँ, निज मुक्ति की भावना भाएं॥60.55॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'न' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

द्र

इन्द्र नरेन्द्र सभी आते हैं, प्रभु चरणों में झुक जाते हैं।

"आप हि पूज्य जिनेश्वर हो, भव्यों के हृदयेश्वर हो"॥60.56॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'द्र' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

ग

गमन करें अष्टम वसुधा को, मेटें भव भव भरमन दुख को।

एक समय ऋजु गति से जाएँ, सिद्ध शिला पर जा पधराएँ॥60.57॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'ग' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

णे

गणधर गणी गणेश कहाते, निशदिन प्रभुपद वासकराते।

भामण्डल की प्रभा प्रकाशे, भव्य जनों की शंका नाशे॥60.58॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'णे' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

शि

शिव नगरी में जो भवि जाते, स्वातम पर वे राज कराते।

निज स्वभाव में मगन रहें, चेतन की ही लगन रहे॥60.59॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'शि' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

ता

वक्ता नाथ प्रमुख कहलाते, दिव्यध्वनि भवि हेत खिराते।

सुर-नर-पशु भी सुन हर्षाएँ, अपनी भाव विशुद्धि बढ़ाएं॥60.60॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'ता' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

य

मुनि प्रणम्य को पल पल ध्याएँ, चरणों में नित नमन कराएँ।

ध्यान आपका जो धर लेता, पाप नाश अपने कर लेता॥60.61॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'य' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

पूर्णार्घ्य

सिद्धों के भूषण प्रभो, अन्तिम जिन अतिवीर।

रहितकाम केवलि नमन, हरो जगत की पीर ॥60॥

ॐ ह्रीं अन्य प्रभाव निवारणाय अहं महाबीजाक्षरसहिताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः
पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।



जल भय निवारक स्तुति

ते तीर्थपुण्यजलमञ्जनशुद्धभूता,
भव्याः पुरा समभवन् कलिपापपूताः।
नाना-नयोपनय-सप्त-विभङ्ग-भङ्गे,
तीर्थे निमञ्जनविधेः किमु वञ्चितः स्याम् ॥61॥

(छन्द विष्णुपद)

ते

तेजस्वी तीर्थकर का मुख चारों दिशि दिखता।

चतुरानन दिखते हैं प्रभु पर आनन इक होता ॥61.1॥

ॐ ह्रीं अर्हं वर्तमानशासननायक 'ते' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...

ती

जिन भक्ती से मुक्ति मिलती सब विकल्प हरते।

भक्ति की शक्ति से ही भवि पुरुषारथ करते ॥61.2॥

ॐ ह्रीं अर्हं वर्तमानशासननायक 'ती' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...

र्थ

स्वार्थतजा परमारथ के लिए निज में लीन हुए।

धन्य धन्य वहाँ सिद्धशिला पर वीरासीन हुए ॥61.3॥

ॐ ह्रीं अर्हं वर्तमानशासननायक 'र्थ' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...

पु

निश्चय से तो पुण्य भाव ही भव भव भोग दिलाए।

यों तो जीव अनादि से ही जामन मरण कराए ॥61.4॥

ॐ ह्रीं अर्हं वर्तमानशासननायक 'पु' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...

ण्

गण्य गुणाकर अन्तर्यामी घट घट के स्वामी।

हमको भी प्रभु पार लगादो तुम त्रिभुवन नामी ॥61.5॥

ॐ ह्रीं अर्हं वर्तमानशासननायक 'ण्' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...

य

नित्य सुशोभित्र निर्मल शिवथल होता सिद्धों का।

ज्ञान सिंधु लहराता रहता पावन भावों का ॥61.6॥

ॐ ह्रीं अर्हं वर्तमानशासननायक 'य' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...

ज

जल से भिन्न कमल सम जग में रहते हैं प्रभुजी।

पुण्य फलों का निरासक्त हो भोग करें विभु जी॥61.7॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'ज' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

ल

स्वातम अमल अरूप जानते तन को मान पराया।

इसी भेद विज्ञान के बल से निजानन्द को पाया॥61.8॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'ल' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

म

कोटि सूर्य सम तेज नाथ का समवशरण में हो।

भामण्डल आभा में भवि को ज्ञान सप्त भव हो॥61.9॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'म' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

ञ

अञ्जन आँखों में डालें तो सदा स्वस्थ होते।

दृष्टि तेज हो सुन्दर लगते मन को भी मोहते॥61.10॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'ञ' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

न

त्रिभुवन तिलक शिशु जिन को इन्द्राणी तिलक लगाएँ।

नीराजन की शोभा अनुपम सुरगण देख लजाएँ॥61.11॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'न' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

शु

शुक्ति में मोती सम शिशु जिन रहते मात उदर में।

पद्मासन में तिष्ठें ऐसे जैसे ध्यान अटल में॥61.12॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'शु' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

द्ध

आतम शुद्ध हुआ प्रभुका जब आठो कर्म विनाशे।

किया आत्म पुरुषार्थ ज्ञान की ज्योति दिव्य प्रकाशे॥61.13॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'द्ध' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

भू

भूतकाल में हुए अनन्तों हों भविष्य भगवन्ता।

वर्तमान में प्रथम आदिजिन अन्तिम वीर जिनन्दा॥61.14॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'भू' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

ता

नहीं भुला सकता वीरा के उपकारों को कोई।

जियो और जीने दो सबको सार जगत का होई॥61.15॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'ता' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

भ

भक्त प्रार्थना करे प्रभु से पाने को शिव द्वारा।

चरण शरण में ले लो भगवन करो वेग भव पारा॥61.16॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'भ' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

व्

व्यक्त किए आतम गुण जिसने भव से पार हुआ।

महामंत्र नवकार जपन से आत्मोद्धार हुआ॥61.17॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'व्' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

याः

त्रैलोक्याः सुखदाता भगवन भाग्य विधाता हैं।

भक्तों के मन मन्दिर निवसें मोक्ष प्रदाता हैं॥61.18॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'याः' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

पु

पुण्यवान वे ही हैं जग में जो चारित्र धरें।

एक एक सोपान चढ़ें फिर आतम सौख्य वरें॥61.19॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'पु' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

रा

मिला सहारा उन भव्यों को जिनपद पद्मों का।

शिवपथ पर जो चलें निरन्तर आश्रय लें प्रभु का॥61.20॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'रा' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

स

सहस नयन कर देखें सुरपति शिशु जिन के मुख को।

अपलक निरखे हृदय प्रीतिभर प्रभु के सन्मुख हो॥61.21॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'स' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

म

मन्दबुद्धि मैं पाने आया ज्ञान किरण प्रभु से।

महा सुशोभित होते प्रभु तो ज्ञान सु केवल से॥61.22॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'म' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

भ

भक्ति में हो लीन प्रभु की दुख नहीं हो संसारी।

लोहा अगनी में तप लगता अग्नि पिंड ज्यों भारी॥61.23॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'भ' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

व

मोह वशी हो इष्ट वियोग में सबजन हैं रोते।

दुख में कोई साथ न देता सुख में सब होते॥61.24॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'व' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

न्

जिनान् चौबिस पूजें हम सब भक्ति भाव धर के।

जीव मात्र का सुख चाहें शुभ भावों में भर के॥61.25॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'न्' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

क

कहर पड़े जब दुष्कर्मों का जीव तड़पता है।

हाय-हाय करके रोता कुछ वश नहीं चलता है॥61.26॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'क' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

लि

लिप्त हुए जो विषय भोग में नरकों में गिरते।

जग तन भोगों से विरक्त जो आत्म ध्यान करते॥61.27॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'लि' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

पा

सात तत्व में पाप पुण्य मिल नव पदार्थ जानो।

काल-द्रव्य-लेश्या षट्पायिक जीवों को मानो॥61.28॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'पा' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

प

कर्ता बनकर पर द्रव्यों का दुःख सदा पाया।

वर्धमान के पादाम्बुज में समकित सुमन खिलाया॥61.29॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'प' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

पू

पूर्व भवों में पाप किए जो आज उदय में आए।

स्वाध्याय में जिन वचनों ने सोते भाग्य जगाए॥61.30॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'पू' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

ताः ये संपूजिताः जिन सुरनर पशु आदिक सबसे।
वे श्री वर्धमान वन्दित हैं गणी-साधु-हम से॥61.31॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'ताः' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

ना नारी को सम्मान दिलाया प्रभु वीर ने ही।
धर्म धरे अधिकार दिलाया आज्ञादी भी दी॥61.32॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'ना' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

ना आदिनाथ ने कर्मभूमि को जब आरम्भ किया।
षट् विधाएँ सिखा सभी को ज्ञान का दान दिया॥61.33॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'ना' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

न नगन दिगम्बर रूप साधु का बालक सम सोहे।
अविकारी की सुन्दरता ही जग जन मन मोहें॥61.34॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'न' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

यो तीन योग से नमें नाथ भव रोग भगाने को।
जिन भक्ती ही एक सहारा कर्म नशाने को॥61.35॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'यो' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

प परम पंच परमेष्ठि प्रभु को नित वन्दन करना।
पांचों पद के पैतिस अक्षर सदा हृदय धरना॥61.36॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'प' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

न भक्त और भगवान का रिश्ता बड़ा अनूठा है।
भक्ति का ये भाव ही सच्चा जग तो झूठा है॥61.37॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'न' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

य दिव्य सूर्य बन वर्धमान इस वसुधा पर आए।
सर्वोदय का शंखनाद अवनी अम्बर गुंजाए॥61.38॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'य' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

स

समवशरण में जिन प्रभाव से श्रोता आ जाते।

दिव्यध्वनि सुन हृदय धारते व्रत ले हर्षति॥61.39॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'स' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

प्

व्याप्त हुआ है धर्म अहिंसा सारे भारत में।

विद्या-सागर गुरु की महिमा फैल रही जग में॥61.40॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'प्' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

वि

बनना है अविकारी मुझको कोष हूँ अवगुण का।

प्रकटाऊँ मै निज गुण अपने बल हो आतम का॥61.41॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'वि' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

भं

सप्त भंग की उठें तरंगे श्रुत के सागर में।

ज्ञान भरा है जलधि समाना सूत्र की गागर में॥61.42॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'भं' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

ग

हो त्रियोग से मेरा वन्दन वर्धमान जिनको।

हाथ जोड़ कर शीश नवाते परसें चरणन को॥61.43॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'ग' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

भं

भंगोत्पाद ध्रौव्य सत का ही लक्षण कहा गया।

तत्त्व ज्ञान से शान्त-सौम्य हो रखें भाव दया॥61.44॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'भं' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

गे

महामंत्र नवकार के आगे व्यर्थ मंत्र सारे।

णमोकार के उच्चारण से मिलते जगत किनारे॥61.45॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'गे' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

ती

उठती भँवर वहीं पानी में जब कुछ गिर जाता।

उठे ज्वार हिरदय सागर भवि जिनदर्शन पाता॥61.46॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'ती' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

थे

परमार्थे पुरुषार्थ करें तो निजपद मिल जाए।

मोक्ष मार्ग में वीर चरण का आश्रय पा जाए॥61.47॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'थे' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

नि

निकट रहे जो गुरुचरणों में ज्ञान प्यास बुझती।

मिलें दिगम्बर सन्त तो मानो, मुक्ती आस जगती॥61.48॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'नि' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

म

नाम जपूँ जिनवर का निशदिन गहरी श्रद्धा से।

जिनगुण वर्णन हो नहीं सकता केवल शब्दों से॥61.49॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'म' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

ञ

मञ्जन करते हैं दाँतों में, रोग सभी खोते।

दीर्घ काल तक नहीं टूटते, चमकीले होते॥61.50॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'ञ' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

न

अन्तर्मुखी हुआ हूँ भगवन् तेरे चरणों में।

बहिर्मुखी था जब दुख भोगे मैने भव भव में॥61.51॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'न' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

वि

विषय कषायो से विमुक्त हो आतम निधि पावे।

इसीलिए गुरु चरणों में आतम बल प्रकटावे॥61.52॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'वि' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

धेः

प्रभु विधेः से विरत प्रमानो ज्ञान शरीरी हैं।

तन-मन के मालिक बन जाँ मिटती दूरी हैं॥61.53॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'धेः' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

कि

ज्ञान किरण मिल जाए मुझे भी पूर्ण ज्ञान धारी।

आप परम दाता हो स्वामी मैं जिन भक्त पुजारी॥61.54॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'कि' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

मु

मुक्ती की चाहत तो है प्रभु युक्ति नहीं मिलती।

चाह दाह मिट जाए भगवन सुन लो यह विनती॥61.55॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'मु' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

वं

वंदन शतशत त्रिशला नंदन बेड़ा पार लगाओ।

अभिनंदन है पिता सिद्धारथ प्रभु से हमें मिलाओ॥61.56॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'वं' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

चि

चिन्मय चेतन धारी भगवन शिवपथ दरशाओ।

बुला रहे हैं भक्त भाव से अब मत तरसाओ॥61.57॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'चि' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

तः

अतः हुआ निश्चय अबतो प्रभुपार लगाएँगे।

डूबेंगे मँझधार में तो भी प्रभु ही बचाएँगे॥61.58॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'तः' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

स्

स्वीकारा जिन धर्म को जिसने संकट दूर हुए।

अविनश्वर पद पाया उसने सुख भरपूर हुए॥61.59॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'स्' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

या

जिन चरणों में आया हूँ मैं प्रभु उपकार घना।

भवभव भटका है ये चेतन आतम ज्ञान बिना॥61.60॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'या' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

म्

सौम्य परम रस पीने प्रभुवर तुम दर पर आए।

भटक रहे थे नन्त काल से अब दर्शन पाए॥61.61॥

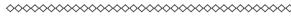
ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'म्' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

पूर्णार्घ्य

पुण्यतीर्थजलद्रुव भवि, शुद्ध; कर्ममलधोय।

सप्तभंग लहरें तिरेँ, हम क्यों वंचित होय ? ॥61॥

ॐ ह्रीं जलभय निवारकाय अर्हं महाबीजाक्षरसहिताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः
पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।



संसार भय तारक स्तुति

बालेऽपि पालक इति प्रतिभासते यो,
यो यौवनेऽपि मदकाम-भटाभिमर्दी।
संसार-सागर-तट-स्थित-पुण्यभाजां,
सिद्धिं प्रपित्सुरभवत् तमहं नमामि ॥62॥

(छन्द अर्द्ध ज्ञानोदय)

बा

बाह्याभ्यन्तर तजे परिग्रह, आतम शुद्ध कराने को।

ध्यान धारते मुनिजन निशदिन, कर्म कलंक नशाने को ॥62.1॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'बा' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...

ले

कर्म लेप परिहार करें मुनि, सहज निजानन्द को पाएँ।

हम भी प्रभु के पादाम्बुज में, स्वानुभूति को उपजाएँ ॥62.2॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'ले' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...

पि

पिला रहे प्रभु निज भक्तों को, जिन वचनामृत की धारा।

सभी जीव आनन्दित होते, सुन कर वाणी सुखकारा ॥62.3॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'पि' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...

पा

पाई शरण आपकी जिसने, कर्म मलों से मुक्त हुआ।

त्याग-तपस्या के द्वारा वह, आवागमन विमुक्त हुआ ॥62.4॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'पा' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...

ल

तप बलसे कर्मों की सेना, प्रभु ने दूर भगाई है।

समवशरण अरहन्त की शोभा, मेरे हृदय समाई है ॥62.5॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'ल' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...

क

गान कर रहे ऋषिमुनि सब ही, वर्धमान की महिमा का।

उल्लेखित है शास्त्रों में भी, पार नहीं गुण गरिमा का ॥62.6॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'क' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...

इ

इच्छाओं को कर विनष्टमुनि, हो जाते निष्काम स्वयं ही।

सहें परीषह साम्य भाव धर, हो अकाम निर्जरा भी तबही॥62.7॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'इ' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

ति

भक्ति आपकी जो भवि करते, उनको पार उतार रहे।

हमको भी भगवन मुक्ति दो, अब संक्लेश न जात सहे॥62.8॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'ति' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

प्र

जिनकी प्रतिमा इतनी सुन्दर, वे प्रभु कितने सुन्दर हो।

थे उतने ही तन परमाणू, इसीलिए प्रभु अनुपम हो॥62.9॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'प्र' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

ति

योगाविरति प्रमाद कषाया, मिथ्या हेतु बन्ध बताए।

यथा शक्ति संयम स्वीकारें, नहीं होय-श्रद्धान कराए॥62.10॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'ति' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

भा

भारी पीड़ा होती जग में, सहते सदा ही अज्ञानी।

शरण में आ जाएँ जिनवर की, सुखी होय वे भी ज्ञानी॥62.11॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'भा' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

स

महा महोत्सव में हों दर्शन, बड़े बाबा-छोटे बाबा के

लगा मुझे मैं दिवि से देखता, दुर्लभ दृश्य अनोखे थे॥62.12॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'स' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

ते

ज्ञानी कहते विद्या गुरु हैं, सच्चे साधक इस युग के।

चतुर्थ काल जैसी है चर्या, ज्ञायक हैं निज में निज के॥62.13॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'ते' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

यो

दर्शन योग्य नहीं है कोई, नाथ आपके सिवा यहाँ।

ऊब चुका हूँ इस जग से मैं, शरण आपकी मिले कहाँ॥62.14॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'यो' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

यो

पुण्योदय से घर बैठे ही, गुरुवर का आशीष मिला।

करूँ विभावों का अभाव मैं, ऐसा अवसर आज मिला॥62.15॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'यो' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

यौ

भर यौवन में तप कोधारा, वर्धमान जिन स्वामी ने।

द्वादश वर्ष तपस्या कर के, घाति कर्म नाशे प्रभु ने॥62.16॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'यौ' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

व

तवचरणों में झुकता जो प्रभु! चारित धन को पा जाता।

सदाचरण का पालन करके, पात्र मुक्ति का हो जाता॥62.17॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'व' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

ने

जीना मरना किया है मैंने, नंत काल से जीवन में।

प्रभु चरणों को पकड़ लिया है, जाने को सिद्धालय में॥62.18॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'ने' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

पि

काय पिटारा घृणित मलों का, नव द्वारों से बहता है।

परमौदारिक देह आपकी, सुख का झरना झरता है॥62.19॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'पि' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

म

ज्ञान मनःपर्यय होता झट, तीर्थकर दीक्षा लेते।

घाति कर्म का नाश करें तो, ज्ञान सु केवल पा लेते॥62.20॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'म' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

द

रागी देवों का दर तज कर, शरण प्रभुकी हम आए।

और कहीं विज्ञान न ऐसा, वीतराग ही मन भाए॥62.21॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'द' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

का

गुरु चरणों का आश्रय लेकर, बोधि साधना कर पावें।

जिन भक्ति की नाव में बैठें, सहज भवोदधि तिर जावे॥62.22॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'का' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

म

मनवच तन से वर्धमान को, तीनों काल नमन करते!

शास्त्रों में उपयोग रहे बस, तपन कषायों की हरते॥62.23॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'म' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...

भ

इस भव बन में भटक भटक कर, भक्त आपके थके प्रभो।

अपने वचनों की औषधि से, रोग निवारण करो विभो॥62.24॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'भ' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...

टा

मोह मिटा कर खुश होऊं मैं, रत्नत्रय निधि पाने को।

पद चिहनों को देख प्रभु के, चलना है जिनपथ मुझको॥62.25॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'टा' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...

भि

होय सुशोभित समवशरण में, वर्धमान जिन उन्नत हैं।

गणधर सुर नर पश्चादिक सब, प्रभुचरणों में ही नत है॥62.26॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'भि' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...

म

सूक्ष्म मार्ग है शिवपथ का जो, दृष्टि अगोचर रहता है।

जो श्रद्धा से चलते जाते, पथ मिलता ही रहता है॥62.27॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'म' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...

दी

सर्दी गर्मी जन्म मरणादिक, दोष अठारह रहित रहें।

छियालीस गुण मंडित भगवन, निज में ही बस मगन रहें॥62.28॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'दी' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...

सं

संगति मिली नहीं साधू की, अतः चरित नहीं धार सके।

अब तो भाव प्रबल उठते पर, काय वृद्ध से कदम थके॥62.29॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'सं' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...

सा

उत्साह वर्धन करें न स्वामी, राग नहीं किंचित मन में।

हतोत्साह भी नहीं कराते, द्वेष लेश नहीं जीवन में॥62.30॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'सा' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...

र

नहीं परिग्रह रखता है जो, वही प्रभुका अनुगामी।

जग में भी सम्मानितः होता, होय अन्त में शिवगामी॥62.31॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'र' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

सा

पूर्ण ज्ञान सागर लहराता, वर्धमान के अन्तर में।

गुण पाने को वन्दन करते, झुक जाते प्रभु चरणन में॥62.32॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'सा' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

ग

जग के वैभव को नहीं चाहें, शुभ भावों से ध्यान धरें।

अवगाहन हो प्रभु भक्ती सर, भाव अशुभ अवसान करें॥62.33॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'ग' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

र

हार गए अन्य मतावलम्बी, स्याद्वाद मत के आगे।

ध्वनि सुनें ज्यों वन मयूर की, चन्दन तरु से अहि भागे॥62.34॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'र' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

त

जब भी मैं तन्मय हो जाता, वीर प्रभु के वचनों में।

कर्म असाता भी सातामय, परिणत हो जाता पल में॥62.35॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'त' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

ट

दुनिया भर के झंझट होते, छोटे से इस जीवन में।

इसीलिए साधु सब तजते, आनन्दित होकर मन में॥62.36॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'ट' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

स्

स्वामी संज्ञा से शोभित प्रभु, यथाजात मुद्रा धारें।

आत्म गुणों का चिंतन करते, मन में समता स्वीकारें॥62.37॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'स्' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

थि

थिर हो जाए जीवन नैया, दुष्कर्मों से डोल रही।

जिनवाणी माँ तुम्ही खिवैया, अन्तर्मन से बोल रही॥62.38॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'थि' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

त

विकसित हो जाता उर पुष्कर, वर्धमान जिन पूजा से।

गुण गण की जयमाला पढ़कर, भर जाता मन श्रद्धा से॥62.39॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'त' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

पु

मोह कर्म रिपु महा भयंकर, तत्त्व ज्ञान नहीं होने दें।

मोह नाश मैं सब सुख पाऊँ, कर्म कालिमा धोने दे॥62.40॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'पु' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

ण्

दण्ड दे रहे कर्म मुझे मैं, नन्त भवों से व्याकुल हूँ।

जिन वचनों के दीपालोक में, अब मैं शान्त निराकुल हूँ॥62.41॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'ण्' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

य

न्याय करो अब दीन दयालु, कर्म बहुत दुख देते हैं।

भाग्य संवारें प्रभु भक्तों के, अपनी शरण में लेते हैं॥62.42॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'य' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

भा

मनोभावना भगवन मेरी, निर्मल चित्त निरामय हो।

करुणा स्रोत बहे जीवों पर, वात्सल्य निश्छल उर हो॥62.43॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'भा' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

जां

शरीरभाजां पाप नशाते, संचित जो पल भर में ही।

गहन तिमिर छा जाए भ्रमर सम, नशे दिवाकर आते ही॥62.44॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'जां' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

सि

विकसित भव्य कमल हो जाते, जिनवर रवि के दर्शन से।

यों ही सबके तन मन हरषे, त्रिभुवन पति की पूजन से॥62.45॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'सि' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

द्धि

ऋद्धिं सिद्धिं वृद्धि पाएँ गुरु, घोर तपों के द्वारा ही।

आत्म साधना में रत रहते, पर से कुछ भी चाह नहीं॥62.46॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'द्धि' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

प्र

प्रत्युत्पन्न मति धारक ही, न्याय ग्रंथ अध्ययन करें।

तर्क कसौटी पर कस कर ही, समाधान दे संशय हरेँ॥62.47॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'प्र' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

पि

पिला रहे हैं भक्तों को प्रभु, जिनवाणी पावन रस धार।

भव जल पतितों पर हे स्वामी, किया आपने बहु-उपकार॥62.48॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'पि' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

त्

'सत्यमेव जयते' बतलाया, वर्धमान जिन ने सबको।

पाँचों पाप से सदा बचाया, पंच-अणुव्रत दे हम को॥62.49॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'त्' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

सु

सुहित करें प्रभु सर्व लोक का, रोग-शोक-संकट हरते।

हम भी उत्तम निज पद पाने, धर्म ध्यान में ही रमते॥62.50॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'सु' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

र

रत्नत्रय व्रत धारण कीने, तब स्वातम का ज्ञान हुआ।

तीन लोक की तजी सम्पदा, प्रभु ने आतम ध्यान किया॥62.51॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'र' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

भ

भव दुख दूर करा दो स्वामी, भटक भटक कर के आएँ।

आप ही एक सहारा हो मम, विघ्न - उपद्रव नश जाएँ॥62.52॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'भ' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

व

भगवन मम मन मन्दिर होवे, उर वेदी प्रभु पधराऊँ।

पर पदार्थ से प्रीत हटाकर, स्वातम में ही रम जाऊँ॥62.53॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'व' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

त्

जगत् सिंधु का तट पाया है, संयम नौका पर चढ़कर।

अब चरित्र की होय पूर्णता, शुभ भावों में ही भर कर॥62.54॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'त्' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

आत्म ज्ञान प्रकाशा प्रभु ने, संयम धर्माराधन से।

केवल दिनकर को प्रकटाया, परमार्थिक पुरुषारथ से॥62.55॥

ॐ ह्रीं अर्हं वर्तमानशासननायक 'त' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...

मध्य लोक में रहते हैं हम, तुम लोकाग्र शिखर वासी।

जिन चरणों में नत शिर बैठे, पाने को पद अविनाशी॥62.56॥

ॐ ह्रीं अर्हं वर्तमानशासननायक 'म' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...

अहं एक-निश्चय से शुद्ध हूँ, ज्ञाता-दृष्टा सदा अरूप।

नहीं यहाँ परमाणु मात्र भय, केवल ज्योति दिव्य अनूप॥62.57॥

ॐ ह्रीं अर्हं वर्तमानशासननायक 'हं' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...

गर्जन हो ज्यों मेघ ध्वनि का, प्रभु की दिव्यध्वनि खिरती।

सर्व अमंगल होय दूर जग, अन्तर्मन पावन करती॥62.58॥

ॐ ह्रीं अर्हं वर्तमानशासननायक 'न' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...

वर्तमान के अन्तिम जिन हो, तीन लोक तुम को पूजें।

मन वच तन से करी साधना, जिन प्रभाव भव-दुख छूटें ॥62.59॥

ॐ ह्रीं अर्हं वर्तमानशासननायक 'मा' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...

मिली ना अब तक रत्नत्रय निधि, मोह निशा में भटक रहा।

कैसे भगवन मोह नशाऊँ, पर-ममता में अटक रहा॥62.60॥

ॐ ह्रीं अर्हं वर्तमानशासनायक 'मि' बीजाक्षरसंयक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...

पूणाईर्य

बालपने पालन करें, युवामदन मद चूर।

भवदधिभव्यतिरायजो, नमनभक्तिउर-पूर ॥62॥

ॐ ह्रीं संसारभय निवारकाय अर्ह महाबीजाक्षरसहिताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः
पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

A horizontal decorative line consisting of a repeating pattern of small diamonds or lozenges.

उत्तम शरण दायक स्तुति

लोकोत्तमोऽसि जगदेकशरण्यभूतः,
श्रेयान् त्वमेव भवतारकमुख्यपोतः।
ध्यानेऽपि चिन्तनमतौ सुकथा-प्रसङ्गे,
त्वां संस्मरामि विनमामि च चर्चयामि॥63॥

(छन्द दोहा)

लो

लोक शिखर पर राजते, तिलक रूप भगवान।

श्रद्धा से पूजें प्रभो, भविजन को सुख दान॥63.1॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'लो' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...

को

जिनवच को धारें हृदय, जो भी मेधावान।

निश्चित ही कल्याण हो, अन्त में हो निर्वाण॥63.2॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'को' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...

त्त

उत्तम दशलक्षण धरम, धारें श्री मुनिराय।

मुनिवर के तप तेज से, जग जयकार कराय॥63.3॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'त्त' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...

मो

मोक्ष राह पर चल रहे, अब भी साधू-सन्त।

यथाख्यात चारित्र ले, ध्यावें वीर जिनन्द॥63.4॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'मो' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...

सि

सिद्ध जगत सम्राट हैं, मोक्ष पुरी के भूप।

सुख अनन्त को भोगते, वसु गुण धरें अनूप॥63.5॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'सि' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...

ज

रहें अटल निजध्यान में, गए कर्म सब हार।

करें वीर जिन मोह पर, ध्यान शुक्ल का वार॥63.6॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'ज' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...

ग

गहरे स्वातम जल उतर, करते भवि निज ध्यान।

मुक्ति हेत पुरुषार्थ कर, पहुँचे शिवपुर थान॥63.7॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'ग' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

दे

वर्धमान जिनदेव ने, किए कर्म चकचूर।

भवाभाव कर हो गए, सुभट जनों में शूर॥63.8॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'दे' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

क

सुरशिल्पी रचना करे, समवशरण सुखकार।

अधर सिंहासन सोहते, खिरे जिन ध्वनि सार॥63.9॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'क' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

श

वे जिनेश विचरें धरा, निर्ममत्व के साथ,

जीव हुआ मारीचि का, सकल जगत का नाथ॥63.10॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'श' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

र

धनकुबेर रचना करे, अर्द्ध निमिष के माँहि।

समवशरण में जो रहे, भूख प्यास भय नाहि॥63.11॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'र' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

ण्

करें पुण्य का संचरण, भवि स्वाध्याय कराय।

व्रत - संयम से मेटते, हिंसा - पाप - कषाय॥63.12॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'ण्' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

य

नयन तृप्त नहिं हों प्रभु, अपलक लखूँ जिनेश,

सहस नेत्र करके सुधर्म, निरखें नाथ महेश॥63.13॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'य' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

भू

भूषण हो प्रभु लोक के, जन जन तारणहार।

वीतराग सर्वज्ञ हितू, किया जगत उपकार॥63.14॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'भू' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

तः स्वान्तः सुखाय है कृति, भविजन को हितकार,
कानों में मिश्री घुले, रचना जन मन हार॥63.15॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'तः' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

श्रे निःश्रेयस वैभव मिले, जग से लें मुख मोड़।
होता अभ्युदय स्वयं, प्रभु से नाता जोड़॥63.16॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'श्रे' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

या जड़ धन की तो बात क्या, तप से हों भगवान।
पढ़े स्तोत्र दरिद्र भी, हो जाए धनवान॥63.17॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'या' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

न् जो भी भव्य पुमान् हो, संयम रथ आरूढ।
बोध गम्य होवे सहज, ज्ञान ग्रंथ का गूढ़॥63.18॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'न्' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

त् सत्य ज्ञान से हो गया, कर्म काण्ड निर्धार।
दुष्कर्मों को त्याग कर, हो जावें अविकार॥63.19॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'त्' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

व वन्दन हो वर्धमान को, हाथ जोड़ शिर नाय।
मम - उपयोग निज में रहें, अरज यही जिनराय॥63.20॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'व' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

मे जिस मे प्रभुका नाम हो, भजन करूँ दिन रात।
नाम भक्ति सर डूब कर, गाऊँ गुण-जिननाथ॥63.21॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'मे' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

व दोष नहीं लवलेश है, वीर गुणों का कोष।
निर्निमेष निरखें प्रभो, होय हृदय को तोष॥63.22॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'व' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

भ

अशुभ भाव नहीं हो कदा, यतन करूँ दिन रैन,
मगन रहूँ शुभ भाव में, दें जिनवर सुख चैन॥63.23॥
ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'भ' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...

व

मोह नाग विष वमन से, होवे उज्ज्वल वंश।
नाग दमनि जिन नाम की, हरे नाग का दंश॥63.24॥
ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'व' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...

ता

वंदन करता भाव से, वन्दित होय सदीव।
पूज्य बने पूजा करे, हरता मोह अतीव॥63.25॥
ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'ता' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...

र

रहित होय तरु शोक से, सो अशोक कहलाय।
समवशरण जो भी गया, वीतशोक हो जाय॥63.26॥
ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'र' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...

क

भव भव में दुख भोग कर, आया प्रभु के द्वार।
ठहर गया प्रभु शरण में, युगपद जिनवर सार॥63.27॥
ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'क' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...

मु

चढे मुझे प्रभु रंग बस, नहीं चहे कोई रंग।
त्याग करूँ सब संग का, हो जाऊँ निः संग॥63.28॥
ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'मु' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...

ख

ख्याति नाम के कारणे, करते हैं जो दान।
इस भव में सम्मान हो, पर भव में हो ज्ञान॥63.29॥
ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'ख' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...

य

जिन शासन को पाय कर, हर्षित होवे आत्म।
शरण बिना जिनराज की, होय नहीं शुद्धात्म॥63.30॥
ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'य' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...

पो

तपोगुणी मुनिराज जी, धरें प्रभु का ध्यान।

पल भर में ही कर सकें, करमों का अवसान॥63.31॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'पो' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

तः

स्वतः करें पुरुषार्थ जिन, पहुँचे शिवपुर थान।

जयकारा गूँजे जगत, जयवन्तो गुणखान॥63.32॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'तः' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

ध्

आत्मध्यान से ही गुरु, करें कर्म संहार।

मन वच तन बल से करें, मोह कर्म पर वार॥63.33॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'ध्' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

या

काया रहित ही सिद्ध हो, सदा सुखी भगवान।

अजर अमर अविकार हों, किया आत्म कल्याण॥63.34॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'या' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

ने

भव अनेक के पुण्य से, मिले मुझे मुनिराज।

गुरु प्रणम्य आशीष से, जगी चेतना आज॥63.35॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'ने' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

पि

ज्ञान पिपासु हूँ प्रभो, पाना है शिव द्वार।

गुरु चरणाश्रय अब मिला, त्यागे सभी विकार॥63.36॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'पि' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

चि

चित्स्वरूप में लीन जिन, मुक्त दशा से पूर्व।

करें शुद्ध स्वातम-धरें, ध्यान जु शुक्ल अपूर्व॥63.37॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'चि' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

न्

कान्ति वपु वर्धमान की, अनुपम शोभावान।

चरण शरण में लीजिए, सन्मति करुणावान॥63.38॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'न्' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

त

मिला नहीं अब तक मुझे, स्वातम का भी ज्ञान।

निजसुख पाने आ गया, दया करो भगवान॥63.39॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'त' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

न

ध्यानधरे नित नाथ का, बड़े बड़े मतिमान।

निजाधीन सुख के लिए, करें कर्म की हान॥63.40॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'न' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

म

जन्म मरण कर थक गए, आए प्रभु के पास।

घबराए संसार से, शिवपुर चहें निवास॥63.41॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'म' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

तौ

तौ पादौ मम हृदय में, दीपक सम भगवान।

घोर दुःख अधियार में, करें प्रकाश महान॥63.42॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'तौ' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

सु

निजाधीन सुख के धनी, जिनवर परम पुनीत।

पर पदार्थ से हैं विरत, कहें स्वात्मा मीत॥63.43॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'सु' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

क

कर विहार प्रभु आ रहे, देव करें जयकार।

दुन्दुभि घोषित कर रहा, करो आत्म उद्धार॥63.44॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'क' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

था

कथा कहूँ क्या नाथ मैं, जग में दुःख अपार।

शरण न कोई लोक में, कैसे हो भव पार॥63.45॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'था' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

प्र

प्रतिपल मंगलभावना, रखते श्री मुनिराय।

जिन लिंग दृष्टव्य सदा, ऐसा यतन कराय॥63.46॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'प्र' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

सं

तट पाया संसार का, पहुँच गए भव तीर।

युग युग जयवन्तो प्रभु, वर्धमान महावीर॥63.47॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'सं' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

गे

भोगे सौख्य अनन्त जो, करते शिवपुर राज।

'नमः सिद्ध' कह कर सदा, दीक्षित हों जिनराज॥63.48॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'गे' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

त्

हो त्वमेव सर्वस्व मम, मात पिता अरु भ्रात।

मेरे प्राणाधार है, वर्धमान जिननाथ॥63.49॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'त्' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

वां

वांछित फल दातार हैं, तीर्थकर गुणखान।

लोक शिखर पर राजते, परम सिद्ध भगवान॥63.50॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'वां' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

सं

संवर करलें कर्म का, तो आस्रव रुक जाय।

मोक्ष दिलाए निर्जरा, अवीपाक समझाय॥63.51॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'सं' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

स्

स्वीकारो मेरा नमन, मेरे पालनहार।

वर्धमान आदर्श मम, मोक्ष गमन आधार॥63.52॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'स्' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

म

मनचाहा होता नही, फिर भी सबकी चाह।

भक्तों की ये भावना, चलें मोक्ष की राह॥63.53॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'म' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

रा

लहराया ध्वज जैन मत, वर्धमान ने आय।

सिद्धलोक में वास अब, जय जय जय जिनराय॥63.54॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'रा' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

मि

परिणामिक भाव जिन, अनुभवते हैं स्वात्म।

धन्य वीर पुरुषार्थ से, हुए स्वयं परमात्म॥63.55॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'मि' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

वि

जो विभाव का क्षय करें, वह ही है बलवान।

राग-रंग से दूर हो, त्रिभुवन माँहि महान॥63.56॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'वि' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

न

निर्धन-धनी समान हैं, वीर आपके द्वारा।

राव-रंक नमते सभी, प्रभु पत राखन हार॥63.57॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'न' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

मा

महिमा अपरम्पार प्रभु, सूरज कोटि लजाय।

बहे साम्य रसधार जिन, वचन महा सुखदाय॥63.58॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'मा' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

मि

मिले नहीं थे सद्गुरु, दुखी रहा दिन-रात।

पुण्योदय से पा लिया, मुनि प्रणम्य का साथ॥63.59॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'मि' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

च

वीर चरण में शीश धर, जोड़ें दोनों हाथ।

लघुता से प्रभुता मिले, कहते दीनानाथ॥63.60॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'च' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

च

चांद्री चर्या कर गए, वीतराग जिनराज।

सिंह वृत्ति विचरण करें, अब भी श्री मुनिराज॥63.61॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'च' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

च

करे अर्चना वीर की, मुदित होय मन माँहि।

पाप ताप सब नष्ट हों, शांति हृदय समाहि॥63.62॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'च' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

माया-मद से दूर हैं, संत शिरोमणि ख्यात।

विद्या सिंधु पदकमल में, अवनत है मम माथ॥63.63॥

ॐ ह्रीं अर्हं वर्तमानशासननायक 'या' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...

मिथ्या मती जाँँ नहीं, समवशरण सुखकार।

जो जाँँ समकित मिले, हो जाँँ भव पार॥63.64॥

ॐ ह्रीं अर्हं वर्तमानशासननायक 'मि' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...

पूणाध्य

शरणभूत लोकोत्तमा, पार उतरने यान।

सुमरणचिंतनमननकर, नमनकरूँ धर ध्यान ॥63॥

ॐ ह्रीं उत्तम शरण प्रदायकाय अर्ह महाबीजाक्षरसहिताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय
नमः पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।



सर्व कार्य सफलतादायक स्तुति

यः संस्तवं प्रकुरुते भुवि भावभक्त्या
संस्थाप्य चित्त-कमले शृणुतेऽत्र चैतम्।
विघ्नं विहत्य सफलीभवतीष्टकार्ये,
ज्ञानं सुखं स लभते क्षणवर्धमानम्॥64॥

(छन्द सोरठा)

यः

करोति कर्त्ता वह, भोक्ता ही भोगे भोग।
करें कर्म निस्पृह, हो अन्तरंग उपयोग॥64.1॥

ॐ ह्रीं अर्हं वर्तमानशासननायक 'यः' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...

सं

संस्कार सिखलाय, आदीनाथ युगादि में।
कुसंस्कार मिटाय, भव भव में भटके जिय॥64.2॥

ॐ ह्रीं अर्हं वर्तमानशासननायक 'सं' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...

स्

स्तुति नाथ कराय, अन्तर्मन पावन करे।
पापहि जाय पलाय, भावि काल उत्तम रहे॥64.3॥

ॐ ह्रीं अर्हं वर्तमानशासननायक 'स्' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...

त

तरणी सम जिनदेव, आश्रय ले भविजन तिरै।
जिन देवाधीदेव, उपकारी हैं लोक के॥64.4॥

ॐ ह्रीं अर्हं वर्तमानशासननायक 'त' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...

वं

वंदनीय जिन जान, चौबीसों जिनराज जी।
कुह छल लोभ जु मान, चारों कषाय है दुखद॥64.5॥

ॐ ह्रीं अर्हं वर्तमानशासननायक 'वं' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...

प्र

प्रभु तप वपु तपाय, आत्मा की शुद्धि करें।
चारित रथ चढ़ जाय, शिवपथ पर आगे बढ़ें॥64.6॥

ॐ ह्रीं अर्हं वर्तमानशासननायक 'प्र' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...

कु

कुन्दन जैसी देह, तज कर होय विदेह जिन।

जिन गुण कीजे नेह, छ्यालिस गुण मंडित प्रभु॥64.7॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'कु' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

रु

रुचिकर आतम सार, अन्य तत्त्व में ना रुचि।

त्यागे सर्व विकार, आतमबल प्रकटाय के॥64.8॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'रु' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

ते

संशय मिटते नाय, काल अनादी से रहें।

जिनवर ज्ञान कराय, आवागमन निवारते॥64.9॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'ते' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

भु

विभु कहलाएँ आप, दर्शन सुख बल ज्ञान।

हम भी हों निष्पाप, आगम जिन अध्ययन करें॥64.10॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'भु' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

वि

विभव आप गुणवान, गुण मानव की संपदा।

विनय ज्ञान गुणखान, श्रावक शिवपथ पर चले॥64.11॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'वि' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

भा

नाशे सर्व विभाव, प्रभु स्वभाव में है अचल।

कारण मम दुर्भाव, करूँ प्रार्थना मेटिए॥64.12॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'भा' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

व

तत्त्व बोध दें नाथ, दानी हैं प्रभुज्ञान के।

अक्षय वैभव साथ, होय आपकी कृपा से॥64.13॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'व' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

भ

सिद्धि प्रिया भरतार, ज्ञान लक्ष्मी उनको मिले।

हम भी हों भव पार, कृपा करो हम पर प्रभु॥64.14॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'भ' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

क

मन बेदी है रिक्त, वर्धमान जिन आईए।

भोगों में नहीं लिप्त, निज में ही नित रमण हो॥64.15॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'क' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...

त

आत्म प्रदेशे होय, हलन चलन तिहुँ योग से।

योगाभाव जुहोय, सिद्ध होय जिय मोक्ष में॥64.16॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'त' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...

या

दयावान हैं नाथ, सुरक्षा भविजन की करें।

दुख में देते साथ, राग द्वेष से दूर हैं॥64.17॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'या' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...

सं

नाटक घर संसार, जीव अरू पुद्गल नाचते।

कर करमन संहार, जीव मुक्त संसार से॥64.18॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'सं' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...

स्

दृष्टि स्व सन्मुख होय, विमुख रहें पर से सदा।

विघ्न न आवे कोय, निज में ही रमते रहें॥64.19॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'स्' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...

था

हिरदय व्यथा अपार, करें प्रर्थना आप से।

नैया है मँझधार, भव से पार लगाईए॥64.20॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'था' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...

प्

शक्ति प्राप्त कराय, चिन्मय चेतन जान जिय।

शुद्धातम में समाय, मुक्त होंय इस लोक से॥64.21॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'प्' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...

य

ऋषि मुनि यति अनगार, सबके स्वामी वीर है।

समवशरण हितकार, शोभा अनुपम हो वहाँ॥64.22॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'य' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...

चि

रुचिकर आतम तत्त्व, चिन्तन अब संसार में।

हिरदय भाव समत्त्व, होय विश्व में सब सुखी॥64.23॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'चि' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

त्त

उत्तम स्वातम ज्ञान, है स्वाधीन न नष्ट हो।

निज-पर भिन्न पिछान, छोड़ चलें निस्सार जग॥64.24॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'त्त' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

क

माणिक मोती लाय, पूजन करते देवगण।

हाथ जोड़ शिर नाय, द्रव्य दिव्य अर्पण करें॥64.25॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'क' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

म

मनहर छवि जिनराय, अपलक सभी निहारते।

नमः शुद्ध सिद्धाय, काम सिद्ध होते सभी॥64.26॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'म' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

ले

रखवाले हो आप, अपने भक्तों के सदा।

मैं हूँ निर्भय नाथ, रहना प्रभु मम साथ में॥64.27॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'ले' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

श्रु

शृणु शृणु भविजन लोय, निज में ही रहना सदा।

कभी न आपा खोय, शांति निजातम में मिले॥64.28॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'श्रु' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

णु

अणु मात्र नहीं कोय, मेरा इस जग में कहीं।

शुद्ध स्वात्मा होय, शिवपथ पर बढ़ता रहूँ॥64.29॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'णु' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

ते

कहते वीर जिनन्द, आध्यात्मिकता धार ले।

मिटें सभी. उर द्वन्द, सार्थक श्रम होवे मेरा॥64.30॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'ते' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

त्र

त्रय लोकों के नाथ, तीन छत्र शिर पर फिरे।

नाम मिला वर्धमान, हुए चतुर्थ कालान्त में॥64.31॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'त्र' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

चै

चैत नवमि कलि आय, अवतारे आदीश जिन।

झुक झुक शीश नवाय, चरम शरीरी आप हो॥64.32॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'चै' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

त

तप संयम से नाथ, वसु करमों को नाशते।

शरणागत नमें माथ, करें आत्म कल्याण नित॥64.33॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'त' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

म्

माम् बचाओ आय, प्रभु मैं व्याकुल हो रहा।

किरपा वेग कराय, हमें शरण बस आपकी॥64.34॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'म्' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

वि

ज्ञान विरागी पाय, शिवपुर में विश्राम हो।

भेद ज्ञान कराय, जड़-चेतन को भिन्न कर॥64.35॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'वि' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

घ्

विघ्न सघन मिट जाय, तुम दर्शन से हे प्रभु।

मैं स्वाधीन रहाय, पर की आशा ना करूँ॥64.36॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'घ्' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

नं

काल अनंत गँवाय, अब आतम हित सोच लें।

सम्यग्ज्ञान सुपाय, कर्म विजेता ही बनें॥64.37॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'नं' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

वि

विश्व वंद्य जिनराय, गणधर भी नित पूजते।

दर्पण ज्ञान सुहाय, होनी तो होकर रहे॥64.38॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'वि' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

ह

चेतना मम हर्षाय, जिनशासन में जन्म ले।

कोई नहीं सुखदाय, चरण शरण हम वीर के॥64.39॥

ॐ ह्रीं अर्हं वर्तमानशासननायक 'ह' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

त

भाव एकत्व हि भाय, आत्मलीन होय सदा।

वायु निःसंग बहाय, यों चेतन स्वाधीन हो॥64.40॥

ॐ ह्रीं अर्हं वर्तमानशासननायक 'त' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

य

वह यम प्रभु हराय, जीते जिसने जीव जग।

अन्त समाधि धराय, आमंत्रण दें मरण को॥64.41॥

ॐ ह्रीं अर्हं वर्तमानशासननायक 'य' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

स

सन्मारग दरशाय, भव्यों पर उपकार कर।

मोह तिमिर विनशाय, मुझको भी तारो प्रभु॥64.42॥

ॐ ह्रीं अर्हं वर्तमानशासननायक 'स' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

फ

शिवफल मुझे दिलाय, दीन दयालु नाथ हो।

पल-पल शीश नवाय, दया न भूलूँ आपकी॥64.43॥

ॐ ह्रीं अर्हं वर्तमानशासननायक 'फ' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

ली

केवली हैं जिनराय, लोकालोक को जानते।

त्रिभुवन को सुखदाय, जीवों का मंगल करें॥64.44॥

ॐ ह्रीं अर्हं वर्तमानशासननायक 'ली' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

भ

नित भव रोग सताय, औषधि दो जिनवाणि की।

प्रभु निरोग कराय, भव वारिधि तिरजाय हम॥64.45॥

ॐ ह्रीं अर्हं वर्तमानशासननायक 'भ' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

व

वस्त्राभूषण त्याग, दीक्षा लें बन जाय के।

छूट जाए जिन राग, झट मन पर्यय ज्ञान हो॥64.46॥

ॐ ह्रीं अर्हं वर्तमानशासननायक 'व' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

ती

करें प्रतीक्षा आय, जीवन में चारित्र हो।

गुरु दर्शन को पाय, प्यास बुझे वैराग की॥64.47॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'ती' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

ष

पुष्प सुगंधित लाय, जिनपद में अर्पण करें।

उर पुष्कर विकसाय, जिन रविकी भक्ति करें॥64.48॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'ष' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

ट

भव तट दो पहुँचाय, दया करो गुरुदेव जी।

आवागमन छुड़ाय, विनती करते आप से॥64.49॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'ट' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

का

शिवकान्ता वर लाय, अष्ट कर्म को नष्ट कर।

निर्मल भाव कराय, रहें आप में आप ही॥64.50॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'का' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

ये

कार्ये मंत्रि कहाय, भोजन में सम मात हो।

रम्भा शयन कराय, पत्नी धर्म की संगिनी॥64.51॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'ये' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

ज्ञा

ज्ञानानन्द सुहाय, सिद्धों को वन्दन करें।

अभिनंदन गुण गाय, जय जयकार हो लोक में॥64.52॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'ज्ञा' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

नं

सिद्ध, अनंत रहाय, सिद्धलोक में जानिए।

भाव विशुद्ध कराय, आना चाहें हम वहाँ॥64.53॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'नं' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

सु

सुनते जिन धुनि आय, समवशरण में भव्य ही।

स्वानुभूति हो जाय, साक्षात् प्रभु दर्श कर॥64.54॥

ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'सु' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...।

खं सुखं पाय हरषाय, दुख में तो व्याकुल जिया।
स्वातम शुद्ध कराय, मुक्तीपथ पर जाएँ हम॥64.55॥
ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'खं' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...

स प्रभु सम्मान कराय, उत्तम गति को प्राप्त हो।
कर्म मलों को धुलाय, लोक शिखर पर राजते॥64.56॥
ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'स' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...

ल लघु शिवपथ दिखलाय, संयम रथ आरुढ़ हो।
पल नहीं व्यर्थ गंवाय, साम्य भाव उर में रहे॥64.57॥
ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'ल' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...

भ भवि नित पुण्य बढ़ाय, पुण्य फला अरिहन्त हो।
पूजन-पाठ कराय, तो भी निज वैभव मिले॥64.58॥
ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'भ' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...

ते विभु कहलाते नाथ, विभव आप अनमोल है।
सफल होय शिवकाज, भावों से पूजा करें॥64.59॥
ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'ते' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...

क्ष अक्षत आतम ध्यान, वर्धमान स्तोत्र पढ़।
अक्षय निधि का भान, जब होवे उत्तम तभी॥64.60॥
ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'क्ष' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...

ण सुरगण मोद मनाय, चौंसठ चंवर दुरावते।
दस भव पूर्व दिखाय, आनन्द नाटक को करें॥64.61॥
ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'ण' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...

व गुरुवर भक्ति कराय, गुरुमुख निरखे एकटक।
गुर्वाशीष को पाय, जन्म सफल अपना करे॥64.62॥
ॐ ह्रीं अर्ह वर्तमानशासननायक 'व' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्य...

पुष्कर अर्ध बताय, जंबूदीप खण्ड घातकि।

द्वीप अढ़ाई कहाय, शत सत्तर जिन हो सकें॥64.63॥

गरिमा मय जिननाथ, होय तृप्त निजात्म में।

निज में ही निष्णात, परापेक्षा होवे नहीं॥64.64॥

परिवर्तन पंच निवार, सिद्ध लोक में जा बसें।

पुनः जन्म नहिं धार, तिष्ठे अन्तर-आत्म में॥64.65॥

ज्ञान गम्य जिनराय, दृष्टि अगोचर ही रहें।

चरणों शीश झुकाय, जीवन प्रभुपर वारते॥64.66॥

ॐ ह्रीं अर्हं वर्तमानशासननायक 'म' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं...

पूर्णार्घ्यं

संस्तव श्रीजिन वीर का, उर पुष्कर में धार।

विघ्न नशें होवें सफल, मिले ज्ञान शिव द्वार ॥64॥

ॐ ह्रीं सर्व कार्य सफलता प्रदायकाय अर्ह महाबीजाक्षरसहिताय
श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय नमः पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।



Arham Team

Editing Team

Bhawna Jain Delhi

Manish jain Delhi

Nutan anurag jain Lakhnadon MP

Prachi Jain kota

Visualisation Team

Kanvi Parekh Mumbai

Direction Team

Ruchika jain Delhi

Prateek jain Delhi

अर्ह श्री मुनि 108 प्रणम्य सागर जी महाराज द्वारा साहित्य सृजन

संस्कृत भाषा में टीका ग्रन्थ

1. लिङ्गपाहुड़ (नन्दिनी टीका)
2. शील पाहुड़ (नन्दिनी टीका)
3. समाधि तन्त्र (आर्हतभाष्य)
4. चैतन्य चन्द्रोदय (चन्द्रिका टीका)
5. बारसाणुवेक्खा (कादम्बिनी टीका)
6. आत्मानुशासन (स्वस्ति टीका)
7. पुरुषार्थ सिद्धयुपाय (मंगला टीका)
8. प्रश्नोत्तर रत्नमालिका ('नीति-पथ')
9. तत्त्वार्थ सूत्र (तत्त्व संदीपिनी टीका, संस्कृत-प्राकृत)
10. संस्कृत एवं प्राकृत भक्ति (आठ भक्तियों की टीका)
11. ज्ञानांकुशम्

हिन्दी में अनुवादित ग्रन्थ

1. सत्सकर्म पंजिका
2. दश भक्ति टीका
3. प्रवचनसार (सरोज भास्कर टीका)
4. कथा कोश
5. सत्य शासन परीक्षा
6. युक्त्यनुशासन
7. नाममाला (भाष्य)
8. सत्संख्यादि अनुयोगद्वार
9. पात्रकेसरी स्तोत्र
10. अद्याष्टक स्तोत्र
11. संन्यास एषोस्तु किमात्मघातः
12. चतुर्विंशति तीर्थकर स्तुति (आ. माघनन्दि)

13. नियमसार
14. समयसार
15. परीक्षामुख
16. प्रतिक्रमण-ग्रन्थत्रयी

पद्यानुवाद

1. पुरुषार्थ सिद्धयुपाय
2. प्रश्नोत्तर रत्नमालिका
3. तत्त्वार्थ सूत्र
4. पात्र केसरी स्तोत्र
5. कल्याणमन्दिर स्तोत्र
6. श्री वर्धमान स्तोत्र
7. मंगलाष्टक
8. माघनन्दी कृत अभिषेक पाठ
9. उपयोग शतक

प्रवचन ग्रंथ

1. बारसाणुवेक्खा
2. नई छहढाला प्रवचन
3. परमात्म योग (समाधि तन्त्र)
4. जीव विज्ञान (तत्त्वार्थ सूत्र अध्याय-2)
5. मनोविज्ञान (तत्त्वार्थ सूत्र अध्याय-6)
6. लोक विज्ञान (तत्त्वार्थ सूत्र अध्याय-3, 4)
7. व्रत विज्ञान (तत्त्वार्थ सूत्र अध्याय-7)
8. अध्यात्म योग (इष्टोपदेश)
9. प्रवचनसार का सार (गाथा 1-175)
14. कर्म बंध विज्ञान
15. धर्म का मर्म (अपने को समझें)

16. राम कथा
17. पञ्च लब्धि
18. स्त्री को मोक्ष क्यों नहीं
19. मेरी भावना को अपनी भावना बनाएँ
20. तत्त्व विज्ञान (तत्त्वार्थ सूत्र अध्याय-१)
21. जीव विज्ञान (तत्त्वार्थ सूत्र अध्याय-२)
22. सिद्ध भक्ति
23. नीतिवाक्यामृत Part 1 - आदर्श जीवन की नीतियाँ
24. जिंदगी क्या है?

संस्कृत भाषा में मौलिक काव्य ग्रन्थ

1. स्तुति पथ
2. श्रायस पथ
3. सिद्धोदयाष्टकम्
4. श्री वर्धमान स्तोत्र
5. अनासक्त महायोगी (आचार्य श्री का जीवनवृत्त)
6. उपयोग शतकम्
7. अर्ह अष्टाङ्ग योग शतकम्
8. आ. श्री शान्तिसागर स्तुति शतकम्
9. श्री शान्तिनाथ स्तोत्र (शतकम्)
10. गोवैभवशतकम् (आयुर्वेद सम्बन्धी)
11. चतुर्विंशति-जिनस्तोत्रम् (पूजा एवं विधान)
12. न्यायसूत्रम्

प्राकृत भाषा में मौलिक ग्रन्थ

1. तित्थयर भावणा (सोलहकारण भावनाओं पर प्राकृत गाथाएँ)
2. दार्शनिक प्रतिक्रमण

3. अष्टपाहुड़ (प्राकृत टीका 16)
4. धम्मपह
5. प्राकृत रचना भास्कर
6. प्राकृत शिक्षा भाग 1-2-3-4
7. गोम्मटेस पडिमा भक्ति
8. वीयराय भक्ति
9. पागद धजगीद
10. जिणवाणि थुदि
11. चउवीस जिणभक्ति
12. भजन
13. वड्डमाण सामि थुदि
14. णवदेवदा थुदि
15. बारह भावणा
16. सुयपंचमी थुदि

अन्य मौलिक कृतियाँ

1. युगद्रष्टा (भगवान ऋषभदेव पर उप-न्यास)
2. जैन सम्राट् चन्द्रगुप्त मौर्य
3. खोजो मत पाओ (लाइफ मैनेजमेंट)
4. आलेख पथ (20 सैद्धान्तिक आलेख)
5. समयसार का ज्ञानी आत्मा कौन?
6. अन्तर्गून्ज (भजन एवं हायकू)
7. लहर पर लहर (कविता संग्रह)
8. बेटा! (शिक्षाप्रद सूक्तियाँ)
9. नई छहढाला
10. लक्ष्य (जीवंधर चरित्र)
11. मुनिसुव्रतनाथ विधान
12. महामह नन्दीश्वर विधान
13. मुनिसुव्रत भगवान आराधना
14. अपना मन अपनी बात

संकलन

1. संवाद (आचार्य श्री और बाबा रामदेव की चर्चा)

2. A Talk (संवाद का अंग्रेजी अनुवाद)

3. पुरुषार्थ सिद्ध्युपाय अनुशीलन

अर्ह बुक्स

1. अर्ह abc

2. अर्ह बोध

3. अर्ह दोहावली

4. अर्ह ध्यान योग

अंग्रेजी भाषा में

1. Fact of Fate (Article)

2. Twelve Contemplation

3. I Love You My Soul

